(कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत)

तसनीफ़ -व-तालीफ़
डॉ0 आज़म बेग क़ादरी

नाम किताब : आख़िर मरना है
AKHIR MARNA HAI

ज़ेरे निगरानी : हज़रत मौलाना सिराजुद्दीन वारसी साहब

तसनीफ़-व-तालीफ़ : डॉ0 आज़म बेग क़ादरी

पहला एडिशन : जुलाई-2015, रमज़ानुल मुबारक (1436 हि0)

क़ीमत : 140/- रु0

मिलने के पते

उर्दू बुक हाउस
तलाक महल कानपुर (उ0 प्र0)
PH-09389837386, 09559032415

जावेद बुक डिपो
याक़ूब मार्कीट, करहल, (मैनपुरी) यु.पी.
मोबाईल: 09634447000

(कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत)

आख़िर मरना है

कमोबेश 300 कुरआनी आयात
व 600 अहादीस पर मुश्तमिल

तसनीफ़ -व-तालीफ़
डॉ0 आज़म बेग क़ादरी

ज़ेरे निगरानीः
हज़रत मौलाना सिराजुद्दीन वारसी साहब

उर्दू बुक हाउस
तलाक महल कानपुर (उ० प्र०)
PH-09389837386, 09559032415

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

(उ़न्वान)

786/92

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सइयदिल मुरसलीन अम्माबाअ़द फ़आ़ऊज़ू बिल्लाहि मिनश्शैतॉनिर्रजीम बिसमिल्लाहिर रहमानिर्ररहीम0

तमाम तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जो तमाम जहानों का मालिक है कायनात के निज़ाम को चलाने वाला निहायत मेहरबान और बे इंतिहा करम करने वाला है और हिदायत देने वाला गुनाहगारों को बख़्शने वाला जो तमाम हिकमतों का जानने वाला है।

और दुरूदो सलाम हो नबी अकरम नूरे मुजस्सम सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर जिसे अल्लाह तआ़ला ने हक़ और रहमत के साथ भेजा जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब का जानने वाला जो नूर और कुरान के साथ दुनियाँ में तशरीफ़ लाये और सलाम हो आपकी अज़वाजे मुतह्रात और आपकी आल और असहाब और तमाम औलियाकिराम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब और मख़सूस बन्दे हैं।

अपनी बात

अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्लो करम व शुक्र और एहसान है कि जिसकी तौफ़ीक़ से इस अद्‌ना बन्दे को इस किताब को लिखने की सआ़दत हासिल हुई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्‌क़े और तुफ़ैल से ये तौफ़ीक़ हमें बख़्शी और इस किताब को लिखने का मक़सद भी अल्लाह अज्ज़ व जल के रहमो करम से ही अ़ता हुआ है।

आज मुआ़शरे के हालात पर अगर हम ग़ौर करें तो पायेंगे कि अक्सर लोग आख़िरत को भूलकर दुनियाँ और उसकी आराइश की मुहब्बत और रग़बत में मुब्तिला हैं हालाँकि दुनियाँ धोका है और आख़िरत हक़ीक़त है दुनियाँ फ़ानी है और आख़िरत हमेशगी का घर है लेकिन फिर भी लोग अन्जान हैं और इसकी सबसे बड़ी वजह ये है कि कुरान और दीनी इल्म का हमारे पास न होना और दुन्यावी तालीम को बढ़ावा देना और नफ़्सानी ख़्वाहिशात हमें बहुत बड़े ख़सारे यानी अ़ज़ाबे क़ब्र और जहन्नुम की तरफ़ माइल कर रही है।

हालात ये हैं कि मस्जिदें खाली हैं और बाज़ार भरे हैं दुनियाँ और माल की रेस में अक्सर लोग दौड़ रहे हैं और एक दूसरे से सबक़त पाने में मुब्तिला हैं अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के हुक्मों की नाफ़रमानी हो रही है बुराई और बेहयाई उ़रुज पर है शैतान हमारे नफ़्सों पर ग़ालिब है और हमारे नफ़्सों पर हमारा क़ाबू न होने के बाइस हम गुनाहों और बुराइयों की तरफ़ राग़िब हो रहे हैं और अक्सर लोग अपनी मौत से ग़ाफ़िल रहते हैं जैसे कभी मरना ही न हो और वो अपनी मौत को याद नहीं करते हालाँकि वो बहुत से लोगो को अपने काँधों पर सवार करके क़ब्र में छोड़कर आये हैं ऐसे हालातों पर हमें ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये।

जिस इस्लाम को फैलाने के लिये हमारे आक़ा मदीने के ताजदार रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने कितनी मुसीबतें और तकलीफ़ें बर्दास्त कीं और जिस इस्लाम की हिफ़ज़त में हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और दीगर शुहदाएकिराम और सहाबाएकिराम ने कितनी मुसीबतें

परेशानी और अज़िय़तें बर्दास्त की आज उस इस्लाम और उसके अहकाम को अक्सर लोग जानते और समझते हैं लेकिन उस पर अ़मल नहीं करते और उसकी तरफ़ राग़िब और मुतवज्जै नहीं होते और दुन्यावी मसरूफ़ियत के सबब उस पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते हालाँकि हम तमाम मुसलमानो पर लाज़िम है कि दीन इस्लाम की हिफ़ाज़त करें और उसके अहकाम पर अ़मल पैरा हों और लोगों को अल्लाह व रसूल के तमाम अहकामात पर अ़मल पैरा करने के लिए तरग़ीब दें और मुतवज्जै करें और उनकी इस्लाह करें।

इसलिए हम तमाम मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह व रसूल के फ़रमाबरदार बनें और कसरत से नेक अ़मल करें और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की प्यारी प्यारी सुन्नतों को अपने अ़मल में लायें और गुनाहों से खुद को बचायें व दुन्यावी तालीम के साथ दीनी तालीम भी हासिल करें जो हमारे लिए सबसे ज़्यादा अहम व ज़रुरी है क्योंकि दीनी इल्म क़यामत तक हमारा साथी व मददगार होगा जबकि दुन्यावी इल्म सिर्फ़ दुनियाँ तक ही महदूद है। और हमें चाहिए कि अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल की इताअ़त में गुज़ारें ताकि हमारा ख़ात्मा बा ईमान और बा ख़ैर हो और हम हमेशगी वाले घर यानी जन्नत के मुस्तहिक़ हो जायें और अ़ज़ाबे क़ब्र और अ़ज़ाबे क़यामत और जहन्नुम से महफ़ूज़ रहें। अल्लाह तआ़ला अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सदक़े और तुफ़ैल हम तमाम मुसलमानों को हिदायत अ़ता फ़रमाये व सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये—आमीन

और आप हज़रात से हमारी गुज़ारिश है कि इस किताब को पूरा पढ़ें और उस पर अ़मल भी करें और लोगों को इस किताब को पढ़ाना मेरा मक़सद नहीं बल्कि पढ़ने के साथ—साथ उस पर अ़मल की तरफ़ रग़बत दिलाना मेरा अहम मक़सद है और इस किताब को पढ़कर दूसरे लोगों को भी इस किताब को पढ़ने के लिए दें ताकि आपको ज़्यादा सवाब मिले और इस किताब को लिखने में अगर कोई कोताही या ग़लती हमसे हो गई हो तो हमे मुत्तलाअ़ करें और हमें माफ़ करें ।

डा० आज़म बेग क़ादरी
P.H- 9897626182

—: मक़सद :—

अल्लाह तआ़ला ने कोई भी चीज़ बे मक़सद पैदा नहीं की हर चीज़ का कोई न कोई मक़सद होता है चाहे पोशीदा हो या ज़ाहिर और इन्सान को तमाम चीज़ों के मक़ासिद का इल्म होता है जैसे वो खाना खाता है तो खाने का मक़सद भूक मिटाना है कपड़े पहनने का मक़सद जिस्म को छुपाना है मकान बनाने का मक़सद गर्मी, सर्दी, बरसात से खुद की हिफ़ाज़त करना है और माल कमाने का मक़सद दुन्यावी ज़िन्दगी की तमाम ज़रूरतो को पूरा करना वग़ैराह है तो हर चीज़ का एक मक़सद होता है और इन्सान इन तमाम मक़ासिद को याद रखता और कभी नहीं भूलता लेकिन बाज़ लोग असल मक़सद को भूल गये हैं और वो ये है कि दुनियाँ में इन्सान की तख़लीक़ यानी अल्लाह तआ़ला ने दुनियाँ मे इन्सान को किस लिए पैदा फ़रमाया है क्या हम दुनियाँ और माल हासिल करने के लिए पैदा किये गये हैं या दुनियाँ में ऐशो इशरत की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए पैदा किए गए हैं नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला ने हमे दुनियाँ मे अपनी इबादत और नेक आमाल करने के लिए पैदा फ़रमाया है और हमारी दुन्यावी ज़रूरतें और हमारा रिज़्क अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ज़िम्मे करम और उसके इख़्तियार में है वो जिसे जब चाहे जितना चाहे अ़ता करता है।

क़ुरान मजीद मे अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और मैने जिन्नों और इन्सानों को अपनी इबादत के लिए पैदा फ़रमाया। (सू० ज़ारियात—56)

सूरहः मुल्क में इरशादे बारी तआ़ला है—
वो जिसने मौत और ज़िन्दगी पैदा की ताकि तुम्हारी जाँच हो कि तुम में से किसके काम ज़्यादा अच्छे हैं। (सू0—मुल्क—2)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है ताकि जिन लोगों ने बुरे काम किये उन्हें उनके बुरे आमाल का बदला दें और नेक काम करने वालों को उनके नेक आमाल का निहायत अच्छा सिला दें। (सू0—नज्म—31)

क़ुरान मजीद की इन आयात से ये बात वाज़ेह (साफ़) हो गई है कि अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को सिर्फ़ अपनी इ़बादत के लिए पैदा फ़रमाया और इसलिये कि दुनियाँ में इन्सानों के आमालों की जाँच हो जाये ताकि नेक आमाल करने वालों को उनके नेक आमाल का अच्छा सिला (यानी जन्नत) दूँ और बूरे काम करने वालों को उनके बुरे काम का बदला यानी दोज़ख़ दूँ लेकिन बाज़ लोग इस पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और इस हक़ीक़त से अंजान रहते हैं और आख़िरत में वो नुकसान उठाने वाले और अ़ज़ाबे इलाही के मुस्तहिक़ होंगे।

हदीस पाक में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया— बेशक दुनियाँ मीठी सर सब्ज़ है और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें इसमें बाक़ी रखा ताकि वो देखे कि तुम कैसे अ़मल करते हो (मुस्नद अहमद—3/22)

पस हमें चाहिये कि हम अपने अहम मक़सद यानी दुनियाँ में आने को हमेशा ज़हन मे रखें और उस पर ग़ौरो फ़िक्र करें कि अल्लाह तआ़ला ने हमे दुनियाँ मे क्यों भेजा और हम क्या कर रहे हैं हम दुनियाँ मे इम्तिहान और आज़माइश के लिये भेजे गये हैं और हम दुनियाँ की ज़िन्दगी को हक़ीक़ी ज़िन्दगी समझकर उसमें इतने मुब्तिला और मसरुफ़ हो गये हैं कि अपनी हमेशा क़ायम रहने वाली ज़िन्दगी यानी आख़िरत को भूल गये हैं और क़ब्र क़यामत और दोज़ख़ मे मिलने वाले अ़ज़ाब से भी बेख़बर हो गये हैं हमारी पैदाइश का मक़सद आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये है और हम दुनियाँ की ज़िन्दगी को बेहतर बनाने में लगे हुये हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दुनियाँ को तुम्हारे लिये पैदा किया गया है और तुम्हें आख़िरत के लिये पैदा किया गया है। (शुअ़बुल ईमान—7/360)

एक और मक़ाम पर आपका इरशादे गिरामी है—
हक़ीक़ी ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है (सही बुख़ारी—1/535)

आख़िरत बाक़ी रहने वाली है और दुनियाँ फ़ना हो जायेगी इसलिये

हमें चाहिए कि आख़िरत को दुनियाँ पर तरजीह दें और अपनी ज़िन्दगी को अल्लाह तआ़ला व उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ गुज़ारें ताकि आख़िरत में मिलने वाली अ़ज़ीम नेअ़मत जन्नत को पा सकें और क़ब्र क़यामत और जहन्नुम में मिलने वाले तमाम अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहें।

कुरान मज़ीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
(ऐ महबूब) तुम फरमादो हुक्म मानो अल्लाह और रसूल का
(सू0—आले इमरान—32)

सूरह निसा में इरशादे बारी तआ़ला है—
जिसने रसूल का हुक्म माना उसने अल्लाह तआ़ला का हुक्म माना।
(सू0—निसा—80)

हमें हर हाल में अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करनी चाहिये क्योंकि यही सिराते मुस्तक़ीम है जो हमें जन्नत की तरफ़ ले जाता है ज़रा सोचें जब हमारी औलाद हमारा कहना नहीं मानती और नाफ़रमानी करती है तो हम उससे नाराज़ हो जाते हैं अगर हमारा नौकर हमारी बात न माने तो हम उस नौकर से नाराज़ हो जाते हैं और यहाँ तक कि उसे नौकरी से निकाल देते हैं। तो ज़रा सोचो अगर हम अपने रब की बात न मानें और नाफ़रमानी करें जो हमारा मालिक है। हमें पालने वाला हमें खिलाने वाला और दुनियाँ व आख़िरत में बेशुमार नेअ़मतें अ़ता करने वाला है तो क्या हमारा रब हमसे नाराज़ न होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने उनके लिये जहन्नुम की आग है जिसमे वो हमेशा हमेशा रहेंगे (सू0—जिन्न—23)

दुनियाँ और उसकी ज़ैबो ज़ीनत इन्सान के लिये आज़माइश है और इन्सान का नफ़्स उसे दुनियाँ की मुहब्बत की तरफ़ खींचता है और दुनियाँ की मुहब्बत उसे रब तआ़ला से दूर कर देती है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
और जो कुछ ज़मीन पर है हमने उसे ज़मीन की ज़ीनत बनाया ताकि हम लोगों की आज़माइश करें कि कौन अच्छा अ़मल करता है और हम उसको जो ज़मीन पर है चटयल मैदान बनाने वाले हैं। (सू0—कहफ़—7—8)

अल्लाह तबारक व तआ़ला के हम पर बे शुमार एहसान हैं जिसमें सबसे बड़ा एहसान ये कि अल्लाह तआ़ला ने हमें रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की उम्मत में पैदा फ़रमाया और हम मुसलमान हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक अल्लाह तआ़ला का बड़ा एहसान हुआ मुसलमानो पर कि उनमें उन्हीं मे से एक रसूल भेजा जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता और उन्हें पाक करता और उन्हें किताब व हिकमत सिखाता और वो ज़रुर इससे पहले खुली गुमराही में थे। (सू0—आले इमरान—164)

अल्लाह तआ़ला ने हमें अ़ज़ीम नेअ़मत से नवाजा़ है कि हमें मुसलमान बनाया और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का उम्मती बनाया जो तमाम जहानो के लिये सरापा रहमत हैं।

हदीस पाक में वारिद है सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मेरी हयात (ज़िन्दगी) और मेरी वफ़ात दोनो तुम्हारे लिये ख़ैर हैं ज़िन्दगी इसलिये कि मैं तुम्हें सुन्नतें और शरई अहकाम देता हूँ और (वफ़ात इसलिये) कि बाद वफ़ात तुम्हारे आमाल मुझ पर पेश किये जायेंगे तो उनमें से अच्छे आमाल देखकर मैं अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करुँगा और तुम्हारे बुरे आमाल देखकर मैं अल्लाह तआ़ला से तुम्हारी बख़्शिश माँगूंगा।

कुरान मजीद में हजरत नूह अ़लैहस्सलाम का ज़िक्र इस तरह आया हज़रत नूह ने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ बद्दुआ की कि ऐ मेरे रब ज़मीन पर किसी काफ़िर के घर को बाक़ी न छोड़ना (सू0—नूह—26)

और नूह अ़लैहस्सलाम की बद्दुआ बारगाहे खुदा वन्दी में कुबूल हुई और सब काफ़िरों को अ़ज़ाबे इलाही ने घेर लिया और सब तबाह व बर्बाद हो गये कुछ भी बाक़ी न रहा लेकिन मेरे मुस्तफ़ा की रहमत का क्या कहना कि आपके चेहरे मुबारक को खून आलूद किया गया आपके दाँत मुबारक शहीद किये गये और आपको कई तरह की ईज़ायें (तकलीफ़ें) दी गई लेकिन आपने भलाई के कलमे के अलावा कुछ न कहा।

हदीस पाक में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया या अल्लाह मेरी क़ौम को बख़्श दे ये लोग मेरे मक़ाम को नहीं जानते (सही बुख़ारी–1/495)

क़यामत के दिन कुफ़्फ़ार ख़सारे में होंगे और उन पर सख़्त अ़ज़ाब होगा तब वो यूँ कहेंगे कुरान मजीद में इरशादे खुदा वन्दी है कुफ़्फ़ार (आख़िरत में मोमिनो पर अल्लाह तआ़ला की रहमत का मंजर देखकर) बार–बार कहेंगे कि काश हम मुसलमान होते। (सू0–हिज्र–2)

तो हमारा मुसलमान होना अल्लाह तआ़ला की हम पर सबसे बड़ी रहमत है पस हमें चाहिये कि इस रहमत को बुरे आमाल करके ज़ाया (बर्बाद) न करें बल्कि वो काम करें जो अल्लाह तआ़ला व उसके हबीब सल्ल्ल्लाहु अ़लैह वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ हों ताकि अल्लाह तआ़ला के बन्दे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के उम्मती होने का हक़ अदा हो और कामिल मोमिन होने के लिए ये शर्त है कि कायनात में सबसे ज़्यादा मुहब्बत अल्लाह तआ़ला व उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से हो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसके नज़दीक उसके अहल व अ़याल और सब लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ। (सही मुसलिम–1/49)

हदीस पाक में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–

जो शख़्स मुझसे मुहब्बत करता हो वो मेरी सुन्नतों पर अ़मल करे (वैहकी—7/78)

इरशादे बारी तआ़ला है—
बेशक अल्लाह तआ़ला के यहाँ इस्लाम ही दीन है
(सू0—आले इमरान—19)

जो शख़्स अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करता है और दुनियाँ में आने का मक़सद सिर्फ़ दुनियाँ और माल को हासिल करना समझता है और अल्लाह के ज़िक्र और अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल रहता है तो गोया वो खुद को हलाकत में डालता है और वो अपने आप का सबसे बड़ा दुश्मन है जो खुद पर जुल्म करता है और आख़िरत में अ़ज़ाबे इलाही का मुस्तहिक़ होता है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से मुहब्बत करता है और उनकी फ़रमाबरदारी और सुन्नतों पर अपनी तमाम उम्र गुज़ारता है तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को वो इनामात व दरजात और मरातिब अ़ता फ़रमायेगा जिसका कोई तसव्वुर भी नही कर सकता।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ महबूब तुम फ़रमादो अगर तुम अल्लाह तआ़ला को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमाबरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह वख़्श देगा और अल्लाह तआ़ला वख़्शने वाला मेहरबान है। (सू0—आले इमरान—31)

सूरह निसा में इरशादे बारी तआ़ला है—
और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने तो उन्हें उनका साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह तआ़ला ने फ़ज़्ल किया यानी अम्बिया और सिद्दीक़ और शुहदा और नेक लोग ये क्या ही अच्छे साथी हैं (सू0— निसा—69)

मज़कूरा बाला आयात में अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी का जो इनाम ज़िक्र हुआ है अगर वो जिस बन्दे को अ़ता हो जाये तो उसके मक़ाम और मर्तबे का क्या कहना यानी अल्लाह तआ़ला फ़रमाबरदार बन्दों को दोस्त रखता है और उनके गुनाहों को बख़्श देता है।

और अल्लाह तआ़ाला जिसे अपना दोस्त रखता है वो ग़ज़बे इलाही से महफूज़ रहता है और उसके लिये रहमत ही रहमत है और अम्बियाएकिराम अ़लैहिमुस्सलाम व सिद्दीक़ व शुहदा और नेक लोगों का साथ बन्दे के लिए निजात है और इसके अलावा कसीर इनामात अल्लाह तआ़ाला उसे अ़ता फ़रमायेगा और जो शख़्स अल्लाह तआ़ाला व उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की नाफ़रमानी करेगा और अपने नफ़्स का ताबेअ़ होकर बुराई का रास्ता इख़्तियार करेगा अल्लाह तआ़ाला उसे सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला करेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ाला इरशाद फ़रमाता है–
जिस दिन उनके मुँह उलट पलट कर आग मे तले जायेंगे तो वो कहेंगे कि काश हमने अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माना होता और कहेंगे ऐ हमारे रब हम अपने सरदारों और अपने बड़ों के कहने पर चले तो उन्होने हमें राह से बहका दिया ऐ हमारे रब उन्हें आग का दूना अ़ज़ाब दे। (सू0–अहज़ाब–66–68)

सूरह कहफ़ में इरशादे बारी तआ़ाला है–
और (हर एक के सामने) आमाल नामा रख दिया जायेगा सो आप मुजरिमों को देखेंगे (वो) उन (गुनाहों और जुर्मो) से ख़ौफ़ ज़दा होंगे जो (उस आमाल नामे) में दर्ज होंगे और कहेंगे हाय हलाकत इस आमाल नामे को क्या हुआ इसने न कोई छोटी (बात) छोड़ी और न कोई बड़ी (बात) मगर उसने (हर बात को) शुमार कर लिया है और वो जो कुछ करते थे (अपने सामने) हाज़िर पायेंगे और आपका रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा (सू0–कहफ़–49)

हज़रत उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह0) फ़रमाते हैं कि जितने दिन तुम्हें दुनियाँ में रहना है उतनी तैयारी दुनियाँ की करो और जितने दिन तुम्हें आख़िरत में रहना है उतनी तैयारी आख़िरत की करो और इन्सान को चाहिये कि खुद के वुजूद पर ग़ौर करे कि एक वक़्त ऐसा था कि दुनियाँ तो थी लेकिन उसका वुजूद न था और एक ऐसा वक़्त भी होगा कि दुनियाँ मे उसका नामो निशान न होगा और वो क़ब्र के अंधेरों में गुम हो जायेगा और क़यामत के दिन उठाया जायेगा इन्सान दुनियाँ में आने से क़ब्ल वो अपनी माँ के बतन में मनी से वुजूद में आया और यही इन्सान की हक़ीक़त का आइना है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
बेशक आदमी पर ऐसा वक़्त गुज़रा कि कहीं उसका नामोनिशान न था बेशक हमने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी (वीर्य) से कि हम उसकी आज़माइश करें कि उसे सुनता देखता कर दिया।
(सू0—दहर—1—2)

सूरह क़ियामह में इरशादे बारी तआ़ला है—
क्या वो एक बूँद पानी न था उस मनी का जो गिराई जाये फिर खून की फुटक हुआ पस उसने पैदा फ़रमाया फिर उसके आज़ा (हाथ पैर वग़ैराह) दुरुस्त किये तो उससे दो जोड़े बनाये मर्द और औरत क्या जिसने ये कुछ किया क्या वो मुर्दे न जिला सकेगा।
(सू0—क़ियामह—37—40)

जब कोई शख़्स मरता है तो उस मइयत से मुताअ़ल्लिक़ तमाम कामों को हम शरीअ़त के अहकाम और सुन्नतों के मुताबिक़ करते हैं जैसे मइयत को लिटाना कि उसके चेहरे का रुख़ काबा की तरफ़ हो और उसके पैर इसके बरअक्स हों और मइयत का गुस्ल और उसका कफ़नाना और उसकी नमाज़ और दफ़ीना वग़ैराह तमाम कामों को हम शरीअ़त के हुक्म और सुन्नतों के मुताबिक़ अंजाम देते हैं और कोई छोटी सी भी सुन्नत को इस दरमियान तर्क नहीं करते तो क्या तमाम शरई हुक्म और सुन्नतें सिर्फ़ मुर्दो के लिए हैं क्या हम ज़िन्दों के लिए नहीं हैं अगर हम अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल के हुक्म और सुन्नतों के मुताबिक़ गुज़ारें तो ये हमारे लिये कितना बेहतर हो और हम क़ब्र और क़यामत के अ़ज़ाब से महफूज़ हो जायें और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब का शिकार होने से बच जायें और हमारी आख़िरत की तमाम मन्ज़िलें आसानी और राहतों के साथ गुज़र जायें और हम जहन्नुम से बच जायें और जन्नत के मुस्तहिक़ बन जायें और इस तरह हम अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब और महबूब बन्दे बन जायेंगें और क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला हमें अपने मख़सूस बन्दों के साथ उठायेगा और हमें जहन्नुम के दर्दनाक अ़ज़ाब से महफूज़ रखेगा।

इरशादे बारी तआ़ला है—
जो हुक्म माने अल्लाह का और रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो यही लोग कामयाब हैं। (सू0—नूर—52)

हम अल्लाह तआला के बन्दे हैं और बन्दे का काम है कि अपने मौला के हुक्म की तामील करना और अल्लाह तआला हमारा ख़ालिक़ व मालिक है पस जो चाहे हुक्म दे और जो चाहे करे सब कुछ उसके इख़्तियार में है हमें तो बस अपने सबसे ज़्यादा अहम व ज़रूरी मक़सद को हमेशा और हर वक़्त अपने ज़हन में रखना चाहिये और उसी के मुताबिक़ अपने तमाम कामों को अंजाम देना चाहिये ताकि जिस मक़सद के लिये हम दुनियाँ में तख़लीक़ किये गये उस मक़सद की तकमील में हम कामयाब हों और दुनियाँ व आख़िरत में हम बेहतर अज्र व इनामात से सरफ़राज़ हों और ग़ज़बे इलाही से महफ़ूज़ रहें।

इरशादे बारी तआला है–
क्या तुमने ये ख़्याल कर रखा कि हमने तुम्हें बे मक़सद पैदा किया है और तुम हमारी तरफ़ लौटाये नहीं जाओगे। (सू0–मोमिनून–115)

–: पाँच बातें :–

1– लोग कहते हैं कि हम अल्लाह के बन्दे हैं लेकिन काम गुलामों की तरह नहीं बल्कि आज़ादो की तरह अपनी मर्ज़ी से करते हैं।

2– लोग कहते हैं कि अल्लाह हमें रिज़्क देता है लेकिन अपना दिल दुनियाँ और मताये दुनियाँ को हासिल करने में लगा रहता है और हलाल हराम नही देखता।

3– लोग कहते हैं कि आख़िर हमें मरना है लेकिन काम ऐसे करते हैं कि जैसे कभी मरना ही न हो।

4– लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तआला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) से मुहब्बत करते हैं लेकिन बात अपने नफ़्स की मानते हैं।

5– लोग कहते हैं कि क़यामत क़ायम होगी लेकिन उसकी तैयारी नहीं करते।

—: आमाल और आज़माइश :—

गुज़िस्ता बाब मक़सद में कुरान व अहादीस की रोशनी में ये बात पूरी तरह से वाज़ेह हो चुकी है कि इन्सान को दुनियाँ में अल्लाह तआला ने सिर्फ़ अपनी इबादत और नेक अ़मल करने के लिए पैदा फ़रमाया और दुनियाँ को इन्सान के लिए और इन्सान को आख़िरत के लिए पैदा फ़रमाया तो सबसे पहले हमें ये बात ज़हन नशीन कर लेनी चाहिए कि हम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत और नेक अ़मल करने के लिए दुनियाँ में भेजे गये हैं और हमें दुनियाँ के लिए नहीं बल्कि आख़िरत के लिए पैदा किया गया है इसके अलावा हमारा दुनियाँ में आने का और कोई दूसरा मक़सद नहीं है तो हमें चाहिये अपने मक़सद को जानते और मानते हुए और इसी मक़सद के मुताबिक़ दुनियाँ में अपने कामों को अंजाम दें।

दुनियाँ में हमें जो नेअ़मतें मयस्सर हुई हैं जैसे माल औलाद बीवी व मकानात व ताक़त व हुस्नो जमाल वग़ैराह व दीगर तमाम चीज़ें ये सब हमें ऐशो इशरत के लिये नही दी गईं बल्कि इन तमाम चीजों से हमारे आमाल और हमारी आजमाइशें जुड़ी हुई हैं और इन चीज़ों के ज़रिये अल्लाह तआ़ला हमें आज़माता है और देखता है कि कौन बन्दा कैसे अ़मल करता है।

जैसे किसी शख़्स को अल्लाह तआ़ला ने खूबसूरत बीवी अ़ता की तो उसे उस खूबसूरत बीवी के ज़रिये अल्लाह तआ़ला आज़माइश में डालता है और देखता है कि बन्दा अपनी बीवी की मुहब्बत में कैसे अ़मल करता है हमें याद रखता है या नहीं और मेरा ज़िक्र करता है या नहीं और मेरा शुक्र अदा करता है या नहीं और मुझसे सबसे ज़्यादा मुहब्बत करता है या अपनी बीवी से करता है और बन्दा मेरा गुलाम रहता है या अपनी बीवी का और मेरे और मेरे महबूब के रास्ते पर चलता है या अपनी बीवी के बताये रास्ते पर चलता है और बन्दा मेरा हुक्म मानता है या अपनी बीवी का हुक्म मानता है तो इस तरह उसकी आज़माइश की जाती है और इसके ज़रिये उस बन्दे के आमाल देखे जाते हैं और उसे उसके आमाल के मुताबिक़ सवाब या अ़ज़ाब दिया जायेगा।

और इसी तरह जब किसी शख़्स को अल्लाह तआ़ला

खूबसूरत बीवी नहीं देता तो उसे भी आज़माया जाता है और अल्लाह तआ़ला देखता है क्या बन्दा मेरी अ़ता पर राज़ी है या वो दूसरों की औ़रतों को देखकर ग़मगीन होता है और सोचता है कि मुझे फ़लाँ औ़रत जैसी खूबसूरत बीवी अ़ता क्यों नहीं हुई और क्या उसे अपने दुनियाँ में आने का मक़सद याद है या भूल गया कि मैंने उसे अपनी इ़बादत और नेक अ़मल के लिए दुनियाँ में भेजा न कि खूबसूरत बीवी के साथ ऐशो आराम के लिए भेजा।

अगर वो शख़्स अपने दुनियाँ में आने का मक़सद याद रखता है और कहता कि मुझे मेरे रब ने जो कुछ भी अ़ता किया है मैं उस पर राज़ी हूँ और वो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता है और सब्र पर क़ायम रहता है और कहता कि मैं सिर्फ़ रब तआ़ला की इ़बादत और नेक अ़मल के लिए पैदा किया गया हूँ और जिस काम के लिए मैं पैदा किया गया सिर्फ़ वही काम करूँगा जैसे रोज़ा, नमाज़, हज वग़ैराह और दीगर तमाम अच्छे काम करूँगा और बुराई और गुनाहों से दूर रहूँगा और रहा मामला मेरी बीवी का तो मैं उसके लिए पैदा नहीं किया गया जो मैं उसके बारे में सोचूँ और फ़िक्र करूँ और वो इस तरह नेक अ़मल करता है और अल्लाह व रसूल की इताअ़त करता है और वो अल्लाह तआ़ला के इम्तिहान में पास हो जाता है और जन्नत का मुस्तहिक़ बन जाता है जहाँ उसे खूबसूरत हसीन बीवी के अलावा हुस्नो जमाल की पैकर बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें अ़ता होंगी और बेशुमार नेअ़मतें उसे मिलेंगी।

इसी तरह माल का मामला है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी को माल देता है तो उसे माल के ज़रिये आज़माता है कि मेरे अ़ता कर्दा माल को बन्दा किस तरह ख़र्च करता है कितना मेरी राह मे ख़र्च करता है और कितना गुरबा मसाकीन और फ़ुक़रा में ख़र्च करता है और उस माल पर मेरा शुक्र अदा करता है या नहीं और अपने माल की ज़कात निकालता या नहीं और इसी तरह ग़रीब को भी आज़माता है कि वो सब्र करता या नहीं और अपने इस हाल पर राज़ी है या नहीं और इन्सान का खुद का जिस्म भी आज़माइश है और अल्लाह तआ़ला देखता है कि बन्दा अपने जिस्म को किस काम में लगाता है बुराई या गुनाह की तरफ़ या इ़बादत और नेक काम की तरफ़ लगाता है।

और इसी तरह औलाद भी आज़माइश है और अल्लाह तआ़ला देखता है कि बन्दा औलाद की मुहब्बत में कितना मुब्तिला होता है और उस मुहब्बत के बाइस वो कैसे अ़मल करता है वो गुमराही के रास्ते पर चलता है या मेरे और मेरे महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के रास्ते पर चलता है और मेरा शुक्र गुज़ार बन्दा बनता है या औलाद की मुहब्बत में हमें भूल जाता है और मेरा ज़िक्र छोड़ देता है और औलाद की तालीम व तरबियत के लिये कैसे अ़मल करता है हलाल रोज़ी कमाता या हराम और अपने दिल में ख़ौफ़े खुदा रखता या मख़लूक़ का ख़ौफ़ रखता और औलाद की मुहब्बत उस पर ग़ालिब आती या फिर अल्लाह की मुहब्बत को तरजीह व अहमियत देता और कायनात की हर शैः पर अल्लाह की मुहब्बत को ग़ालिब रखता इसी तरह इन्सान की ज़िन्दगी से जुड़ी हर चीज़ आज़माइश है और दुनियाँ की तमाम चीज़ें कुछ वक़्त इस्तेमाल के लिये हैं हमेशगी के लिये नहीं हैं और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को आज़माइश में डालकर उसके आमालों की जाँच करता है कि बन्दा दुन्यावी अशया (चीज़ों) मे मुब्तिला होकर कैसे अ़मल करता है इसलिये हमें चाहिये कि पूरी तरह से ज़हन मे बिठालें कि दुनियाँ और जो कुछ उसमें मौजूद है वो सब हमारे लिये आज़माइश है और हमें अल्लाह तआ़ला ने अपनी इबादत व नेक आमाल के लिये पैदा फ़रमाया और अगर दुनियाँ में हमें कोई नेअ़मत न मिलें तो हमे चाहिये कि ग़मगीन न हों और न अफ़सोस करें बल्कि सब्र करें और अपने इम्तिहान को नेक आमाल के ज़रिये पास करें ताकि जन्नत में मिलने वाली अ़ज़ीम दायमी नेअ़मतों के मुस्तहिक़ बन जायें और जब हम किसी दूसरे के पास वो नेअ़मत देखें जो हमारे पास नहीं है तो हमें चाहिये कि हसद न करें बल्कि ये ख़्याल करें कि हम इन नेअ़मतों के हासिल करने और उनके इस्तेमाल के लिये पैदा नहीं किये गये हैं बल्कि नेक अ़मल और इबादत के लिये पैदा किये गये हैं तो इस तरह हम सब्र और रब की रज़ा पर क़ायम रह सकते हैं और बुराई और गुनाह से बच सकते हैं और इस तरह हम किसी भी नेअ़मत के न मिलने पर रंजीदा व ग़मगीन न होंगे।

और कोई भी शख़्स उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता और न सिराते मुस्तक़ीम पा सकता है जब तक कि वो दुनियाँ को इम्तिहान गाह न जानें और अपने दुनियाँ में आने के मक़सद के मुताबिक़ अ़मल न करे इसलिये हमें चाहिये कि दुनियाँ में हमें जो

कुछ अ़ता हो उस पर राज़ी रहें और अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लायें और जो चीज़ हमें दुनियाँ में न मिले उस पर सब्र करें और हर हाल में सिर्फ़ और सिर्फ़ नेक अ़मल करें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
बेशक तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब आज़माइश हैं। (सू0–तग़ाबुन–15)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और जो ईमान लाये और अच्छे काम किये वो जन्नत वाले हैं और उन्हें वहाँ हमेशा रहना है। (सू0–बक़राह–82)

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाता है–
बेशक जो ईमान लाये और अच्छे काम किये वही तमाम मख़लूक़ में बेहतर हैं। (सू0–बइयना–7)

इरशादे खुदा वन्दी है–
तुम्हें जो कुछ भी (माल व मताअ़) दिया गया है वो दुन्यावी ज़िन्दगी का (चन्द दिनों का) फ़ायदा है और जो कुछ अल्लाह तआ़ला के पास है वही बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है (ये) उन लोगों के लिये है जो ईमान लाते और अपने रब पर भरोसा करते हैं और जो कबीरा (बड़े) गुनाहों और बेहयाई के कामों से बचते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं और वो जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ क़ायम रखते हैं और उनका काम आपसी मशवरे से होता है और हमारे दिये हुये (माल) से हमारी राह में ख़र्च करते हैं। (सू0–शूरा–36–38)

मुन्दरजा बाला आयात से वाज़ेह हुआ कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक वही लोग बेहतर हैं जो नेक काम करते हैं और अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये जन्नत को आरास्ता किया है जिसमें वो हमेशा हमेशा रहेंगें और उसमें वो कसीर नेअ़मतें और लज़्ज़तें पायेंगे जो न किसी आँख ने देखी और न किसी कान ने सुनी और ये उनके नेक आमालों के बाइस उन्हें अ़ता की जायेगी।

क़यामत के दिन आमालों की पुरसिश (पूछ) होगी

और जो लोग दुनियाँ में अच्छे आमाल करते हैं तो क़यामत के दिन हिसाब उन्हें ख़ौफ़ ज़दा नहीं करेगा और क़यामत की सख़्तियों और तकलीफ़ों से वो महफ़ूज़ रहेंगें और जो लोग बुरे आमाल करते हैं तो वो उस दिन की सख़्तियों और तकलीफों में मुब्तिला होंगें और अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की तख़लीक़ जिस काम के लिये की है अगर बन्दा वो काम नहीं करेगा तो वो अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार होगा और अल्लाह तआ़ला हमारी शक्लों और मालों को नहीं देखता बल्कि वो तो सिर्फ़ हमारे आमालों को देखता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारी शक्ल और तुम्हारे माल को नहीं देखता बल्कि वो सिर्फ़ तुम्हारे आमाल को देखता है।
(सही मुस्लिम–2/317)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
इन्सान के तीन दोस्त हैं एक जो मौत तक साथ रहता है वो माल है दूसरा वो जो क़ब्र तक साथ रहता है वो उसके घर वाले हैं तीसरा वो जो मैदाने हश्र तक साथ रहता है वो उसका अ़मल है।
(मुस्नद अहमद–3/110)

हमारे दोस्त, रिश्तेदार, घर वाले, हमारे माँ बाप और हमारी औलाद और वो माल जो दुनियाँ में हमने कमाया वो आख़िरत में हमारे साथी और मददगार न होंगें बल्कि हमारे साथी और मददगार सिर्फ़ हमारे आमाल होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
और डरो उस दिन से जिसमें अल्लाह की तरफ़ फिरोगे और हर जान को उसके आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर जुल्म नहीं किया जायेगा (सू0–बक़राह–281)

जो लोग अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करते और बुरे काम करते हैं वो लोग अपने बुरे आमालों के बाइस सख़्त अ़ज़ाब से घिरे होंगे और अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेंगे कि हमें वापस दुनियाँ में भेज दे ताकि हम अच्छे काम करें लेकिन वापस लौटना मुमकिन न होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
जब मुजरिम अपने रब के पास अपने सरों को झुकाये हुये कहेंगे ऐ मेरे रब हमने देखा और सुना हमें वापस लोटा दे ताकि हम अच्छे काम करें। (सू0–सजदा–12)

और जो लोग दुनियाँ में मुसीबतो परेशानी से दो चार होने के बावजूद अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये नेक अ़मल करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन लोगो से राज़ी होता है और उनकी दुआओं को कुबूल फ़रमाता है और उन्हें उनके नेक अ़मल का बेहतर सिला (बदला) अ़ता फ़रमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
और अल्लाह तआ़ला दुआ़ कुबूल फ़रमाता है उनकी जो ईमान लाये और अच्छे काम किये और उन्हें अपने फ़ज़्ल से और इनाम देता है और काफ़िरो के लिये सख़्त अ़ज़ाब है। (सू0–शूरा–26)

इरशादे बारी तआ़ला है–
बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किये यक़ीनन हम उनके अज्र को ज़ाया नहीं करते जिनके काम अच्छे हों।
(सू0–कहफ़–30)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
दो किस्म के लोग हैं जो क़ाबिले रश्क हैं एक वो जिनको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया और वो राहे खुदा में ख़र्च करते हैं दूसरे वो जिनको अल्लाह तआ़ला ने इल्म दिया और वो उस पर अ़मल करते हैं। (मुस्नद अहमद–1/385)
पस हमें चाहिये कि नेक आमाल को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बनालें और अल्लाह व रसूल के अहकामात और सुन्नतों पर कसरत से अ़मल करें ताकि हमारा ख़ात्मा बा ईमान और बा ख़ैर हो और हमें अल्लाह व रसूल की कुर्बत हासिल हो।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जिसने मेरी सुन्नतों से मुहब्बत की उसने मुझ से मुहब्बत की और वो जन्नत में मेरे साथ होगा। (तिर्मिज़ी–4/309)

हर इन्सान को चाहिए कि तन्हाई में बैठकर ग़ौरो फ़िक्र करे कि वो जिस घर में रहता है उसी घर से उसकी मइयत भी निकलेगी और जिस आँगन में वो चलता फिरता है उसी आँगन में उसका आख़िरी गुस्ल होगा और वो जिस बिस्तर पर लेटता है वो बिस्तर एक दिन उसे छोड़ देगा और वो ख़ाक पर लेटेगा और वो लोग जिनसे वो बेहद मुहब्बत करता है और जिनके लिये वो माल जमा करता है वो तमाम लोग उसके लिये बेगाने हो जायेंगें और वो जिस घर से मुहब्बत करता है उसी घर से एक दिन निकाला जायेगा और जिस मिट्टी को वो अपने तन और कपड़ों से जुदा रखता है और उससे नफ़रत करता है उसी मिट्टी के वो सुपुर्द किया जायेगा और क़ब्र की तन्हाई मे उसका साथी व दोस्त और मददगार सिर्फ़ उसके आमाल होंगें इसलिये हमें चाहिये कि कसरत से नेक अ़मल करें।

बाज़ लोग कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दों की दुआयें कुबूल नहीं करता और उन्हें परेशानियों में मुब्तिला रखता है तो इसमें हिकमते इलाही है कि अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दों की हर दुआ़ इसलिये कुबूल नहीं करता कि कहीं उस पर उसकी तमन्नाओं और ख़्वाहिशों का ग़लबा न हो जाये जो उसकी हलाकत का सबब बने और उसकी परेशानियाँ उसकी आज़माइश है जिस तरह सोना तपने के बाद ख़रा और कुन्दन बनकर निकलता है इसी तरह अल्लाह तआला अपने बन्दों को परेशानियों में मुब्तिला रखकर आज़माता है कि बन्दा अपने ईमान पर कितना मज़बूत और मेरी रज़ा पर कितना राज़ी है।

इन्सान के ईमान और नेकियों में जिस क़दर इज़ाफ़ा होता है उसी क़दर उस पर मुसीबतो परेशानियों का नुजूल होता है और उसकी मज़ीद आज़माइश होती है और जब वो सब्र और ज़ब्त से काम लेता है और अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहता है तो अल्लाह तआ़ला उसे तमाम परेशानियों से निजात अ़ता फ़रमाता है और उसके दरजात को बुलन्द करता है और वो राहतों और मशर्रतों से बहरावर हो जाता है और फिर वो कुर्बे इलाही की मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो जाता है और ये उसके हक़ में बेहतर साबित होता है और अल्लाह तआ़ला अपने मुकर्रब बन्दों को दुनियाँ व आख़िरत में किसी तरह का अ़ज़ाब नहीं देता।

—: दुनियाँ की मज़म्मत :—

कुरान मजीद व अहादीस मुबारका में दुनियाँ की बहुत ज़्यादा मज़म्मत आयी है और हक़ीक़त में दुनियाँ मज़म्मत (बुराई) के लायक़ ही है क्योंकि दुनियाँ की मुहब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है और इसकी ख़्वाहिश परेशानियों की बुनियाद है जो बन्दों को अल्लाह तआला के रास्ते से हटाकर गुनाहों की तरफ़ माइल करती है और दुनियाँ (यानी ज़मीन और जो कुछ उसमें मौजूद है) इन्सान को अपनी तरफ़ इस क़दर खींचती है कि इन्सान इस दुनियाँ को ज़्यादा से ज़्यादा हासिल करने की फ़िक्र में दिन रात लगा रहता है और मशक़्क़त व परेशानियों को उठाते हुये दुनियाँ को हासिल करता है और दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत में इन्सान इतना मुब्तिला हो जाता है कि वो अच्छा बुरा और हलाल व हराम में इम्तियाज़ नहीं रखता बल्कि वो हर सूरत इस दुनियाँ को हासिल करना चाहता है और वो इस तरह अल्लाह तआला का रास्ता छोड़कर शैतान के रास्ते पर चल पड़ता है हालाँकि इन्सान बख़ूबी जानता है कि जिस दुनियाँ से वो मुहब्बत करता है उस दुनियाँ को छोड़कर एक दिन उसे जाना होगा दुनियाँ से उसका वुजूद ख़त्म हो जायेगा और वो ख़ाक के सुपुर्द हो जायेगा और क़यामत तक उसी ख़ाक में रहेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ महबूब तुम फ़रमादो कि दुनियाँ का बरतना थोड़ा है और डर वालों (यानी परहेज़गारों) के लिये आख़िरत अच्छी है और तुम पर तागे बराबर भी ज़ुल्म न होगा (सू0—निसा—77)

इरशादे बारी तआला है—
दुनियाँ की ज़िन्दगी थोड़ी मुद्दत का नफ़ा है और दरअस्ल (हक़ीक़त में) आख़िरत ही हमेशा ठहरने की जगह है। (सू0—मोमिन—39)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दुनियाँ की मुहब्बत तमाम गुनाहों की असल है।
(शुअ़बुल ईमान—7/338)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
दुनियाँ की ज़िन्दगी मुसाफ़िर की तरह गुज़ारो और खुद को क़ब्र वालों में शुमार करो। (मिश्कात–450)

जिस तरह कोई खूबसूरत औ़रत जो अपने हुस्नो जमाल के बाइस लोगों को अपनी तरफ़ माइल करती है लेकिन जब उसकी हक़ीक़त का पता चलता है कि उस औ़रत में बहुत सी बुराइयाँ हैं और ऐसी बीमारियाँ हैं जो उसकी सुहवत से दूसरों में पहुँच सकती हैं तो ऐसी औ़रतों से लोग नफ़रत करते हैं और दूर भागते हैं इसी तरह दुनियाँ की हक़ीक़त है कि उसकी ज़ैबो ज़ीनत देखकर हम उसकी तरफ़ फिर जाते हैं लेकिन असल में वो गुनाहों का रास्ता है जो हमें गुनाहों की तरफ़ ले जाता है और अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफ़िल कर देता है हत्ता कि इन्सान अपनी मौत व क़ब्र व क़यामत व अ़ज़ाबे इलाही से वे फ़िक्र हो जाता है दुनियाँ की तलब में इन्सान गुनाह पर गुनाह किये जाता है और बिल आख़िर वो क़ब्र के अंधेरों में गुम हो जाता है दुनियाँ पाने की तलब में इन्सान जितनी मेहनत व मशक़्क़त उठाता है अगर उसका आधा हिस्सा भी अल्लाह तआ़ला की इबादत और उसके ज़िक्र और नेक अ़मल के लिये सर्फ़ करे तो जन्नत और उसकी नेअ़मतों का मुस्तहिक़ बन जायेगा जो उसके पास हमेशा रहेगी और कभी वापस नही ली जायेगी।

कुरान मजीद में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त फ़रमाता है–
जो कुछ तुम्हारे पास है वो ख़त्म हो जायेगा और जो अल्लाह तआ़ला के पास है वो बाक़ी रहेगा। (सू0–नहल–96)

इरशादे खुदा वन्दी है–
बेशक़ जो लोग हमसे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और दुनियाँ की ज़िन्दगी पर राज़ी व खुश हैं और उस पर मुतमईन हो गये हैं और जो हमारी आयात से ग़ाफ़िल हैं उनका ठिकाना जहन्नुम है उन आमालों के बदले में जो वो कमाते रहे। (सू0–यूनुस–7)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
दुनियाँ मलऊ़न है और जो कुछ उसमें है वो भी लानत के क़ाबिल है सिवाये उसके जो अल्लाह तआ़ला के लिये है।
(सुनन इब्ने माजा–312)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स दुनियाँ से मुहब्बत करता है वो अपनी आख़िरत को नुकसान पहुँचाता है और जो आख़िरत से मुहब्बत करता है वो अपनी दुनियाँ को नुकसान पहुँचाता है तो फ़ना होने वाली पर बाक़ी रहने वाली को तरजीह दो (मुस्नद अहमद–7/165)

वो शख़्स बहुत बड़ा अहमक़ और कम अक़्ल है जो दुनियाँ की कसरत (यानी ज़्यादा मिलने) पर खुश होता है और अपनी उम्र के कम होने पर ग़मगीन नहीं होता हालाँकि उसके पास जो कुछ है वो उससे चला जायेगा और कोई भी दुन्यावी नेअ़मत उसके पास बाक़ी नहीं रहेगी सिवाय नेक आमाल के जो क़यामत तक उसके साथ रहेंगे।

हज़रत आदम अ़लैहस्सलाम ने जन्नत में जब उस दरख़्त के फल खाये जिसके लिये आपको मना किया गया था तो उस फल के खाने के बाद आपके पेट में हरकत हुई और आप अपनी हाजत को पूरा करने के लिए जन्नत में इधर उधर घूमने लगे लेकिन कहीं पर ऐसी जगह दिखाई नही दी जहाँ पर आप अपनी हाजत को पूरा करते फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ आदम तुम दुनियाँ में चले जाओ और आदम अ़लैहस्सलाम दुनियाँ में भेज दिये गये क्योंकि जन्नत में ग़लाज़त व नजासत के लिए अल्लाह तआ़ला ने कोई जगह नहीं बनाई इसके लिए तो दुनियाँ है जो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तमाम मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा ना पसंदीदा है दुनियाँ की मिसाल ऐसी है जैसे कोई खाने की चीज़ या कोई मीठा फल वग़ैराह जो खाने में लज़ीज़ और देखने में अच्छा होता है लेकिन जब वो सुबह को ग़लाज़त बन कर निकलता है तो हम उससे नफ़रत व घिन करते हैं इसी तरह दुनियाँ की हक़ीक़त है जो देखने में बहुत अच्छी मालूम होती है लेकिन असल में वो बहुत बुरी और क़ाबिले नफ़रत है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–
और काफ़िर दुनियाँ की ज़िन्दगी पर इतरा गये और दुनियाँ की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले कुछ भी नहीं मगर कुछ दिन का बरत लेना (सू0–रअ़द–26)

इरशादे बारी तआ़ला है—
जान लो कि दुनियाँ की ज़िन्दगी महज़ खेल और तमाशा है और ज़ाहिरी आराइश है और आपस में फख़्र और बढ़ाई मारना है और एक दूसरे पर माल व औलाद में ज़्यादती की तलब है इसकी मिसाल बारिश जैसी है कि जिसकी पैदावार किसानों को भली लगती है फिर वो खुश्क हो जाती है फिर तुम उसे पक कर ज़र्द होता देखते हो फिर वो रेज़ा रेज़ा हो जाती है। (सू0—हदीद—20)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया— अल्लाह तआ़ला ने दुनियाँ की मिसाल उस चीज़ के साथ दी है। जिससे इन्सान का खाना बदल जाता है (यानी पाख़ाना) (मुस्नद अहमद—3/452)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
दुनियाँ की मिसाल इन्सान से बयान की गई है पस देखो कि आदमी से क्या निकलता है अगरचा वो उसमें नमक और मसाला डाले लेकिन वो कहाँ जाता है (मुस्नद अहमद—5/136)

इरशादे बारी तआ़ला है—
पस इन्सान को चाहिए अपने खाने की तरफ़ देखे (और ग़ौर करे) (सू0—अ़बस—24)

एक रिवायत में है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम एक कूढ़े के ढ़ेर के पास खड़े हुये और उस ढ़ेर से एक सड़ा गला कपड़ा और एक हड्डी उठाई और फ़रमाया आओ देखो ये दुनियाँ है। (शुअ़बुल ईमान—7/327)

हदीस पाक में है सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन कुछ लोग ऐसे आयेंगें जिनके आमाल पहाड़ो जैसे होंगे (यानी बहुत ज़्यादा होंगे) और वो नमाज़ी रोज़दार और रात को शबे बेदारी करने वाले होंगे लेकिन हुक्मे इलाही होगा कि इन्हें जहन्नुम की तरफ़ ले जाओ क्योंकि वो दुनियाँ और उसकी आराइश से मुहब्बत रखने वाले होंगे।

इन्सान जिस दुनियाँ पर भरोसा करता है वही दुनियाँ उसे धोका देती है और जो कुछ उसके पास मौजूद होता है वो सब उससे छीन लेती है और इन्सान खाली हाथ सब कुछ छोड़कर चला जाता हैं और जो लोग दुनियाँ को अपनी ज़िन्दगी का अहम मक़सद बनाते और गुनाहों को अपना अ़मल बनाते हैं वो आख़िरत में ज़लील व रुसवा होंगे और दोज़ख़ की आग उनका ठिकाना होगी।

दुनियाँ में अगर हमारा कोई माली नुकसान हो जाये तो हम परेशान हो जाते हैं लेकिन दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत के सबब हम जन्नत से दूर और जहन्नुम के क़रीब जा रहे हैं इस बात पर हम ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और न हम परेशान होते हैं क्या ये हमारी कम अक़्ली और हिमाक़त की दलील नहीं।

हमें उस दोज़ख़ की आग से हर वक़्त डरना चाहिये जो हज़ारों साल से दहक रही है जब हम दुनियाँ की आग को एक लम्हें के लिये बर्दास्त नहीं कर सकते तो उस आग को कैसे बर्दास्त करेंगे हालाँकि हमें मालूम है कि अल्लाह तअ़ाला के सिवा हर चीज़ फ़ना हो जायेगी तो फिर दुनियाँ की हैसियत क्या है इसलिये हमें चाहिये कि हम सिर्फ़ वही काम करें जिससे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की हमें खुशनूदी हासिल हो और वो हमसे राज़ी हो जाये और कोई ऐसा काम न करें जो अल्लाह तअ़ाला की नाराज़गी का सबब बनें।

कुरान मजीद में अल्लाह तअ़ाला इरशाद फ़रमाता है–
और जो दुनियाँ की ज़िन्दगी और उसकी आराइश चाहता है हम उसे दुनियाँ में पूरा फल देंगे और कुछ भी कमी न करेंगे लेकिन आख़िरत में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा और उनके लिये आग है और उनके आमाल जो वहाँ करते थे सब अकारत गये।
(सू0–हूद–15–16)

इरशादे खुदा वन्दी है–
और काफ़िरों के लिये ख़राबी है एक सख़्त अ़ज़ाब से जिन्हें आख़िरत से दुनियाँ की ज़िन्दगी प्यारी है (सू0–इब्राहीम–2,–3)

रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
दुनियाँ उसका घर है जिसका (आख़िरत में) घर नहीं और (दुनियाँ)

उसका माल है जिसका कोई दूसरा माल नहीं और दुनियाँ के लिये वो आदमी जमा करता है जिसके पास अक़्ल नहीं और इस पर वो दुश्मनी करता है जो जाहिल है और इस पर वो हसद करता है जिसके पास समझ नहीं और इस दुनियाँ के लिये वही कोशिश करता है जिसके पास यक़ीन नहीं। (शुअ़बुल ईमान–7/375)

एक रिवायत में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम एक मुर्दार बकरी के पास से गुज़रे और फ़रमाया–क्या तुम जानते हो कि ये मुर्दा बकरी अपने मालिक के नज़दीक कितनी हक़ीर है सहाबाकिराम रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया इस बकरी को हक़ारत की वजह से ही इसके मालिक ने इसे यहाँ फेंका है आपने इरशाद फ़रमाया–उस ज़ात की क़सम जिसके कब्ज़े कुदरत में मेरी जान है जिस क़दर ये मुर्दा बकरी अपने मालिक के नज़दीक हक़ीर (बुरी) है इसी क़दर अल्लाह तआ़ला के नज़दीक दुनियाँ इससे भी ज़्यादा हक़ीर है और अगर अल्लाह तआ़ला के नज़दीक दुनियाँ मच्छर के पर के बराबर भी होती तो इस दुनियाँ से काफ़िर को एक घूँट पानी भी न मिलता। (मुस्तदरक हाकिम–4/306)

हदीस पाक में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया मेरे बाद ज़रुर दुनियाँ तुम्हारे पास आयेगी जो तुम्हारे ईमान को इस तरह खायेगी जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है हजरत मूसा अ़लैहस्सलाम एक शख़्स के पास से गुज़रे तो वो रो रहा था और जब वो वापस आये तब भी वो शख़्स रो रहा था हजरत मूसा अ़लैहस्सलाम ने अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब तेरा बन्दा तेरे ख़ौफ़ की वजह से रो रहा है ऐ मेरे रब इसे बख़्श दे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ मूसा अगर इस शख़्स के आँसुओं के साथ साथ इसका दिमाग़ भी बहना शुरु हो जाये और वो हाथों को दुआ के लिये उठाये हत्ता कि वो गिर जायें तब भी मैं इसे नहीं बख़्शूँगा क्योंकि वो दुनियाँ से मुहब्बत करता है इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला दुनियाँ से मुहब्बत और रग़बत रखने वाले शख़्स से सख़्त नाराज़ रहता है।

हज़रत अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम फ़रमाते हैं कि आदमी को चाहिऐ कि अल्लाह तआ़ला को पहचाने और उसकी

इबादत करे और शैतान को पहचाने और उससे बचने की हर मुमकिन कोशिश करे और शैतान की बात न माने और हक़ को पहचाने और उसके पीछे चले और बातिल को पहचाने और उससे बचे और दुनियाँ को पहचाने और उसे छोड़ दे और आख़िरत को पहचाने और उसकी तलब में नेक अ़मल करे और अपने रब का ज़िक्र बुलन्द करे एक बार कलमये तौहीद का पढ़ना दुनियाँ और जो कुछ उसमें है उससे बेहतर है तो ज़रा सोचो जब एक बार कलमये तौहीद का पढ़ना तमाम दुनियाँ से बेहतर है तो जब हम कसरत से अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करेंगे तो कितना ज़्यादा सबाब पायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला का इरशादे गिरामी है— हर जान मौत का मज़ा चख़ने वाली है और तुम्हारे अज्र पूरे के पूरे तो क़यामत के दिन ही दिये जायेंगे पस जो कोई दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया वो वाक़ई कामयाब हुआ और दुनियाँ की ज़िन्दगी तो धोके के माल के सिवा कुछ भी नहीं है। (सू0—आले इमरान—185)

इरशादे बारी तआ़ला है—
ये वो लोग हैं जिन्होने आख़िरत के बदले दुनियाँ की ज़िन्दगी ख़रीदी तो उन पर से न अ़ज़ाब हल्का होगा और न उनकी मदद की जायेगी (सू0—बक़राह—86)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बेशक अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तमाम मख़लूक़ में दुनियाँ सबसे बुरी और क़ाबिले नफ़रत है और अल्लाह तआ़ला ने जब से इसको पैदा फ़रमाया कभी इस पर नज़रे रहमत नहीं की।
(शुअ़बुल ईमान—7/338)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि मुझे काई ऐसा अ़मल बताइये कि अल्लाह तआ़ला मुझसे मुहब्बत करे आपने इरशाद फ़रमाया दुनियाँ से बे रग़बत हो जा और इस अद्ना माल को लोगों की तरफ़ फेंक दे अल्लाह तआ़ला तुझ से मुहब्बत करेगा (सुनन इब्ने माजा—311)

जिस माल या जिस चीज़ के हम आज मालिक हैं फिर एक दिन

कोई दूसरा उसका मालिक होगा फिर दूसरे के बाद कोई तीसरा उसका मालिक होगा यानी हर चीज़ के मालिक बदलते रहते हैं और हक़ीक़तन हम किसी चीज़ के मालिक नहीं हैं बल्कि हम सिर्फ़ इस्तेमाल करते और छोड़ते हैं असल में हर चीज़ का हक़ीकी मालिक तो रब्बुल आ़लमीन है जिसने तमाम मख़लूक़ को पैदा किया तो जब हम किसी चीज़ के मालिक ही नहीं तो हमारा अपना क्या है जो हम उससे मुहब्बत करें और उससे रग़बत रखें अगर हमारा अपना ज़ाती मिल्कियत में अगर कुछ है तो वो सिर्फ़ हमारे नेक आमाल हैं जो हमने अपने रब की रज़ा के लिये इख़लास के साथ किये हैं और यही हमारे दोस्त और साथी हैं जो क़यामत तक हमारा साथ नहीं छोड़ेंगे और हमें अ़ज़ाब से बचाने में हमारे मददगार साबित होंगे।

दुनियाँ उस वक़्त भी थी जब दुनियाँ में हमारा वुजूद नहीं था और उस वक़्त भी होगी जब हमारा वुजूद न होगा तो हम इस दुनियाँ से मुहब्बत और रग़बत क्यों रखें जो असल में हमारी है ही नहीं और जो हमारा साथ नहीं दे सकती और एक दिन वो हमें धोका देगी और हमारा साथ छोड़ देगी।

दुनियाँ की असल तस्वीर वाज़ेह होने के बावजूद भी हम दुनियाँ को हासिल करने में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ कर देते हैं और बहुत बड़े ख़सारे में चले जाते हैं और नतीजा ये होता है कि दुनियाँ की तलब में न तो नेक आमाल हमारे पास होते हैं और न दुनियाँ का साथ होता है और दोनो चीज़ों के वग़ैर खाली हाथ हम दुनियाँ से कूच कर जाते हैं और अ़ज़ाबे क़ब्र व अ़ज़ाबे क़यामत और अ़ज़ाबे जहन्नुम के मुस्तहिक़ बन जाते हैं।

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि दुनियाँ को तीन हिस्सों में तक़सीम किया गया है मोमिन अपने हिस्से से अपनी आख़िरत बनाता है और मुनाफ़िक़ अपने हिस्से से ज़ाहिरी ज़ीनत इख़्तियार करता है और काफ़िर दुनियाँ से नफ़ा उठाता है और इन्सान को ये भी पता नही होता कि वो कहाँ फ़ौत होगा और कहाँ दफ़न होगा और कफ़न नसीब होगा या नहीं होगा हत्ता कि इन्सान शाम को खाता है और सुबह को क़ब्र में होता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
जो आख़िरत की खेती चाहे हम उसके लिये उसकी खेती में बढ़ायेंगे और जो दुनियाँ की खेती चाहे हम उसे दुनियाँ की खेती में बढ़ायेंगे लेकिन आख़िरत में उनका (यानी दुनियाँ की खेती चाहने वालों का) कोई हिस्सा न होगा (सू0—शूरा—20)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और (ऐ लोगो) ये दुनियाँ की ज़िन्दगी खेल और तमाशे के सिवा कुछ नहीं है और हकीक़त में आख़िरत का घर ही सच्ची ज़िन्दगी है काश वो लोग (ये राज़) जानते होते। (सू0—अ़नकबूत—64)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अपने दिलों को दुनियाँ के ज़िक्र में मशगूल न रखो।
(शुअ़बुल ईमान—7/361)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
उस शख़्स पर बहुत तअ़ाज्जुब है जो आख़िरत के घर की तसदीक़ करता है लेकिन धोके वाले घर दुनियाँ की कोशिश करता है।
(दुर्रे मन्सूर—5/149)

दुनियाँ दोस्त के लिबास में दुश्मन है अक्सर लोग माल की वजह से फ़ित्नों में मुब्तिला हो जाते हैं हज़रत मालिक बिन दीनार (रह0) फ़रमाते हैं कि इन्सान जिस क़दर दुनियाँ से मुहब्बत करता है या दुनियाँ के लिये जितना ग़मगीन होता है उसी मिक़दार में उसके दिल से आख़िरत की फ़िक्र निकल जाती है क्योंकि मोमिन के दिल में दुनियाँ और आख़िरत दोनो जमा नहीं होतीं हज़रत सईद बिन मसऊ़द (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि जब तुम किसी बन्दे को देखो कि उसकी दुनियाँ में इज़ाफ़ा हो रहा है और आख़िरत में कमी हो रही है और वो इस हालत पर राज़ी है तो वो शख़्स बहुत बड़े नुकसान में है।

हर मुसलमान जानता है कि मौत हक़ है योमे हिसाब हक़ है क़ब्र व दोज़ख़ व जन्नत सब हक़ हैं फिर भी दुनियाँ की लज्ज़तों से अपना दिल लगााता है और दुनियाँ के हासिल होने पर बहुत खुश होता है

और दुनियाँ हासिल करने की तलब में किसी चीज़ की परवाह नहीं करता और कसीर माल पर भी क़नाअ़त नहीं करता और उसकी उम्मीदें कभी पूरी नहीं होतीं और अपनी आख़िरत के लिये जमा नहीं करता बल्कि चन्द दिनों की ज़िन्दगी के लिये जमा करता है और उसका एक ही मक़सद होता है कि दुनियाँ को ज़्यादा से ज़्यादा हासिल करे हालाँकि दुनियाँ चन्द दिनों तक ही इन्सान का साथ देती है।

हज़रत हसन बसरी (रह0) फ़रमाते हैं दुनियाँ को ज़लील जानो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की क़सम इससे ज़्यादा ज़िल्लत के क़ाबिल कोई चीज़ नहीं। अल्लाह तआ़ला जब किसी शख़्स के लिये भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे अ़तिया देने के बाद रोक लेता है और जब वो ख़त्म हो जाता है तो दोबारा देता है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ज़लील होता है तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये दुनियाँ को कुशादा कर देता है यानी उसे दुनियाँ में बहुत ज़्यादा माल और नेअ़मतें देता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
दुनियाँ की ज़िन्दगी उसके मिस्ल है जैसे हमने आसमान से पानी उतारा तो उसके सबब ज़मीन से उगने वाली चीज़े सब घनी होकर निकली जिनको आदमी और चौपाये खाते हैं यहाँ तक कि ज़मीन ने अपना सिंगार कर लिया और खूब आरास्ता हो गई फिर उसके मालिक ने रात और दिन में उसको काट दिया कि जैसे कल थी ही नहीं यूँ हीं हम मुफ़स्सल आयतें बयान करते हैं ग़ौर करने वालों के लिये। (सू0—यूनुस—24)

इरशादे बारी तआ़ला है—
ये इसलिये कि उन्होने दुनियाँ की ज़िन्दगी को आख़िरत से प्यारी जानी और इसलिये अल्लाह तआ़ला ऐसे काफ़िरों को राह नहीं देता। (सू0—नहल—107)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
आख़िरत के मुक़ाबले दुनियाँ इस तरह है कि तुम में से कोई समुन्दर

में उँगली डाले फिर देखे कि उँगली कितना पानी लेकर आयी है (सही मुस्लिम–2/384)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स चाहता है कि अल्लाह तआ़ला उसे वग़ैर सीखे इ़ल्म दे और हिदायत हासिल किये वग़ैर हिदायत दे तो उसे चाहिये कि दुनियाँ से बे रग़बती इख़्तियार करे। (अल इसरारुल मरफ़ूआ–216)

हजरत अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम फ़रमाते हैं कि दुनियाँ की मिसाल एक साँप की तरह है जिसका जिस्म मुलायम होता है जो आसानी से छुआ जा सकता है लेकिन उसका ज़हर इन्सान को हलाक कर देता है और जो शख़्स दुनियाँ की मुहब्बत और उसकी ख़्वाहिश में दुनियाँ के पीछे चलता है उस शख़्स के लिये दुनियाँ से छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है क्योंकि दुन्यावी नेअ़मतें आने के बाद जब वो जाती हैं तो वो परेशान हो जाता है और दोबारा हासिल करने की फ़िक्र में लगा रहता है।

दुनियाँ एक ख़्वाब की तरह है कि इन्सान जब ख़्वाब देखता है तो उसको हक़ीक़त जानता है लेकिन जब वो नींद से बेदार होता है तो उस ख़्वाब से उसका तआ़ल्लुक़ मुनक़ताअ़ हो जाता है और दुनियाँ की हक़ीक़त भी ख़्वाब की तरह है कि जब वो क़ब्र में होगा तो उसके लिये दुनियाँ की ज़िन्दगी ख़्वाब के मिस्ल होगी।

दुनियाँ सफ़र की जगह है ठहरने की जगह नहीं है ठहरने की जगह तो आख़िरत है और अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को दुनियाँ में इ़बादत और नेक अ़मल के लिये पैदा फ़रमाया है और फिर उसे इम्तिहान व आज़माइश में डाला ताकि वो देखे कि कौन कैसे अ़मल करता है और उसी के मुताबिक़ उसके लिये जन्नत और दोज़ख़ का फ़ैसला करेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
क्या तुम आख़िरत के मुक़ाबले में दुनियाँ की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये पस दुनियाँ की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुक़ाबले में थोड़ा है। (सू0–तौबा–38)

इरशादे बारी तआ़ला है–
तो वो जिसने सरकशी की और दुनियाँ की ज़िन्दगी को तरजीह दी तो बेशक उसका ठिकाना जहन्नुम है। (सू0–नाज़ियात–37,–38)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– दुनियाँ से बे रग़बती इख़्तियार करो अल्लाह तआ़ला तुमसे मुहब्बत करेगा। (सुनन इब्ने माजा–311)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– जिस आदमी ने यूँ सुबह की कि उसका सबसे बड़ा मक़सद दुनियाँ को हासिल करना है तो ऐसे शख़्स का अल्लाह तआ़ला के साथ कोई तआ़ल्लुक़ नहीं। (मुस्तदरक हाकिम–4/317)

इन्सान अपनी मौत से ग़ाफ़िल हो जाता है लेकिन मौत उससे कभी ग़ाफ़िल नहीं होती और वो अपने वक़्त मुक़र्ररा पर ज़रुर आती है और इन्सान की तमाम उम्मीदें धरी की धरी रह जाती हैं और अगर दुनियाँ में नेक अ़मल न किये तो सिवाये पछताबे के उसके हाथ कुछ भी नहीं आता।

इसलिये हमें चाहिये कि अपनी ज़रुरतों के मुताबिक़ दुनियाँ को हासिल करें और उसका इस्तेमाल करें लेकिन ये ख़्याल हमेशा ज़हन में रखें कि इसे छोड़कर हमें जाना है और दुन्यावी नुकसानात और तकलीफो पर ग़म न करें बल्कि सब्र व तहम्मुल और शुक्र पर हमेशा क़ायम रहें और दुनियाँ के मिलने पर ज़्यादा खुश न हों क्योंकि ज़्यादा खुशी का इज़हार दुनियाँ की मुहब्बत की दलील है।

तमाम अम्बियाएकिराम व औलियाएइज़ाम और बुज़ुर्गाने दीन हमेशा दुनियाँ से बे रग़बत रहे हज़रत सुलैमान अ़लैहस्सलाम अपनी सल्तनत में लोगो को लज़ीज़ खाना खिलाते थे लेकिन खुद जौ की रोटी खाते थे लज़ीज़ खानों पर कुदरत होने के बावजूद सब्रो ज़ब्त करना बहुत मुश्किल है हमारे आक़ा सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का कई कई दिनों का फ़ाक़ा होता था और आप अपने बतने (पेट) मुबारक पर पत्थर बाँधते थे, पैबन्द लगे हुए कपड़े पहनते थे और एक गद्दा था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी।

और आप उस पर आराम फ़रमाते थे हालाँकि अगर आप चाहते तो तमाम दुनियाँ में कौन सी ऐसी नेअ़मत थी जो आप के क़दमों तले न होती लेकिन आप ने हमेशा दुनियाँ को ना पसन्द फ़रमाया और इससे बे रग़बत रहे इसलिये हमें चाहिये कि अपने हर मामलात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करें और उनके तमाम फ़ेअ़ल और सुन्नतों को अ़मल में लायें और दुनियाँ की मुहब्बत के बजाय अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से बेहद मुहब्बत करें जैसा कि हम पर हक़ है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
ऐ महबूब तुम फ़रमादो अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा कुंबा और तुम्हारी कमाई के माल और वो सौदा जिसके नुकसान का तुम्हें डर है और तुम्हारी पसन्द के मकान ये चीज़े अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हैं तो इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपना हुक्म (यानी अ़ज़ाब) लाये और अल्लाह तआ़ला फ़ासिक़ों को राह नहीं देता (सू0–तौबा–24)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और अल्लाह तआ़ला जिसको हिदायत देने का इरादा फ़रमाता है तो उसका सीना इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसको गुमराही पर रखने का इरादा फ़रमाता है तो उसका सीना घुटन के साथ तंग कर देता है। (सू0–अनआ़म–125)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया–
धोके वाले घर (यानी दुनियाँ) से दूर रहो और हमेशा रहने वाले घर (यानी जन्नत) की तरफ़ रुजूअ़ करो और मौत आने से पहले उसकी तैयारी करो। (मुस्तदरक हाकिम–4/311)

बाज़ लोगों का मक़सद ये होता है कि ज़्यादा से ज़्यादा माल कमायें और लज़ीज़ खाने खायें और बेश क़ीमती उम्दाह लिबास पहनें और ऐशो आराम के सभी सामान मौजूद हों ताकि लोगों में हम मुअज़्ज़ज़ हो जायें और लोग हमारी तारीफ़ व ताज़ीम करें और वो अपने मकानात को बहुत खूबसूरत बनाते और फिर कई तरह की चीज़ों से

उसे सजाते हैं ताकि लोग उन्हें मालदार और इज़्ज़दार गुमान करें और मेरे मकानात को देखें और उसकी ज़ैबो ज़ीनत की तारीफ़ करें और वो इस बात पर बहुत फख़्र और खुशी महसूस करते हैं और इसके सबब वो रात दिन माल कमाने के लिये मेहनत व मशक़्क़त उठाते हैं और दुनियाँ हासिल करने की मसरुफ़ियत के बाइस वो रब तआ़ला की याद से ग़ाफ़िल हो जाते हैं और वो दुनियाँ में आने का मक़सद सिर्फ़ दुनियाँ को हासिल करना समझते हैं और वो शैतान के जाल में फंसकर खुद को जहन्नुम की तरफ़ ले जाते हैं।

इस फ़ानी दुनियाँ से इन्सान के लिये दो रास्ते निकलते हैं एक दोज़ख़ की तरफ़ जाता है और एक जन्नत की तरफ़ जाता है अब इन्सान की मर्ज़ी कि वो जिस रास्ते को चाहे उसे मुन्तख़ब करे और दुनियाँ की मुहब्बत दोज़ख़ का रास्ता है और दुनियाँ से बे रग़बती और आख़िरत से मुहब्बत जन्नत का रास्ता है और दुनियाँ आज़माइश और मुसीबतों का घर है और आख़िरत सआ़दत व राहतों और मशर्रतों का मक़ाम है और जो शख़्स दुनियाँ से मुहब्बत व रग़बत रखता है और उसकी ज़ैबो ज़ीनत में मसरुफ़ होता है उसके दिल से आख़िरत का ख़ौफ़ निकल जाता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स हलाल दुनियाँ (यानी माल) इसलिये हासिल करता है कि उसे बढ़ाये और दूसरों पर फख़्र करे तो वो अल्लाह तआ़ला से क़यामत के दिन इस तरह मुलाक़ात करेगा कि अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़बनाक होगा और जो शख़्स माँगने से बचे और अपनी इज़्ज़त और नफ़्स को महफ़ूज़ रखने के लिये (माल) तलब करता है तो क़यामत के दिन इस तरह आयेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह होगा। (शुअ़बुल ईमान–7/298)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
तुम्हारे बाद ऐसी क़ौम आयेगी जो कसीर (ज़्यादा) माल के बावजूद क़नाअ़त नहीं करेंगे (यानी ज़्यादा माल पर भी राज़ी न होंगे) मज़ीद क़िस्म क़िस्म के कपड़े पहनेंगे खूबसूरत औरतों से निकाह करेंगे और उनके पेट थोड़ी चीज़ से सेर नही होंगे और उसी को अपना रब और माअ़बूद समझेंगे और उसी की बात मानेंगे और ख़्वाहिशात

की पैरवी करेंगे तो जो आदमी ऐसे ज़माने को पाये तो वो तुम्हारी औलाद से हो या औलाद की औलाद से हो जब ऐसे लोगों को पाओ तो उन्हें सलाम न करना और अगर बीमार हो जायें तो बीमार पुर्सी न करना और अगर मर जायें तो उनके जनाज़ों में शरीक न होना और अगर किसी ने इसके बरअ़क्स (ख़िलाफ़) काम किया तो गोया उसने दीन को ढ़ाने में मदद की।
(मुअ़जम कबीर तिबरानी–8/127)

दो चीज़े दुनियाँ में ऐसी होती हैं जिससे इन्सान को फ़ायदा हासिल होता है एक इल्म का सीखना और दूसरा नेक अ़मल और इसके अलावा दुनियाँ से सिर्फ़ उतना ही हासिल करे जितने में उसकी जाइज़ ज़रुरतें पूरी हो जायें जैसे खाना, लिवास और मकान और वो चीज़ें जिनकी ज़रुरत जिन्दगी गुज़ारने में दरपेश आती हैं और ज़रुरत से ज़्यादा की तलब इन्सान को राहे खुदावन्दी से गुमराह कर सकती है क्योंकि ज़्यादा माल पाने की तलब में इन्सान इतना मसरुफ़ हो जाता है कि उसे जो तमाम नेअ़मतें रब तआ़ला ने अ़ता की हैं उन नेअ़मतों के देने वाले रब्बुल आ़लमीन को ही भूल जाता है और ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाता है।

इसलिये हर शख़्स को चाहिये कि अपनी ज़रुरत के मुताबिक़ रोज़ी कमाये और उतना खाना खाये जितने में उसका पेट भर जाये और हद से ज़्यादा न खाये बल्कि भूक से कम खाये और दिखावे का लिवास न पहने बल्कि जिस्म को ढ़कने की नीयत से लिबास पहने और मकान को दिखावे की नीयत से तामीर न करे बल्कि गर्मी सर्दी, धूप, बरसात और चोरों से हिफ़ाज़त के लिये तामीर करे और अपने घरों में ज़िक्रे इलाही बुलन्द करे और कसरत से कुरान मजीद की तिलावत करे और अल्लाह तआ़ला के तमाम अहकामात पर अ़मल पैरा हो जाये और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की इताअ़त और सुन्नतों पर अ़मल करे और दुनियाँ से बे रग़बती इख़्तियार करे क्योंकि दुनियाँ को इन्सान के लिये पैदा किया गया है और इन्सान को आख़िरत के लिये पैदा किया गया है और मौत ख़ात्मे का नाम नहीं बल्कि दुनियाँ की महबूब चीज़ों से दूर करके बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िर होने का नाम है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स का सीना इस्लाम के खोल देता है वो अपने रब की तरफ़ से नूर पर (फ़ाइज़) होता है पस उन लोगों के लिये हलाकत है जिनके दिल अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से (महरुम होकर) सख़्त हो गये हैं यही लोग खुली गुमराही में हैं।
(सू0—ज़ुमर—22)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दुनियाँ मोमिन के लिये क़ैदखाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है (सही मुस्लिम—2/407)

हजरत ग़ौसुल आज़म अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ि0) फ़रमाते हैं जब तुम दुनियाँ को दुनियाँ वालों के हाथों में इस तरह देखो कि वो अपनी बातिल खूबसूरती और अपनी ज़ाहिरी नर्मी और अपनी बातिनी सख़्ती के बावजूद उन्हें अपने झूठ और फ़रेब का शिकार बनाकर उनको हलाकत में डाले हुए है और उनके हक़ में पोशीदा क़ातिल बनी हुई है और वो लोग अपनों और ग़ैरों से बेगाना होकर ग़फ़लत और अहद शिकनी (वायदा ख़िलाफ़ी) का शिकार हो चुके हैं तो तुम उनको इस तरह देखो जैसे कोई बरहना (नंगा) शख़्स पाखाना कर रहा हो और उसके चारों तरफ़ बदबू फैली हो और तुम ये मन्ज़र देखकर अपनी आँखें और नाक बन्द कर लेते हो ठीक इसी तरह अहले दुनियाँ की ज़ैबो ज़ीनत देखकर अपनी आँखें बन्द कर लो और दुनियाँ की लज़्ज़ात और शहवात की बदबू से अपनी नाक बन्द कर लो ताकि तुम्हें दुनियाँ की आफ़ात से निजात मिल जाये फिर जो कुछ तुम्हारी क़िस्मत में होगा वो तुम्हें ज़रुर मिलकर रहेगा।

दुनियाँ और दुनियाँ की तमाम चीज़ो की मुहब्बत और लज़्ज़त को अपने क़ल्ब से निकाल देना और अपने दिलों में अल्लाह व रसूल की मुहब्बत रखना और अपनी आख़िरत के लिये नेक आमाल करना हर शख़्स के लिये इन्तिहाई ज़रुरी है और हमें चाहिये कि अपने तमाम अहवाल में अल्लाह व रसूल के हुक्म का ताबेअ़ रहें और अपनी तमाम दुन्यावी ख़्वाहिशात को फ़ना कर दें और अपने नफ़्स पर हमेशा ग़ालिब रहें और हमारा हर अ़मल अल्लाह व रसूल के हुक्म और रज़ा के मुताबिक़ हो ।

और अल्लाह तआ़ला की रज़ा पर राज़ी रहें और अपने हर मामलात में अपने रब को मुतवल्ली और कारसाज तसव्वुर व तसलीम करें जिस तरह जब बच्चा छोटा होता है तो उसकी देखभाल और उसकी परवरिश उसके माँ बाप करते हैं क्योंकि वो अपनी देखभाल और परवरिश खुद नहीं कर सकता है और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल (भरोसा) रखते हुये दुनियाँ से बे नियाज़ हो जाये।

दुनियाँ और आख़िरत की मिसाल ऐसी है जैसे नदी के दो किनारे तो जो शख़्स एक किनारे की तरफ़ जितना ज़्यादा क़रीब जायेगा तो वो दूसरे किनारे से उतना ही दूर हो जायेगा यानी जितना हम दुनियाँ के ज़्यादा क़रीब जायेंगे उतना ही आख़िरत से दूर हो जायेंगे और जितना हम आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये उसके क़रीब जायेंगे उतना ही हम दुनियाँ से दूर हो जायेंगे।

बाज़ लोग कहते हैं कि हम दुनियाँ और आख़िरत दोनो की बेहतरी चाहते हैं और उसी के मुताबिक़ अ़मल करते हैं और दोनो के तालिब और ख़्वाहिश मन्द हैं और दोनो को पाना चाहते हैं तो ऐसे लोग अहमक़ हैं जो बीच में खड़े होकर नदी के दोनो किनारों तक पहुँचना चाहते हैं हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्ल्म ने फ़रमाया जिसने दुनियाँ को पसन्द किया उसने आख़िरत का नुकसान किया और जिसने आख़िरत को पसन्द किया उसने दुनियाँ का नुकसान किया तो उसको इख़्तियार करो जिसका नफ़ा दायमी और पायेदार (मज़बूत) है और उसको छोड़ दो जो सिर्फ़ चन्द दिनों की है दुनियाँ से सिर्फ़ अपनी ज़रुरत के मुताबिक़ हासिल करें और उसी पर क़नाअ़त करें और फ़िज़ूल व ज़ायद व ग़ैर ज़रुरी अशया से इजतिनाब करें और सिर्फ़ ज़रुरत की अशया के तालिब रहें क्योंकि ज़रुरत से ज़्यादा किसी चीज़ की ख़्वाहिश व मशग़ूलियत इन्सान को धीरे–धीरे गुनाह व हराम की तरफ़ माइल करती है और उसका नफ़्स हिर्स व सरकशी और शहवात की तरफ़ उकसाता है और बन्दा गुनाहों में मुब्तिला हो जाता है।

—: माल की मज़म्मत :—

दुनियाँ में बे शुमार फ़ित्ने हैं जिसमें सबसे बड़ा फ़ित्ना माल है क्योंकि अगर माल न मिले तो इन्सान की मुहताजी उसे कुफ़्र के क़रीब ले जा सकती है और उसे गुमराह कर सकती है और अगर माल मिल जाये तो सरकशी का ख़तरा रहता है जिसका नतीजा सिवाय नुकसान के कुछ भी नही है और इसके फ़ायदे निजात देने वाले हैं और इसकी आफ़त गुनाहों में डालने वाली है और इससे वही फ़ायदा उठाता है जिसे अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ दे या जिसे दीन, व इल्म और उसकी समझ की तौफ़ीक़ अ़ता हो और माल के सबब अल्लाह तआ़ला इन्सानों को आज़माइश में डालता है कि मेरे दिये हुये माल को बन्दा किस तरह ख़र्च करता है और कितना मेरी राह में ख़र्च करता है और कितना फ़िज़ूल ख़र्च करता है और उस माल के बाइस वो अपनी आ़फ़ियत में मेरा शुक्र अदा करता है या नहीं और मेरे अ़ता कर्दा माल पर शुक्र गुजारी के साथ साथ क़नाअ़त करता है या नहीं लेकिन बाज़ लोगों की उम्मीदें और ख़्वाहिशात कभी ख़त्म नहीं होती हत्ता कि मौत का वक़्त आ जाता है और वो क़ब्र में दफ़न हो जाते हैं हदीस पाक में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया हर उम्मत के लिये एक फ़ित्ना है और मेरी उम्मत का फ़ित्ना माल है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब आज़माइश है।
(सू0—तग़ाबुन—15)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मुझे इस बात का डर नहीं कि तुम मेरे बाद शिर्क करने लगोगे बल्कि इस बात का डर है कि माल कि हिर्स में एक दूसरे से आगे बढ़ोगे। (सही बुख़ारी—2/585)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
कसरते माल की ख़्वाहिश नें तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया (और) इन्सान कहता है मेरा माल मेरा माल (हालाँकि) तेरा माल वही है जो तूने खाकर फ़ना कर दिया पहन कर पुराना कर दिया या सद्क़ा करके बाक़ी रखा। (मुस्नद अहमद—4/24)

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
ज़्यादा माल वाले हलाक हुये मगर जिसने अपना माल अल्लाह तआ़ला के बन्दों में इस तरह और उस तरह कर दिया (यानी सद्क़ा ख़ैरात किया) और ऐसे लोग बहुत कम हैं। (मुस्नद अहमद—2/525)

अल्लाह तआ़ला ने तमाम लोगों के दरमियान इख़्तिलाफ रखा है जो तमाम लोगों के लिये बाइसे रहमत है बाज़ लोग इस इख़्तिलाफ को समझ नहीं पाते या समझने की कोशिश नहीं करते अल्लाह तआ़ला ने किसी को मालदारी दी किसी को तंगी किसी को अमन चैन किसी को मुहताजी मायूसी और किसी को आ़फ़ियत (ऐशो आराम) और किसी को तकलीफ़ व परेशानी और किसी को राहत किसी को ताक़त किसी को आ़जिज़ लेकिन वो हर तरह से इन्सानो को आज़माता है कि कौन ज़्यादा अच्छा अ़मल करता है और कौन मेरा शुक्र गुज़ार है और कौन मेरी रज़ा पर राज़ी है और तमाम इन्सानों का हिसाब क़यामत के दिन होगा और ज़र्रा बराबर भी किसी पर जुल्म नहीं होगा जो लोग दुनियाँ में मसाइबो आलाम से दो चार होते है उनसे हिसाब आसान होगा बशर्ते कि वो सब्र व ज़ब्त पर क़ायम रहें क्योंकि जो दुनियाँ में मुसीबतो परेशानी उठाता है और सब्र करता है तो क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला उसे दोबारा परेशानी नहीं देगा और मालदारों पर जो ऐशो इशरत में रहे उन पर हिसाब सख़्त होगा अगर उन्होंने कसरत से नेक आमाल न किये।

क्योंकि अल्लाह तआ़ला किसी की सूरत या माल नहीं देखता बल्कि वो तो सिर्फ़ इन्सान के आमाल देखता है क्योंकि तमाम इन्सानों को बनाने वाला और उन्हें नेअ़मतें अ़ता करनें वाला रब्बुल आ़लमीन है जो तमाम जहानों को पैदा करने वाला मालिक है और कायनात के निज़ाम को चलाने वाला एक अकेला परवरदिगार है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दें और जो ऐसा करेगा वही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं। (सू0—मुनाफ़िक़ून—9)

इरशादे बारी तआ़ला है—
तुम्हें ज़्यादा माल पाने की तलब ने (आख़िरत से) ग़ाफ़िल कर दिया

यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुँचे हरगिज़ नहीं (माल व दौलत तुम्हारे काम नहीं आयेंगे) तुम अ़नक़रीब (इस हक़ीक़त को) जान लोगे फिर (आगाह किया जाता है) हरगिज़ नहीं अ़नक़रीब तुम्हें (अपना अंजाम) मालूम हो जायेगा हाँ हाँ काश तुम (माल व ज़र की हवस और अपनी ग़फ़लत के अंजाम को) यक़ीनी इल्म के साथ जानते (तो दुनियाँ में खोकर आख़िरत को इस तरह न भूलते) तुम (अपनी हिर्स के नतीजे में) दोज़ख़ को ज़रुर देखोगे फिर तुम उसे ज़रुर यक़ीन की आँख से देख लोगे फिर उस दिन तुमसे (अल्लाह की) नेअ़मतों के बारे में ज़रुर पूछा जायेगा कि तुमने उन्हें कहाँ कहाँ और कैसे कैसे ख़र्च किया था। (सू0—तकासुर—1—8)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में छोड दिये जायें तो वो उसको इतना तबाह और बर्बाद नहीं करेंगे जितना माल पाने की चाहत दीन को बर्बाद कर देती है। (मुअ़जम कबीर तिबरानी—19/96) (मिश्कात)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है क़यामत के दिन हर फ़क़ीर और मालदार इस बात को पसन्द करेगा कि काश दुनियाँ में ज़रुरत के मुताबिक़ रिज़्क मिलता।
(मुस्नद अहमद—6/19)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दो हरीस कभी सेर नहीं होते एक इल्म का हरीस और दूसरा माल की हिर्स रखने वाला। (कंज़ुल उ़म्माल—10/179)

ज़्यादा माल पाने की ख़्वाहिश इन्सान को गुनाहों के दलदल में ले जाती है और इन्सान कई तरह के गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है ज़्यादा माल के सबब इन्सान के अन्दर तकब्बुर पैदा हो जाता है और वो खुद को मुअज़्ज़ज़ और लोगों को हक़ीर जानता है और ज़्यादा माल पाने की तलब उसे हिर्स की तरफ़ ले जाती है क्योंकि उससे ज़्यादा जब किसी दूसरे पर माल होता है तो वो हसद करता है और उससे ज़्यादा माल हासिल करने की तलब उसे हरीस बना देती है और वो गुनाहगार हो जाता है और लोगों में अपनी तारीफ़ व वाहवाही और इज़्ज़त पाने के सबब वो ऐसे काम करता है जिसमें

दिखावा शामिल होता है और वो इस तरह रियाकारी का गुनाह कर बैठता है हत्ता कि वो अपनी आख़िरत के बजाय दुनियाँ बनाने में लग जाता है और आख़िरत का ख़्याल उसके दिल से निकल जाता है और वो अपनी आख़िरत बर्बाद कर लेता है और उसके गुनाह उसे जहन्नुम की तरफ़ ले जाते हैं।

मोमिन का दिल उसके माल के साथ होता है अगर उसने आगे भेज दिया तो उससे मिलना चाहता है और अगर आगे न भेजा तो उसके साथ रहना चाहता है हज़रत हसन बसरी (रह0) फ़रमाते हैं कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की क़सम जो शख़्स दिरहम (रुपया पैसा) की इ़ज़्ज़त करता है अल्लाह तआ़ला उसे ज़लील कर देता है कहा गया है कि जब दिरहम व दीनार तैयार हुये तो शैतान ने उनको उठाकर अपनी पेशानी पर रखा फिर उनको बोसा दिया और कहा जिसने तुम दोनों से मुहब्बत की हक़ीक़त में वही मेरा गुलाम है।

इसलिये हमें चाहिये कि हलाल माल को सही मक़सद के लिये जाइज़ तरीक़े से हासिल करें और जाइज़ ज़रुरतों पर ख़र्च करें और फ़िज़ूल ख़र्ची से बचें और न कंजूसी करें बल्कि एतदाल पर रहें यानी न हद से ज़्यादा और न हद से कम ख़र्च करें और अल्लाह तआ़ला की राह में ज़्यादा से ज़्यादा ख़र्च करें क्योंकि अल्लाह तआ़ला की राह में जो माल ख़र्च किया जाता है वही माल क़यामत तक हमारा साथी होता है और बाद मौत भी हमारा साथ नहीं छोड़ता और सद्क़ा ख़ैरात भी कसरत से करें और अपने घर वालों पर खर्च करें और मेहमानों और मुहताजों ग़रीबों और मिस्कीनों पर ख़र्च करें और मुसलमान भाइयों की ज़रुरतों पर ख़र्च करें और हाजतमंद की हाजत पर उसकी माली मदद करें और मसाजिद और मदारिस में ज़्यादा से ज़्यादा दें और अपने माल की पूरी ज़कात अदा करें।

जो शख़्स कसरत से अल्लाह तआ़ला की राह में ख़र्च करता है वो सख़ी होता है और अल्लाह तआ़ला सख़ी शख़्स को बहुत ज़्यादा पसंद फ़रमाता है और ज़रुरत से ज़्यादा माल की तलब और उसका हासिल करना बहुत बड़ी आफ़त और बबाल है क्योंकि ज़रुरत से ज़्यादा माल अक्सर लोगों को गुनाहों की तरफ़ ले जाता है और

अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की नाफ़रमानी का सबब बनता है।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अगर इन्सान के पास सोने की दो वादियाँ हों तो वो तीसरी वादी की ख़्वाहिश करता है और इन्सान के पेट को मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती। (सही मुस्लिम—1/335)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
मुर्दों की मजलिस से बचा करो आप से अ़र्ज किया गया कि मुर्दों से मुराद कौन लोग हैं आप ने इरशाद फ़रमाया मालदार (बुरे) लोग (जामअ़ तिर्मिज़ी—269)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से अ़र्ज़ किया गया कि आप की उम्मत के बुरे लोग कौन हैं आपने इरशाद फ़रमाया मालदार लोग (जो राहे खुदा में ख़र्च नहीं करते) (शुअ़बुल ईमान—5/33)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हैं—
जिस माल के ज़रिये आदमी अपनी इ़ज़्जत की हिफ़ाज़त करता है वो सद्क़ा लिखा जाता है (बैहकी—10/244)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
उस शख़्स के लिये खुशख़बरी है जिसे इस्लाम की तरफ़ रहनुमाई हासिल हुई और उसका रिज़्क उससे किफ़ायत करता है और वो उस पर क़नाअ़त करता है। (मुस्नद अहमद—6/19)

अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के नज़दीक कोई शख़्स मालो दौलत का ज़ख़ीरा जमा करने से नेक व मुअज़्ज़ज़ और ग़नी नहीं होता बल्कि कसीर नेकियों को जमा करने और अल्लाह तआ़ला के अहकामात पर अ़मल पैरा होने से नेक और ग़नी और मुअज़्ज़ज होता है और ज़रूरत से ज़्यादा माल की तलब व हिर्स इन्सान की परेशानियों और गुनाहों में इज़ाफ़ा करती है और उसकी मसरूफ़ियत उसे अल्लाह तआ़ला से दूर कर देती है और बिल आख़िर उसका माल उससे बेवफ़ाई करता है और एक दिन उसे छोड़ देता है और वो क़ब्र में पहुँच जाता है फिर उसके पास न तो माल होता है न कसीर नेकियाँ बल्कि अपने गुनाहों के बोझ को क़यामत तक उठाये रखता और सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला रहता है।

—: इल्म की फ़ज़ीलत :—

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक किसी शख़्स का इल्म का सीखना और उस पर अ़मल करना मेहबूबियत का दर्जा रखता है यानी जो शख़्स इल्म सीखे और उस पर अ़मल करे वो अल्लाह तआ़ला का पसंदीदा बन्दा है और अल्लाह तआ़ला इल्म वालों के दरजात को बुलन्द फ़रमाता है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और तुम में से जो ईमान लाये और अहले इल्म के दरजात
को अल्लाह तआ़ला बुलन्द फ़रमायेगा। (सू0—मुजादलाह—11)

दुनियाँ में इल्म से बढ़कर कोई नेअ़मत नहीं और जो इस नेअ़मत से महरुम रहा वो सबसे बड़ा बदनसीब है क्योंकि जो कुछ दुनियाँ में है उसका तआ़ल्लुक़ इन्सान की मौत के साथ मुनक़ताअ़ हो जाता है लेकिन इल्म के सबब जो आमाल किये जाते हैं वो मौत से लेकर क़ब्र व क़यामत तक उसके साथी और मददगार होते हैं और कभी उससे जुदा नहीं होते।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
इल्म का सीखना हर मुसलमान (मर्द औ़रत) पर फ़र्ज़ है
(सुनन इब्ने माजा—20) (मुअ़जम कबीर तिबरानी—10/240)

मज़कूरा हदीस से मुराद वो दीनी इल्म व मसाइल हैं जो हर मुसलमान को अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने व इबादत और अ़म्लियात में हमेशा काम आते है और इल्म का सीखना दुनियाँ की तमाम चीज़ों से अफ़ज़ल है

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
तुम्हारा सुबह के वक़्त इल्म का एक बाब सीखने के लिये जाना एक सौ रकाअ़त नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर है (कंज़ुल उ़म्माल—10/258)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
इल्म का एक बाब जिसे कोई सीखे तो ये उसके लिये दुनियाँ
और जो कुछ उसमें है से बेहतर है। (कंज़ुल उ़म्माल—10/163)

इन अहादीस मुबारका से ये बात वाज़ेह हुई कि इल्म का सीखना कितनी बड़ी फ़ज़ीलत रखता है और इल्म का सीखना हर मुसलमान के लिये बहुत ज़रुरी है लेकिन आज हालात ये हैं कि हम दुन्यावी तालीम को अहमियत और तरजीह दे रहे हैं और दीनी इल्म से किनारा कशी इख़्तियार कर रहे हैं जबकि हक़ीक़त ये है कि दुन्यावी इल्म का नफ़ा (फ़ायदा) हमें कुछ साल तक ही मिलता है जबकि दीनी इल्म का नफ़ा हमें हजारों साल (यानी क़यामत) तक मिलेगा और इसी इल्म के सबब हम जन्नत और उसकी अ़ज़ीम नेअ़मतों के मुस्तहिक़ होंगे अगर हम इल्म के मुताबिक़ नेक आमाल करेंगे तो ज़रुर हम उन आमालों की बेहतर जज़ा पायेंगे फिर भी बाज़ लोग इस पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और दुन्यावी इल्म को अहमियत और तरजीह देते हैं ये अकलमंदी है या बेवकूफी हम खुद फ़ैसला करें आज मदरसे खाली हैं इन मदरसों में गिनती के लोग हैं जो दीनी इल्म और कुरान पाक की तालीम हासिल करते हैं और अंग्रेजी स्कूलों में मँहगी पढ़ाई और मँहगी किताबों के बावजूद अंग्रेजी स्कूल भरे पड़े हैं।

हम अपने बच्चों को दुन्यावी इल्म सिखाते हैं लेकिन बाद वफ़ात ये इल्म न तो हमारे काम आयेगा और न हमारे बच्चों के काम आयेगा लेकिन दीनी तालीम और कुरान दुनियाँ और आख़िरत में हमारे और हमारे बच्चों के काम ज़रुर आयेगा क्योंकि अगर हमनें दीनी इल्म के मुताबिक़ नेक अ़मल किये तो यही नेक अ़मल हमें अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखेंगें और अ़ज़ाबे क़यामत से निजात दिलाने हमारे में मददगार होंगे।

और अपने बच्चों को दीनी तालीम और कुरान पाक पढ़ाने से फ़ायदा ये है कि अगर हम पर क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा हो और अगर हमारे बच्चें जिन्हें हमने दीनी तालीम और कुरान सिखाया तो वही बच्चे कुरान पाक की तिलावत और निफ़िली इबादत और सद्क़ात को हमारे लिये ईसाले सबाब करेंगे जिसके सबब अल्लाह तआ़ला हम पर अपना रहमो करम फ़रमायेगा और अ़ज़ाबे क़ब्र से हमें राहत अ़ता फ़रमायेगा जबकि दुन्यावी इल्म हमें क़ब्र व क़यामत के अ़ज़ाब से क़तअ़न नहीं बचा सकता इसलिये हमें चाहिये कि हम दीनी इल्म सीखें और अपने बच्चों को भी सिखायें और सबसे ज़्यादा इसी को तरजीह दें।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
इन्सान का हर अ़मल मरने के बाद मुनक़ताअ़ हो जाता है मगर तीन अ़मल बाक़ी रहते हैं उनमे से एक नेक औलाद है जो उसके लिये दुआ़ माँगती है। (सही मुस्लिम—2/41)

जब इन्सान इल्म सीखता और दीनी किताबों का मुतालाअ़ करता है और जब वो दोज़ख़ व जन्नत के अहवाल पढ़ता है और लोगों में उसका ज़िक्र करता है तो आतिशे दोज़ख़ और अ़ज़ाब का ज़िक्र नफ़्स में ड़र पैदा करता है और जन्नत व सवाबे अमाल उसमें उम्मीदें व रग़बत पैदा करते हैं दीनी तालीम व इल्म इन्सान की सबसे बड़ी और अहम ज़रूरत है जो बन्दे के लिये अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा बेहतरीन नेअ़मत है जो इन्सान के तमाम कामों को दुरस्त और बेहतर तरीक़े से अंजाम देने में मददगार होती है इल्म के बाइस इन्सान में अच्छी सोच और समझ की सलाहियत पैदा होती है और इन्सान को अच्छे बुरे जाइज़ व नाजाइज़ हराम व हलाल में फ़र्क़ करना आसान हो जाता है।

इल्म दुनियाँ के तमाम ख़ज़ानों से अफ़ज़ल तरीन ख़ज़ाना है और ये वो दौलत है जिससे इन्सान दुनियाँ व आख़िरत में बेशुमार फ़वाइद हासिल करता है और इसके ज़रिये ज़रर व नुकसानात से बचना और महफ़ूज़ रहना उसके लिये आसान हो जाता है बे इल्म शख़्स पर उसके नफ़्स और शैतान के ग़लबे का ख़तरा और उस पर हावी होने का ख़द्शा ज़्यादा होता है जो उसे राहे हक़ से गुमराह करने का सबब बनता है दीनी इल्म के बाइस इन्सान से अच्छे व नेक आमाल सादिर होते हैं और वो जहालत व गुमराहियों के अंधेरों से निकलकर राहे हक़ के उजालों की तरफ़ कूच करता है और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजूअ़ करता है और अल्लाह व रसूल की इत्तेबाअ़ में नेक आमाल का ज़ख़ीरा जमा करता है और वो गुनाहों से दूर रहता और नेक आमाल के बाइस अल्लाह तआ़ला की रज़ा और खुशनूदी हासिल करता और वो निजात पा जाता है और अल्लाह तआ़ला की रज़ा और खुशनूदी उसे जन्नत में ले जाने के लिये काफ़ी होती है और वो अल्लाह के ग़ज़ब और अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहता है।

—: कुरान की फ़ज़ीलत :—

कुरान मजीद एक अ़ज़ीम बाबरकत किताब है जिसका देखना, पढ़ना, सुनना बरकत व रहमत और इबादत है और अल्लाह तआ़ला की खुशनूदी और रज़ा हासिल करने और रब तआ़ला से तआ़ल्लुक़ जोड़ने का का बेहतरीन ज़रिया है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— मेरी उम्मत की बेहतरीन इबादत कुरान पाक की तिलावत है। (कंज़ुल ड़म्माल—1/511)

ये वो बाबरकत किताब है जिसे रब तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाया और इसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा परवरदिगार ने खुद लिया कायनात में कुरान पाक की कोई मिस्ल नहीं है कुरान पाक की कसरत से तिलावत वाले और लोगों को कुरान पाक तालीम देने वाले और इसकी तरफ़ रग़बत दिलाने वाले अल्लाह तआ़ला के मख़सूस और पसन्दीदा बन्दे हैं।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
बेशक हमने कुरान को उतारा और हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (सू0—हिज़्र—9)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
कुरान पाक पढ़ने वाले और अल्लाह तआ़ला से तआ़ल्लुक़ रखने वाले अल्लाह तआ़ला के मखसूस बन्दे हैं। (कंजुल ड़म्माल—1/513)

अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह तआ़ला हमें अपना मख़सूस (ख़ास) बन्दा बनाये और हमारा तआ़ल्लुक़ रब तआ़ला से वाबस्ता हो तो हमें चाहिये कि हम कसरत से कुरान पाक की तिलावत करें। हम तमाम मुसलमानों पर अल्लाह तआ़ला बड़ा एहसान और रहमो करम है कि कुरान मजीद जैसी बाबरक़त किताब हमें अ़ता हुई जो हम तमाम मुसलमानों के लिये हिदायत व शिफ़ा और रहमत है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
ईमान वालों के लिये कुरान हिदायत व शिफ़ा है।
(सू0—हामीम सजदा—44)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और हम कुरान में उतारते हैं वो चीज़ें जो ईमान वालो के लिये शिफ़ा और रहमत हैं। (सू0–बनी इसराईल–82)

कुरान पाक की बहुत ज़्यादा फज़ीलतें हैं इसके बावजूद आज हालात ये हैं कि कुरान मजीद घरों में मौजूद है और उस पर धूल छा रही है लकिन बाज़ लोग उसे खोलकर भी नहीं देखते जबकि दुन्यावी तमाम काम अपने वक़्त पर करते हैं इसके अलावा ज़्यादातर लोग लड़कियों को ही कुरान की तालीम दिलाते हैं लेकिन लड़कों को कुरान पाक पढ़ना नहीं सिखाते तो क्या कुरान का पढ़ना और सीखना सिर्फ़ लड़कियों के लिये मख़सूस है जबकि ये ऐसी बाबरक़त किताब है कि जब कोई शख़्स कुरान पाक की तिलावत करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे बग़ौर सुनता है और उस तिलावत करने वाले शख़्स पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बे शुमार रहमतों का नुजूल होता है।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ला कुरान मजीद पढ़ने वाले की तिलावत इस क़दर सुनता है कि गाने वाली का मालिक भी उसका गाना इस क़दर नहीं सुनता। (मुस्नद अहमद–4/19)

कुरान पाक की तिलावत ईमान का नूर है गुनाहों का कफ़्फ़ारा है क़ल्ब का सुकून व जिस्म की राहत व मुर्दा दिलों की ज़िन्दा दिली है और हमारी रहनुमाई का सबब व निजात का बेहतरीन ज़रिया है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
इन्सान के दिलों को भी लोहे की तरह जंग लग जाती है जो मौत को कसरत से याद करने और कुरान पाक की तिलावत से ये जंग दूर हो जाती है। (वैहकी)

इरशादे बारी तआ़ला है–
अगर हम ये कुरान किसी पहाड़ पर नाज़िल फ़रमाते तो तू उसे ज़रूर देखता कि वो अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से झुक जाता फटकर पाश पाश हो जाता और ये मिसालें हम लोगों के लिये बयान करते हैं ताकि वो ग़ौरो फ़िक्र करें (सू0–हश्र–21)

कुरान मजीद की तिलावत का सवाब एक हरफ़ के बदले दस नेकियाँ उसके नामे आमाल में लिखी जाती हैं और जहाँ कुरान पाक की तिलावत होती है वहाँ फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और कुरान पाक की तिलावत को सुनते हैं इसलिये हमें चाहिये कि हम क़सरत से कुरान पाक की तिलावत करें ताकि हमारे घरों में भी फ़रिश्तों की आमद हो और रहमते इलाही का नुजूल हो और हम पर लाज़िम है कि हम कुरान पढ़ें और दूसरों को भी सिखायें और लोगों को कुरान मजीद की तरफ़ रग़बत दिलायें।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
तुम में से बेहतरीन इन्सान वो है जो कुरान सीखे और दूसरों को सिखाये। (सही बुख़ारी—2/752)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और सुबह कुरान पढ़ो बेशक सुबह के कुरान में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं। (सू0—बनी इसराईल—78)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और जब कुरान पढ़ा जाये तो कान लगााकर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रहम हो। (सू0—ऐराफ—204)

इरशादे खुदा वन्दी है—
(ऐ महबूब) आप फ़रमां दीजिये अगर तमाम इन्सान और जिन्नात इस बात पर जमा हो जायें कि वो इस कुरान की मिस्ल (कोई दूसरा कलाम बना) लायेंगे तो (भी) वो इसकी मिस्ल नहीं ला सकेंगे अगरचा वो एक दूसरे के मददगार बन जायें।
(सू0—बनी इसराईल—88)

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक ये बड़ी अ़ज़मत वाला कुरान है (इससे पहले ये) लौहे महफूज़ में (लिखा हुआ) है इस को पाक (तहारत वाले बा वुज़ू) लोगों के सिवा कोई नहीं छुयेगा तमाम जहानों के रब की तरफ़ से उतारा गया है। (सू0—वाक़िया—77,—80)

—: आ़लिम की फ़ज़ीलत :—

आ़लिम आ़बिद से अफ़ज़ल होता है क्योंकि आ़बिद का अ़मल सिर्फ़ उसे नफ़ा देता है जबकि आ़लिम का इल्म बहुत लोगों को नफ़ा देता है और उ़लमाएकिराम वारिसे अम्बिया हैं जो तमाम मुसलमानों की हिदायत व इस्लाह का बाइस हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
आ़लिम की आ़बिद पर फ़ज़ीलत इस तरह है जैसे चौदहवीं का चाँद सितारों से अफ़ज़ल है। (सुनन इब्ने माजा—330)

एक और मक़ाम पर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसललम ने आ़लिम की फ़ज़ीलत इस तरह बयान फ़रमाई
कि आ़बिद पर आ़लिम की फ़ज़ीलत इस तरह है जैसे मुझे अपने अद्ना सहाबी पर फ़ज़ीलत हासिल है। (जामअ़ तिर्मिज़ी—384)

हज़रत हसन बसरी (रह0) फ़रमाते हैं कि उ़ल्माएकिराम की स्याही को शहीदों के खून से तौला जायेगा तो स्याही खून से ज़्यादा बज़नी होगी उ़ल्माएकिराम का मक़ाम और मर्तबा आम लोगों से दुनियाँ और आख़िरत में अफ़ज़ल व आला है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
आप फ़रमां दीजिये क्या अहले इल्म और वे इल्म बराबर हो सकते हैं (सू0—जुमर—9)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि लोगों को भलाई की तालीम देने वाले के लिये हर चीज़ मग़फ़िरत की दुआ़ करती है यहाँ तक कि दरिया की मछलियाँ भीं। आ़लिम अपने इल्म को लोगों तक पहुँचाता है तो जितने लोग उस इल्म पर अ़मल करेंगे तो अ़मल करने वाले लोगों को सवाब मिलेगा और उनके सवाब के साथ साथ उस आ़लिम को भी सवाब मिलेगा जिसके सबब इल्म उन लोगों तक पहुँचा और उन लोगों के सवाब में कोई कमी नहीं होगी अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उ़ल्माएकिराम को ये शरफ़ अ़ता करेगा कि वो लोगों की सिफ़ारिश करेंगे।

ड़ल्माएकिराम अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे होते हैं क्योंकि ये लोग अपने इल्म के मुताबिक़ अ़मल करते हैं और शरई अहकामात और सुन्नतों पर अ़मल पैरा होते हैं और जो ड़ल्मा अपने इल्म पर अ़मल न करे वो ड़ल्मा ही नहीं बल्कि वो गुनाहगार होते हैं

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
कोई शख़्स उस वक़्त तक आ़लिम नहीं हो सकता जब तक वो अपने इल्म पर अ़मल न करे। (कंज़ुल ड़म्माल–10/192)

आ़लिम का हर अ़मल अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये होना चाहिये न कि दिखावे के लिये और उसका इल्म उसके अ़मल के साथ साथ लोगों को नफ़ा पहुँचाने के लिये होना चाहिये न कि दुनियाँ कमाने के लिये बाज़ ड़ल्मा हज़रात अपने इल्म को ज़रियाये मआ़श बनाते हैं ऐसे ड़ल्मा क़यामत के दिन ख़सारे में होंगे और अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी का सबब होगें।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स ऐसा इल्म जिसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला की रज़ा तलाश की जाती है अगर इसलिये हासिल करता है कि इसके सबब दुनियाँ का सामान पाये तो वो क़यामत के दिन जन्नत की खुश्बू भी नहीं पायेगा। (सुनन इब्ने माजा–22)

शरीअ़ते मुतह्हरा में ड़ल्माएकिराम की कुछ हदें हैं और उन पर लाज़िम है कि वो उन हदों के अन्दर रहें लेकिन बसा औक़ात देखा गया है कि बाज़ ड़ल्मा ख़िलाफ़े शरअ़ मजलिसों में शिर्कत करते हैं और ख़िलाफ़े शरअ़ काम को रोकने के बजाय खुद उसमें शामिल होते हैं और अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये हक़ बात नहीं करते क्योंकि उनके अन्दर अल्लाह तआ़ला के बजाय लोगों का डर होता है कि लोग बुरा मान जायेंगे।

आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी (रह0) फ़रमाते हैं–
किसी ख़िलाफ़े शरअ़ मजलिस में जाना जाइज़ नहीं और वहाँ पर खाना भी जाइज़ नहीं अगर खाना दूसरी जगह है तो आम लोगों के खाने में हर्ज नहीं लेकिन आ़लिम या मुक़्तदा का वहाँ पर भी खाना जाइज़ नहीं। (फ़तावा रज़विया–24/134)

आ़लिम के बाअ़ज़ (नसीहत) का असर लोगों पर तब होता है जब आ़लिम खुद बा अ़मल हो और उसका हर अ़मल सिर्फ़ ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिए हो और उसके दिल में खुद की तारीफ़ व ताज़ीम की ख़्वाहिश न हो बल्कि उसका इ़ल्म सिर्फ़ रब तआ़ला की रज़ा के लिए हो और वो दुनियाँ और मताये दुनियाँ से बे रग़बती इख़्तियार करे।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
आ़लिम जब अपने इ़ल्म से अल्लाह तआ़ला की रज़ा चाहता है तो उससे हर चीज़ डरती है और जब वो इसके ज़रिये माल जमा करना चाहता है तो वो हर चीज़ से डरता है।
(कंजुल उ़म्माल—16/630)

उ़ल्माएकिराम पर लाज़िम है कि वो बुरे लोगों कि सुहवत इख़्तियार न करें और उनकी मजालिस से ऐराज़ करें और हमेशा सच और हक़ बात कहें और अपने दिलों में लोगों का ख़ौफ़ न रखें बल्कि ख़ौफ़े इलाही से अपने दिलों को लरजने दें और हर हाल में लोगों को नेक अ़मल की तरग़ीब दें और रोज़ा नमाज़ ज़कात सद्क़ात वग़ैराह की ताकीद व तल्क़ीन करें और हर ख़िलाफ़ शरअ़ काम को रोकने की हर मुमकिन कोशिश करें और माल का लालच न करें और अल्लाह तआ़ला जितना रिज़्क दे उस पर क़नाअ़त करें और भलाई की दावत दें और बुराई से रोकें और जो आ़लिम ऐसा नहीं करेगा वो अल्लाह तआ़ला और उसके मेहबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के नज़दीक बुरा आ़लिम है और अल्लाह तआ़ला उसे सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला करेगा।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बदतरीन इन्सान बुरे उ़ल्मा है (कंजुल उ़म्माल—10/191)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
कि क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा अ़ज़ाब उस आ़लिम को होगा जिसके इ़ल्म ने नफ़ा न दिया (कंजुल उ़म्माल—10/210)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
कि आ़लिम को ऐसा अ़ज़ाब दिया जायेगा कि उसके अ़ज़ाब की सख़्ती के बाइस उसके इर्द गिर्द जहन्नुमी इकट्ठे होंगे।
(मुस्नद अहमद—5/205)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जो शख़्स अपने इल्म में इज़ाफ़ा करता है लेकिन हिदायत में इज़ाफ़ा नहीं करता वो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला से दूरी बढ़ाता है। (कंज़ुल उ़म्माल–10/193)
बाज़ आ़लिम बातें तो दरवेशियों व ज़ाहिदों की तरह करते हैं लेकिन उनके आमाल मुनाफ़िक़ों की तरह होते हैं क्या वो नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला से कोई भी ज़ाहिर व पोशीदा चीज़ मख़्फ़ी नहीं है वो अपने बन्दों के छुपे इरादों को भी जानता है जो अम्रे कुन से हर शैः को पैदा फ़रमाने वाला है और आ़लिम को चाहिये कि जाहिलों से बहसो मुबाहिसा न करें बल्कि ख़ामोश रहें क्योंकि इल्म और जहालत कभी बराबर नहीं हो सकते क्योंकि इल्म रोशनी है और जहालत तारीकी है इल्म हिदायत है और जहालत गुमराही है और इल्म से इन्सान में ख़ौफ़ व खशीयते इलाही पैदा होती है।
इरशादे बारी तआ़ला है–
अल्लाह के बन्दों में से उससे वही डरते हैं जो इल्म रखने वाले हैं। (सू०–फ़ातिर–28)

हर आ़लिम पर वाजिब है कि जब वो लोगों से मुलाक़ात करे या लोग उसकी मुलाक़ात को आयें तो उनसे खुलूस दिल से मिले और उनसे हुस्ने खुल्क व अच्छे बरताव से पेश आये और अपनी गुफ्तगू में दुनियाँदारी की बे मतलब व फ़िज़ूल बातों में मशगूल होकर अपने और उनके वक़्त को ज़ाया न करे बल्कि अपनी गुफ्तगू में हुस्ने कलाम से दीनी उ़लूम व मसाइल से उन्हें मुत्तलाअ़ करे और क़ब्र व क़यामत के अ़ज़ाब के बयानात से उनके दिलों में ख़ौफ पैदा करे और अल्लाह के ग़ज़ब से डराये बाअ़ज़ व नसीहत के ज़रिये उनकी इस्लाह करे और मुहब्बत व खुलूस के साथ नमाज़, रोज़ा, ज़कात सद्क़ात वग़ैराह नेक अ़मल की तरग़ीब दे जन्नत व उसकी नेअ़मतों व लज़्ज़तों की तरफ़ रग़बत दिलाये और बिला ज़रूरत लोगों से अपना मेल जोल न रखे बल्कि अल्लाह व रसूल के अहकामात लोगों तक पहुँचाने के लिये उनसे तआ़ल्लुक़ात और मेलजोल को महदूद रखे और उन तमाम बुरी बातों से ऐराज़ करे जिन बातों के असरात लोगों पर पड़ने का खद्शा हो क्योंकि आ़लिम से अगर कोई बुरा फ़ेअ़ल सादिर होता है तो लोगों पर उसके बुरे असरात पड़ने का ख़तरा ज़्यादा होता है और लोग उनके बुरे अफ़आ़ल की पैरवी करते और उसको बुरा फ़ेअ़ल और गुनाह नहीं समझते।

—: नमाज़ की फ़ज़ीलत :—

इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ो पर मुश्तमिल है जिसमें सबसे पहली चीज़ ईमान है यानी अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माअबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं इस पर कामिल ईमान का होना इस्लाम का पहला रुकन है और इस्लाम का दूसरा रुकन नमाज़ है और नमाज़ के लिए पहली शर्त तहारत (पाकी) है यानी तमाम जिस्म का पाक होना और अल्लाह तआ़ला पाक रहने वाले लोगों को पन्सद फ़रमाता है।

हदीस पाक में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
पाकीज़गी आधा ईमान है (सही मुस्लिम 1/118)

नमाज़ के लिये दूसरी शर्त वुजू है वुजू के बहुत ज़्यादा फ़वाइद हैं वुजू के पानी को क़यामत के दिन नेकियों के पल्ले में रखा जायेगा और बा वुजू रहने वाले शख़्स को अल्लाह तआ़ला की खुशनूदी हासिल होती है और वुजू के बाइस उसके गुनाह झड़ते हैं और जो रात को वुजू करके सोता है तो उसके लिये फ़रिश्ते दुआ़ये मग़फ़िरत करते हैं और इसके अलावा वुजू की बहुत फ़ज़ीलतें हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
वुजू का पानी क़यामत के दिन इन्सान की नेकियों के पल्ले में रखा जायेगा। (तिर्मिज़ी—1/593)

वुजू करने के बाद दो रकाअ़त नमाज़ निफ़िल (तहय्यतुलवुजू) पढ़ने की हदीस पाक में बड़ी फ़ज़ीलत आयी है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसने अच्छी तरह वुजू किया और दो रकाअ़त नमाज़ निफ़िल पढ़ी और इस बीच दुन्यावी बात दिल में न लाया तो वो गुनाहों से इस तरह निकल गया जैसे उस दिन था जब उसकी माँ ने उसे जना था (सही बुख़ारी—1/28) (मुस्नद अहमद—4/158)

हर आ़क़िल बालिग़ मर्द व औ़रत पर पाँच नमाज़े अपने वक़्त मुक़र्ररा

पर फ़र्ज़ हैं जिसे हर हाल में अदा करना होगा नहीं तो गुनाहगार होंगे क़यामत के दिन बन्दे से जब हिसाब लिया जायेगा तो सबसे पहले नमाज़ की पुरसिश (पूछ) होगी और अगर फ़र्ज़ नमाज़ें कम हुई तो उन्हें निफ़िलों से पूरा किया जायेगा।

हदीस पाक में है फ़राइज़ के नुकसान को नवाफ़िल के ज़रिये पूरा किया जायेगा। (सुनन वैहकी—2/386)

अल्लाह तआ़ला की याद के लिये नमाज़ सबसे अफ़ज़ल इबादत है और अल्लाह तआ़ला नमाज़ियों को बहुत ज़्यादा पसन्द फ़रमाता है और उन्हें अपना महबूब रखता है जो लोग नमाज़ का एहतमाम करते हैं और मस्जिदों को आबाद करते हैं और मस्जिद से मुहब्बत रखते हैं ऐसे लोगों से अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करता है क़ुरान मजीद व अहादीस मुबारका में नमाज़ की बेशुमार फ़ज़ीलतें आयीं हैं

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और अपनी जानों के लिये जो भलाई आगे भेजोगे वो अल्लाह के यहाँ पाओगे बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को देख रहा है। (सू0—बक़राह—110)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ायम करो। (सू0—ताहा—14)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जन्नत की चाबी नमाज़ है। (मुस्नद अहमद—3/340)

सरकारे दो आ़लम सल्ल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
नमाज़ दीन का सुतून है और जिसने इसे छोड़ा उसने दीन को गिरा दिया। (दुर्रे मन्सूर—1/296)

हम दुन्यावी तमाम कामों के लिये वक़्त निकाल लेते हैं और उन कामों को बखूबी अन्जाम देते हैं और माल कमाने के लिये हम अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त सर्फ करते हैं तो क्या हम थोड़ा सा वक़्त नमाज़ के लिये नहीं निकाल सकते हालाँकि जिस रिज़्क को

हासिल करने के लिये हम दिन रात मेहनत व मशक़्क़त करते हैं असल में वो रिज़्क हमें अल्लाह तआ़ला अ़ता करता है फिर भी हम उसकी याद के लिये नमाज़ क़ायम नहीं करते हम मस्जिद में होने वाली अज़ान को सुनते हैं और उन कलिमात को भी सुनते हैं जब मुअज़्ज़िन कहता है आओ नमाज़ की तरफ़ आओ निजात की तरफ़ यानी मुअज़्ज़िन हमें अल्लाह तआ़ला के घर की तरफ़ बुलाता है लेकिन हम सुनी अनसुनी कर देते हैं और अल्लाह तआ़ला के घर की तरफ़ रुख़ न करके बाज़ार और दुन्यावी कामों की तरफ़ रुख़ फेर लेते हैं और मस्जिद से मुहब्बत न करके बाज़ार और दुनियाँ से मुहब्बत करते हैं और उसी को तरजीह देते हैं क्या हम ये भी भूल गये हैं कि रोज़ी देना सिर्फ़ रब तआ़ला के इख़्तियार में है वो जिसे जब चाहे जितना चाहे अ़ता करता है इसमें किसी का कोई दख़ल नहीं और हम ये भी भूल गये हैं कि हमें अल्लाह तआ़ला ने अपनी इबादत के लिये पैदा फ़रमाया न कि रोज़ी कमाने के लिये तो हम जिस काम के लिये पैदा किये गये और अगर वो काम न करें तो हम खुद को हलाक करने वालों में से हैं और हम अपने आपके सबसे बड़े दुश्मन हैं और हम उस रास्ते पर चल रहें हैं जो हमें जहन्नुम की तरफ़ ले जाता है

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो और खुद भी उस पर साबित क़दम रहो हम तुमसे रोज़ी कमवाना नहीं चाहते बल्कि रोज़ी तो तुम्हें हम देंगे और परहेज़गारों का अन्जाम अच्छा है।
(सू0—ताहा—132)

इरशादे बारी तआ़ला है—
बेशक जो ईमान लाये और अच्छे काम किये और नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी उनका नेग उनके रब के पास है और उन्हें न कुछ अंदेशा हो और न कुछ ग़म (सू0—बक़राह—277)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला ने बन्दों पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं जो शख़्स उन्हें अदा करे तो अल्लाह तआ़ला का वायदा है कि उसे जन्नत में दाख़िल करेगा। (सुनन अबी दाऊद—1/201)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—

बेशक पाँच (वक़्त की) नमाज़ें गुनाहों को इस तरह ख़त्म करती है। जैसे पानी मैल को ख़त्म करता है। (सही मुस्लिम–1/235)

नमाज़ चेहरे की ज़ीनत है दिल का सुकून है जिस्म की राहत है क़ब्र की रोशनी है गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जहन्नुम से आज़ादी है क़यामत के दिन राहत है और नमाज़ की जज़ा जन्नत है नमाज़ इन्सान को अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाती है और मइयत के लिये आड़ बन जाती है और बन्दा क़ब्र के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहता है और क़यामत के दिन उसके चेहरे पर नूर होगा और जो लोग नमाज़ की पाबन्दी नहीं करते वो अ़ज़ाबे क़ब्र और क़यामत की सख़्तियों में मुब्तिला होंगे और उनका अंजाम बहुत बुरा होगा बिल आख़िर वो जहन्नुम में दाख़िल दिये जायेंगे।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है–
मगर दाहिनी तरफ वाले जन्नत के बागों में मुजरिमों से पूछते हैं कि तुम्हें क्या चीज़ दोज़ख में ले गई वो कहेंगे हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे (सू0–मुदस्सिर–40)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जिस शख़्स ने पाँच नमाज़ों की हिफ़ाज़त की तो ये नमाज़ उसके लिये नूर होगी और जिसने इन नमाज़ों को छोड़ दिया उसका हश्र फिरऔन और हामान के साथ होगा। (शुअ़बुल ईमान–3/46)

जो लोग अल्लाह व रसूल की इताअ़त करते हुये नमाज़ क़ायम करते हैं और अल्लाह तआ़ला के दिये माल से अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं अल्लाह तआ़ला उनके गुनाहों को बख़्श देता है और उनके दरजात को बुलन्द फ़रमाता है और उन पर रहमतों और बरकतों का नुज़ूल होता है और वही लोग सच्चे मुसलमान हैं।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है–
और जो नमाज़ क़ायम रखें और हमारे दिये में से हमारी राह में ख़र्च करें यही सच्चे मुसलमान हैं इनके लिये दर्जे हैं इनके रब के पास और बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी। (सू0–अनफ़ाल–3,–4)

बाज़ लोग जुमे की नमाज़ को भी अहमियत नहीं देते जब दिल

चाहा पढ़ली नहीं तो छोड़ दी और माल कमाने और दुन्यावी कामों में इतना मसरुफ़ हो जाते हैं कि उन्हें जुमे की नमाज़ की बिल्कुल परवाह नहीं रहती जैसे कभी उन्हें मरना ही न हो क़ब्र में जाना ही न हो और वो लोग योमे हिसाब से बे फ़िक्र होते हैं जबकि जुमा तमाम दिनो में अफ़ज़ल है और अल्लाह तआला ने जुमे को ईद क़रार दिया है और इस दिन में एक ऐसी साअ़त है जिसमें बन्दे की दुआ़ कुबूल होती है और गुनाहगारों की बख़्शिश होती है और इस दिन अल्लाह तआला की रहमत बरसती है और इस दिन में बहुत बरकतें हैं यहाँ तक कि शबे जुमा या रोजे जुमा अगर कोई फ़ौत हो जाये तो वो अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो जुमे के दिन जब नमाज़ की अज़ान हो तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दोड़ो और ख़रीद फरोख़्त छोड़ दो ये तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह तआला का फ़ज़्ल तलाश करो और अल्लाह तआला को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ। (सू0—जुमा—9,—10)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स तीन बार (लगातार) जुमा की नमाज़ बिला उ़ज़्र छोड़ता है तो अल्लाह तआला उसके दिल पर मुहर लगा देता है।
(मुस्तदरक हाकिम—1/292)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
अल्लाह तआला ने जुमा को मेरी उम्मत के लिये ईद क़रार दिया है।
(सही बुख़ारी—1/120)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
हर बालिग़ पर बाजिब है कि हर जुमा को गुस्ल करे।
(सही मुस्लिम—1/280)

हर इन्सान को दुनियाँ में जिन्दगी सिर्फ़ एक बार मिलती है और मौत के बाद फिर कोई इबादत और अ़मल का मौक़ा नहीं मिलेगा

फिर तो उसके आमालो का बदला (सिला) मिलने का वक़्त शुरु होता है और जैसा जिसका अमल वैसा उसका बदला दिया जाता है इसलिये हमें चाहिये कि इस मौक़े और वक़्त को ज़ाया न करें और अल्लाह व रसूल की इताअ़त करें और नमाज़ के पाबन्द हो जायें और कसरत से नेक अ़मल करें और अपना शुमार मुर्दो में न करें क्योंकि मुर्दे नमाज़ नहीं पढ़ते और हम अभी ज़िन्दा हैं इसलिये हमें चाहिये कि जिस तरह हम दुन्यावी कामों को बड़ी फ़िक्र और ज़िम्मेदारी के साथ वक़्त पर करते हैं उससे भी ज़्यादा फ़िक्र के साथ नमाज़ की पाबन्दी करें और वक़्त ज़रुरत या मुकम्मल तौर पर मस्जिद में अज़ान दें और लोगों को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बुलायें इसका बहुत बड़ा सवाब है हदीस पाक में मुअज़्ज़िन के लिये बड़ी फ़ज़ीलत आई है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जिसने मस्जिद में अज़ान दी और लोगों को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बुलाया और ये काम रज़ाये खुदावन्दी के लिये किया तो उस शख़्स को क़यामत के दिन हिसाब ख़ौफ़ ज़दा नहीं करेगा और न परेशानी में मुब्तिला होगा। (कंजुल उ़म्माल–5/832)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
मुअज़्ज़िन की अज़ान जिन्न, इन्सान और जो भी चीज़ सुनती है वो क़यामत के दिन उस मुअज़्ज़िन के लिये गवाही देगी।
(सही बुख़ारी–1/86)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
ये (रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम भी) अगले डर सुनाने वालो में से एक डर सुनाने वाले हैं आने वाली (क़यामत की घड़ी) क़रीब आ पहुँची अल्लाह के सिवा उसे कोई ज़ाहिर (और क़ायम) करने वाला नहीं है तो क्या तुम इस कलाम पर तआ़ज्जुब करते हो और तुम हंसते हो और रोते नहीं और तुम (ग़फ़लत के) खेल में पड़े हो सो अल्लाह तआ़ला के लिये सजदा करो और (उसकी) इबादत करो। (सू0–नज्म–56,–62)

—: नमाज़ के आदाब :—

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक नमाज़ रोकती है बुराई और बेहयाई से (सू0—अनकबूत—45)

कुरान मजीद की इस आयत का मफ़हूम इस बात की दलालत करता है कि नमाज़ बुराई और बे हयाई से रोकती है लेकिन क्या वजह है कि हमारी बुराई और बे हयाई नहीं रुकती इस बात पर हमें ग़ौर करना चाहिये कि ऐसा क्यों है तो जब हम इस बात पर ग़ौर करें तो हमें पता चलता है कि नमाज़ के ज़ाहिरी आदाब तो हम बजा लाते हैं लेकिन बातिनी आदाब अदा नहीं करते यानी नमाज़ में हमारा दिल दुनियाँ की रग़बतों और लज़्ज़तों के ख़्यालों में खोया रहता है यानी हमारा जिस्म तो नमाज़ में होता है लेकिन हमारा दिल कहीं और होता है और जब हम इस तरह की नमाज़ पढ़ते हैं तो हमारी नमाज़ कुबूल नहीं होती और न हमसे हमारी बुराइयाँ दूर होती हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआला उस नमाज़ को कुबूल नहीं करता जिसमें आदमी अपने जिस्म के साथ अपने दिल को भी हाज़िर न करे।
(दुर्रे मन्सूर—5/4)

जब कोई शख़्स सही तरीके से वुजू करे फिर अपने जिस्म के साथ साथ अपने दिल को भी अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जै करे और कोई भी दुन्यावी ख़्याल ज़हन में न लाये और अपने जिस्म और दिल का तआल्लुक़ अपने रब के साथ जोड़कर पूरे आदाब के साथ नमाज़ अदा करे तो ऐसे शख़्स के लिये नमाज़ उसके हक़ में अल्लाह तआला से दुआ करती है और नमाज़ी के लिये बख़्शिश व मग़फिरत की सिफ़ारिश करती है और जब कोई शख़्स इस तरह नमाज़ पढ़ता है कि उसका जिस्म तो नमाज़ में होता है और दिल दुन्यावी ख़्यालों में होता है तो ऐसे शख़्स की नमाज़ उसके लिये बद्दुआ करती है और कहती है कि ऐ बन्दे जिस तरह तूने मुझे ज़ाया किया अल्लाह तआला तुझे भी ज़ाया (बर्बाद) करे और नमाज़ उसके मुँह पर मार दी जाती है अल्लाह तआला फ़रमाता है नमाज़ मोमिन की मेअ़राज है लेकिन ये रुहानी मेअ़राज तब है कि जब

बन्दा अपने नफ़्स को पाक करे और अपने दिलो दिमाग़ में दुन्यावी ख़्याल को न आने दे और दुन्यावी तमाम मामलात से अपना तअ़ाल्लुक़ क़ता करे और सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला से अपना तअ़ाल्लुक़ जोड़े और नमाज़ में खुशूअ़ व खुज़ूअ़ पैदा करे तब ये नमाज़ मोमिन की मेअ़राज बनती है और अल्लाह तअ़ाला की उसे कुरबत (नज़दीकी) हासिल होती है और उसकी बख़्शिश हो जाती है।

सरकारे दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जब बन्दा नमाज़ में खड़ा होता है और ख़्वाहिश चेहरा और दिल अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ मुतवज्जै होता है तो वो यूँ लौटता है जैसे आज ही अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ है (यानी उसके तमाम गुनाह बख़्श दिये जाते हैं) (कंज़ुल उ़म्माल—7/302)

इन्सान को मिट्टी से पैदा किया गया और मिट्टी में ही मिल जाता है इसलिए इन्सान को चाहिए कि खुद की हक़ीक़त को ज़हन में रखे और जब अपने ख़ालिक़ व मालिक के सामने नमाज़ में खड़ा हो तो खुद को गुलामों की तरह तसव्वुर करे और दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत से किनारा कशी इख़्तियार करे और किसी चीज़ का ख़्याल दिल में न लाये फिर जब वो इस हालत में सज्दा करता है तो उसका सर सज्दे से उठ भी नहीं पाता उससे पहले अल्लाह तअ़ाला उसे अपनी कुरबत में ले लेता है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तअ़ाला है—
सज्दा करके कुर्ब (नज़दीकी) खुदावन्दी हासिल करो।
(सू0—अ़लक़—19)

रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बन्दा पोशीदा सज्दे से बढ़कर किसी चीज़ के साथ अल्लाह तअ़ाला का कुर्ब हासिल नहीं करता। (कंज़ुल उ़म्माल—3/26)

जब हम अल्लाह तअ़ाला के घर (मस्जिद) में नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो हमें ये ख़्याल करना चाहिए कि हम उस रब तअ़ाला के दरबार में खड़े हैं जो तमाम जहानों का ख़ालिक़ व मालिक है जहाँ बड़े—बड़े बादशाह व हाकिम और अमीर ग़रीब सब अपने सरों को

झुकाते हैं और उस रब के सामने अद्ना बन्दे की कोई हैसियत नहीं और हम अपनी पेशानी नाक हाथ घुटने सब ज़मीन से मिला देते हैं क्योंकि हम परवरदिगार के सामने सज्दा रेज़ होते हैं और इस हालत में बन्दा अपने रब के सबसे ज़्यादा क़रीब होता है तो उस वक़्त हमारे दिलो दिमाग़ में दुनियाँ की किसी भी चीज़ का ख़्याल नहीं होना चाहिए क्योंकि ख़ालिक़ और मख़लूक़ की मुहब्बत दोनो एक साथ जमा नहीं हो सकती और इस हालत में अपने रब से आ़जिज़ी व इन्कसारी का इज़हार करें और अपने रब से दुआ़ करें यही नमाज़ के बातिनी आदाब हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–
बेशक उन मोमिनों ने फ़लाह पाई जो अपनी नमाज़ में खुशूअ़ करते हैं। (सू0–मु–मिनून–1,–2)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और वो लोग जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त (निगेहबानी) करते हैं यही लोग (जन्नत के) वारिस हैं ये लोग जन्नत के आला बाग़ात (जहाँ तमाम नेअ़मतें और राहतें और कुर्बे इलाही की लज़्ज़तों की कसरत होगी उन) की विरासत भी पायेंगे वो उनमें हमेशा रहेंगे। (सू0–मु–मिनून–9,–11)

जब हम नमाज़ के लिये क़याम करें तो अपने अन्दर ऐसी कैफ़ियत पैदा करें कि हम अपने रब के सामने खड़े हैं और अपने रब को देख रहे हैं और अगर हम ये हालत पैदा न कर सकें तो कम अज़ कम ये हालत पैदा करें कि मेरा रब मुझे देख रहा है और ये हालत इन्सान को नमाज़ के ज़ाहिरी आदाब के साथ साथ बातिनी आदाब को अदा करने में मददगार साबित होगी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ला की इबादत इस तरह करो कि गोया तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम ये गुमान नहीं कर सकते तो ये गुमान करो कि वो हमें देख रहा है। (सही बुख़ारी–1/12)

हज़रत ग़ौसुल आज़म अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि नमाज़ में जब तशहुद के लिये क़ायदा में बैठो और जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर सलाम भेजो यानी जब अत्तह्यातु पढ़ो और जब अस्सलामु अ़लैका अइयुहन नबीइयु व रहमतुल्लाही व बराकातहु पढ़ो तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का ज़ाहिरी गुमान दिलों दिमाग़ में होना चाहिए कि हम अपने प्यारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को सलाम अ़र्ज़ कर रहे हैं और वो हमें गुम्बदे ख़ज़रा से जबाब दे रहे हैं ताकि अल्लाह तआ़ला की कुरबत के साथ साथ हमें सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की कुरबत भी हमें नसीब हो क्योंकि जो कुछ हमें मिला वो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सदक़े और तुफ़ैल मिला है और जो कुछ हमें आख़िरत में मिलेगा वो भी उन्हीं के तुफ़ैल मिलेगा।

और सलाम फेरते वक़्त अगर बा जमाअ़त हो तो ये गुमान करना चाहिये कि हम मुक़्तदियों को सलाम कर रहे हैं और अगर तन्हा नमाज़ पढ़ो तो ये गुमान करना चाहिये कि हम फ़रिश्तों को सलाम कर रहे हैं।

और आदाबे नमाज़ के साथ साथ मस्जिद के आदाब का भी ख़्याल रखना चाहिये क्योंकि मस्जिद अल्लाह तआ़ला का घर है और जब मस्जिद में दाख़िल हों तो सबसे पहले दो रकाअ़त नमाज़ (तहय्यतुल मस्जिद) अदा करें इस नमाज़ का बड़ा सबाब है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जब तुम में से कोई मस्जिद में दाख़िल हो तो बैठने से पहले दो रकअ़त पढ़े। (सही मुस्लिम—1/248)

और कोई भी बदबूदार चीज़ जैसे बीड़ी सिगरेट तम्बाकू प्याज़ लहसुन वग़ैराह का इस्तेमाल करके मस्जिद में दाख़िल नहीं होना चाहिये क्योंकि इससे और नमाज़ियों को तकलीफ़ होती है और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने बदबूदार चीज़ें खाकर मस्जिद में आने को मना फ़रमाया बल्कि साफ़ कपड़े और खुशबू लगाकर मस्जिद में दाख़िल होना चाहिये और मस्जिद को हर तरह की बदबू और गन्दगी से पाक रखना चाहिये और मस्जिद में शोर शराबा नहीं करना चाहिये यहाँ तक कि मस्जिद में तेज़ आवाज़ से

बोलने की भी मुमानियत है और अपने क़दमों को मस्जिद में धीरे–धीरे रखना चाहिये क्योंकि तेज़ क़दम से मस्जिद में धमक पैदा होती है जो मस्जिद के आदाब के ख़िलाफ़ है और लोगों की गर्दने फलाँघते हुए आगे नहीं जाना चाहिये बल्कि जहाँ जगह मिल जाये वहीं बैठ जाना चाहिये और जो लोग लोगों की गर्दने फलाँगते हुये आगे जाते हैं क़यामत के दिन ऐसे लोगों की पीठ दोज़ख़ का पुल होगा और लोग उसे पामाल करेगें और मस्जिद में कोई बेहूदा कलाम न कहें और न किसी को अज़िय़त पहुँचायें और गर्मी व धूप का परवाह न करें क्योंकि दुनियाँ की गर्मी व धूप क़यामत के मुक़ाबले कुछ भी नहीं है और कभी नमाज़ी के आगे से न गुज़रें क्योंकि नमाज़ी के आगे से नमाज़ की हालत में गुज़रना बहुत बड़ा गुनाह है।

हदीस पाक में है सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अगर लोग जानते कि नमाज़ी के आगे से गुज़रने का क्या अ़ज़ाब है तो लोग चालीस साल तक खड़े रहते लेकिन नमाज़ी के आगे से न गुज़रते। (कंजुल उ़म्माल–7/355)

जो लोग तमाम कोशिशों के बावजूद नमाज़ में बातिनी आदाब नहीं ला पाते और नमाज़ में उन्का दिलो दिमाग़ भटक कर दुन्यावी मामलात में चला जाता है तो उन्हें चाहिये कि हज़रत अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम की नमाज़ का तरीक़ा इख़्तियार करें कि जब वो नमाज़ पढ़ते थे तो उनके जिस्म का कोई भी उजू (अंग) हरकत नहीं करता था तो उन्हीं का तरीक़ा इख़्तियार करें और क़याम रुकूअ़ सुजूद और क़ायदा में अपने जिस्म के आज़ा (अंगों) को बे वजह हरकत (हिलने डुलने) से बचायें और गुमान करें कि हम रब तआ़ला की बारगाह में खड़े हैं और मेरा रब हमें देख रहा है और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें कि अल्लाह तआ़ला हमें नमाज़ के ज़ाहिरी और बातिनी आदाब अदा करने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये और हमारी तमाम नमाज़ो को अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सदक़े और तुफ़ैल कुबूल फ़रमाये।

—: ज़िक्रे इलाही :—

जमीनों आसमानों में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र न करती हो हर एक ज़र्रा अल्लाह तबारक व तआ़ला की हम्द के साथ उसकी तसबीह (पाकी) बयान करता है लेकिन हम उसे सुन नहीं सकते जिस तरह हवा को हम देख नहीं सकते क्योंकि इसमें हिकमते इलाही है और हमारे लिये बेहतरी है क्योंकि दुनियाँ में हम तमाम चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं अगर हम उनकी तसबीह सुनने की कुदरत रखते तो हमें उनके इस्तेमाल में दुश्वारी दरपेश आती और हर चीज़ के इस्तेमाल की मुख़्तलिफ़ सूरतें होती हैं जैसे पानी का इस्तेमाल हम खाने पीने और तहारत (पाकी) के अलावा ग़लाज़तों व नजासतों को साफ़ व दूर करने के लिये भी करते हैं तो इसी तरह दीगर चीज़ों का इस्तेमाल भी मुख़्तलिफ़ सूरतों में होता है इसलिये अल्लाह तआ़ला ने तमाम चीज़ों के ज़िक्र को हमारी भलाई व बेहतरी के लिये पोशीदा रखा ताकि हमें ज़िन्दगी गुज़ारनें में दुश्वारी न हो।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
सातों आसमान और ज़मीन और जो कुछ उसमें है सब अल्लाह तआ़ला की तसबीह करते हैं (कायनात में) कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी हम्द के साथ तसबीह न करती हो लेकिन तुम उसकी तसबीह को समझ नहीं सकते। (सू0—बनी इसराईल—44)

अल्लाह तआ़ला की मख़लूक़ में सबसे अफ़ज़ल तरीन मख़लूक़ इन्सान है और तमाम इन्सानों में सबसे अफ़ज़ल मुसलमान हैं और मुसलमानों में सबसे अफ़ज़ल वो है जो सबसे ज़्यादा क़सरत से अपने रब का ज़िक्र बुलन्द करते हैं और उनके दिल अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से मुनव्वर और मुतमईन होते हैं और जिनकी ज़ुबानें अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से थकती नहीं हैं और ऐसे लोग कुर्बे इलाही की तमाम मन्ज़िलों को तय करते हुये अपने रब के मुक़र्रब और ख़ास बन्दे हो जाते हैं और अल्लाह तआ़ला अपने पसंदीदा बन्दों का चर्चा आसमानों में अपने फ़रिश्तों के सामने करता है और जो लोग अपने रब का ज़िक्र कसरत से करते हैं वो अल्लाह तआ़ला की अमान में रहते हैं और उन्हीं के दिल चैन पाते हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
तुम मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करुँगा और मेरा हक़ मानो और मेरी ना शुक्री न करो। (सू0—बक़राह—152)

इरशादे बारी तआ़ला है—
वो जो ईमान लाये उनके दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं सुन लो अल्लाह की याद में ही दिलों का चैन है। (सू0—राअ़द—28)

अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के मुक़ाबले दुनियाँ की तमाम नेअ़मतें हक़ीर हैं क्योंकि जो नेअ़मतें हमें मयस्सर हुई हैं उनका अ़ता करने वाला रब्बुल आलमीन है और ये नेअ़मतें हमसे एक दिन जुदा हो जायेंगी लेकिन अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र का अज्र (सवाब) क़यामत तक हमारा साथी और मददगार होगा और अल्लाह तआ़ला की रहमत और हमारी बख़्शिश का सबब बनेगा और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र उसकी खुशनूदी हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है।

हदीस पाक में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
कि मैं अपने बन्दे के साथ होता हूँ जब वो मेरा ज़िक्र करता है (मुस्नद अहमद—2/540)

जब कुछ लोग मिलकर अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के लिये मजलिस मुनअ़क़िद करते हैं तो वो मजलिस जन्नत का बाग़ होती है क्योंकि वहाँ ज़िक्रे इलाही बुलन्द किया जाता है और उस मजलिस में बहुत से फ़रिश्ते जमा होते हैं और उस मजलिस को फ़रिश्ते अपने परों से ढ़ाँप लेते हैं और ज़िक्र इलाही सुननें में मशगूल हो जाते हैं और उस मजलिस पर अल्लाह तआ़ला की रहमतों का नुजूल होता है हत्ता कि मजलिस उठनें से पहले अल्लाह तआ़ला उन तमाम लोगों को बख़्श देता है जो उस मजलिस में शिर्कत करते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मजलिसे ज़िक्र जन्नत के बाग़ात हैं। (मुस्नद अहमद—3/150)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जब कुछ लोग अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के लिये बैठते हैं तो

फ़रिश्ते उनको ढाँप लेते हैं और उन पर रहमतों का नुज़ूल होता है और अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों की मजलिस में उनका ज़िक्र करता है। (सुनन इब्ने माजा—277)

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को दुनियाँ में बेशुमार नेअ़मतों से नवाज़ा है जिनका शुमार करना ना मुमकिन है इसके बावजूद भी बाज़ लोग अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र नहीं करते और दुनियाँ और उसकी आराइश मे इस क़दर मुब्तिला हो जाते हैं कि जिस रब ने उन्हें ये नेअ़मतें अ़ता की उस रब को ही भूल जाते हैं कितने बदक़िस्मत और एहसान फ़रामोश हैं वो लोग जो रब तआ़ला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहते हैं और यही लोग अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी और ग़ज़ब का शिकार होते हैं।

क़ुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो अल्लाह को भुला बैठे हैं तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रहीं वही लोग फ़ासिक़ हैं। (सू0—हश्र—19)

इरशादे खुदा वन्दी है—
और क्या उन्होंने न देखा जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने बनाई है उसकी परछाइयाँ दाहिने बाँये अल्लाह की तरफ़ झुकती और सजदा करती हैं। (सू0—नहल—61)

किसी शख़्स को अगर पूरी दुनियाँ की दौलत और हुकूमत दे दी जाये तब भी उसका दिल राहतो सुकून और चैन नहीं पा सकता जब तक कि वो अपने दिल को अल्लाह व रसूल की मुहब्बत से मुनव्वर न करले और ज़िक्रे इलाही की कसरत से मुअत्तर न कर ले और बन्दा जब अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से मुँह फेरता है तो अल्लाह तआ़ला भी उस बन्दे से अपना रुख़ फेर लेता है और अल्लाह तआ़ला और उस बन्दे के दरमियान तआ़ल्लुक़ मुनक़ताअ़ हो जाता है और अल्लाह तआ़ला उस बन्दे को शैतान का साथी बना देता है और उसकी ज़िन्दगी तंगदस्त कर देता है और उस पर बलायें नाज़िल होती हैं और आख़िरत में वो बदकारों के साथ उठाया जायेगा उस पर कई तरह के अ़ज़ाब मुसल्लत किये जायेंगें।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और जो शख़्स रहमान के ज़िक्र से मुँह फेरे हम उसके लिये एक शैतान मुक़र्रर कर देते हैं जो उसका साथी होता है।
(सू0—ज़ुख़रुफ़—23)

इरशादे बारी तआला है—
और जिसने मेरी याद से मुँह फेरा उसके लिये तंग ज़िन्दगानी है और क़यामत के दिन हम उसे अन्धा उठायेंगे। (सू0—ताहा—124)

इरशादे बारी तआला है—
पस उन लोगों से मुँह फेर लें जो हमारे ज़िक्र से मुँह फेरते हैं। (सू0—नज्म—29)

अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करने वाले अल्लाह तआला के अ़ज़ाब को चैलेन्ज कर रहे हैं और उनके दिलों में उसके अ़ज़ाब से बे फ़िक्री और बे ख़ौफ़ी है और वही लोग उसके ज़िक्र से ग़ाफ़िल और बे परवाह होते हैं ऐसे लोग दोज़ख़ के ज़्यादा मुस्तहिक़ और सज़ावार होते हैं।

जब हमारा नफ़्स बिला ज़रुरत लोगों से मुलाक़ात व उनकी ज़ियारत और उनसे मेल—जोल का मुश्ताक़ हो तो समझ लो कि हम फिज़ूलपन व दीन से ऐराज़ और ज़िक्रे इलाही से ग़फ़्लत और नफ़्स के धोके में मुब्तिला हो गये हैं इन्सान का नफ़्स शहवात व लज़्ज़ात की तलब में ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाता है और उस पर शैतान का वसवसा जो हमें बहकाने और गुमराह करने के मन्सूबे बनाता रहता है ऐसे नफ़्स और शैतान से सुलह या रहम की उम्मीद हरगिज़ नहीं की जा सकती है बल्कि वो हर वक़्त हमें हलाक करने की कोशिश में लगा रहता है इसलिये हमें चाहिये कि ऐसे दुश्मन से बे ख़ौफ़ या ग़ाफ़िल रहना बहुत बड़ी ग़लती व हिमाक़त है जो हमारी हलाकत की वजह हो सकती है इसलिये इस नफ़्स के धोके और फ़रेब और इसकी मक्कारियों से हमें बचना और तवज्जै के साथ चौकन्ना रहना चाहिये और इस पर क़ाबू और ग़ालिब रहने के लिये हर वक़्त कोशिश व तदाबीर करते रहना चाहिये।

—: रोज़े की फ़ज़ीलत :—

रमज़ान तमाम महीनों में सबसे अफ़ज़ल महीना है और ये बरकत व रहमत और मग़फ़िरत का महीना है हदीस पाक में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया रजब अल्लाह तआ़ला का महीना है और शअ़बान मेरा और रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है एक और मक़ाम पर रमज़ान की फ़ज़ीलत के मुताअ़ल्लिक़ आपने इरशाद फ़रमाया वो शख़्स हलाक और बर्बाद हो जाये जिसे रमज़ानुल मुबारक का महीना मिले और वो अपनी मग़फ़िरत न करा पाये तो जब रमज़ान का महीना आये तो चाँद देखकर रोज़े की इब्तिदा करें और अगर अब्र (बादल) या गुबार हो तो तीस की गिनती पूरी करें और दूसरे दिन से रोज़ा रखें।

हदीस पाक में है—
जब तक चाँद न देखो रोज़ा न रखो अगर तुम्हारे सामने अब्र या गुबार हो तो तीस की गिनती पूरी करो (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात—174)

रोज़ा एक ऐसी इबादत है जो अल्लाह तआ़ला के साथ खुसूसी निसबत रखती है तमाम इबादत ज़ाहिरी इबादत में शुमार होती है लेकिन रोज़ा बातिनी इबादत है लोग ज़ाहिरी अ़मल व इबादत को देखते हैं लेकिन अल्लाह तआ़ला बन्दे का बातिनी अ़मल व इबादत को देखता है और उसे पसन्द फ़रमाता है और रोज़े की जज़ा अल्लाह तआ़ला बे हिसाब अ़ता करता है क्योंकि बन्दा रोज़े की हालत में अपनी तमाम नफ़्सानी ख़्वाहिशात को अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये लिये छोड़ देता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है हर नेकी का सबाब दस से लेकर सात सौ गुना तक है सिवाय रोज़े के बेशक रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इसकी जज़ा दूँगा। (सही मुस्लिम—1/363)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशादे फ़रमाया—
उस ज़ात की क़सम जिसके कब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि रोज़दार के मुँह की बू (खुशबू) अल्लाह तआ़ला के नज़दीक कस्तूरी

(मुश्क) से ज़्यादा खुशबूदार है नीज़ फ़रमाया कि उसने अपनी ख़्वाहिश को खाने और पीने को मेरी वजह से रोका तो रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इसकी जज़ा दूँगा। (सही बुख़ारी–1/254)

रोज़ेदार रोज़े की हालत में फ़रिश्तों के मिस्ल होता है क्योंकि वो जुहदो तक़्वा इख़्तियार करता है और अपने जिस्म के तमाम आज़ा (अंगो) को बुराई और गुनाहों से बचाता है और वो ये सब कुछ अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये करता है और ऐसे रोज़ेदार से अल्लाह तआ़ला राज़ी होता है और अल्लाह तआ़ला ऐसे रोज़ेदार का सोना भी इबादत में लिखता है और उसकी दुआ़यें कुबूल फ़रमाता है और वो जो कुछ अपने रब से माँगता है रब तआ़ला उसे अ़ता फ़रमाता है।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
रोज़दार की दुआ़ रद् नहीं होती। (मुस्नद अहमद–2/477)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है–
रोज़दार का सोना भी इबादत है। (कंजुल उ़म्माल–8/443)

भूके और प्यासे रहने और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने का नाम रोज़ा नहीं है बल्कि इसके साथ–साथ अपने जिस्म के हर आज़ा (अंगो) को बुराई से बचाने और अपने दिल को बद्ख़्याली से बचाने का नाम रोज़ा है जैसे जुबान को बेहूदा गुफ्तगू झूठ ग़ीबत चुग़ली बद कलामी से पाक रखना और खुद को जुल्म व ज़्यादती व रियाकारी से दूर रखना और दीगर गुनाहों से खुद की हिफ़ाज़त करना और खुद को ज़िक्रे इलाही व नमाज़ और कुरान मजीद की तिलावत में मशगूल रखना और अपने कानों से वो बात न सुने जो मकरुह व हराम हो और अपनी नज़र को हर बुरी चीज व शहबत से महफूज़ रखना और अपने हाथ और पाँव को बुराई और गुनाहों से बचाना सही मायनों में असल रोज़ा यही है और जो शख़्स रोज़े की हालत में इन तमाम बातों को अ़मल में लाता है वो जुहदो तक़्वा की मंज़िल पर फ़ाइज़ होता है और उसका रोज़ा अल्लाह तआ़ला की बारगाह में बुलन्द मक़ाम और मक़्बूलियत का दर्जा रखता है हत्ता कि उसकी बख़्शिश हो जाती है और उस बन्दे का ज़िक्र अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों में करता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ला रोज़दार का ज़िक्र फ़रिश्तों में करता है और फ़रमाता है ऐ फ़रिश्तो मेरे बन्दे की तरफ़ देखो कि उसने अपनी शहवत व खाना और पीना मेरी रज़ा की ख़ातिर छोड़ दिया है। (कंज़ुल उ़म्माल–15/776)

और जो लोग रोज़े की हालत में बुराई और गुनाहों से परहेज़ नहीं करते और अपने जिस्म के आज़ा (अंगों) को गुनाहों से महफूज़ नहीं रखते उनका रोज़ा अल्लाह तआ़ला की बारगाह में कुबूल नहीं होता और उन्हें अपने रोज़े से भूक और प्यास के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
कितने ही रोज़दार ऐसे हैं जिनको अपने रोज़े से भूक और प्यास के सिवा कुछ हासिल नहीं होता। (सुनन इब्ने माजा–122)

रोज़ा ईमान का चौथा हिस्सा है हदीस पाक में है रोज़ा सब्र का निस्फ़ (आधा) है और सब्र ईमान का निस्फ़ है रोज़ा सब्र के ज़रिये अल्लाह तआ़ला से खुसूसी निसबत रखता है रोज़ा शैतान को कमजोर और उसके रास्तों को तंग कर देता है और इन्सान में शैतानी वसवसों को रोकने और नफ़सानी ख़्वाहिशात व शहवात को तोड़ने में मददगार होता है रोज़ा इन्सान के ईमान में मज़बूती और निख़ार लाता है और दिलों की तारीकियों को मिटा कर ईमान के नूर से रोशन करता है।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
हर चीज़ का एक दरवाज़ा है और इबादत का दरवाज़ा रोज़ा है। (कंज़ुल उ़म्माल–8/448)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जब रमज़ानुल मुबारक का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नुम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतानों के बेड़ियाँ डाल दी जाती हैं और एक पुकारने वाला पुकारता है ऐ ख़ैर के मुतलाशी आगे बढ़ और बुराई ढूँढने वाले रुक जा। (जामअ़ तिर्मिज़ी–1/132)

निफ़िली रोज़ों से मुताअ़ल्लिक़ चन्द अहादीस–
माहे रमज़ान के बाद अफ़ज़ल रोज़े माहे मुहर्रम के रोज़े हैं।
(सही मुस्लिम–1/368)

मुहर्रमुल हराम के हर एक दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है। (तिबरानी)

योमे आशूरा (मुहर्रम की दस तारीख़) का एक रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है। (सही मुस्लिम)

अरफ़ा (ज़िल हिज्जा की नौ तारीख़) का एक रोज़ा एक साल कब्ल के गुनाह मिटा देता है। (बुख़ारी, मिश्कात)

जिसने रमज़ान के बाद छः (6) रोज़ें रखे तो गोया उसने पूरे साल रोज़े रखे। (मुस्लिम, मिश्कात)

हर महीने की 13,14,15 तारीख़ का रोज़ा ऐसा है कि जैसे हमेशा का रोज़ा। (बुख़ारी तिर्मिज़ी)

जिसने माहे रजब की सत्ताइस (27) तारीख़ का रोज़ा रखा और रात बेदारी और इबादत में गुज़ारे तो गोया उसने सौ (100) साल के रोज़े रखे और सौ (100) साल शबे बेदारी की।(शुअ़बुल ईमान)

—: हज की फ़ज़ीलत :—

हज इस्लाम का चौथा रुकन है और हज करना हर आ़क़िल बालिग़ मुसलमान साहिबे निसाब पर फ़र्ज़ है और अगर कोई शख़्स इसकी ताक़त के बावजूद बिला शरई उ़ज़्र ताख़ीर (देर) करता है तो वो गुनाहगार और बिला शरई उ़ज़्र इसे छोड़ने वाला फ़ासिक़ है और अ़ज़ाबे जहन्नुम का मुस्तहिक़ है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और अल्लाह तआ़ला के लिये उन लोगों पर बैतुल्लाह शरीफ़ का हज फ़र्ज़ है जो उसकी तरफ़ जाने की ताक़त रखता है।
(सू0—आले इमरान—97)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और अल्लाह तआ़ला के लिये हज व उम्राह को पूरा करो।
(सू0—बक़राह—196)

अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स को हज करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये तो उसे चाहिये बिला ताख़ीर फ़ौरन हज की तैयारी करे और मनासिके हज अदा करे कि कहीं ऐसा न हो कि उसे मौत आ जाये और वो इस इ़बादत से महरुम रह जाये और गुनाहगार बन कर दुनियाँ से रुख़सत हो जाये।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो आदमी ताक़त के वाबजूद हज किये वग़ैर मर जाये तो वो यहूदी मरा या ईसाई मरा। (जामअ़ तिर्मिज़ी—1/140)

हज की बे शुमार फ़ज़ीलतें हैं और हर शख़्स को चाहिये कि नेक नीयत से हज का इरादा करे और उसमें ज़र्रा बराबर भी रिया न हो सिर्फ़ रब तआ़ला की रज़ा के लिये मनासिके हज अदा करे जो शख़्स नेक नीयत और रब तआ़ला की रज़ा हासिल करने के लिये हज के इरादे से घर से निकलता है तो वापसी आने तक वो अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में होता है अगर उसे इस दरमियान मौत आ जाये तो अल्लाह तआ़ला उसे क़यामत तक हज व उमराह

का सवाब अ़ता फ़रमाता है और बाद हज उसे मौत आ जाये तो शहादत का दर्जा पाता है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– जो शख़्स अपने घर से हज या उम्राह के इरादे से निकला और रास्ते में मर जाये तो उसे क़यामत तक हज व उमराह का सवाब अ़ता किया जायेगा और जो शख़्स मक्का मुअ़ज़्ज़मा या मदीना मुनव्वरा में इन्तक़ाल कर जाये वो बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल होगा। (शुअ़बुल ईमान–3/474) (वैहकी–5/244)

जो लोग रियाकारी,(दिखावा) तिजारत और सैरो तफरीह के लिये हज करते हैं उनका हज कुबूल नहीं होता बल्कि वो लोग गुनाहगार होते हैं बसा औक़ात देखा गया है कि जब कोई शख़्स बैतुल्लाह शरीफ़ के हज का इरादा करता है और जाने से पहले लोगों से मुलाक़ात करता है ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग जान जायें कि मैं हज करने जा रहा हूँ और मेरी वापसी पर लोग मुझे हाजी कहें और मेरी इज़्ज़त करें और ऐसे ख़्यालात के बाइस उसके अन्दर रिया हाइल हो जाती है इसके अलावा जाने से पहले लोगों की दावत में फ़िज़ूल ख़र्च करता है और लोगों की मुबारक बाद और खुशामदों का मुश्ताक़ होता है और ये तमाम बातें रिया पर मुश्तमिल हैं जो सख़्त गुनाह हैं और वो इस तरह अपने हज को ज़ाया कर देता है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
एक ज़माना ऐसा आयेगा कि लोग सैरो तफरीह और रियाकारी के लिये हज करेंगे। (तारीख़े बगदाद–290)

इसलिये हमें चाहिये कि इन बातों पर ग़ौर करें और लोगों से मुलाक़ात करते वक़्त खुद को रिया (दिखावा) से बचायें और किसी तरह की फ़िज़ूल ख़र्ची न करें और हर इबादत सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये है और अल्लाह तआ़ला ही उसका अज्र (सवाब) देता है और लोगों को दिखावा करने से हमें कुछ भी हासिल नहीं होता सिवाये गुनाह के और न ही लोग हमारा कुछ भला कर सकते हैं सिवाये अल्लाह के इसलिये नेक नीयत व इख़लास व अच्छे अख़लाक और शरई अहकामात के साथ मनासिके हज अदा करें।

और घर से निकलने से लेकर वापसी आने तक ये कोशिश करें कि छोटे से छोटा गुनाह भी हम से वाकैअ़ न हो और ज़्यादा से ज़्यादा नेक अ़मल करें और हज के दौरान किसी को अज़िय़त (तकलीफ़) न दें और लागों से जो अज़िय़त मिले उस पर सब्र व ज़ब्त करें और लड़ाई झगड़ा गुस्सा ग़ीबत झूठ शहवत और हर बुरे काम से बचें और खुशदिली और रज़ाये इलाही की नीयत के साथ मनासिके हज अदा करें ताकि हमारा हज बारगाहे खुदावन्दी में मक़्बूल हो और मक़्बूल हज की जज़ा मग़फ़िरत और जन्नत है।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जिसने बैतुल्लाह शरीफ़ का हज किया और उसने न तो कोई गुनाह किया और न बेहयायी की बात की तो वो अपने गुनाहों से इस तरह बाहर आयेगा जिस तरह वो बच्चा जिसे उसकी माँ ने अभी जना हो (सही मुस्लिम–1/436)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
मक़्बूल हज दुनियाँ और जो कुछ उसमें है से बेहतर है और मक़्बूल हज की जज़ा जन्नत है। (सही मुस्लिम–1/436)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
मक़्बूल हज की जज़ा जन्नत है तो आप से अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह हज की मक़्बूलियत किस चीज के साथ है आप ने इरशाद फ़रमाया अच्छी गुफ्तगू और खाना खिलाना।
(मजमउज़वाइद–3/207)

अल्लाह तआ़ला जमीन वालो की तरफ़ जब नज़रे रहमत करता है तो सबसे पहले हरम वालो की तरफ़ करता है और हरम में सबसे पहले मस्जिदे हराम की तरफ़ नज़रे रहमत करता है और उनमें से जो लोग नमाज़ पढ़ते या तवाफ़ करते या काबा शरीफ़ की ज़ियारत करते अल्लाह तआ़ला उन्हें बख़्श देता है और यहाँ हर नेकी का सबाब हजारों गुना मिलता है पस हमें चाहिये कि अपनी ज़ैब और ज़ीनत को इख़्तियार न करें बल्कि गुलामों की तरह अपने रब की बारगाह में हाज़िरी दें और शहवतों व लज़्ज़तों और बुरी ख़्वाहिशात से परहेज़ करते हुये नेक नीयत और इख़लास के साथ मनासिके हज अदा करें।

—: ज़ियारते मदीना मुनव्वरा :—

मदीना मुनव्वरा बड़ी फ़ज़ीलतों वाला शहर है जहाँ सरवरे कायनात रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम जलवये अफ़रोज़ है जहाँ बेशुमार फ़रिश्तों की आमद होती है और बेशुमार रहमतों और बरकतों का नुजूल होता है तो जब हम उनके रोज़े मुबारक में हाज़िरी का शरफ़ पायें तो बा अदब और एहतराम के साथ रोज़े मुबारक में हाज़िर हों और रोज़ये अक़्दस में खुशूअ़ व खुजूअ़ के साथ दाख़िल हों और शोर शराबा व तेज़ आवाज़ में कलाम न करें बल्कि इस तरह पेश आयें कि वो हमारे आक़ा है और हम उनके गुलाम हैं

और वो तरीक़ा इख़्तियार करें जो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की हयाते तइयबा में तमाम सहाबा किराम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम का तरीक़ा था कि जब सहाबा किराम (रज़ि0) हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सामने पेश होते तो उनकी ताज़ीम व अदब और एहतराम किया करते थे और उन्होंने कभी ऊँची आवाज़ में आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से कलाम न किया और इसके अलावा दुरूदो सलाम के नज़राने पेश करें और दुआ़ अस्तग़फ़ार व नमाज़ और कुरान मजीद की तिलावत में मशगूल रहें और कोई ऐसा काम न करें जो शरई तौर पर नाजाइज़ व हराम हो और मस्जिदे नबवी में ज़्यादा से ज़्यादा नमाज़ पढ़ें क्योंकि इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का सवाब हज़ार गुना ज़्यादा मिलता है।

और हर बुरी और ममनूअ़ बातों को तर्क कर दें हुस्ने अख़लाक को इख़्तियार करें और किसी को अज़िय्यत न पहुँचायें बल्कि लोगों की मदद करें और उनके साथ नरमी बरतें और ये अक़ीदा रखें कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हमारी हाज़िरी और ज़ियारत को जानते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु ने फ़रमाया—जो शख़्स मेरी क़ब्र के नज़दीक मुझ पर दुरूद पढ़े मैं उसको जानता हूँ। (अलक़ौलुल बदीअ—154)

और ख़ास बात ये है कि जब मदीना मुनव्वरा जाने का इरादा करें तो सिर्फ़ ये नीयत करें कि हम हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के रोज़े मुबारक की ज़ियारत को जा रहे है क्योंकि इस नीयत के सबब हमें हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की कुरबत मिलती है जो क़यामत के दिन शफ़ाअ़त का सबब बनेगी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उसके लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई। (मजमउज्ज़वाइद—4/2)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है मेरी इस मस्जिद (नबवी) में एक नमाज़ मस्जिदे हराम के अलावा दीगर मस्जिद से एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है।
(सही मुस्लिम—1/447)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
जिसने मदीना तइयबा की सख़्ती और शिद्दत पर सब्र किया मैं क़यामत के दिन उसकी सिफ़ारिश करुँगा। (सही मुस्लिम—1/444)

मदीना वो शहर है जिसे अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब के लिये पसन्द फ़रमाया और जब मदीने की ज़मीन पर चलें तो बड़े सुकून और संजीदगी के साथ क़दम रखें और तसव्वुर में लायें कि इस ज़मीन पर मेरे मुस्तफ़ा के क़दम मुबारक लगे हैं और मदीना मुनववरा की किसी चीज़ को ज़रर व नुकसान न पहुँचायें।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिस शख़्स ने अहले मदीना के साथ ज़र्रा बराबर भी ज़्यादती का इरादा किया तो अल्लाह तआ़ला उसे दोज़ख़ की आग में डालकर यूँ ख़त्म कर देगा जैसे नमक पानी में घुलकर ख़त्म हो जाता है।
(सही मुस्लिम—1/445)

एक और मक़ाम पर आपने इरशाद फ़रमाया—
जिसने मदीना में कोई हादसा बपा किया उस पर अल्लाह तआ़ला और फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लानत है उसके न निफ़िल कुबूल किये जायेंगे न फ़र्ज़। (सही बुख़ारी—1/251)

—: मौत और उसकी सख़्तियाँ :—

दुनियाँ में कोई ऐसा नहीं जिसे मौत का मज़ा न चख़ना हो चाहे बादशाह हो चाहे भिकारी एक न एक दिन मौत उसे अपनी आगोश में ले लेती है और बड़े—बड़े बादशाह हाकिम व मालदार व ग़रीब को दुनियाँ के उजालों से उठाकर अंधेरी क़ब्र में ले जाती है और इन्सान दुनियाँ की आराइश व लज़्ज़तों और ख़्वाहिशों को छोड़कर ज़मीन के नीचे पहुँच जाता है और मौत इन्सान को नरम मुलायम बिस्तरों से उठाकर ख़ाक पर लिटा देती है।

काफ़िर के लिये क़ब्र अंधेरी तंग कोठरी है और उसके लिये क़ब्र में मुख़्तलिफ अ़ज़ाब हैं और मोमिन के लिये मौत दुनियाँ की मशक़्क़तों मुसीबतों व परेशानी से अज़ादी और जन्नत का बाग़ है अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दे अपनी मौत को कसरत से याद करते हैं और अपनी मौत पर अफ़सोस नहीं करते बल्कि वो खुश होते हैं और काफ़िर बदकार लोग अपनी मौत को याद नहीं करते बल्कि अगर उनके सामने कोई मौत का ज़िक्र करे तो वो उसे ना पसन्द करते हैं हालाँकि मौत का ज़िक्र करना और कसरत से मौत को याद करना निजात का रास्ता है।

क्योंकि जब इन्सान अपनी मौत को याद करता है तो वो खुद का मुहासिवा करता है और गुज़िस्ता गुनाहों से तौबा करता है और मुस्तक़बिल में गुनाह न करने का अहद करता है और नेक अ़मल करने लगता है और लोगों में मौत का ज़िक्र करना अच्छा अ़मल है ताकि लोग गुनाहों से बचें और नेक अ़मल की तरफ़ राग़िब और मुतवज्जे हों और दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत से किनारा कशी इख़्तियार करें और अपनी आख़िरत बेहतर बनाने की तैयारी में लग जायें हदीस पाक में है कि जो शख़्स दिन रात में बीस मर्तबा अपनी मौत को याद करता है वो क़यामत के दिन शुहदा के साथ उठाया जायेगा।

इरशादे बारी तआ़ला है—
ऐ ईमान वालो उन लोगों से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह तआ़ला का ग़ज़ब है वो आख़िरत से आस तोड़ बैठे जैसे काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्र वालों से। (सू0—मम्तहिनाह—13)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
हर जान को मौत का मज़ा चखना है (और) फिर हमारी तरफ़ फिरोगे (सू0–अ़नकबूत–57)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ (यानी मौत) का कसरत से ज़िक्र करो। (जामअ़ तिर्मिज़ी–335)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
मौत का ज़िक्र ज़्यादा किया करो ये गुनाहों से पाक और दुनियाँ से बे रग़बत करती है। (कंज़ुल उ़म्माल–15/543)

मौत के ज़िक्र और उसकी याद के साथ–साथ हमें चाहिये कि मौत की सख़्तियों पर भी ग़ौरो फ़िक्र करें और उससे डरें और मौत के वक़्त होने वाली तकलीफ़ों से बचने के लिये नेक अ़मल के ज़रिये तैयारी करें हदीस पाक में है कि आसान तरीन मौत की मिसाल ऐसी है कि जैसे उन में काँटेदार टहनी हो फिर उसे खींचा जाये तो कुछ न कुछ उन भी खिंची चली आयेगी और अल्लाह तआ़ला के नेक सालेह फ़रमाबरदार बन्दों की मौत की मिसाल ऐसी है कि जैसे गुँदे हुये आटे से बाल निकाला जाता है जो शख़्स अपनी उम्र अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी में गुज़ारता है तो जब उसकी मौत का वक़्त आता है तो अल्लाह तआ़ला बहुत से फ़रिश्तों को भेजता है जो उसकी रुह को बहुत आसानी से क़ब्ज़ करते हैं और उसके लिये दुआ़ये रहमत करते हैं फिर उसकी रुह आसमानो में ले जायी जाती है तो तमाम आसमानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि इस नेक रुह को वो दिखाओ जो मैनें इसके लिये तैयार कर रखा है।

और जब काफ़िर बदकार का आख़िरी वक़्त आता है तो जो फ़रिश्ते उसकी रुह क़ब्ज़ करने के लिये आते हैं उनके पास आग का लिबास होता है और जब उसकी रुह आसमानों में ले जायी जाती है तो उस पर आसमानों के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और उसे ज़मीन के सबसे निचले हिस्से की तरफ़ फेंक दिया जाता है और ज़मीन व आसमान सब उस पर लानत करते हैं

और मौत के वक़्त काफ़िर बदकार की रुह बहुत ज़्यादा तकलीफ़ों के साथ क़ब्ज़ की जाती है।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहस्सलाम ने मल्कुल मौत से कहा कि मुझे अपनी वो शक्ल दिखाओ जब तुम काफ़िर बदकार की रूह क़ब्ज़ करते हो तो मल्कुल मौत (यानी इज़राईल अ़लैहस्सलाम) ने कहा कि ऐ अल्लाह के ख़लील आप उसे बर्दास्त न कर सकेंगे लेकिन इब्राहीम अ़लैहस्सलाम के ज़्यादा इसरार करने पर मल्कुल मौत ने अपनी वो शक्ल दिखाई जिस शक्ल में वो काफ़िर बदकार की रूह क़ब्ज़ करते हैं तो जब इब्राहीम अ़लैहस्सलाम ने मल्कुल मौत की शक्ल देखी कि एक सियाह (काला) शख़्स है जिसके बाल खड़े है और उसके पास से बहुत ज़्यादा बदबू आ रही है और नथुनों और मुँह से आग और धुआँ निकल रहा है तो मल्कुल मौत की वो बदसूरत और डरावनी शक्ल देखकर हज़रत इब्राहीम अ़लैहस्सलाम बेहोश हो गये तो जब अल्लाह तआ़ला के नबी और ख़लील का ये हाल है तो ज़रा सोचो कि हम गुनाहगारों का क्या हाल होगा इसलिये हमें चाहिये कि ऐसे अ़मल करें कि हम मौत की तमाम तकलीफ़ों से महफूज़ रहें।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सबसे आसान मौत इस तरह है कि भेड़ बालों में हड्डी हो तो क्या वो हड्डी बालों मे से बग़ैर बालों के निकलती है।
(कंज़ुल उ़म्माल—10/561)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है मौत की तकलीफ़ तलवार की तीन सौ ज़रबो की मिक़दार है
(तज़किरातुल मौत—213)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से मरवी है कि सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मोमिन की मौत का वक़्त आता है तो उसके पास एक रेशमी कपडा लेकर फ़रिश्ते आते हैं जिसमें कस्तूरी और रेहान (एक खुशबूदार घास) के बन्डल होते है फिर उसकी रूह इस तरह निकाली जाती है जिस तरह गुँदे हुये आटे से बाल निकाला जाता है और कहा जाता है कि ऐ मुतमइन्ना नफ़्स अपने रब की तरफ़ यूँ निकल कि तू अल्लाह तआ़ला से राज़ी और

अल्लाह तआ़ला तुझसे राज़ी और उसकी रूह को कस्तूरी और रेहान पर रखा जाता है जब काफ़िर की मौत का वक़्त आता है तो उसके पास टाट में चिंगारिया लेकर फ़रिश्ते आते हैं और उसकी रूह को निहायत सख़्ती के साथ निकाला जाता है और फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ खबीस रूह इस हाल में बाहर निकल कि अल्लाह तआ़ला तुझसे नाराज़ है और तेरे लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है फिर उसकी रूह को अंगारों पर रखा जाता है फिर उसे टाट में लपेट कर सिज्जीन (सबसे निचले दरजे) की तरफ़ ले जाया जाता है। (मुस्तदरक हाकिम–1/353)

इरशादे बारी तआ़ला है–

जब फ़रिश्ते काफ़िरों की रूह क़ब्ज़ करते हैं वो उनके चेहरों और पीठों पर (हथोड़े से) मारते जाते हैं और कहते हैं कि चख़्खो आग का अ़ज़ाब ये (अ़ज़ाब) उन (बुरे आमालों) के बदले में है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे और अल्लाह तआ़ला हरगिज़ बन्दों पर जुल्म नहीं करता।(सू0–अनफ़ाल–50)

अक्सर इन्सान की तमाम उम्र दुन्यावी कामों के बाइस मसरूफ़ रहती हैं जैसे तिजारत मकानात की तामीर औलाद की तालीम व तरबियत और उनकी शादी ब्याह बग़ैराह और दीगर तमाम काम जो उसकी ज़िन्दगी से जुडे होते हैं लेकिन उसे चाहिये कि इन तमाम कामों के साथ–साथ अपनी मौत को न भूले और अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल न हो और अल्लाह तआ़ला की इबादत और शरीअ़त के अहकाम को नज़र अन्दाज़ न करें बल्कि कसरत से नेक अ़मल करे और नेक अ़मल को सबसे ज़्यादा तरजीह और अहमियत दे जिसके लिये इन्सान को दुनियाँ में पैदा किया गया है।

क्योंकि इन्सान के दुन्यावी काम सिर्फ़ दुनियाँ तक ही महदूद हैं और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र और उसकी इबादत और नेक अ़मल इन्सान को अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और अ़ज़ाब से बचाते हैं और उसे जन्नत में ले जाते हैं लेकिन बाज़ लोग अपनी उम्मीदों और ख़्वाहिशों के पीछे लगे रहते हैं हत्ता कि उन्हें मौत का ख़्याल भी नहीं आता और अपनी दुन्यावी ज़िन्दगी के ख़्वाबों को पूरा करने में मसरुफ़ रहते हैं यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उनकी मौत का परवाना निकल जाता है और उनकी तमाम उम्मीदें और ख़्वाब सब धरे के धरे रह जाते हैं और मौत आ पहुँचती है और वो ज़िन्दा से मुर्दा हो जाते हैं।

और उनके वो हाथ जिनसे वो काम किया करते थे अब वो मख्खी उड़ाने की भी ताक़त नहीं रखते और उनके पाँव (पैर) जिनसे वो दौड़ते और चलते थे लेकिन अब वो हिल भी नहीं सकते और जिस ज़ुबान से वो बोला करते थे उस ज़ुबान से अब वो आह भी नहीं कह सकते और जिन आँखों से वो देखा करते थे उन आँखों की रोशनी चली गई और जिस हुस्नो जमाल पर उन्हें नाज़ था और जिस ताक़त पर उन्हें फख़्र और तकब्बुर था वो सब मिट्टी हो गया और जिस माल और नेअ़मतों पर वो इतराते और खुश होते थे वो उन से छीन लिया गया और अब वो दूसरों का हो गया और तमाम दुनियाँ उन के लिये बे मतलब हो गई और दुनियाँ से उनका रिश्ता मुनक़ताअ़ हो गया और उनके दोस्त अ़ज़ीज़ रिश्तेदार और घर वाले जिनसे वो मुहब्बत किया करते थे वही लोग उन्हें अंधेरी क़ब्र में तन्हा छोड़कर अपने घरों को वापस आ जाते हैं और वो मिट्टी से बने थे उसी मिट्टी में मिल जाते हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
भला तुम क्योंकर खुदा के मुन्किर हुये हालाँकि तुम मुर्दा थे उसने तुम्हें जिलाया फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम उसी की तरफ पलट कर जाओगे। (सू0–बक़राह–28)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
धोके वाले घर (दुनियाँ) से दूर रहो और हमेशा रहने वाले घर की तरफ रुजूअ़ करो और मौत आने से पहले उसकी तैयारी करो। (मुस्तदरक हाकिम–4/311)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है–
अचानक मौत मोमिन के लिये राहत है और फ़ाजिर के लिये अफ़सोस का बाइस है। (मुस्नद अहमद–4/219)

हर शख़्स को चाहिये कि अपनी मौत को हमेशा अपनी आँखों के सामने रखे क्योंकि किसी को पता नहीं कि सुबह के बाद शाम देखूँगा या नहीं और शाम के बाद सुबह देखूँगा या नहीं और मौत को हमेशा अपने क़रीब जाने और ये गुमान न करे कि बुढ़ापा होगा

या कोई बीमारी होगी तब मौत आयेगी ऐसा ख़्याल करना हिमाक़त है क्या हम लोगों को अचानक वग़ैर बीमारी या वग़ैर बुढ़ापे के मरते हुये नहीं देखते हालाँकि हमने बहुत से लोगों को देखा जो अपनी जवानी तक नहीं पहुँचे और बहुत लोग ऐसे थे जो जवानी से बुढ़ापे तक नहीं पहुँचे और उनको मौत आ गई इसलिये आज को कल पर न छोड़ो बल्कि अपनी आख़िरत की तैयारी में लग जाओ और अपनी तमाम ज़िन्दगी अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी में गुज़ारो और अल्लाह तआला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत में खुद को ग़र्क़ कर दो और ख़ौफ़े खुदा से दिलों को लरज़ने दो और याद रखो ज़मीन के ऊपर चलने वाला हर शख़्स एक दिन ज़मीन के नीचे होगा और मुद्दतों वहीं उसका बसेरा होगा

और जो लोग अल्लाह व रसूल की ना फ़रमानी में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उनके लिये सख़्त अ़ज़ाब है और अ़ज़ाब की इब्तिदा उनकी मौत से होती है क्योंकि उनकी मौत की तकलीफ़ इतनी सख़्त होती है कि जितनी तकलीफ़ तलवार के वार और कैंची की काट से भी नहीं होती और तलवार के वार और कैंची की काट से इन्सान चीख़ता चिल्लाता है लेकिन मौत की तकलीफ़ इतनी सख़्त होती है कि इन्सान चिल्ला भी नहीं पाता क्योंकि मौत की सख़्त तकलीफ़ इन्तहाई दर्जे की होती है जिसके बाइस इन्सान के अन्दर चीख़ने चिल्लाने की ताक़त नहीं रहती और उस वक़्त सीने से गले तक ग़रग़रे की आवाज़ शुरु हो जाती है और उस वक़्त तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाता है और होंठ सिकुड़ जाते हैं और ज़ुबान अपनी जड़ की तरफ़ खिंचती है और तमाम जिस्म से रुह खींच ली जाती है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है–
ऐ महबूब (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) आप फ़रमां दीजिये जिस मौत से तुम भागते हो वो ज़रुर तुम्हें मिलने वाली है फिर तुम हर पौशीदा और ज़ाहिर चीज़ के जानने वाले रब की तरफ़ लौटाये जाओगे फिर वो तुम्हें सब बता देगा जो कुछ तुम करते थे। (सू0–जुमआ–8)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जब तक ग़रग़रे वाली कैफ़ियत पैदा न हो तब तक बन्दे की तौबा

कुबूल होती है। (मुस्नद अहमद—2/132)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशादे फ़रमाया— मइयत के लिये तीन बातों के वक़्त अल्लाह तआ़ला की रहमत का नुज़ूल समझो जब उसकी पेशानी पर पसीना आये और आँखों से आँसू जारी हों और होंठ खुश्क हो जायें (तो उस पर अल्लाह तआ़ला की रहमत का नुज़ूल है) और रंग सुर्ख़ हों और होंठ मटियाले हों तो समझ लो उस पर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब नाज़िल हो रहा है। (कंज़ुल उ़म्माल—15/562)

हदीस पाक में है कि मौत की तकलीफ़ का एक क़तरा दुनियाँ के पहाड़ो पर रख दिया जाये तो वो सब पिघल जायें हज़रत कअ़ब (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि मौत उस टहनी की तरह है कि जिसमें बहुत से काँटे हों और उसे किसी के पेट में दाख़िल किया जाये और हर एक काँटा हर एक रग को पकड़ ले फिर कोई खींचनें वाला उस टहनी को खींचे तो सोचो उस शख़्स का क्या हाल होगा

काफ़िर बदकार शख़्स पर मौत के वक़्त जो तकलीफ़ होती है अगर कोई मुर्दा क़ब्र से निकलकर उस तकलीफ की ख़बर लोगों को दे तो वो दुनियाँ और दुनियाँ की लज़्ज़तों को भूल जायें और उनकी नीदें उड़ जायें और उनका जीना दुश्वार हो जाये तो फिर हमें इस बात पर ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये कि हम गुनाहगारों का क्या हाल होगा हमें तो मौत की सख़्तियों के अलावा बहुत सी मुसीबतें हमारे गुनाहों के बाइस क़ब्र में आयेंगी इसलिये हमें चाहिये कि अपने गुनाहों से तौबा करें और आख़िरत की तैयारी में कसरत से नेक अ़मल करें।

हदीस पाक में है अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे से राज़ी होता है तो फ़रमाता है कि ऐ मौत के फ़रिश्ते फ़लाँ के पास जाओ और उसकी रुह मेरे पास लाओ ताकि मैं उसे राहत दूँ उसका यही अ़मल काफ़ी है कि मैने उसे आज़माया तो मै जिस तरह चाहता था उसे उसी तरह पाया फिर मल्कुल मौत पाँच सौ फ़रिश्तों के हमराह उस शख़्स के पास आते हैं और उनके पास फूलों की छड़ियाँ और ज़ाफरान की शाखें और फूलों के गुलदस्ते होते हैं और वो उस

शख़्स को खुश ख़बरी देते हैं और उसकी रुह के इन्तिज़ार में दो सफ़ों में खड़े हो जाते हैं और उसकी रुह क़ब्ज़ करके बारगाहे खुदावन्दी में ले जाते हैं और मोमिन नेक शख़्स को रुह क़ब्ज़ होते वक़्त च्यूँटी के काटने से भी कम तकलीफ़ होती है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मौत मोमिन के लिये तोहफ़ा है। (मुस्तदरक हाकिम—4/319)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे से राज़ी होता है तो फ़रमाता है ऐ मौत के फ़रिश्ते फ़लाँ के पास जाओ और उसकी रुह मेरे पास लाओ ताकि मैं उसे राहत दूँ। (दुर्रे मन्सूर)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
मौत के बारे में जो कुछ इन्सान को मालूम है अगर जानवरों को इस बात का इल्म होता तो तुम उनमे से किसी मोटे जानवर का गोश्त नहीं खा पाते (यानी मौत के ख़ौफ़ से जानवर दुबले पतले और कमज़ोर हो जाते। (शुअ़बुल ईमान—7/353)

जिस शख़्स के दिल में दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत होती है तो वो शख़्स दुनियाँ की जुदाई से डरता है और ख़्याल करता है कि उसकी दुनियाँ उसकी मौत के साथ ही छूट जायेगी और वो शख़्स अपनी दुनियाँ छूटने के डर से घबराता है और जो शख़्स दुनियाँ से बे रग़बती रखता वो अपनी मौत से नहीं ड़रता क्योंकि वो अपनी आख़िरत और वहाँ मिलने वाली अ़ज़ीम नेअ़मतों को पाना चाहता है इसलिये वो अपनी ज़िन्दगी उसी की फ़िक्र में गुज़ारता है और वो गुनाहों से इजतिनाब करता और बुराइयों से दूर रहता और अच्छे अ़मल करता है हर इन्सान के दिल का झुकाव उसी तरफ़ होता है जिसे वो चाहता है दुनियाँ पसन्द आदमी अपनी मौत के ख़्याल को भी दिल में नहीं आने देता और यही बात उसे मौत से ग़ाफ़िल कर देती है।

बाज़ लोग जब किसी की मौत पर उसके घर ताअ़ज़ियत के लिये जाते हैं और उसके जनाज़े और दफ़ीने में भी शिर्कत करते हैं लेकिन वो इससे इब्रत हासिल नहीं करते कि इसी तरह हमारी भी

मौत होगी इसी तरह हमारा भी गुस्ल होगा इसी तरह हमें भी कफ़न पहनाया जायेगा इसी तरह हमें भी लोग अपने काँधों पर लेकर क़ब्रिस्तान तक जायेंगे और हमारी भी नमाज़ जनाज़ा होगी जिस तरह हम आज इसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ रहे हैं और लोग हमें अंधेरी क़ब्र में तन्हा छोड़कर अपने–अपने घरों को चले आयेंगें और क़ब्र में हमारे आमालों के सिवा हमारा कोई साथी न होगा लेकिन ऐसा ख़्याल उनके दिलों में न आना सिर्फ़ दुनियाँ की मुहब्बत की वजह से होता है और वो अपने अंजाम से ग़ाफ़िल रहते हैं।

और वक़्ते मौत हर शख़्स को चाहिये कि अल्लाह तआ़ला के लिये अच्छा गुमान रखे और अल्लाह तआ़ला से पूरी उम्मीद रखे कि अल्लाह तआ़ला हमारे तमाम गुनाहों को बख़्श देगा लेकिन अपने गुनाहों से डरना भी चाहिये और वक़्ते मौत अल्लाह तआ़ला का कसरत से ज़िक्र करना चाहिये और अगर बोलने की ताक़त न हो तो दिल में अल्लाह का ज़िक्र करना चाहिये और मौत से क़ब्ल अपने तमाम गुनाहों की अल्लाह तआ़ला से माफ़ी माँगना चाहिये और वक़्ते मौत अल्लाह तआ़ला के लिये हुस्ने ज़न रखना हर मुसलमान के लिये उसके हक़ में बेहतर है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि–
अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि बन्दा मुझे अपने गुमान के मुताबिक़ पाता है पस मेरे बारे में जो चाहे गुमान करे (मुस्नद अहमद–2/315)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
वक़्ते मौत जिस बन्दे के दिल में ये दोनो बातें इकट्ठी होती हैं (यानी अपने गुनाहों से डरना और अल्लाह तआ़ला से मग़फिरत की उम्मीद रखना) तो अल्लाह तआ़ला उसकी उम्मीद को पूरा फ़रमाता है और जिस बात से वो डरता है उसे उस बात से अमन अ़ता फ़रमाता है। (जामअ़ तिर्मिज़ी–161)

जब हम किसी फ़ौत होने वाले शख़्स के पास मौजूद हों तो हमें चाहिये कि मरने वाले शख़्स को कलमये तौहीद की तल्क़ीन करें और अपनी तल्क़ीन में नरमी इख़्तियार करें और बार–बार उस फ़ौत होने वाले शख़्स से कलमा पढ़ने के लिये न कहें क्योंकि बाज़

औक़ात फ़ौत होने वाले शख़्स की जुबान नहीं चलती और उसके लिये कलमे का पढ़ना मुश्किल होता है और वो तुम्हारे बार–बार कहने को बोझ समझे और कलमे को ना पसन्द कर बैठे और ये फ़ौत होने वाले शख़्स के लिये बुरे ख़ात्मे का बाइस हो सकता है।

क्योंकि जो कुछ उस पर गुज़रती है वो हम नहीं देख सकते इसलिये एक दो बार कलमा पढ़ने के लिये कहें ज़्यादा न कहें और अगर वो कलमा न पढ़े या कलमा पढ़ने की ताक़त उसके अन्दर न हो तो हमें चाहिये कि कुछ तेज़ आवाज़ से कलमये तौहीद खुद पढ़ें ताकि उसके दिल पर कलमे के अल्फाज़ पूरी तरह बैठ जायें और वो कलमा पढ़ने लगे या न पढ़ने की ताक़त के सबब वो कलमे के अल्फाज़ को दिल में पढ़ने लगे।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अपने फ़ौत हाने वाले शख़्स को कलमा तौहीद की तल्क़ीन करो।
(सही मुस्लिम–1 / 300)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
कलमा तौहीद गुज़िस्ता गुनाहों को मिटा देता है।
(मुस्नद अहमद–5 / 239)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है–
मौत क़यामत है पस जो फ़ौत हुआ उसकी क़यामत क़ायम हो गई।
(अल फवाइदुल मजमुआ–267)

ग़म व फ़िक्र खाने की रग़बत ख़त्म कर देती है और ख़ौफ़े इलाही गुनाहों से रोक देता है और रहमते खुदावन्दी की उम्मीद नेक कामों की उम्मीद पैदा करती है और मौत की याद फ़िज़ूल और बुरे व गुनाह व लगू (बेहूदा) कामों की तरफ़ नफ़रत पैदा करती है और नेक कामों की तरफ़ माइल करती है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
दो चीज़ें ऐसी हैं जिनको इन्सान पसन्द नहीं करता एक मौत और दूसरी माल व दौलत की कमी हालाँकि मौत गुमराही के फ़ित्नों में मुब्तिला होने से बेहतर है और दौलत की कमी क़यामत के हिसाबो किताब में कमी का बाइस है। (मुस्नद अहमद)

—: क़ब्र और उसका अज़ाब :—

क़ब्र आख़िरत की पहली मंज़िल है और जिसने क़ब्र के अज़ाब से निजात पाई और क़ब्र की पहली मंज़िल को राहत व आसानी से पार कर लिया तो उसके लिये बाद की मंज़िलें आसान होंगी और मौत हालते तबदीली का नाम है क्योंकि जिस्म से जुदा होने के बाद रूह बाक़ी रहती है और जब क़ब्र में अज़ाब होता है तो मुर्दे की रूह बापस जिस्म में लौटाई जाती है और हर शख़्स को उसके आमाल के मुताबिक़ क़ब्र में अज़ाब या राहत व आराम पहुँचता है।

हदीस पाक में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया— मेरी उम्मत पर एक ज़माना ऐसा आयेगा कि जब वो पाँच चीज़ों को याद रखेंगे और पाँच चीज़ों को भूल जायेंगे।

1—दुनियाँ से मुहब्बत करेंगे मगर आख़िरत को भूल जायेंगे ।
2—माल से मुहब्बत करेंगे मगर योमे हिसाब को भूल जायेंगे।
3—मख़लूक़ से मुहब्बत करेंगे मगर अल्लाह को भूल जायेंगे।
4—गुनाहों से मुहब्बत करेंगे मगर तौबा को भूल जायेंगे।
5—मकानों से मुहब्बत करेंगे मगर क़ब्रों को भूल जायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
हमने तुम्हें ज़मीन ही से पैदा किया और इसी ज़मीन में हम तुम्हें लौटायेंगे। (सू0—ताहा—55)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़ब्र या तो जहन्नुम के गढ़ों में से एक गढ़ा है या जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। (मजमउज़्ज़वाइद—3/46) (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स हालते सफ़र में मर जाये वो शहीद होकर मरता है और वो क़ब्र के फ़ित्नों से महफ़ूज़ रहता है और उसे सुबह व शाम जन्नत से रिज़्क दिया जाता है। (हुलयातुल औलिया—8/203)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—

जो मुसलमान शबे जुमा या जुमे के दिन फ़ौत हो जाये तो अल्लाह तआला उसको अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखता है।

जो शख़्स अपनी आख़िरत के मुताअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता और नेक आमाल के ज़रिये उसकी तैयारी नहीं करता तो गोया वो शख़्स खुद का सबसे बड़ा दुश्मन है और वो खुद को बहुत बड़ी मुसीबत और नुकसान की तरफ़ ले जाता है हालाँकि वो जानता है कि गुनाहगार के लिये आख़िरत बहुत सख़्त मुसीबत व आफ़त है फिर भी वो जानकर अंजान बना रहता है और अपनी आख़िरत से बे फ़िक्र हो जाता है और वो अपनी आख़िरत ख़राब कर लेता है बिल आख़िर बाद मौत वो सख़्त अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हो जाता है।

इसलिये हमें चाहिये कि आख़िरी वक़्त में हम पर गुज़रने वाली तमाम बातों को हमेशा ज़हन में रखें और आख़िरत के उस मंजर को न भूले जो एक दिन हमारे सामने ज़रुर आकर रहेगा जिस दिन दुनियाँ में मेरा आख़िरी दिन होगा और मौत मेरे बहुत क़रीब होगी और वक़्ते मौत हमारी पलकें झुक रहीं होंगी और हमारी आवाज़ बैठ रही होगी और हमारी नज़र धुँधली हो रही होगी और जिस्म की तमाम कुव्वतें ख़त्म हो रही होंगी और मौत हमें चारो तरफ़ से घेर लेगी और हमारे घर वाले और पड़ोसी दोस्त अहवाब अ़ज़ीज़ अक़ारिब सब मेरे नज़दीक जमा होंगे और हमारे जिस्म से रूह खींच ली जायेगी और हम मुर्दार हो जायेंगे।

फिर हमारे गुस्ल का इंतज़ाम किया जायेगा और हमारी क़ब्र तैयार की जाये़गी और कुछ लोग हमारे कफ़न के इंतज़ाम में लगे होंगे फिर हमें हमारे चाहने वाले गुस्ल देगें फिर हमें कफ़न में लपेटकर चारपाई पर लिटा देगें और हमें हमारे घर से निकाल देंगे और क़ब्रिस्तान में ले जाकर अंधेरी क़ब्र में छोड़ देंगे जहाँ न रोशनी होगी और न हवा के आने जाने का कोई रास्ता होगा और न वहाँ ऐशो आराम के सामान मौजूद होंगे और न नरम मुलायम बिस्तर होंगे और हमें ख़ाक पर लेटना होगा और हमारे चाहने वाले हमें तन्हा क़ब्र में छोड़कर चले आयेंगे और हमारा जो कुछ दुनियाँ में अपना था वो सब पराया हो जायेगा और हमारे घर वाले दोस्त अहवाब अ़ज़ीज़ अक़ारिब सब हमसे जुदा हो जायेंगे और हम पर हमारे गुनाहों के सबब अ़ज़ाब मुसल्लत किया जायेगा।

और उस वक़्त हमें उस अ़ज़ाब से बचाने वाला कोई न होगा और न कोई हमारा मददगार होगा सिवाय हमारे नेक आमाल के और हमें मुद्दतों उस अंधेरी कोठरी में रहना होगा जहाँ आग का सख़्त अ़ज़ाब है और कीड़े मकोड़ों और साँप और बिच्छुओं से मिलने वाली अज़्ज़ियतों और फ़रिश्तों से मिलने वाली हथोड़े की मार को हमारा नाजुक बदन कैसे बर्दास्त करेगा और हमारे घर वाले अपने घरों में आराम व चैन से होंगे और हमारी छोड़ी हुई मीरास को आपस में बाँट लेंगे और अपनी–अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने में मसरुफ़ हो जायेंगे और हमारी किसी को फ़िक्र न होगी।

हालाँकि हक़ीक़त ये है कि अल्लाह तआ़ला ने हमें अपनी आख़िरत बनाने व संवारने का मौक़ा दिया लेकिन हमने दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत में वो मौक़ा गंवाँ दिया और अपनी आख़िरत पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं किया और खुद को ख़सारे में डाल दिया तो जब हमने खुद अपनी फ़िक्र नहीं की तो हमें अपने मुताअ़ल्लिक़ औरों से उम्मीद और भरोसा रखना हिमाक़त है क्योंकि जब हमने खुद अपनी फ़िक्र नहीं की तो दूसरा हमारी फ़िक्र क्यों करेगा।

और अगर हम अपनी आख़िरत से मुताअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करेगें और उसके लिये तैयारी करेगें और कसरत से नेक अ़मल करेगें तो क़ब्र में हमारा हाल ऐसा नहीं होगा और हम क़ब्र के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेंगे और हमारी क़ब्र सरसब्ज़ व शादाब और जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ होगी इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआ़ला व उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की इताअ़त करें और कसरत से नेक आमाल करें और बुराइयाँ और गुनाहों से दूर रहें और अल्लाह तआ़ला की इबादत करें और उसके फ़रमाबरदार बन्दे बनें ताकि हमारा ख़ात्मा बा ईमान और बा ख़ैर हो

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
जब उनमें से किसी एक को मौत आये तो वो कहता है ऐ मेरे रब मुझे वापस भेज दे ताकि मैं अच्छे काम करूँ उनमें से जो छोड़ आया हूँ। (सू0–मु-मिनून–99,–100)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अगर तुम्हें इस बात का इल्म होता जो मैं जानता हूँ तो तुम कम हँसते और ज़्यादा रोते। (सही बुख़ारी—1/44)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि मैने सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से सुना है कि आप फ़रमाते हैं कि मइयत को इस बात का इल्म होता कि उसे कौन गुस्ल दे रहा है और कौन उसे उठा रहा है और कौन क़ब्र में उतार रहा है। (मुस्नद अहमद—3/3)

क़ब्र में मुर्दे को रखने के बाद क़ब्र उस मुर्दे से कहती है कि ऐ इब्ने आदम तू किस फ़रेब में पड़ा रहा क्या तुझे मालूम न था कि मैं अंधेरी कोठरी हूँ मैं तन्हाई का घर हूँ मैं कीड़े मकोड़ों का घर हूँ और तू मेरे ऊपर इतराता और तकब्बुर करता हुआ चलता था और अगर वो नेक सालेह होता है तो एक फ़रिश्ता उसकी तरफ़ से जवाब देता है कि ऐ क़ब्र ये नेक सालेह फ़रमाबरदार बन्दा है जो अच्छी बात का हुक्म देता था और बुरी बात से मना किया करता था ये सुनकर क़ब्र कहती है कि अगर ऐसा है तो मैं इसके लिये सर सब्ज़ और राहत हूँ और अगर वो नाफ़रमान बन्दा होता है तो क़ब्र कहती है कि मैं इसके लिये सख़्त अ़ज़ाब हूँ।

अल्लाह तआ़ला के फ़रमाबरदार नेक बन्दों के लिये क़ब्र रहमत व राहत है और क़यामत के दिन नेक सालेह बन्दे अपनी अपनी क़ब्रों से खुश खुश निकलेंगे और नाफ़रमान बदकार बन्दों के लिये क़ब्र बहुत बड़ी मुसीबतों और तरह—तरह के अ़ज़ाबों का घर है और क़यामत के दिन नाफ़रमान बदकार बन्दे अपनी—अपनी क़ब्रों से तबाह व बर्बाद होकर निकलेंगे।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मैने क़ब्र से ज़्यादा हौलनाक मन्जर नहीं देखा (जामअ़ तिर्मिज़ी—355)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जब मइयत को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र उससे कहती है

ऐ बद बख़्त इन्सान तुझे मेरे बारे में किसने धोके में डाला क्या तुझे मालूम न था कि मैं कीड़ों मकोड़ों का घर हूँ मैं अंधेरी कोठरी हूँ और और मैं तन्हाई का घर हूँ जब तू मेरे ऊपर अकड़कर इतराकर चलता था तो तुझे किस चीज़ ने धोके में ड़ाला और अगर वो नेक हो तो उसकी तरफ़ से कोई कहने वाला जवाब देता है कि ये नेक है जो नेकी का हुक्म देता था और बुराई से रोकता था फिर क़ब्र कहती है अगर ऐसा है तो मैं इसके लिये सर सब्ज हो जाती हूँ उसका जिस्म नूर से बदल जायेगा और उसकी रूह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ लौट जायेगी। (हुलयातुल औलिया—6/90)

हज़रत ज़ैद बिन हारिस (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के हमराह थे कि एक जगह कुछ क़ब्र वालों पर अ़ज़ाब हो रहा था तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ब्र वालों पर अ़ज़ाब हो रहा है अगर मुझे इस बात का ख़ौफ़ न होता कि तुम लोग मुर्दो को दफ़न करना छोड़ दोगे तो मैं अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करता कि तुम लोगों को वो अज़ाब सुनादे जो मै सुन रहा हूँ। (मिश्कात—1/54)

मइयत को दफ़न करने के बाद जब लोग वापस होते हैं तो वो उनके जूतों की आवाज़ को सुनता है फिर नकीरैन के सवालों जवाब का सिलसिला शुरू होता है और अगर वो नेक सालेह बन्दा होता है तो वो कामयाब होता है और नकीरैन के सवालों का सही जवाब देता है उसके बाद एक आने वाला जो निहायत खूबसूरत होता है और उसमें उम्दाह खुशबू महकती है और उसके कपड़े भी उम्दाह होते है और वो कहता है कि तुझे तेरे रब की तरफ़ से जन्नत की खुशखबरी हो जिसमें कभी न ख़त्म होने वाली नेअ़मतें हैं फिर मुर्दा कहता है कि तू कौन है वो कहता है कि मैं तेरा अ़मल सालेह हूँ फिर उसके लिये जन्नत का बिछौना बिछाया जाता है और उसकी क़ब्र में जन्नत की तरफ़ से दरवाज़ा खोल दिया जाता है और उसकी क़ब्र रोशन हो जाती है और उसे जन्नती लिबास पहनाया जाता है और उसकी क़ब्र को हद्दे नज़र तक कुशादा कर दिया जाता है।

और जो नाफ़रमान बदकार बन्दा होता है तो वो नकीरैन के सवालों

का जवाब नहीं दे पाता और फिर एक आने वाला जो निहायत बदसूरत होता है जिसका लिबास बदबूदार होता है और वो कहता है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नाराज़गी और दायमी अ़ज़ाब कि तुझे ख़बर हो फिर मुर्दा कहता है कि तू कौन है वो कहता है कि मैं तेरा बुरा अ़मल हूँ फिर उसके लिये जहन्नुमी बिस्तर बिछाया जाता है और जहन्नुमी लिबास पहनाया जाता है और उसकी क़ब्र तंग कर दी जाती है हत्ता कि उसकी पसलियाँ टूट जाती हैं और हर शख़्स को क़ब्र के अ़ज़ाब से सिर्फ़ उसके नेक आमाल ही बचा सकते हैं अगर उसके पास रोज़ा नमाज़ ज़कात सद्क़ा ख़ैरात और दीगर आमाल हों तो ये तमाम आमाल उसे चारो तरफ़ से घेर लेते हैं और जब अ़ज़ाब के फ़रिश्ते आते हैं तो उसके आमाल उसे अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखते हैं।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जब तुम में से कोई फ़ौत हो जाता है तो सुबह शाम उसका ठिकाना दिखाया जाता है अगर वो जन्नती है तो जन्नत और अगर जहन्नुमी है तो जहन्नुम दिखाई जाती है और कहा जाता है कि ये तेरा ठिकाना है हत्ता कि क़यामत के दिन उठाया जाये। (सही बुख़ारी—2/964)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
क़ब्र में दो फ़रिश्ते मुन्कर व नकीर आते हैं और वो मइयत से सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है तो मोमिन कहता है मेरा रब अल्लाह है फिर दूसरा सवाल करते हैं तेरा दीन क्या है तो मोमिन कहता है मेरा दीन इस्लाम है फिर तीसरा सवाल करते है कि यह शख़्स कौन है जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गये तो मोमिन कहता है ये अल्लाह तआ़ला के बन्दे और रसूल हैं।

फिर आसमान से एक मुनादी आवाज़ देता है कि बन्दे ने सच कहा इसको जन्नती बिछोने पर सुलाओ और इसको बहिश्ती लिवास पहनाओ और इसकी तरफ़ जन्नत का दरवाज़ा खोल दो तो उस दरवाज़े से उसकी क़ब्र में जन्नत की हवा और खुश्बू आने लगती है और जहाँ तक उसकी नज़र जाती है वहाँ तक उसकी क़ब्र कुशादा कर दी जाती है।

और काफ़िर बन्दे से भी यही तीन सवाल मुनकर व नकीर करते हैं लेकिन वो तीनों सवालों के जवाब में कहता है हाय–हाय मैं तो कुछ नहीं जानता फिर आसमान से एक फ़रिश्ता पुकारता है ये झूठा है लिहाज़ा इसके लिये जहन्नुम का बिस्तर बिछाओ और इसको जहन्नुमी लिबास पहनाओ और इसकी तरफ़ जहन्नुम का दरवाज़ा खोल दो तो उस दरवाज़े से जहन्नुम की गर्म हवा और बदबू उसकी क़ब्र में आती रहती है और उसकी क़ब्र इस क़दर तंग कर दी जाती है कि मइयत की दाहिनी पसलियाँ बाँयी तरफ़ और बाँयी पसलियाँ दाहिनी तरफ़ (इधर उधर) हो जाती हैं। (मिश्कात–1/56) (तिर्मिज़ी)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– क़ब्र में बद्कार शख़्स पर एक अंधा गूँगा बहरा फ़रिश्ता मुक़र्रर किया जाता है जो मइयत को लोहे के गुर्ज़ (हथोड़े) से मारता है अगर जिन्न व इन्सान मिलकर उस गुर्ज़ को उठाना चाहें तो नहीं उठा सकते और अगर उस गुर्ज़ को पहाड़ पर मार दिया जाये तो वो रेज़ा–रेज़ा (चकना चूर) हो जाये जब फ़रिश्ता मुर्दे को गुर्ज़ से मारता है तो उसकी आवाज़ जिन्न व इन्सानों के सिवा तमाम मख़लूक़ सुनती है और एक मुनादी ऐलान करता है इसके लिये आग की तख़्तियाँ बिछादो और जहन्नुम की तरफ़ से एक दरवाज़ा खोल दो। (सुनन अबी दाऊद–2/298)

अगर दुनियाँ में किसी शख़्स को अंधेरे कमरे में तन्हा क़ैद कर दिया जाये तो वो घबराता है तो ज़रा सोचो उस क़ब्र में हमारा क्या हाल होगा जहाँ अंधेरा और तन्हाई के अलावा भी हम पर बहुत सी मुसीबतें और परेशानियाँ आयेंगी और वहाँ कोई भी हमारा मददगार न होगा जिससे मदद की उम्मीद की जाये तो क्या हम क़ब्र में मिलने वाले सख़्त अ़ज़ाब को बर्दास्त कर सकेंगे लेकिन नेक लोग अपनी सर सब्ज़ क़ब्रों में राहत व आराम से रहेंगे और नेक सालेह लोगो की रुहें आज़ाद होती हैं और दूसरी रुहों से मुलाक़ात करती हैं।

हदीस पाक में है कि दुनियाँ में मोमिन की मिसाल माँ के पेट में मौजूद बच्चे की तरह है कि जब वो अपनी माँ के पेट से

दुनियाँ में आता है तो वो रोता है लेकिन जब वो रोशनी देखता है तो दुनियाँ में रहना पसन्द करता है और वापस अपनी माँ के पेट में जाना पसन्द नहीं करता।

इसी तरह मोमिन मौत से पहले घबराता है लेकिन जब वो अपने रब की तरफ़ चला जाता है तो दुनियाँ में वापस आना पसन्द नहीं करता क्योंकि उसको जो नेअ़मतें और राहतें वहाँ मयस्सर आती हैं उनके मुक़ाबले दुनियाँ कुछ भी नहीं इसलिये वो उन नेअ़मतों और राहतों को छोड़कर इस फ़ानी दुनियाँ में आना पसन्द नहीं करता।

दुनियाँ में काफ़िर बदकार शख़्स की जो सिफ़त होती है जैसे तकब्बुर रियाकारी बद अख़लाक़ी ग़ीबत हसद चुग़ली कीना वग़ैराह तो उसकी ये सिफ़तें क़ब्र में साँप और बिच्छुओं वग़ैराह की शक्ल में बदलती हैं और उसे तरह तरह के मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब दिये जाते हैं जैसे बन्दे के गुनाह होते हैं उसी तरह उसको सख़्त या हल्का अ़ज़ाब दिया जाता है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– काफ़िर को क़ब्र में यूँ अ़ज़ाब होता है कि उस पर 99 अज़दहे (बड़े साँप) मुसल्लत कर दिये जाते हैं जो क़यामत तक मुर्दे को काटते चाटते और फुँकारते हैं और हर साँप के सात फन होते हैं (कंज़ुल उ़म्माल–2/30,–31)

हज़रत अबू अइयूब अंसारी (रज़ि0) रिवायत करते हैं कि सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जब मोमिन की रूह परवाज़ करती है तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रहमत वाले लोग उससे इस तरह मुलाक़ात करते हैं जैसे दुनियाँ में करते थे और बाहम गुफ्तगु करते हैं कि फ़लाँ शख़्स का क्या हाल है फ़लाँ की शादी हुई या नहीं इसी तरह दीगर बहुत सी बातें आपस में करते हैं। (मुअ़जम कबीर तिबरानी–4/129)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– अपने बुरे आमाल के ज़रिये अपने फ़ौत शुदा लोगों को तकलीफ़ न दो क्योंकि तुम्हारे आमाल अहले कुबूर में तुम्हारे दोस्तों और घर वालों में पेश किये जाते हैं। (कंज़ुल उ़म्माल–15/685)

ज़मीन में हर शख़्स के दो घर होते हैं एक ज़मीन के ऊपर और एक ज़मीन के नीचे होता है जिस तरह हम ज़मीन के ऊपर वाले घर यानी दुनियाँ में अपने घरों को बहुत सी चीजें फराहम करके उसे मुकम्मल आराम दायक बनाते हैं और उस घर के लिये ज़रुरत के मुताबिक़ बहुत सी चीज़ें हासिल करते हैं ताकि दुनियाँ में हमें किसी तरह की परेशानी न हो और हमारी ज़िन्दगी आराम सुकून और चैन के साथ गुज़रे और खुद को गर्मी सर्दी और बरसात से महफूज़ रखने के लिये कई तरह के इन्तिज़ामात करते हैं और खाने पीने के तमाम सामान और अंधेरों से बचने के लिये रोशनी और गर्मी की शिद्दत से बचने के लिये पंखे कूलर ए.सी. और सर्दी से बचने के लिये गर्म कपड़े वग़ैराह हत्ता कि अपनी ज़िन्दगी की तमाम ज़रुरतों को पूरा करने की कोशिश करते और हासिल भी करते हैं तो थोड़ी मुद्दत की ज़िन्दगी के लिये हम कितनी बड़ी तैयारी करते हैं और कितनी मेहनत और मशक़्क़त उठाते हैं लेकिन अपने ज़मीन के नीचे वाले घर यानी क़ब्र लिये हम तैयारी क्यों नहीं करते जहाँ बरसों हमें रहना है इसलिये हमें चाहिये कि अपनी क़ब्र के लिये बहुत ज़्यादा तैयारी करें ताकि क़ब्र में हम हमेशा आराम चैन व सुकून से रहें और हमें क़ब्र में क़यामत तक हर हाल में रहना है तो अब हमारी मर्ज़ी कि अपनी क़ब्र को जैसी चाहें वैसी बनायें या तो कसरते नेक आमाल के ज़रिये अपनी क़ब्र को जन्नत का एक बाग़ बनायें या बुरे आमाल के ज़रिये अपनी क़ब्र को जहन्नुम का एक गढ़ा बनायें।

जिस शख़्स को क़ब्र में अ़ज़ाब होता है उस शख़्स के लिये क़ब्र में एक दिन हज़ारों साल के मिक़्दार होता है और ऐसा क़ब्र में अ़ज़ाब की सख़्ती के बाइस होता है तो ज़रा सोचो हम उस क़ब्र में क़यामत तक कैसे रहेंगे अगर हमने उसके लिये तैयारी नहीं की इसलिये हमें चाहिये कि अपनी क़ब्र की तैयारी उसी क़दर करें जितनी मुद्दत हमें वहाँ रहना है ताकि क़ब्र में हमें किसी तरह की कोई मुसीबत या परेशानी न हो और क़ब्र में हमारी तमाम ज़रुरतें पूरी हों और तमाम अ़ज़ाबों से हम महफूज़ रहें।

हर चीज़ के लिये एक मक़सद होता है और उसके लिये एक तैयारी होती है जैसे हम दुनियाँ में दो चार दिन के लिये दूसरी जगह सफ़र पर जाते हैं तो उसके लिये तैयारी करते हैं जैसे कुछ

कपड़े, रुपया, पैसा, दीगर सामान जिसकी सफ़र में ज़रुरत होती है तो जब हम कुछ दिनो के लिये सफ़र पर जाते हैं तो कितनी तैयारी करते हैं तो जहाँ (यानी क़ब्र में) मुद्दतों के लिये हमें जाना है तो हमें कितनी बड़ी तैयारी करना चाहिये ताकि क़ब्र में हमारे लिये हमारी ज़रुरत के मुताबिक़ तमाम इन्तज़ामात हों और हमारे आराम के लिये जन्नती बिस्तर हो सुबह शाम जन्नती रिज़्क अ़ता हो जन्नती हवा हो क़ब्र खुशबूदार और रोशन हो और जन्नती लिबास हो और हमारी क़ब्र कुशादा और सर सब्ज़ हो और हमारी क़ब्र कीड़े मकोड़े साँप और बिच्छुओं और दीगर तमाम अ़ज़ाबों से महफूज़ हो ताकि क़यामत तक हम क़ब्र में राहत व सुकून चैन और इत्मीनान से रह सकें और हमें तन्हाई का बिल्कुल एहसास न हो।

इसलिये हमें चाहिये कि कसरत से अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करें और गुनाहों से दूर रहें और नेक अ़मल करें और अल्लाह तआ़ला के फ़रमाबरदार बन्दे बनें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की इताअ़त करें ताकि हमारी क़ब्र बेहतर और उम्दाह और सर सब्ज़ आरामगाह बने और हमें वहाँ किसी भी तरह की कोई तकलीफ़ न हो और रब तआ़ला से दुआ़ करते रहें कि अल्लाह तआ़ला अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सदक़े और तुफ़ैल हमें क़ब्र में होने वाले क़लील व कसीर तमाम अ़ज़ाबों से महफूज़ रखे और हमें अपने अमान में रखे और हमारा आख़िरी कलाम कलमये तौहीद हो और हमारा ख़ात्मा ईमान पर हो।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसका आख़िरी कलाम ला इलाहा इल्लल्लाहु हो उसे आग नहीं छुयेगी। (मुस्नद अहमद—5/233)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है जो शख़्स सच्चे दिल से ला इलाहा इल्लल्लाहु पढ़ता है उस पर जन्नत वाजिब हो जाती है। (मुअ़जम कबीर तिबरानी—5/197)

हदीस पाक में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से अ़र्ज़ किया गया कि लोगों में सबसे ज़्यादा ज़ाहिद (परहेज़गार) कौन है तो

आपने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स क़ब्र और गल सड़ जाने को न भूले और दुनियाँ की ज़ीनत छोड़ दे और फ़ना होने वाली पर बाक़ी रहने वाली को तरजीह दे और कल आने वाले दिन को अपनी ज़िन्दगी में शुमार न करे और खुद को क़ब्र वालों में शुमार करे।

इसलिये हमें चाहिये कि अपनी मौत और क़ब्र को किसी हाल में न भूलें और कसरत से क़ब्रों की ज़ियारत किया करें ताकि इब्रत हासिल हो और क़ब्रिस्तान में पहुँचकर ये ख़्याल करें कि मेरी मौत के बाद अहले कुबूर मेरे पड़ोसी होंगें और जब क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जायें तो सबसे पहले सलाम करें हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) फरमाते हैं कि जब कोई शख़्स क़ब्र के पास से गुज़रे तो सलाम करे तो क़ब्र वाला उसके सलाम का जवाब देता है और फ़ौत शुदा लोगों के लिये ईसाले सवाब और दुआये ख़ैर करें और अक़लमन्द शख़्स वही है जो क़ब्रों की ज़ियारत से इब्रत हासिल करता है।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
क़ब्रों की ज़ियारत किया करो ये तुम्हें आख़िरत की याद दिलाती है (मुस्तदरक हाकिम–1/374)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– क़ब्र में मइयत अपने घर वालों से दुआ़ की मुन्तज़िर रहती है जब कोई घर वाला उस मइयत के लिये दुआ़ये ख़ैर करता है तो ये दुआ़ मइयत के लिये दुनियाँ और मताये दुनियाँ से ज़्यादा पसन्दीदा होती है। (मिश्कात–206)

जब क़ब्र में मइयत पर अ़ज़ाब होता है तो दूसरे मुर्दे कहते हैं कि ऐ शख़्स क्या तूने हम लोगों का हाल देखकर भी इब्रत हासिल नहीं की हम तो क़ब्र में आ चुके थे लेकिन तू तो ज़िन्दा था और तुझे काफ़ी मुहलत मिली थी और उस मुहलत में तू नेक आमाल कर लेता तो इस अ़ज़ाब में मुब्तिला न होता तूने तो उन लोगों से भी इब्रत हासिल नहीं की जिनके अ़ज़ीज़ अक़ारिब ज़मीन के अन्दर दफ़न करके चले गये।

हदीस पाक में है हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि0) से रिवायत है

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
कि ना फ़रमान की मइयत को जब लोग उठाकर चलते हैं तो वो कहता है हाय मेरी बर्बादी मुझे कहाँ ले जा रहे हो और उसकी ये आवाज़ इन्सान के सिवा हर चीज़ सुनती है अगर इन्सान उसकी ये आवाज़ सुनले तो बेहोश हो जाये फिर भी बाज़ लोग अपनी मौत और क़ब्र को भूले हुये हैं हालाँकि वो लोगों के जनाज़े और दफ़ीने में शिर्कत करते हैं लेकिन वो दुन्यावी फ़िज़ूल बातों में मशगूल रहते हैं और बाज़ तो ऐसे लोग हैं जो अपनी गुफ्तगू में हंसी मज़ाक करते और हंसते हैं और बाज़ मरने वाले के अ़ज़ीज़ अक़ारिब उसके छोड़े हुये माल की तरफ़ मुतवज्जै होते हैं और ये ग़फ़लत उनके दिलों की सख़्ती है जो गुनाहों और नाफ़रमानियों और दुनियाँ की मुहब्बत व रग़बत के बाइस उनके दिलों में पैदा होती है।

इसलिये हमें चाहिये कि अपने दुन्यावी तमाम कामों के साथ—साथ अपनी आख़िरत को न भूलें और दुन्यावी तमाम कामों पर अपनी आख़िरत को तरजीह और अहमियत दें और अपनी आख़िरत के लिये ज़्यादा से ज़्यादा तैयारी करें और उस पर ग़ौरो फ़िक्र करें और फ़ौत शुदा लोगों के बारे में अच्छा गुमान रखें और न उनकी बुराई करें और न दिल में बुरा जानें क्योंकि हक़ीक़त में कोई नहीं जानता कि किसकी क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा है और किसकी क़ब्र में अल्लाह तआ़ला की रहमतों का नुज़ूल हो रहा है और अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है उसे बख़्श देता है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जब तुम्हारा कोई साथी मर जाये तो उसकी बुराइयाँ बयान न करो (सुनन अबी दाऊद—2/315)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अपने फ़ौत शुदा लोगों का ज़िक्र अच्छी तरह करो अगर वो जन्नत में से हैं तो बुराई करने का गुनाह तुम पर होगा और अगर जहन्नुमियों में से हैं तो उन्हें वही काफ़ी है। (सही बुख़ारी—2/960)

—: ज़कात और बुख़्ल :—

अल्लाह तआ़ला ने कुरान मजीद में कई मक़ामात पर ज़कात अदा करने का हमें हुक्म दिया है और ताकीद फ़रमायी जो इसकी कुदरत रखता हो यानी साहिबे निसाब हो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है और ये इस्लाम का तीसरा रुकन है और जो लोग ताक़त के बावजूद ज़कात नहीं देते तो वो लोग गुनाहगार और ख़सारे का सौदा करने वाले होते हैं और वो सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और अपनी जानो के लिये जो भलाई आगे भेजोगे वो अल्लाह तआ़ला के यहाँ पाओगे बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को देख रहा है। (सू0—बक़राह—110)

इरशादे बारी तआ़ला है—
ऐ महबूब उनके माल से ज़कात तहसील (वसूल) करो जिससे तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उनके हक़ में दुआ़ये ख़ैर करो बेशक तुम्हारी दुआ़ उनके दिलों का चैन है और अल्लाह तआ़ला खूब सुनने वाला और खूब जानने वाला है।
(सू0—तौबा—103)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला ने एक और मक़ाम पर यूँ इरशाद फ़रमाया—
ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो और उसमें से जो हमने ज़मीन से निकाला (सू0—बक़राह—267)

ज़कात के लिये मालदार होना शर्त नहीं बल्कि मुसलमान मर्द या औ़रत साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोने का मालिक हो या उस (सोना या चाँदी) की क़ीमत के बराबर माल तिजारत या रुपया हो तो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है इसके अलावा चरवाहे जैसे भैंस, बकरी, गाय, ऊँट वग़ैराह जो तिजारत की ग़रज़ से हों या दुकान, मकान, ज़मीन, प्लाट वग़ैराह जो तिजारत के लिये हों उस पर ज़कात फ़र्ज़ है यानी कुल माल का चालीसवाँ हिस्सा ज़कात देनी होगी (यानी 100—रु0 पर ढाई रुपये ज़कात अदा करनी होगी)

और अगर किसी पर क़र्ज़ हो तो क़र्ज़ निकाल कर जो बचे उस पर ज़कात देनी होगी और जिस चीज़ की ज़कात अदा करनी हो तो उसके लिये शर्त है कि उस माल पर साल गुज़र जाये और अगर साल न गुज़रे तो उस माल पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं।

और अपनी ज़कात सिर्फ़ उसे दो जो इसके मुस्तहिक़ हैं जैसे गुरबा, मसाकीन वग़ैराह और जिसे ज़कात दो तो उसे उसका मालिक बना दो नहीं तो ज़कात अदा नहीं होगी और वग़ैर बताये सिर्फ़ ज़कात की नीयत से ज़कात देने से ज़कात अदा हो जाती है और ज़कात को मस्जिद या क़ब्रिस्तान या लावारिस मुर्दे के कफ़न दफ़न में देना या वो जिनसे पैदा है यानी जैसे माँ बाप दादा दादी नाना नानी या उससे जो पैदा हैं जैसे बेटा बेटी पोता पोती नवासा नवासी को देना क़तअन जाइज़ नहीं और किसी भी सइयद (आले रसूल) को भी ज़कात देना जाइज़ नहीं और इस तरह से ज़कात अदा भी नहीं होगी और उन मदरसों में भी ज़कात देना जाइज़ नहीं जिन मदारिस में हीला शरई नहीं किया जाता है हीला शरई का माना ये है कि किसी तालिबे इल्म को तमाम ज़कात के माल का मालिक बनाया जाये फिर वो तालिबे इल्म अपनी मर्ज़ी से बिना किसी ज़ोर ज़बरदस्ती के उस माल को मदरसे में दे दे।

जो आदमी क़ादिर होने बावुजूद ज़कात की अदायगी में ताख़ीर (देर) करे तो वो गुनाहगार होगा हदीस पाक में है कि जो लोग ज़कात नहीं देते तो रोज़े क़यामत उन के लिये आग की तख़्तियाँ बनाई जायेंगी और उनकी पीठों को दाग़ा जायेगा और जब वो ठन्डी हो जायेंगी तो फिर गर्म की जायेंगी और क़यामत का दिन पचास हजार साल का होगा यहाँ तक कि लोगों के दरमियान फ़ैसला हो उनको यही अज़ाब दिया जाता रहेगा।

इसलिये हमें चाहिये कि नेक नीयत और खुलूस दिल के साथ हलाल व उम्दाह माल से ज़कात अदा करें रोज़ा, नमाज़, हज ये इन्सान की बदनी नेअ़मतों का शुक्र है और ज़कात माली नेअ़मतों का शुक्र है और ज़कात निकालने से माल घटता नहीं बल्कि बढ़ता है और जिस माल की ज़कात निकल जाये वो माल हर एक आफ़त से महफ़ूज़ रहता है और ज़कात अदा करने में ताख़ीर न करें बल्कि जल्दी अदा करें क्योंकि इससे गुरबा मसाकीन के दिल खुश होते हैं

और वो खुलूस दिल से ज़कात देने वाले के लिये दुआये ख़ैर करते हैं और जो लोग ज़कात अदा नहीं करते और बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं वो क़यामत के दिन सख़्त अज़ाब में मुब्तिला होगें अल्लाह तआला ने हमें माल इसलिये अता नहीं किया कि सिर्फ़ अपने और अपने घर वालों की ज़रुरतों पर खर्च करें बल्कि इसके साथ—साथ अल्लाह तआला की राह में खर्च करें और गुरबा मसाकीन व फुक़रा को दें क्योंकि वो भी अल्लाह तआला की मख़लूक़ हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और जो बुख़्ल (कंजूसी) करे उस चीज़ में जो अल्लाह तआला ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी तो वो हरगिज़ अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि उनके लिये बुरा है अनक़रीब वो जिसमें बुख़्ल किया था क़यामत के दिन उनके गले का तौक़ होगा और अल्लाह ही वारिस है आसमानों और ज़मीनों का और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से ख़बरदार है। (सू0—आले इमरान—180)

इरशादे बारी तआला है—
और वो जोड़कर रखते हैं सोना और चाँदी और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते उन्हें ख़बर सुनाओ दर्दनाक अज़ाब की जिस दिन वो (माल) तपाया जायेगा जहन्नुम की आग में फिर उससे दागेगें उनकी पेशानियाँ और करवटें और पीठें ये है वो जो तुमने जोड़कर रखा था अब चखो मज़ा उस जोड़ने का।
(सू0—तौबा—34,—35)

इरशादे खुदावन्दी है—
और उनमें से कोई वो हैं जिन्होंने अल्लाह तआला से अहद किया था अगर (अल्लाह) हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो ज़रुर हम ख़ैरात करेंगे और ज़रुर हम भले आदमी हो जायेंगे तो जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया (तो वो) उसमें बुख़्ल (कंजूसी) करने लगे और मुँह फेर कर पलट गये तो अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उससे मिलेंगे बदला उसका कि उन्होंने अल्लाह से झूठा वायदा किया और बदला उसका कि वो झूठ बोलते थे क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह तआला उनके दिल की छुपी और उनकी सरगोशी को जानता है और ये कि अल्लाह तआला सब ग़ैबों का बहुत जानने वाला है। (सू0—तौबा—75,—78)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
दो आदतें किसी मोमिन में जमा नहीं हो सकतीं बुख़्ल और बद अख़लाक़ी (जामअ़ तिर्मिज़ी—290)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है इबादत गुज़ार बख़ील (कंजूस) से अल्लाह तआ़ला को जाहिल सख़ी ज़्यादा पसन्द है। (कंजुल उ़म्माल—6/392)

ज़कात की अदायगी अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के हुक्म और उनकी मुहब्बत में इख़लास के साथ उसके हक़दारों को दें और बुख़्ल जैसी बुराई और गुनाह से बचें और इससे हमेशा परहेज़ करें और बुख़्ल इस तरह दूर हो सकता है कि जब इन्सान माल ख़र्च करने का आदी हो जाये और अपने नफ़्स को माल ख़र्च करने पर मजबूर कर दे और इस तरह माल की मुहब्बत ख़त्म हो जायेगी और वो बुख़्ल से पाक हो जायेगा और ज़कात को पोशीदा (छुपाकर) और अल्लाह तआ़ला की रज़ा जोई के लिये दें ताकि रिया (दिखावा) जैसी बुराई और गुनाह से बचें और अगर ये गुमान हो कि मेरे ऐलानियाँ ज़कात देने से लोगों में ज़कात देने की तरफ़ रग़बत पैदा होगी और लोग मेरी इक़्तिदा करेगें तो ज़कात को ऐलानियाँ दें लेकिन अपने बातिन को रिया से पाक रखें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
ये जो तुम बुलाये जाते हो कि अल्लाह तआ़ला की राह में ख़र्च करो तो तुम में से कोई बुख़्ल करता है और जो बुख़्ल करे वो अपनी जान पर बुख़्ल करता है और अल्लाह तआ़ला बे नियाज़ है और तुम सब मुहताज (सू0—मुहम्मद—38)

इरशादे बारी तआ़ला है—
जिसने माल जोड़ा और गिन—गिन कर रखा क्या वो ये समझता है कि ये माल दुनियाँ में हमेशा रखेगा हरगिज़ नहीं ज़रुर वो रौंधने वाली में फेंका जायेगा और क्या तुम जानते हो रौंधने वाली क्या है अल्लाह तआ़ला की आग है जो भड़क रही है वो दिलों पर चढ़ जायेगी। (सू0—हुमाज़ाह—2,—7)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
किसी बन्दे के दिल में बुख़्ल और ईमान दोनो जमा नहीं हो सकते। (बैहकी–9/161)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
तीन बातें हलाकत में डालने वाली हैं वो बुख़्ल जिसकी पैरवी की जाये वो ख़्वाहिश जिसकी इत्तेबाअ़ की जाये और आदमी का खुद पसन्दी में मुब्तिला होना। (कंजुल उ़म्माल–16/45)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है–
अल्लाह तआ़ला ने जिसे माल दिया और अगर उसने ज़कात नहीं दी तो रोज़े क़यामत उसका माल गंजा साँप बना दिया जायेगा और इस साँप को तौक़ बनाकर उसके गले में डाल दिया जायेगा फिर वो साँप कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ मैं तेरा खज़ाना हूँ (सही बुख़ारी)

–: सद्क़ा फ़ितरा :–

हर साहिबे निसाब पर सद्क़ा फ़ितरा देना वाजिब है और अपनी और उन सब की तरफ़ से सद्क़ा फ़ितरा देना वाजिब है जो लोग उसकी कफ़ालत (ज़िम्मेदारी) में हों यानी उसके माँ बाप, वीबी, औलाद या क़रीबी रिश्तेदार वग़ैराह जिनका ख़र्च उसके ज़िम्मे हो हदीस पाक में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया उन लोगों की तरफ़ से सद्क़ा फ़ितरा अदा करो जो तुम्हारी कफ़ालत में हों और ईद से पहले सद्क़ा फ़ितरा अदा कर दें जिनको ज़कात दे सकते हैं उन्हें फ़ितरा भी दे सकते हैं इसकी मिक़्दार ये है गेंहूँ या उसका आटा आधा साअ़ या उसकी क़ीमत खजूर या जौ या उसका आटा एक साअ़ या उसकी क़ीमत अदा की जाये यानी गेंहूँ सवा दो सेर या जौ साढ़े चार सेर या उसकी क़ीमत हर शख़्स की तरफ़ से दें। (तक़रीबन दो किलो सैंतालीस ग्राम गेंहूँ या उसकी क़ीमत)।

—: राहे खुदा में ख़र्च :—
(सद्क़ा ख़ैरात)

राहे खुदा में ख़र्च करना अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बहुत ज़्यादा पसंदीदा अ़मल है और जो लोग राहे खुदा में ख़र्च करते और गुरबा मसाकीन को सद्क़ा ख़ैरात करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन्हें अपना अज़ीज़ दोस्त रखता है और अल्लाह तआ़ला ने कुरान मजीद में कई मक़ामात पर राहे खुदा में ख़र्च करने का हमें हुक्म दिया है और अहादीस मुबारका में इसकी बड़ी फज़ीलत आयी है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो हमारे दिये में से ख़र्च करो वो दिन आने से पहले जिसमें न ख़रीद व फरोख़्त है। (सू0—बक़राह—254)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और हमारे दिये में से हमारी राह में ख़र्च करो क़ब्ल इसके कि तुम में से किसी को मौत आ जाये फिर कहने लगो कि ऐ मेरे रब तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक मुहलत क्यों नहीं दी कि मैं सद्क़ा ख़ैरात कर लेता और नेकोकारों में हो जाता और हरगिज़ अल्लाह तआ़ला किसी जान को मुहलत न देगा जब उसकी मौत का वक़्त आ जाता है और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे कामों की ख़बर है।
(सू0—मुनाफ़िक़ून—10,—11)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
तुम हरगिज़ नेकी के मक़ाम को न पा सकोगे जब तक राहे खुदा में अपनी प्यारी चीज़ ख़र्च न करो और तुम जो कुछ ख़र्च करो अल्लाह तआ़ला को मालूम है। (सू0—आले इमरान—92)

इरशादे खुदावन्दी है—
जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं और नमाज़ क़ायम करते और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में ख़र्च करते हैं। (सू0—बक़राह—3)

अल्लाह तआ़ला तमाम नेअ़मतों का मालिक और अपने बन्दों को

अ़ता करने वाला है तो जब हम अल्लाह की राह में माल ख़र्च करते हैं तो गोया हम अपना कुछ भी ख़र्च नहीं करते बल्कि अल्लाह तआ़ला का हम पर एहसान और करम है कि अपने ही माल को अपनी राह में ख़र्च कराकर बदले में हमें उसका अज्र (सवाब) अ़ता फ़रमाता है और जिस माल से अल्लाह की राह में ख़र्च किया जाता है उस माल को अल्लाह तआ़ला और ज़्यादा बढ़ाता है और उस माल में बरकत अ़ता करता है और हमारी इ़ज़्ज़त और वक़ार को बढ़ाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और अल्लाह की राह में जो कुछ ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा दिया जायेगा और किसी तरह घाटे में न रहोगे। (सू0— अनफ़ाल—60)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे वो उसके बदले (तुम्हें) और देगा और वो सबसे बेहतर रिज़्क देने वाला है। (सू0—सबा—39)

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक सद्क़ा देने वाले मर्द और सद्क़ा देने वाली औ़रतें और वो जिन्होंने अल्लाह तआ़ला को क़र्ज़ दिया उनके दूने हैं और उनके लिये इ़ज़्ज़त का सवाब है। (सू0—हदीद—18)

इरशादे खुदावन्दी है—
और अल्लाह सूद को मिटाता है (यानी सूदी माल से बरकत को ख़त्म करता है) और सद्क़ात को बढ़ाता है (यानी सद्क़े के ज़रिये माल की बरकत को ज़्यादा करता है) और अल्लाह तआ़ला किसी भी नासिपास (ना शुक्रा) नाफ़रमान को पसन्द नहीं करता। (सू0—बक़राह—276)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला हलाल कमाई से दिया हुआ सद्क़ा कुबूल फ़रमाता है और उसे बढ़ाता है कि एक खजूर का सद्क़ा (सवाब में) उहद पहाड़ के बराबर हो जाता है। (सही मुस्लिम—1/189)

इन्सान के पास चाहे जितना भी माल हो बिल आख़िर वो उसके वारिसों का ख़ज़ाना होता है और जो अल्लाह तआ़ला की राह में ख़र्च किया जाता है वही उसका असली ख़ज़ाना है जिसका उसे पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और जो लोग अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते और बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं तो जब उन पर अ़ज़ाब डाला जायेगा तो वो नादिम होंगे और अफ़सोस करेंगे और पछतायेंगे और कहेंगे कि काश अल्लाह तआ़ला हमें थोडी मुहलत दे दे तो हम अपना तमाम माल अल्लाह की राह में ख़र्च कर दें लेकिन मौत के बाद किसी को मुहलत नहीं मिलती और आख़िरत में वही लोग ख़सारे में होंगे जो अल्लाह तआ़ला के दिये माल से अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते और आपस में एक दूसरे को मिस्कीन को खिलाने की रग़बत नहीं देते और मीरास का माल हप–हप खाते हो और माल की निहायत मुहब्बत रखते हो हाँ हाँ जब ज़मीन टुकड़ा कर पाश–पाश कर दी जायेगी और आपका रब जलवा फ़रमा होगा और फ़रिश्ते क़तार–क़तार खड़े होंगे और उस दिन जहन्नुम लायी जायेगी उस दिन आदमी सोचेगा और अब सोचने का वक़्त कहाँ (और) कहेगा हाय किस तरह मैने जीते जी नेकी आगे भेजी होती सो उस दिन न उसके अ़ज़ाब की तरह कोई अ़ज़ाब दे सकेगा। (सू0–फ़ज्र–17,–25)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
वो ज़्यादा नुकसान उठाने वाले हैं जिनके पास ज़्यादा माल है और वो राहे हक़ में ख़र्च नहीं करते। (सही मुस्लिम–1/320)

इसलिये हमें चाहिये कि हम ज़्यादा से ज़्यादा माल अल्लाह की राह में ख़र्च करें और कसरत से गुरबा और मसाकीन और फुक़रा को अपने हलाल माल से सद्क़ा ख़ैरात करें ताकि बारगाहे खुदावन्दी में हमारे सद्क़ात मक़बूल हों क्योंकि हराम माल का सद्क़ा क़ाबिले कुबूल नहीं होता अगर हम नेक नीयत और अल्लाह तआ़ला की रज़ा जोई के लिये सद्क़ा करें तो गुरबा मसाकीन के हाथों में पहुँचने से पहले अल्लाह तआ़ला उसे कुबूल फ़रमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
क्या उन्हें ख़बर नहीं अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा कुबूल फ़रमाता है और सद्क़े खुद अपने दस्ते कुदरत में लेता है।
(सू0—तौबा—104)

इरशादे बारी तआला है—
और जो नमाज़ क़ायम रखें और हमारे दिये में से हमारी राह में ख़र्च करें यही सच्चे मुसलमान हैं इनके लिये दर्जे हैं इनके रब के पास और बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी। (सू0—अनफ़ाल—3,—4)

हदीस पाक में है सद्क़ा इन्सान के गुनाहों को इस तरह मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है और क़यामत के दिन लोग फ़ैसला होने तक अपने सद्क़े के साये में रहेगें जो उन्होने दुनियाँ में किये होंगे रोज़े क़यामत तमाम लोग एक चटयल मैदान में जमा होंगे जिसकी ज़मीन ताँबे की मिस्ल होगी और सूरज की नज़दीकी के बाइस उसकी गर्मी से लोगों के दिमाग़ ख़ौलते होंगे और वहाँ रब के अर्श के साये के सिवा कोई साया न होगा लेकिन दुनियाँ में सद्क़ा करने वालों के लिये उनका सद्क़ा उनके लिये साया होगा इसलिये जितना ज़्यादा सद्क़ा ख़ैरात हम दुनियाँ में करेगें उसी के मुताबिक़ हमें रोज़े क़यामत साया अ़ता होगा जो हमें क़यामत के दिन सख़्त गर्मी और धूप से बचायेगा और इस अ़मल की कसरत हमारी बख़्शिश और मग़फिरत का बाइस होगी और दुनियाँ व आख़िरत में हमें इस अ़मल का बहुत अज्र (सवाब,) अ़ता होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
असल नेकी ये नहीं कि अपने मुँह मशरिक़ या मग़रिब की तरफ़ करो हाँ असल नेकी ये है कि ईमान लाये अल्लाह और फ़रिश्तों और पैग़म्बरों पर और अल्लाह की मुहब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दें रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों और राहगीरों और साइलों को और गर्दन छुड़ाने में। (सू0—बक़राह—177)

इरशादे बारी तआला है—
बेशक जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और

ज़ाहिर वो ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जिसमें हरगिज़ नुकसान नहीं होगा ताकि अल्लाह उनका अज्र उन्हें पूरा—पूरा अ़ता फ़रमाये और अपने फज़्ल से उन्हें और ज़्यादा अ़ता फ़रमाये बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला बड़ा ही शुक्र कुबूल करने वाला है। (सू0—फ़ातिर—29,—30)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान को लिबास (कपड़ा) पहनाता है तो जब तक उस पर कपड़े का एक टुकड़ा भी बाक़ी रहता है तो वो (देना वाला) अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में रहता है। (मिश्कात—169)

सबसे बेहतर सद्क़ा वो है जो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करने के लिये हलाल माल से पोशीदा तौर पर दिया जाये पोशीदा सद्क़ा ज़ाहिरन सद्क़े से सत्तर गुना ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है और दूसरों को दिखाने वाले सुनाने वाले और एहसान जताने वाले का सद्क़ा अल्लाह तआ़ला कुबूल नही करता और उसका दिया हुआ सद्क़ा ज़ाया हो जाता है और उस सद्क़े का अज्र उसके करने वाले को नहीं मिलता इसलिये हमें चाहिये कि अपने सद्क़ा ख़ैरात को सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिये इख़लास के साथ अल्लाह की राह में दें और दिखावा न करें।

छुपाकर (पोशीदा) सद्क़ा ख़ैरात करने की फ़ज़ीलत कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला ने इस तरह बयान फ़रमाई—
जो छुपाकर अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं वो उस दाने की मिस्ल है कि जिसने उगाईं सात बालियाँ और हर बाली में सौ (100) दाने और अल्लाह इससे भी ज़्यादा बढ़ाये जिसके लिये चाहे अल्लाह वुसअ़त वाला इल्म वाला है (सू0—बक़राह—261)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया—
और जो लोग अपने माल अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करने और अपने आप को (ईमान व इताअ़त पर) मज़बूत करने के लिये ख़र्च करते है उनकी मिसाल एक ऐसे बाग़ सी है जो ऊँची सतह पर हो उस पर ज़ोरदार बारिश हो तो वो दो गुना फल लाये और

उसे जोरदार बारिश न मिले तो (उसे) शबनम (या हल्की सी फुहार) भी काफी हो और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आमाल को खूब जानने वाला है। (सू0—बक़राह—265)

और दिखावा करके अल्लाह की राह में ख़र्च करने वालों के लिये कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला ने यूँ मिसाल बयान फ़रमाई— जो माल लोगों को दिखाने के लिये ख़र्च करता है और न अल्लाह पर ईमान रखता है और न रोज़े क़यामत पर उसकी मिसाल ऐसे चिकने पत्थर की सी है जिस पर थोड़ी सी मिट्टी पड़ी हो फिर उस पर ज़ोरदार बारिश हो तो वो उसे (फिर वही) सख़्त और साफ़ (पत्थर) करके ही छोड़ दे सो अपनी कमाई से उन (रियाकारों) के हाथ कुछ भी नहीं आयेगा। (सू0—बक़राह—264)

हदीस पाक में है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के लोग नमाज़ रोज़ो की कसरत की वजह से जन्नत में नहीं जायेंगे बल्कि सख़ावत और लोगों पर रहम करने की वजह से जन्नत में जायेंगे इसलिये हमें चाहिये कि कसरत से अल्लाह की राह में अपने हलाल माल को ख़र्च करें ग़रीब मुहताज मिस्कीन साइल व फ़क़ीर की माली मदद करें और उनके साथ रहम दिली और हुस्ने सुलूक से पेश आयें।

बाज़ औक़ात ऐलानियाँ सद्क़ा देना अफ़ज़ल है ताकि लोगों में ज़्यादा सद्क़ा देने की तरफ़ रग़बत पैदा हो लेकिन अपने आपको रिया (दिखावा) से पाक रखें क्योंकि जिस अ़मल में शोहरत मक़सूद हो वो अ़मल ज़ाया हो जाता है और उसका कोई अज्र (बदला,) नहीं मिलता।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
वो जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे हुये और ज़ाहिर उनके लिये उनका नेग उनके रब के पास है उनको न कुछ अंदेशा हो न कुछ ग़म। (सू0—बक़राह—274)

इरशादे बारी तआ़ला है—
अगर सद्क़ा ख़ैरात ऐलानियाँ दो तो ये भी अच्छा है (इससे दूसरों को तरग़ीब मिलेगी) और अगर छुपाकर फ़क़ीरों को दो तो ये तुम्हारे लिये सबसे बेहतर है और (इस ख़ैरात की बजह से) अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कुछ गुनाहों को मिटा देगा और अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की ख़बर है। (सू0—बक़राह—271)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
पोशीदा सद्क़ा अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब को बुझा देता है।
(मजमउज्ज़वाइद—3/115)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सात क़िस्म के लोग हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन साया अ़ता फ़रमायेगा जिस दिन उसके साये के अलावा कोई साया न होगा उनमें से एक वो शख़्स है जो सद्क़ा करे दाँये हाथ से और वाँये हाथ को पता न चले कि क्या दिया है ।
(सही बुख़ारी—1/191)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
बेहतरीन सद्क़ा वो है जो इन्सान मेहनत व मशक्क़त से कमाये और किसी फ़क़ीर को पोशीदा तौर पर दे।
(सुनन अबी दाऊद—1/204)

अगर अल्लाह तआ़ला राहे खुदा में ख़र्च करने पर मिलने वाले अ़ज़ीम अज्र पर किसी शख़्स को मुत्तलाअ़ कर दे तो वो शख़्स अपनी तमाम मालो दौलत राहे खुदा में ख़र्च कर दे और खुद मालो ज़र से खाली हो जाये ज़रा ग़ौर करो कि कायनात की हर एक चीज़ रब्बुल आ़लमीन की है और वही हर चीज़ का असल और हक़ीक़ी मालिक है हम तो सिर्फ इस्तेमाल करते हैं हम मालिक नहीं हैं तो फिर हम क्यों अल्लाह के अ़ता कर्दा माल पर बुख़्ल करें बल्कि हमें तो चाहिये कि ज़्यादा से ज़्यादा राहे खुदा में ख़र्च करें ताकि बदले में बेहतरीन अज्र पायें नहीं तो सब माल यहीं रह जायेगा और हमें सिर्फ़ एक कफ़न में लपेटकर क़ब्र में दफ़न कर दिया जायेगा और फिर हम क़ब्र में पहुँचकर पछतायेंगे और अफसोस करेंगे कि काश हमने अपनी मौत से क़ब्ल राहे खुदा में कसरत से ख़र्च किया होता तो आज हम उसका सिला पाते।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सिर्फ़ दो तरह के शख़्स ऐसे हैं जिन पर रश्क किया जा सकता है एक वो शख़्स कि जिसे अल्लाह तआ़ला हिकमत अ़ता करे और वो लोगों में फैलाता है और दूसरा वो शख़्स जिसे अल्लाह तआ़ला ने माल दिया और वो अल्लाह की राह में ख़र्च करता है।
(सही मुस्लिम—1/272)

—: फ़ुक़रा की फ़ज़ीलत :—

अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो उसे आज़माइश में डाल देता है और जब किसी बन्दे से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करता है तो उससे माल व औलाद सब ले लेता है और जिन फ़क़ीरों व ग़रीबों और मिस्कीनों को हम हक़ारत की नज़र से देखते हैं असल में वो अल्लाह तआ़ला के महबूब तरीन बन्दे हैं और अल्लाह तआ़ला उन्हें अपना दोस्त रखता है जो अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहते हैं।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कहाँ हैं वो मेरे पसंदीदा बन्दे तो फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे इलाही वो कौन लोग हैं फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा जो दुनियाँ में मेरी अ़ता पर राज़ी रहे उन्हें जन्नत में ले जाओ जबकि बाक़ी लोग हिसाबे अ़मल से गुज़र रहे होंगे। (कंजुल उ़म्माल—6/378)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरमी है—
मेरी उम्मत के फ़ुक़रा मालदार लोगों से पाँच सौ (500) साल क़ब्ल (पहले) जन्नत में जायेंगे। (मुस्नद अहमद—2/296)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग फ़ुक़रा हैं जो जन्नत की सैर करते होंगे और अल्लाह तआ़ला मुहताज व तंगदस्त को दोस्त रखता है। (कीमयाये सआ़दत—740)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
जब मैने जन्नत में झाँका तो वहाँ ज़्यादा लोग फ़ुक़रा थे और जब मैने जहन्नुम में झाँका तो वहाँ ज़्यादातर मालदार और औ़रतें थीं। (सही बुख़ारी—2/955)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि जो मालदार की इज़्ज़त करे और फ़क़ीर की तौहीन करे वो मलऊ़न है इसलिये हमें चाहिये कि ग़रीब मिस्कीन व फ़ुक़रा की इज़्ज़त इस तरह करें कि जैसे

हम अपने किसी अज़ीज़ मुसलमान भाई की इज़्ज़त करते हैं।

जब अम्बियाकिराम अ़लैहिमुस्सलाम जन्नत में दाख़िल होंगे तो उनमें से सबसे आख़िर में हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम अपनी हुकूमत और माल के बाइस सबसे आख़िर जन्नत में दाख़िल होंगे और इसी तरह सहाबाकिराम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम में से सबसे आख़िर हज़रत अब्दुल रहमान बिन औफ (रज़ि0) अपनी मालदारी की वजह से तमाम सहाबाकिराम में सबसे आख़िर जन्नत में दाख़िल होंगे।

जब हम किसी फ़कीर मिस्कीन को कुछ माल या खाना या कपड़ा वग़ैराह देते हैं तो हम उस पर कोई ऐहसान नहीं करते बल्कि वो फुक़रा हम पर ऐहसान करते हैं कि हमारे दिये हुये माल को वो कुबूल करते हैं जिससे हमारा माल तहारत का ज़रिया बनता है और हम उसका अज्र पाते हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और मंगता को न झिड़को और अपने रब की नेअ़मत का खूब चर्चा करो। (सू0—जुहा—10—11)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
आदमी का भूके को खाना खिलाना उसे जन्नत में ले जायेगा। (मजमउज्ज़वाइद—5/17)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसललम का इरशादे गिरामी है—
फुक़रा की पहचान ज़्यादा रखो और उनसे नेअ़मतें हासिल करो क्योंकि उनके पास दौलत है सहाबाकिराम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह उनकी दौलत क्या है आपने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला फुक़रा से फ़रमायेगा कि तुम जन्नत में जाओ और जिस जिस ने तुम्हें खाना खिलाया जिस—जिस ने तुम्हें कपड़ा पहनाया उनका हाथ पकड़कर उन्हें भी जन्नत में ले जाओ। (कंजुल उ़म्माल—4/468)

गुरबा मसाकीन व फ़ुक़रा ये तमाम लोग माल वाले लोगों के लिये बरकत और अल्लाह तआ़ला की रहमत और इनामात का सबब हैं क्योंकि अगर ग़रीब मिस्कीन फ़क़ीर न होते तो हम अपने सद्क़ात ख़ैरात किसे देते और इसके बाइस मिलने वाले बेशुमार इनामात और सवाब से हम महरूम रहते इनका मक़ाम और मर्तबा हमें आख़िरत में देखने को मिलेगा जब अल्लाह तआ़ला इनकी फ़क़ीरी और उस पर सब्र के बाइस इन्हें मरातिब और दरजात अ़ता करेगा तब तक लोग इन फ़ुक़रा मसाकीन पर रश्क करेंगे और कहेंगे कि काश दुनियाँ में हमें इनसे भी ज़्यादा मुसीबतों परेशानी मिलती ताकि इन इनामात के हम भी मुस्तहिक़ होते।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मसाइबो आलाम से दो चार (यानी मुसीबतो परेशानी और रंजोग़म में मुब्तिला) होने वाले लोगों को रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला वो मरातिब (मर्तबे) अ़ता करेगा कि आ़फियत (ऐशो आराम) वाले लोग कहेंगे कि काश दुनियाँ में मेरी खालें कैंचियों से काटी जाती। (कीमयाये सआ़दत—707)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये दरवेशी (फक़ीरी) पर सब्र करता और राज़ी रहता है अल्लाह तआ़ला उसे तीन मरातिब अ़ता करेगा जो बादशाहों को भी नहीं मिलेंगे—
1—फ़ुक़रा अमीर से पाँच सौ साल क़ब्ल (पहले) जन्नत में जायेंगे।
2—फ़ुक़रा को महल अहले जन्नत दिखाकर देगी।
3—फ़क़ीर एक बार सुबहान अल्लाह वल हम्दुलिल्लाह कहे और अमीर भी एक बार सुबहान अल्लाह वल हम्दुलिल्लाह कहे और साथ में दस हजार दीनार सद्क़ा भी करे फिर भी फ़क़ीर के सबाब और दर्जे को नहीं पा सकता। (कीमयाये सआ़दत—746)

हज़रत ग़ौसुल आज़म अब्दुल क़ादिरी जीलानी (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे बन्दो अगर तुम मेरी दावत करना चाहते हो तो मेरे फाक़ा हाल बन्दों की दावत करो तुम मुझे उन्हीं में पाओगे।

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम एक शख़्स के पास से गुज़रे जिसके पास माल व असबाब और दुनियाँ में से कुछ न था आप ने इरशाद फ़रमाया कि अगर इसका नूर तमाम दुनियाँ में तक़सीम कर दिया जाये तो पूरा हो जाये इसलिये हमें चाहिये कि किसी फ़क़ीर मिस्कीन ग़रीब को कमतर न जानें बल्कि उनकी इज़्ज़त करें और उनसे रहम दिली और हुस्ने खुल्क़ से पेश आयें और उनको खाना खिलायें लिबास पहनायें और माल वग़ैराह से उनकी मदद करें और खुद को माल के बाइस तकब्बुर से दूर रखें और किसी भी फुक़रा मसाकीन को हक़ारत की नज़र से न देखें और खुद को अच्छा गुमान न करें और फ़क़ीर मिस्कीन की जो भी बदनी या माली मदद करें तो सिर्फ़ नेक नीयत व अल्लाह तआ़ला की रज़ा और सवाब की नीयत से करें ताकि अल्लाह तआ़ला की बारगाह में मक़बूल हो।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला बन्दे से पूछेगा ऐ इब्ने आदम मैं भूका था तूने मुझे खाना नहीं खिलाया वो अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब मैं तुझे खाना कैसे खिलाता जबकि तू तो तमाम जहानों का पालने वाला है अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा तेरा मुसलमान भाई भूका था तूने उसे खाना नहीं खिलाया अगर तू उसे खाना खिलाता तो गोया मुझे खिलाता। (सही मुस्लिम–2/318)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
सबसे बुरा खाना वलीमे का वो है जिसमें मालदार लोगों को बुलाया जाये और फुक़रा (फ़क़ीरों) को छोड़ दिया जाये।
(सही मुस्लिम–2/778)

जो माल हम फुक़रा मसाकीन को सद्क़ा ख़ैरात करते हैं वही माल हमारी आख़िरत का सरमाया है जो क़ब्र व क़यामत में हमारे काम आयेगा ज़रा ग़ौर करो जो माल या अश्या (चीज़ें) हमारे पास मुहैया हैं क्या वो दुनियाँ में हम अपने साथ लाये थे बल्कि वो सब कुछ जो हमारे पास मौजूद है वो मेरे रब ने हमें अ़ता किया है याद रखो इन्सान न तो दुनियाँ में कुछ लेकर आया है न कुछ लेकर जायेगा लेकिन नेक आमाल और जो माल कारे ख़ैर में ख़र्च करता फुक़रा व मसाकीन को सद्क़ा ख़ैरात करता वो उसे ज़रुर अपने साथ लेकर जायेगा जो उसकी निजात और बख़्शिश का ज़रिया और अज्रे अ़ज़ीम का बाइस बनेगा।

—: काफ़िर की दोस्ती :—

अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हमें ग़ैर मुस्लिम से दोस्ती करने को मना फ़रमाया है और उनसे दोस्ती न करने में एक हिकमत ये भी है कि इन्सान के अन्दर बुरे असरात जल्द आ जाते हैं और अल्लाह तआ़ला चाहता है कि मेरे बन्दे हर बुराई व गुनाह से दूर रहें और सिर्फ़ अच्छे काम करें और ये रब तआ़ला का रहमो करम है कि अपने बन्दों को बुराई से बचाना चाहता है हदीस पाक में है नबी अकरम सल्ललहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया।

बेशक अल्लाह तआ़ला किरामन कातिबीन (फ़रिश्तों) से फ़रमाता है— कि जब मेरा बन्दा गुनाह का इरादा करे तो उसे न लिखो जब तक वो उस पर अ़मल न करे और जब वो उस पर अ़मल करे तो एक गुनाह लिखो और जब वो नेकी का इरादा करे तो एक नेकी लिख दो और अगर वो उस पर अ़मल करे तो दस नेकी लिख दो। (सही मुस्लिम—1/78)

कुरान व अहादीस मुबारका में क़ाफिरों से दोस्ती न करने की हमें ताकीद की गई है इसलिये हम तमाम मुसलमानों पर लाज़िम है कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करें और किसी ग़ैर मुस्लिम से अपने दोस्ताना तआ़ल्लुक़ न रखें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालों काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाओ (सू0—निसा—144)

इरशादे बारी तआ़ला है—
मुसलमान काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाये (सू0—आले इमरान—28)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मोमिन के सिवा किसी को अपना साथी न बनाओ। (मिश्कात—426)

इरशादे बारी तआ़ला है—
वो जो मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं क्या उनके पास इ़ज़्ज़त तलाश करते हैं तो इज्ज़त तो सारी अल्लाह के लिये है। (सू0—निसा—139)

—: अख़लाक़े हसना :—

हर मुसलमान के लिये हुस्ने खुल्क़ की सिफ़त का रखना उसके लिये बहुत बेहतर और बड़ी फ़ज़ीलत रखता है और कुर्बे इलाही का सबब बनता है और ये सिफ़त बन्दे के लिये रब तआ़ला की नज़दीकी हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है और अच्छे अख़लाक़ वाले शख़्स अल्लाह तआ़ला के महबूब और पसंदीदा बन्दे हैं अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम अच्छे अख़लाक़ (अच्छी आदत) वाले शख़्स से मुहब्बत करते हैं और परहेज़गारी की तकमील वग़ैर हुस्ने अख़लाक़ से नहीं हो सकती।

इसलिये हमें चाहिये कि हम किसी भी शख़्स को किसी भी तरह की अज़िय्यत (तकलीफ़) न पहुँचायें और उनसे अज़िय्यत मिलने पर सब्र करें और खुशी और ग़म व सख़्ती और मशक़्क़त सभी हालतों में लोगों को राज़ी रखें और हर शख़्स से हुस्ने सुलूक व नरमी और अच्छे बरताव से पेश आयें और हमेशा अच्छी बात कहें और लोगों पर रहम करें और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात और गुस्से पर हमेशा ग़ालिब रहें यही अख़लाक़े हसना है और ईमान की मज़बूती और कमाल हर इन्सान को हुस्ने अख़लाक़ से ही मिलता है।

—अख़लाक़े हसना से मुताअ़ल्लिक़ चन्द अहादीस—

1—नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया— जो शख़्स लोगों पर रहम नहीं करता अल्लाह तआ़ला उस पर रहम नहीं करता। (मुस्नद अहमद—2/228)

2—सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—बेशक अल्लाह तआ़ला नरम दिल और खुश मिज़ाज शख़्स को पसन्द फ़रमाता है। (शुअ़बुल ईमान—6/254)

3— सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— क़यामत के दिन मीज़ान (तराज़ू) पर जो सबसे ज़्यादा बज़्नी चीज़ रखी जायेगी वो ख़ौफ़े खुदा और अच्छे अख़लाक़ हैं। (सुनन अबी दाऊद—2/305)

4—रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मोमिनों में उस शख़्स का ईमान ज़्यादा कामिल है जिसका अख़लाक़ सबसे अच्छा है और वो अपने घर वालों पर ज़्यादा मेहरबान है। (जामअ़ तिर्मिज़ी—375)

5—फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—जो शख़्स तुम्हें महरुम करे तुम उसे अ़ता करो और जो तुमसे ज़्यादती करे तुम उसे माफ़ करो और जो तुमसे क़ता तआ़ल्लुक़ करे तुम उससे सिला रहमी (अच्छा सुलूक) करो (शुअ़बुल ईमान—6/261)(दुर्रे मन्सूर—3/153)

6—नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
उस शख़्स पर दोज़ख़ हराम है जो नरम दिल और खुश मिज़ाज और मिलनसार है। (मजमउज़्ज़वाइद—4/75)

7—सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जहन्नुम से बचो अगरचा खजूर के एक टुकड़े से हो और जो न पाये वो अच्छी गुफ्तगू करे। (सही बुख़ारी—2/890)

8—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जिस आदमी को ये बात पसन्द हो कि उसकी उम्र में बरकत और रिज़्क में कुशादगी हो तो उसे चाहिये कि सिला रहमी (अच्छा सुलूक) इख़्तियार करे। (मुस्तदरक हाकिम—4/161)

9—रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बेशक मेरे नज़दीक तुम में से सबसे ज़्यादा महबूब और क़यामत के दिन मेरे ज़्यादा क़रीब वो लोग होंगे जिनके अख़लाक़ सबसे अच्छे हैं। (मजमउज़्ज़वाइद—8/21)

10—फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हैं—
बेशक अच्छे अख़लाक़ गुनाहों को इस तरह पिघला देते हैं जैसे सूरज जमे हुये पानी को पिघला देता है। (शुअ़बुल ईमान—6/247)

11—नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—आदमी का अच्छी बात करना उसे जन्नत में ले जायेगा (मजमउज़्ज़वाइद—5/17)

12—सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—अच्छी गुफ्तगू सद्क़ा है। (मुस्नद अहमद—2/316)

13—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—नरम दिल वाले शख़्स पर जहन्नुम हराम है। (तिर्मिज़ी—4/220)

14—रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया— जिस चीज़ में नरमी होती है वो उसे ज़ीनत बख़्शती है और जिस चीज़ में नरमी नहीं होती वो उसे ऐबदार कर देती है। (सही मुस्लिम)

15—फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है— बन्दा अपने अच्छे अख़लाक़ से आख़िरत के अ़ज़ीम दरजात को हासिल कर लेता है। हालाँकि वो इबादत में कमजोर होता है।
(मुअ़जम कबीर तिबरानी—1/1060)

16—रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—जो मुसलमान हक़ पर होने के बावजूद झगड़ा नहीं करता तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये जन्नत में आला घर बनाता है।
(सुनन अबी दाऊद—2/305)

और बद अख़लाक़ी इन्सान को अल्लाह व रसूल से दूर कर देती और बुराई व गुनाह की तरफ़ ले जाती है और ये वो बातिनी बीमारी है जिसका इलाज किसी तबीब के पास नहीं है बल्कि इन्सान खुद इसका इलाज है कि उसे चाहिये कि अपने अन्दर ख़ौफ़े खुदा रखे और योमे हिसाब यानी क़यामत का यक़ीन रखे और अपने नफ़्स और गुस्से को क़ाबू में रखे और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के हुक्म और सुन्नतों पर कसरत से अ़मल करे तो वो इस बीमारी से निजात पा सकता है बद अख़लाक़ी एक ऐसी बुराई है कि इसके साथ नेकियों की कसरत भी उसे फ़ायदा नहीं देती और दुनियाँ में लोगों की नज़रों से वो गिर जाता है और ज़लील व ख़्वार होता है और अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की नाराज़गी का सबब बनता है और आख़िरत में वो शर्मसार होगा और सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला किया जायेगा।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
बद अख़लाक़ी ऐसा गुनाह है जिसकी बख़्शिश नहीं और बद गुमानी ऐसी ख़ता है जिससे और गुनाह पैदा होते हैं।
(मुअ़जम सगीर तिबरानी–1/200)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ाला के नज़दीक बदतरीन मख़लूक़ वो शख़्स हैं जो बहुत झगड़ालू हैं। (सही बुख़ारी–1/332) (मुस्नद अहमद–6/55)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
क़यामत के दिन सबसे बुरा वो शख़्स होगा जिसे लोग बद अख़लाक़ी की वजह से छोड़ दें। (सही बुख़ारी–2/894)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है–
बेशक बन्दा अपने बद अख़लाक़ की वजह से जहन्नुम के निचले गढ़े में पहुँच जाता है। (मजमउज़्ज़वाइद–8/25)

—: तकब्बुर :—

तकब्बुर करना गुनाहे अज़ीम है और इस बीमारी में मुब्तिला इन्सान अपना ठिकाना जहन्नुम में बनाता है और अल्लाह तआला के ग़ज़ब का शिकार होता है और दुनियाँ व आख़िरत में वो नुकसान उठाने वालों में से होता है और लोगों में वो ज़लील होता है और अपनी आक़िबत ख़राब कर लेता है और अल्लाह तआला मुताकब्बिर (घमंडी) शख़्स को ना पसंद फ़रमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
ये उसका बदला है जो तुम ज़मीन पर बातिल पर खुश होते थे और ये उसका बदला है जो तुम इतराते थे जाओ जहन्नुम के दरवाज़ों में उसमें हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना है मग़रूरों का। (सू0—मोमिन—75,—76)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता इतराने वाले और बढ़ाई करने वालों को। (सू0—निसा—36)

इरशादे बारी तआला है—
अल्लाह तआला हर मुताकब्बिर के दिल पर मुहर लगा देता है। (सू0—मोमिन—35)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर है वो जन्नत में न जायेगा और जिस शख़्स के दिल में राई के दाने बराबर ईमान है वो जहन्नुम में न जायेगा। (सही मुस्लिम—1/65)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
बेशक अल्लाह तआला सख़्त मिज़ाज मुताकब्बिर (घमंडी) को ना पसंद करता है। (सही मुस्लिम—2/382)

इन्सान की हक़ीक़त ये है कि वो एक नुत्फ़े (वीर्य, मनी) से उसके वुजूद की इब्तिदा हुई और वो औरत की शर्मगाह से दुनियाँ में

आया और दो तरह की नजासतों को रोज़ उठाता है यानी पेशाब और पाख़ाना और जब वो फ़ौत हो जाता है तो बदबूदार हो जाता है और उसका जिस्म कीड़े मकोड़ों की गिज़ा बनता है हत्ता कि वो ख़ाक हो जाता है इस हक़ीक़त और अंजाम को जानने के बाद भी अगर इन्सान तकब्बुर करे तो वो किस चीज़ पर तकब्बुर करता है जबकि उसकी हक़ीक़त उस पर ज़ाहिर हो गई और अगर फिर भी वो तकब्बुर करे तो वो सबसे बड़ा अहमक़ है जो खुद को ख़सारे में डालता है और उसका तकब्बुर उसे जहन्नुम में ले जायेगा

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक आदमी पर एक ऐसा वक़्त गुज़रा कि कहीं उसका नामो निशान भी न था बेशक हमने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से कि वो उसे जाँचे तो उसे सुनता देखता कर दिया बेशक हमने उसे राह बतायी या हक़ मानता या ना शुक्री करता बेशक हमने तैयार कर रखी हैं जंजीरें और तौक़ और भड़कती हुई आग। (सू0—दहर—1,—4)

इरशादे बारी तआला है—
इन्सान हलाक हो वो किस क़दर ना शुक्रा है उसे किस चीज़ से बनाया पानी की बूँद से उसे पैदा किया फिर उसे तरह—तरह के अंदाज़ों पर रखा फिर उसके लिये रास्ता आसान किया फिर उसे मौत दी और क़ब्र में रखवाया फिर जब चाहेगा बाहर निकालेगा। (सू0—अ़बस—17,—22)

इरशादे खुदावन्दी है—
और ज़मीन में निशानियाँ हैं यक़ीन वालों के लिये और खुद तुम्हारे वुजूद में निशानियाँ हैं तो क्या तुम्हें नज़र नहीं आती।
(सू0—ज़ारियात—20,—21)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़यामत के दिन तकब्बुर करने वाले चींटियों की शक्ल में उठाये जायेंगे और लोग उनको पाँव से रौंधेंगे और उनको जहन्नुम की तरफ हाँका जायेगा और उनको बदबूदार कीचड़ और जहन्नमियों की पीप पिलाई जायेगी। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब—4 / 388)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो तकब्बुर करे अल्लाह तआ़ला उसे ज़लील कर देता है और वो अपने आपको बड़ा समझता है लेकिन लोगों की निगाहों में वो छोटा होता है। (कंजुल उ़म्माल)

तमाम तारीफ़ें और तमाम खूबियाँ सिर्फ़ रब तआ़ला के लिये ही हैं और तकब्बुर भी उसकी सिफ़त है और अगर कोई शख़्स तकब्बुर करता है तो गोया वो अल्लाह तआ़ला से उसकी सिफ़त के मुताअ़ल्लिक़ झगड़ा करता है जबकि इन्सान की हक़ीक़त ये है कि उसका आगाज़ मनी है और अंजाम मुर्दार है और उसकी मौत के बाद न उसकी ताक़त बाक़ी रहेगी न उसका हुस्नो जमाल और न उसकी समाअ़त न उसकी आवाज़ और न उसका माल और फिर भी अगर कोई शख़्स तकब्बुर करे तो ये उसकी कम अक़्ली है और बेवकूफी है जो उसे जहन्नुम में ले जाने के लिये काफ़ी है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और ज़मीन पर इतराता न चल बेशक हरगिज़ तू ज़मीन को न चीर डालेगा और न बुलन्दी में पहाड़ों को पहुँचेगा और इतराने वाले तेरे रब को पसन्द नहीं है। (सू0— बनी इसराईल—37,—38)

इरशादे बारी तआ़ला है—
तो वो जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल मुन्किर हैं और वो मग़रूर हैं जबकि हक़ीक़त ये है कि बेशक अल्लाह तआ़ला सब जानता है जो (वो) छुपाते और ज़ाहिर करते हैं बेशक अल्लाह तआ़ला मग़रूरों को पसन्द नहीं करता। (सू0—नहल—22,—23)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला को अपनी मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा ना पसन्द वो लोग होंगे जो झूठ बोलते और तकब्बुर करते हैं। (कंजुल उम्माल—16/70)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला तकब्बुर करने वालों को पस्त कर देता है। (मजमउज्ज़वाइद—8/82)

जब किसी शख़्स के दिल में तकब्बुर पैदा होता है तो वो खुद को दूसरों से बुलन्द और मुअज़्ज़ज़ समझता है और दूसरों को खुद के मुक़ाबिल हक़ीर और कमतर जानता है और ये नफ़्स की ऐसी बुराई और आफ़त है जो दूसरे गुनाहों की तरफ़ माइल करती है और मुताकब्बिर शख़्स इस गुनाह के अलावा दूसरे गुनाहों जैसे हसद, गुस्सा, झूठ, फ़रेब, ग़ीबत, बद अख़लाक़ी वग़ैराह में मुब्तिला हो जाता है और बड़ा गुनाहगार बन जाता है और वो इन गुनाहों के सबब जन्नत से दूर और दोज़ख़ के क़रीब पहुँच जाता है।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
तकब्बुर करने वालों को अल्लाह तआ़ला औंधा करके जहन्नुम में डालेगा। (मजमउज़्ज़वाइद–1/98)

इसलिये हमें चाहिये कि तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा हक़ीर और गुनाहगार खुद को जानें क्योंकि हो सकता कि हमसे कोई ऐसा गुनाह सरज़द हो जाये और उस गुनाह के बाइस अल्लाह तआ़ला हमें जहन्नुम में डाल दे और हमारे तमाम नेक अ़मल अकारत हो जायें जिन पर हमें फख़्रो नाज़ है और तमाम नेक अ़मल और इबादात के बावजूद हम जहन्नुम का ईंधन बन जायें।

और जिस शख़्स को हम हक़ीर या कमतर या गुनाहगार ख़्याल करते हैं मगर हो सकता है कि उससे काई एक ऐसी नेकी वाक़ेअ़ हो जाये जो अल्लाह तआ़ला को पसन्द आ जाये और उस नेकी के सबब अल्लाह तआ़ला उसके तमाम गुनाहों को बख़्श दे और उसे जन्नत का मुस्तहिक़ बना दे क्योंकि दुनियाँ में बहुत लोग ऐसे भी हुये हैं जो ज़ाहिरन गुनाहगार थे मगर उनकी कोई एक ऐसी नेकी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को इतनी पसंद आयी कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें विलायत से सरफराज़ फ़रमाया और अपने महबूब तरीन बन्दों में शामिल किया और वो अल्लाह के वली कहलाये इसलिये हमें चाहिये कि तमाम लोगों में खुद को सबसे ज़्यादा हक़ीर व कमतर और गुनाहगार ख़्याल करें और लोगों को खुद के मुक़ाबिल मुअज़्ज़ज़ व बेहतर जानें ताकि हमारे ज़ाहिर व बातिन से तकब्बुर जैसी बुराई दूर हो जाये और हम तकब्बुर के बाइस होने वाले गुनाहों से इजतिनाब करने में कामयाब हो जायें और हम

इसके साथ–साथ होने वाले दीगर तमाम गुनाहों से पाक हो जायें और यही असल ईमान है और यही जन्नत का रास्ता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
ऐ ईमान वालो कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाये मुम्किन है वो लोग उन (मज़ाक़ करने वालों) से बेहतर हों और न औ़रतें दूसरी औ़रतों का (मज़ाक़ उडायें) मुम्किन है वो औ़रतें उन (मज़ाक़ उड़ाने वाली औ़रतों) से बेहतर हों और न आपस में ताना ज़नी और इलज़ाम तराशी किया करो और न एक दूसरे के बुरे नाम रखा करो किसी के ईमान (लाने) के बाद उसे फ़ासिक व बदकार कहना बहुत ही बुरा नाम है और जिसने तौबा नहीं की वही लोग ज़ालिम हैं। (सू0–हुजरात–11)

इरशादे बारी तआ़ला है–
बेशक जो लोग हमारी इ़बादत पर तकब्बुर करते हैं अ़नक़रीब हम उनको जहन्नुम में दाख़िल करेंगे इस हाल में वो ज़लील व रुसवा होंगे। (सू0–मोमिन–60)

इरशादे खुदावन्दी है–
वो तुम्हें खूब जानता है तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और तुम अपनी माँओं के पेट में थे तो तुम अपने आप को बड़ा पाक व साफ़ मत बताया करो वो खूब जानता है (असल) परहेज़गार कौन है।
(सू0–नज्म–32)

इरशादे खुदावन्दी है–
हमने आख़िरत का घर (यानी जन्नत) उनके लिये तैयार की है जो ज़मीन पर तकब्बुर नहीं करते और न फ़साद करते हैं और आ़क़िबत परहेज़गारों की ही है। (सू0–क़सस–83)

हमें किसी भी मामालात में तकब्बुर करने या किसी को खुद से कमतर जानने का हक़ नहीं है क्योंकि तमाम मख़लूक़ को अल्लाह तआ़ला ने पैदा फ़रमाया और अल्लाह के सिवा कोई नही जानता कि वो किस बन्दे से राज़ी है और किस बन्दे से नाराज़ है और ये भी कोई नहीं जानता कि किसकी इ़बादत बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल हुई और किसकी कुबूल नहीं हुई है तो जब हम कुछ भी नहीं जानते तो हम किस बिना पर दूसरों को खुद से कमतर जानें और तकब्बुर करें जबकि हम अपनी तमाम इ़बादत व आमाल की कुबूलियत से अन्जान हैं

इसलिये हमें चाहिये कि खुद का मुहासिबा करें और दूसरों के मुताअ़ल्लिक़ न सोचें बल्कि खुद के मुताअ़ल्लिक़ ग़ौरो फिक्र करें और अपने अंजाम के बारे में सोचें और कोई भी शख़्स इबादत या नेक अ़मल अपनी ताक़त व कुव्वत की वजह से नहीं कर सकता जब तक अल्लाह तआ़ला का उस पर रहमो करम न हो और तमाम नेअ़मतें जो हमें मयस्सर हुई हैं वो हमारी कोशिश या हासिल करने की वजह से नहीं बल्कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फ़ज़्लो करम और उसकी तौफ़ीक़ से हमें अ़ता हुई हैं तो जब सब कुछ करने वाला परवरदिगार है तो हम किसी बात पर भी तकब्बुर करने का हक़ नहीं रखते हैं।

हज़रत अइयूब अ़लैहस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से कहा ऐ मेरे रब मैने बरसों बीमारी और परेशानी में गुज़ारे हैं लेकिन मैं तेरी रज़ा पर राज़ी रहा और सब्र किया तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ अइयूब तेरा सब्र करना तेरे खुद के ज़ोरो कुव्वत की वजह से नहीं बल्कि मेरे फ़ज़्लो करम से है जो तूने सब्र किया इसी तरह माल ताक़त हुस्नों जमाल इल्म अक़्ल वग़ैराह तमाम नेअ़मतें अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से हर इन्सान को मिलती हैं इसमें किसी इन्सान का कोई दख़ल नहीं हम चाहकर भी कोई नेक अ़मल या इबादत नहीं कर सकते और न किसी दुन्यावी नेअ़मत को हासिल कर सकते हैं जब तक अल्लाह तआ़ला न चाहे इसलिये हमें चाहिये कि किसी भी मामालात में तकब्बुर न करे क्योंकि सब कुछ रब तआ़ला के इख़्तियार में है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और ज़मीन पर इतराता हुआ न चल बेशक अल्लाह तआ़ला को पसन्द नहीं इतराने वाले और फख़्र करने वाले। (सू0—लुक़मान—18)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
खाओ पीओ पहनो और सद्क़ा करो लेकिन न तो हद से ज़्यादा और न बतौर तकब्बुर। (सुनन इब्ने माजा—266)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
ज़रुरत से ज़्यादा जो तामीर करता है क़यामत के दिन उसे उस तामीरात को उठाने का हुक्म दिया जायेगा (मुअ़जम क़बीर तिबरानी)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे से बुराई का इरादा फ़रमाता है तो उसके माल को गारे और पानी (यानी तामीरात) में हलाक कर देता है। (मुअ़जम कबीर तिबरानी)

इरशादे बारी तआ़ला है—
इसलिये ग़म न करो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से जाती रही है और उस चीज़ पर न इतराओ जो (अल्लाह) ने तुम्हें अ़ता की है और अल्लाह तकब्बुर करने वाले फख़्र करने वालों को पसन्द नहीं करता। (सू0—हदीद—23)

एक बुजुर्ग का क़ॉल है कि मुताकब्बिर शख़्स को अल्लाह तआ़ला उस वक़्त तक मौत नही देता जब तक उसे अपने अहल व अ़याल और ख़ादिमों से ज़लील व ख़्वार न करा दे और इन्सान अपने पेट में पख़ाने का बोझ उठाये फिरता है फिर भी तकब्बुर करता है।

इमाम ग़ज़ाली (रह0) फ़रमाते है कि इन्सान के नफ़्स के कई रंग व रुप हैं जो इन्सान को तकब्बुर के अलावा दीगर बुराइयों की तरफ़ राग़िब करता है इन्सान का नफ़्स शहवत के वक़्त हैवान जैसे अफ़आ़ल करता है और गुस्से के वक़्त दरिन्दा बन जाता है मुसीबत के वक़्त छोटे बच्चे की तरह आह वज़ारी (रोना पीटना) करता है और आराम व आसाइश (राहत व चैन) के वक़्त फिरऔ़न बन जाता है और जब भूका हो तो पागल हो जाता है और जब सेर होता है तो सरकश बन जाता है लेकिन नफ़्स को जब किसी तरफ़ राग़िब करो तो वो उसी तरफ़ राग़िब हो जाता है इस नफ़्स को जब थोड़ी सी चीज़ पर क़नाअ़त व किफ़ायत करने का आदी बना लो तो वो उसी पर आदी और साबिर हो जाता है यानी नफ़्स को जिस चीज़ का आदी बनालो तो वो उसी का आदी बन जाता है नफ़्स वही हालत इख़्तियार करता है जिस पर इन्सान उसे रखे अगर उसे खूब खिलाया जो तो उसकी शहवतें जोश में आती हैं और अगर उसे कम खिलाया जाये तो वो उसी पर मुतमईन हो जाता है।

—: खुद पसंदी :—

किसी भी मामलात में खुद को दूसरों से बेहतर जानना और खुद पर फख़्र व नाज़ करना ये खुद पसंदी की अ़लामत है और ऐसा शख़्स खुद की तारीफ़ करना और सुनना पसंद करता है जब कोई शख़्स कोई नेक अ़मल करता है जैसे रोज़ा नमाज़ हज ज़कात सद्क़ात वग़ैराह तो वो ये ख़्याल करता है कि मैं नेक आदमी हूँ और नेक काम करता हूँ इस तरह उसके अन्दर खुद पसंदी पैदा हो जाती है लेकिन वो ये भूल जाता है कि उसकी तमाम इबादत और नेक आमाल अल्लाह तआ़ला के रहमो करम और उसकी तौफ़ीक़ से हैं और दूसरी बात वो ये भी भूल जाता है कि उसकी इबादत और नेक अ़मल बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल हुये भी हैं या नहीं बल्कि वो खुद पसंदी में इतना मुब्तिला हो जाता है हत्ता कि जो उसने दुनियाँ में गुनाह किये हैं वो उन गुनाहों को भी भूल जाता है।

बाज़ लोग अपनी ताक़त हुस्नो जमाल इल्म अ़क्ल और माल के बाइस खुद पसन्दी के गुनाह में मुब्तिला हो जाते हैं और वो ख़्याल करते हैं कि जो मेरे पास है वो औरों के पास नहीं है मेरा लिबास दूसरों से बेहतर है मेरी शक्लो सूरत दूसरों से बेहतर व अच्छी है मेरे मकानात दूसरों के मकानात से ज़्यादा खूबसूरत हैं मेरा ओहदा मेरी इज़्ज़त दूसरों के मुक़ाबले ज़्यादा है मेरी मालदारी दूसरों से ज़्यादा है मेरी अ़क्ल दूसरों से ज़्यादा तेज़ है और वो इन तमाम बातों में दूसरों से खुद को बेहतर समझता है और फख़्र करता है और गुनाहगार हो जाता है और अल्लाह तआ़ला ऐसे खुद पसन्द शख़्स को ना पसन्द फ़रमाता है क्योंकि इन तमाम नेअ़मतों का अ़ता करने वाला तो सिर्फ़ रब्बुल आ़लमीन है और जब कोई शख़्स अल्लाह की अ़ता कर्दा नेअ़मतों पर अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करता और मारफ़ते खुदावन्दी इख़्तियार नहीं करता तो रब तआ़ला ऐसे शख़्स से सख़्त नाराज़ हो जाता है और नाशुक्रा व खुद पसन्द मुताकब्बिर शख़्स अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब का शिकार होता है।

इसलिये हमें चाहिये कि तकब्बुर व खुद पसन्दी से किनारा कशी इख़्तियार करें और इन गुनाहों से बचने के लिये मारफ़ते खुदावन्दी इख़्तियार करें और हर वक़्त गुमान रखें कि जो नेअ़मतें हमें मिलीं और जो हमने नेक काम किये और इबादत की वो सब रब तआ़ला के फ़ज़्लो करम और उसकी तौफ़ीक़ से है और जब

किसी नेअमत या नेक अमल का ज़िक्र करें तो यूँ कहें कि मेरे रब का फ़ज़्लो करम है यानी अपने तमाम मामलात में मारफ़ते खुदावन्दी इख़्तियार करें और जब कोई किसी नेक अ़मल या किसी नेअ़मत का ज़िक्र या तारीफ़ करें तब भी मारफ़ते खुदावन्दी इख़्तियार करें और कहें कि मेरे रब का फ़ज़्लो करम है और खुद की तारीफ़ व तौसीफ़ से बचने की हर मुमकिन कोशिश करें और खुद को दूसरों के मुक़ाबिल कमतर हक़ीर और गुनाहगार जानें तो इस तरह हमारे ज़ाहिर व बातिन से तकब्बुर व खुद पसंदी जैसी बुराइयाँ दूर हो जायेंगी और हम इससे बचने में क़ामयाब हो जायेंगे और इससे निजात पा जायेंगें।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अगर तुमसे गुनाह सरज़द न हों तो मुझे तुम पर इससे भी बड़े गुनाह का ख़तरा है और वो खुद पसंदी है।
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब—3/571)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— तीन बातें हलाकत में डालने वाली हैं—1—लालच जिसकी पैरवी की जाये 2—ख़्वाहिश जिसकी इताअ़त की जाये 3—और आदमी का अपने नफ़्स पर इतराना। (कंज़ुल उ़म्माल—16/45)

फ़तह मक्का के बाद जंगे हुनैन हुई जिसमें मुसलमानों की तादाद ज़्यादा थी और कुफ़्फ़ारों की तादाद बहुत कम थी उन मुसलमानों में बाज़ लोगों ने कहा कि हम कुफ़्फ़ारों पर ज़रुर ग़ालिब आयेंगे क्योंकि हमारी तादाद बहुत ज़्यादा है और उनके अन्दर तकब्बुर व खुद पसंदी आ गई और अल्लाह तआ़ला को ये बात पसंद न आई और फिर जंग हुई और मसलहते इलाही कि मुसलमान कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब आ गये और माले गनीमत लूटने में मशगूल हो गये इतने में कुफ़्फ़ार वापस पलट आये और मुसलमानों पर हमला कर दिया और मुसमानों के पाँव उखड़ गये और मैदाने जंग से भागने लगे फिर दोबारा जंग हुई और अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों की मदद फ़रमाई और मुसलमानों ने फ़तह पाई और कामयाब हुये और उनमें से कुछ लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया और मुसलमान हो गये इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला तकब्बुर व खुद पसंदी पर नाराज़ हो जाता है और अपनी मदद व रहमत उठा लेता है इसलिये हमें चाहिये कि जब हम किसी काम का इरादा करें तो ये न कहें

कि हम फलाँ काम ज़रुर कर गुज़रेंगे या हम फलाँ पर ज़रुर ग़ालिब आयेंगे बल्कि यूँ कहें कि इंशा अल्लाह अगर मेरा रब चाहेगा तो हम फलाँ काम ज़रुर करेंगे या फलाँ पर ज़रुर ग़ालिब आयेंगे। जंगे हुनैन के वाक़्यात को कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला ने इस तरह बयान फ़रमाया–

और हुनैन के दिन तुम अपनी कसरत पर इतरा गये थे तो वो तुम्हारे कुछ काम न आयी और ज़मीन इतनी वसीअ़ होकर भी तंग हो गई फिर तुम पीठ देकर फिर गये फिर अल्लाह तआ़ला ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल पर और मुसलमानों पर और वो लश्कर उतारे जो तुमने न देखे और काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया और मुनकिरों की यही सज़ा है। (सू0—तौबा—25—26)

इरशादे बारी तआ़ला है–

और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मै कल ये कर दूँगा मगर ये कि अल्लाह चाहे (यानी इंशा अल्लाह कहना) (सू0—कहफ़—23)

बाज़ लोग जब कोई नेक अ़मल करते हैं तो वो खुद पसन्दी के सबब इतराते और खुद पर फख़्रो नाज़ करते हैं और फिर वो लोगों की तरफ़ निगाह करते कि इस अ़मल को कौन करता है और कौन नहीं करता इस तरह वो खुद को लोगो से बेहतर व नेक गुमान करते हैं और लोगों को हक़ारत की नज़र से देखते हैं मिसाल के तौर पर अगर कोई शख़्स थोड़े वक़्त से नमाज़ का एहतमाम करने लगे तो फिर वो लोगों में नमाज की तरग़ीब और लोगों की इस्लाह के बजाय अपनी नमाज़ की चर्चा और बे नमाज़ियों की बुराइयाँ शुरु कर देता है बाज़ ऐसे हैं जो अपने इल्म को दूसरों तक पहुँचाने और तलक़ीन के बजाय तनक़ीद और शर्मसार करते हैं और अपने नेक आमाल के बाइस तकब्बुर व खुदपसन्दी में मुब्तिला रहते हैं लेकिन वो इस बात से अंजान रहते हैं कि हर शख़्स की बख़्शिश और मग़फ़िरत के लिये अल्लाह तआ़ला की रहमत क़ाफ़ी और ज़रुरी है।

हदीस पाक में है कि लोगों के आमाल के तीन दफ़्तर होंगे एक नेकियों का और एक बुराइयों का और एक रब तआ़ला की नेअ़मतों का दफ़्तर होगा और नेकियों को नेअ़मतों के मुक़ाबिल लाया जायेगा जब कोई नेकी लाई जायेगी तो उसके मुक़ाबले में नेअ़मत रख दी जायेगी यहाँ तक कि नेकियाँ नेअ़मतों में ख़त्म हो जायेंगीं और गुनाह और बुराईयाँ बाक़ी रह जायेंगी तो फिर अल्लाह तआ़ला को उन पर इख़्तियार है।

—: तवाज़ोअ़ :—

तकब्बुर व खुद पसन्दी किसी मुसलमान के लिये सज़ावार नहीं है बल्कि उसके लिये बेहतर यही है कि वो अल्लाह तआ़ला के लिये तवाज़ोअ़ (आ़जज़ी) इख़्तियार करे और कोई शख़्स अपनी इबादत की हलावत (मिठास) उस वक़्त तक नहीं पा सकता जब तक कि वो अपनी इबादत में तवाज़ोअ़ न लाये और तवाज़ोअ़ के सबब इन्सान में अच्छे अख़लाक़ पैदा होते हैं हदीस पाक में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स तवाज़ोअ़ करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी इज़्ज़त को बढ़ाता है और जो दूसरों पर अपना माल ख़र्च करे और ग़रीबों पर रहम करे और उनके पास बैठे और आ़लिमों की हम नशीनी इख़्तियार करे वो नेक बख़्त है।

और जो शख़्स तवाज़ोअ़ के बजाय तकब्बुर करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे लोगों में हक़ीर कर देता है और वो अल्लाह तआ़ला की रहमत से महरुम रहता है और जो अल्लाह तआ़ला के लिये तवाज़ोअ़ करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे सर बुलन्द करता है उसके नेक आमाल और उसकी दुआ़यें कुबूल करता है और उसके गुनाहों को बख़्श देता है और ऐसा शख़्स जन्नत में अपना आला मक़ाम बनाता है और अल्लाह के लिये तवाज़ोअ़ करने वाले लोग अल्लाह तआ़ला के पसंदीदा बन्दे हैं।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स माफ़ करता है अल्लाह तआ़ला उसकी इज़्ज़त को बढ़ाता है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के लिये तवाज़ोअ़ करता है अल्लाह तआ़ला उसका मर्तबा बुलन्द करता है (सही मुस्लिम—2 / 321)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी) करता है अल्लाह तआ़ला उसे बुलन्द मक़ाम अ़ता करता है और जो आदमी तकब्बुर करता है अल्लाह तआ़ला उसे ज़लील करता है और जो आदमी किफ़ायत शियारी (कम ख़र्ची) करता है अल्लाह तआ़ला उसे मालदार करता है और जो फ़िज़ूलख़र्ची करता है अल्लाह तआ़ला उसे मुहताज कर देता है और जो अल्लाह तआ़ला को कसरत से याद करता है तो अल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत करता है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब—4 / 197)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– जिस शख़्स की रुह इस हाल में जुदा हो कि वो तीन बातों से बरी हो तो वो जन्नत में जायेगा–1–तकब्बुर 2–क़र्ज़ 3–ख़यानत (अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/597)

एक रिवायत में है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम अपने दौलत कदाह में चन्द सहाबाकिराम (रज़ि0) के साथ खाना तनावुल फ़रमां रहे थे कि दरवाज़े पर एक साइल आया जो अपाहिज था जिससे घिन आती थी आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उस साइल को अन्दर आने से की इजाज़त दी जब वो दाख़िल हुआ तो आपने उसे अपने साथ बिठाया फिर फ़रमाया– खाना खाओ। (कंजुल उ़म्माल–11/432)

तवाज़ोअ़ के लिये सबसे पहले हमें चाहिये कि अपनी हक़ीक़त और अंजाम को पहचानें और हमेशा ज़हन में रखें ताकि हमारे अन्दर तवाज़ोअ़ की सिफ़त पैदा हो और जब हम किसी से मुलाक़ात करें तो चाहे वो ग़रीब मिस्कीन फ़क़ीर या मुहताज हो तो उसके सामने आ़जिज़ी का इज़हार करें और खुद को उसके सामने कमतर गुमान करें और दूसरों को खुद पर फ़ज़ीलत दें और सलाम करने में पहल करें क्योंकि सलाम में पहल करना भी तवाज़ोअ़ है और अपनी नेकी और अपनी नेअ़मतों पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना भी तवाज़ोअ़ है।

अल्लाह तआ़ला तवाज़ोअ़ करने वालों के दरजात को बुलन्द करता है और जो लोग अपनी नेअ़मतों पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा नहीं करते तो क़यामत के दिन ये नेअ़मतें उनके लिये वबाल बनेंगी तवाज़ोअ़ के बग़ैर अल्लाह तआ़ला किसी शख़्स की नमाज़ कुबूल नहीं करता और ग़रीब से अमीर का तवाज़ोअ़ ज़्यादा अच्छा है कि जब वो अपने माल वग़ैराह पर तकब्बुर न करे बल्कि वो अपनी तमाम नेअ़मतों पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे और ये गुमान करे कि ये तमाम नेअ़मतें रब तआ़ला की अ़ता कर्दा हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जब कोई बन्दा तवाज़ोअ़ इख़्तियार करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे साँतवे आसमान तक बुलंदी अ़ता फ़रमाता है।
(कंज़ुल उ़म्माल—3/112)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
चार बातें ऐसी हैं जो अल्लाह तआ़ला अपने महबूब बन्दों को ही अ़ता करता है 1—ख़ामोशी 2—अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल (भरोसा) 3—तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी) 4—दुनियाँ से बे रग़बती
(मुअ़जम कबीर तिबरानी—1/256)

एक रिवायत में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम खाना तनावुल फ़रमां रहे थे कि एक सियाह (काला) रंग का आदमी आया जिसे चेचक निकली हुई थी और चेचक के दानों से पानी रिस रहा था वो जिसके पास बैठता था वो खड़ा हो जाता हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उसे अपने पहलू में बिठाया।
(जामअ़ तिर्मिज़ी—273)

इसलिये हर मुसलमान को चाहिये कि तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी) इख़्तियार करे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तवाज़ोअ़ का तरीक़ा अपने अ़मल में लाये और आपकी सीरते तैइयवा का मुताअ़ला करे और उसकी पैरवी करे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम जानवरों को चारा डालते थे, ऊँटों को बाँधते थे, घर में सफ़ाई करते थे, बकरी का दूध निकालते थे, नालैन मुबारक खुद सी लेते थे, कपड़ों में पैबन्द लगाते थे, ख़ादिम की मदद फ़रमाते थे, बाज़ार से सौदा लाते थे और छोटा हो या बड़ा ग़रीब हो या अमीर सबसे सलाम करने में पहल करते थे और ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमां होकर खाना तनावुल फ़रमाते थे और फ़रमाते थे मैं बन्दा हूँ और उसी तरह खाता हूँ जिस तरह बन्दा खाता है और आप जिस बिस्तर पर आराम फ़रमाते थे वो एक चमड़े का था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी और जो खाना आपके सामने पेश होता वो आप तनावुल फ़रमां लेते और कभी उसमें नुक़्स नहीं निकालते थे।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मैं एक बन्दा हूँ ज़मीन पर खाता हूँ अद्ना लिबास पहनता हूँ ऊँटों को बाधँता हूँ उँगलियाँ चाटता हूँ और गुलाम की दावत कुबूल करता हूँ और जिसने मेरी सुन्नत से ऐराज़ किया उसका मुझसे कोई तअ़ाल्लुक़ नहीं। (दुर्रे मन्सूर—4/115)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो शख़्स शोहरत का लिबास पहनता है अल्लाह तअ़ाला उससे अपना रूख़ फेर लेता है। (मुस्नद अहमद—2/92)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अगर तुम मुझसे मिलना चाहते हो तो मालदार लोगों की मजलिस से बचो और जब तक कपड़े पुराने न हो जायें उनका पहनना न छोड़ो। (जामअ़ तिर्मिज़ी—269)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हैं—
अद्ना लिबास ईमान से है। (सुनन इब्ने माजा—313)

—: मुतफ़र्रिक़ आमाल :—

—मुतफ़र्रिक़ आमाल से मुताअ़ल्लिक़ चन्द अहादीस—

1—रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह व सल्लम ने सूद खाने वाले खिलाने वाले और उसके गवाह और क़ातिब पर लानत फ़रमाई है (जामअ़ तिर्मिज़ी—194)

2—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—सूद का एक दिरहम अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तीस ज़िना से ज़्यादा सख़्त है। (यानी गुनाह है) (मुस्नद अहमद—5/225)

3—रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—सूद तिहत्तर गुनाहों का मजमुआ़ है इसमें सबसे हल्का ये है कि आदमी अपनी माँ से ज़िना करे। (सुनन इब्ने माजा—3/72)

4—फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—मर्दों की बेहतरीन खुशबू वो है जिसकी बू ज़ाहिर हो और रंग छुपा हो और औ़रत की बेहतरीन खुशबू वो है जिसका रंग ज़ाहिर हो और खुशबू छुपी हो। (मिश्कात—38)

5—नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—नेकी का हुक्म देना सद्क़ा है और बुराई से रोकना सद्क़ा है और कमजोर का सामान उठवाने में मदद करना सद्क़ा है और रास्ते से तकलीफ ज़दा चीज़ का हटाना सद्क़ा है (सही मुस्लिम—1/242/325)

6—सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—जिस शख़्स को अपनी बुराइयाँ बुरी लगें और अपनी अच्छाइयाँ अच्छी लगें वो मोमिन है। (मुस्तदरक हाकिम—1/14)

7—रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस घर में (जानदार) तस्वीर या कुत्ता या जुन्बी हो (यानी नापाक आदमी जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो) (सुनन अबू दाऊद—1/109)

8—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जो शख़्स किसी की एक बालिस्त ज़मीन जुल्म से हासिल करता है क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला उसके गले में सातों ज़मीनों का तौक़ डालेगा।

9—नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— जब तुम किसी काम का इरादा करो तो उसके अंजाम के बारे में सोचो अगर अच्छा है तो करो और अगर उसका नतीजा बुरा है तो उससे बचो। (कंजुल उ़म्माल—3/101)

10—फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
जल्दबाज़ी शैतान की तरफ़ से है और ठहराव अल्लाह की तरफ़ से है। (जामअ़ तिर्मिज़ी—295)

10— हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ि0) रावी हैं कि सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले दोनों पर लानत फ़रमाई है। (मिश्कात 2/326)

—: नीयत और रिया :—

हर नीयत पोशीदा (छुपी हुई) होती है और अ़मल ज़ाहिर होता है और दुनियाँ ज़ाहिर देखती है और अल्लाह तआ़ला बातिन देखता है इसलिये हर अच्छे अ़मल के लिये अच्छी नीयत का होना ज़रूरी है और जिस अ़मल की जैसी नीयत होती है वैसा ही उसका अज्र (सिला,बदला) मिलता है अगर नीयत में रिया (दिखावा) हो तो अ़मल ज़ाया (बर्बाद) हो जाता है और रब तआ़ला की बारगाह में कुबूल नहीं होता और अगर नीयत में इख़लास है यानी जो अ़मल ख़ालिस (सिर्फ़) रब तआ़ला के लिये किया जाये और उसमें दिखावा न हो और अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी ग़ैर को शरीक न किया जाये तो वो अ़मल बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल होता है और उस अ़मल का कई गुना अज्र (सवाब,बदला) अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला हर इन्सान के दिल की धड़कन से भी ज़्यादा क़रीब है इन्सान जो सोचता है जो करता है और जो करेगा अल्लाह तआ़ला को उसकी ख़बर है और वो सब कुछ जानने और सुनने वाला है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
और बेशक जान लो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दिलों की बातें भी जानता है पस उससे डरो। (सू0–बक़राह–235)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
आमाल का दारो मदार नियतों पर है। (सही बुख़ारी–1/2)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
मोमिन की नीयत उसके अ़मल से बेहतर होती है।
(मुअ़जम कबीर तिबरानी–6/185)

जब कोई बन्दा अच्छी (नेक) नीयत से किसी नेक काम को करने का इरादा करता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि मेरे बन्दे के नामे आमाल में नेकी लिख दो फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि बन्दे ने फ़लाँ काम तो किया ही नहीं अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है लेकिन उसने फ़लाँ काम करने की नीयत तो की है तो उस बन्दे को सिर्फ़ उसकी नीयत के बाइस उसके नामे आमाल में नेकी लिख दी जाती है।

इसी तरह जो शख़्स नमाज़ के इन्तज़ार में मस्जिद में बैठता है तो उसका बैठना भी इबादत में शुमार होता है क्योंकि उसकी नीयत नमाज़ का इन्तज़ार होती है इसी तरह जब कोई शख़्स रात को सोने से पहले नीयत करे कि मैं सुबह उठकर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ूँगा लेकिन नींद के ग़लबे या शैतान के वसवसे के सबब वो नमाज़ के लिये न उठ पाये और उसकी नमाज़ फ़ौत हो जाये लेकिन उसके नामे आमाल में नमाज़ पढने की नीयत का सवाब लिखा जाता है।

सरकारे दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स नेकी का इरादा करे लेकिन उस पर अ़मल न कर सके तो उसके लिये नेकी का सवाब लिखा जाता है (सही मुस्लिम–1/78)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
बेशक अल्लाह तअ़ाला तुम्हारी सूरतों और मालों को नहीं देखता बल्कि वो तुम्हारे दिलों और आमालों को देखता है।
(मुस्नद अहमद–2/285)

इसलिये हमें चाहिये कि जब हम इबादत का इरादा करें तो ख़ालिस अल्लाह तअ़ाला के लिये इबादत की नीयत करें न कि रियाकारी (दिखावे) की और दिल में ज़र्रा बराबर भी ये ख़्याल न लायें कि मेरी इबादत को लोग जानें और हमें इबादत गुज़ार कहें क्योंकि रियाकारी का ख़्याल इन्सान की इबादत व अ़मल को ज़ाया (बर्बाद) कर देती है और उसे अपनी इबादत व अ़मल का कोई अज्र (सवाब, या बदला) नहीं मिलता बल्कि रियाकारी के बाइस उसके नामे आमाल में गुनाह लिखा जाता है और आख़िरत में रियाकारों के लिये सख़्त अ़ज़ाब है।

कुरान मजीद में अल्लाह तअ़ाला इरशाद फ़रमाता है–
ऐ ईमान वालो अपने सद्क़ात को बातिल न करो एहसान जताकर और ईज़ा देकर उसकी तरह जो अपना माल लोगों को रिया (दिखावे) के लिये ख़र्च करते हैं और अल्लाह और क़यामत पर ईमान नहीं लाते उनकी मिसाल ऐसी है जैसे कि एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है फिर उस पर जोर का पानी पड़ा जिसने उसे निरा पत्थर कर छोड़ा। (सू0–बक़राह–264)

इरशादे बारी तआ़ला है–
तो उन नमाज़ियों के लिये ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से बे ख़बर हैं (यानी उन्हें महज़ हुकूकुल्लाह याद हैं और हुकूकुल इबाद भुला बैठे हैं) वो लोग जो (इबादत में) दिखावा करते हैं (सू0–माऊन–4,–6)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ला दूसरों को दिखाने वाले व सुनाने वाले और एहसान जताने वाले का सदक़ा कुबूल नहीं करता (कंजुल उ़म्माल–16/32)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
हुज़न (ग़म) के कुँयें से पनाह माँगो सहाबाकिराम (रज़ि0) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह वो क्या है आप ने इरशाद फ़रमाया वो जहन्नुम में एक वादी है जो रियाकारों के लिये तैयार की गई है। (सुनन इब्ने माजा–23)

अल्लाह तआ़ला की बन्दगी व इताअ़त में रिया (दिखावा) करना बहुत बड़ा गुनाह है और शिर्क के क़रीब है और अल्लाह तआ़ला रियाकार शख़्स को ना पसंद करता है और फ़रमाता है कि बन्दा मेरा है इबादत मेरी करता है और दिखाता ग़ैरों को है ताकि लोग उसे पारसा और ज़ाहिद जानें और अपने नेक आमाल लोगों को दिखाकर अल्लाह तआ़ला के यहाँ मक़ाम बनाने की बजाय लोगों में अपना मक़ाम बनाता है और उस पर खुश होता है और लोगों से खुद की तारीफ़ की ख़्वाहिश रखता है रियाकार शख़्स से अल्लाह तआ़ला सख़्त नाराज़ रहता है और क़यामत के दिन रियाकार शख़्स से रब तआ़ला फ़रमायेगा कि जो तूने नेक अ़मल किये वो सब ज़ाया हो गये और अपना अज्र (बदला,सवाब) उससे ले ले जिसको दिखाने के लिये तूने अ़मल किये थे अगर वो आमाल तूने मेरे लिये किये होते और मेरे ग़ैर को तू शरीक न करता तो मैं आज तुझे तेरे आमाल का अज्र देता।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
पस जो शख़्स अपने रब से मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो तो उसे चाहिये नेक अ़मल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (सू0–कहफ़–110)

इरशादे बारी तआ़ला है–
औ़र उनको यही हुक्म दिया गया है कि ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिये उसकी बन्दगी करें। (सू0–वइयना–5)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– बेशक थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है। (मुस्तदरक हाकिम–3/270)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– क़यामत के दिन रियाकार से कहा जायेगा कि ऐ रियाकार तेरे अ़मल ज़ाया हो गये और सवाब जाता रहा और अपना अज्र उससे ले ले जिसके लिये तूने अ़मल किया। (दूर्रे मन्सूर–1/30)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है–
अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जो शख़्स मेरे लिये अ़मल करते हुये किसी ग़ैर को शरीक करे तो तमाम अ़मल उस ग़ैर के लिये हैं मेरे साथ उसका तअ़ल्लुक़ नहीं। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/69)

बाज़ लोग नमाज़ पढ़ते हैं लेकिन उनकी नीयत में रियाकारी शामिल होती है और वो चाहते हैं कि लोग मेरी नमाज़ से वाक़िफ़ हों और हमें नमाज़ी गुमान करें और मेरी ताज़ीम व तकरीम करें इसी तरह बाज़ लोग रोज़ा रखते हैं लेकिन उनकी भी यही नीयत होती है इसी तरह बाज़ लोग सद्क़ा ख़ैरात करते हैं ताकि लोग जानें कि वो बहुत बड़े सख़ी हैं और कुछ हाजियों के दिल भी रिया से खाली नहीं होते और वो इस नीयत के साथ हज करते हैं ताकि लोग हमें हाजी साहब कहकर पुकारें और हमारी इज़्ज़त व तारीफ़ करें।

बाज़ उ़ल्मा भी खुद को रियाकारी से नहीं बचाते और वो चाहते हैं कि मेरे इ़ल्म के बाइस लोग मेरी ताज़ीम करें और लोग हमें सलाम करने से पहल करें और लोगों में मेरे इ़ल्म का चर्चा हो और लोग जाने कि मै बहुत बड़ा इ़ल्म वाला हूँ और लोग मुझे आ़लिम साहब कहकर बड़े एहतराम से पुकारें और इस तरह वो रियाकारी में मुब्तिला हो जाते हैं लेकिन ऐसे उ़ल्मा का इ़ल्म क़यामत के दिन उनके लिये वबाल होगा और वो जहन्नुम का ईंधन बनेंगे।

रियाकार शख़्स के तमाम नेक अ़मल रियाकारी के बाइस अकारत हो जाते हैं और उसे अपनी नेंकियों से कुछ नफ़ा (फायदा) हासिल नहीं होता और रियाकार ने जो इबादत और नेक आमाल करने में जो मेहनत व मशक़्क़त उठाई या अल्लाह की राह में अपना जो माल ख़र्च किया वो सब ज़ाया (बर्बाद) हो जाता है और उसकी नेकियाँ उसके कुछ काम नहीं आती बल्कि रियाकारी के सबब उसको अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब का शिकार होना पड़ेगा और तमाम रियाकार जहन्नुम में दाख़िल किये जायेंगे।

इसलिये हर मुसलमान को चाहिये कि अपना हर नेक अ़मल सिर्फ़ रब तआ़ला के लिये करे न कि मख़लूक़ के लिये क्योंकि हर नेक अ़मल का सवाब सिर्फ़ रब तआ़ला देता है और मख़लूक़ सिर्फ़ तारीफ़ के सिवा हमें कुछ नहीं दे सकती और जब हम ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिये नेक अ़मल करेंगे तो अल्लाह तआ़ला हमें सवाब के साथ–साथ दुनियाँ व आख़िरत में इ़ज़्ज़त का मक़ाम अ़ता फ़रमायेगा और इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत सिर्फ़ रब तआ़ला के दस्ते कुदरत में हैं वो जिसे चाहे अ़ता करता है और इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत किसी इन्सान के इख़्तियार में नहीं है जो वो हमें दे सके।

हक़ीक़त ये है कि इन्सान के इख़्तियार में कुछ भी नहीं है तो जब इन्सान के इख़्तियार में कुछ भी नहीं तो हम अपने नेक अ़मल उसको क्यों दिखायें जिसके पास कुछ भी नहीं बल्कि हमें चाहिये कि हम उस परवरदिगारे आ़लम के लिये हर नेक अ़मल करें जो तमाम जहानों का मालिक व ख़ालिक़ है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
सुनो अल्लाह तआ़ला के लिये ही ख़ालिस बन्दगी है (सू0–जुमर–3)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ला किसी ऐसे अमल को कुबूल नहीं करता जिसमे ज़र्रा बराबर भी दिखावा हो। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/73)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
बेशक मुझे अपनी उम्मत पर शिर्क का ख़ौफ है लेकिन वो बुतों या

चाँद या सूरज की पूजा नहीं करेंगे बल्कि वो अपने आमाल में रियाकारी (दिखावा) करेंगे। (मुस्नद अहमद–4/124)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– मेरी उम्मत पर एक ज़माना ऐसा आयेगा कि लोग सैरो तफरीह व दिखावे के लिये हज करेंगे। (तारीखे बगदाद–1/290)

रियाकारी एक बातिनी बीमारी है इस बीमारी में मुब्तिला आदमी अपना मर्तबा और मशहूरी और इ़ज़्ज़त पाने की तलब में इतना आगे बढ़ जाता है कि वो ये भूल जाता है कि वो खुद का बहुत बुरा और खुद को बहुत बड़े ख़सारे में डाल रहा है और जहन्नुम में अपना ठिकाना बना रहा है।

जब किसी शख़्स के नेक आमाल जैसे रोज़ा, नमाज़, हज, सद्क़ा, ख़ैरात वग़ैराह को लेकर फ़रिश्ते रब तआ़ला की बारगाह में जाते हैं तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ये आमाल बन्दे ने ख़ालिस (सिर्फ़) मेरे लिये नहीं किये बल्कि मेरे ग़ैर के लिये किये हैं फिर फ़रिश्ते कहते हैं कि उस आदमी पर तेरी लानत हो और हम सब (फ़रिश्तों) की लानत हो और आसमान भी कहते हैं कि उस रियाकार पर हम सब की लानत हो और फिर ज़मीन और जो कुछ उसमें मौजूद है सब उस रियाकार शख़्स पर लानत भेजते हैं और उस रियाकार शख़्स के आमाल उसके मुँह पर मार दिये जाते हैं और क़ब्र में रियाकारी गंजे साँप की शक्ल में आती है और उसे दर्दनाक अ़ज़ाब दिया जाता है।

इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम नेक अ़मल पोशीदा (छुपाकर) करें क्योंकि पोशीदा अ़मल ज़ाहिरी अ़मल से सत्तर गुना ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है और पोशीदा अ़मल इन्सान को रियाकारी से बचाता है और अगर ये नीयत हो कि मेरे अ़मल को देखकर दूसरे लोगों में भी इस अ़मल को करने की तरफ रग़बत (ख्वाहिश) पैदा होगी और लोग मुझे देखकर मेरी पैरवी करेंगे तो ज़ाहिरी अ़मल करना बेहतर है लेकिन खुद को रिया (दिखावा) से पाक रखें

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
अगर ख़ैरात को ऐलानियाँ दो तो क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपाकर फ़क़ीरों को दो तो ये तुम्हारे लिये सबसे बेहतर है और इसमें तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (सू0–बक़राह–271)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
बेहतर रिज़्क वो है जो काफ़ी है और बेहतरीन ज़िक्र वो है जो पोशीदा हो। (मुस्नद अहमद–1/172)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
पोशीदा अ़मल ऐलानियाँ अ़मल से सत्तर (70) गुना ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। (शुअ़बुल ईमान–1/407) (कंज़ुल उ़म्माल–1/447)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
बेहतरीन सद्क़ा वो है जो मेहनत व मशक़्क़त से कमाकर फ़क़ीर को पोशीदा तौर पर दें। (सुनन अबी दाऊद–1/204)

एक बुज़ुर्ग का क़ॉल है–
इन्सान को चाहिये कि अपनी नेकियों को इस तरह छुपाये जिस तरह वो अपनी बुराइयों को छुपाता है और उसकी जो नेकियाँ ज़ाहिर हो जाये उन्हें अपने आमाल में शुमार न करे क्योंकि हो सकता है कि कहीं उन नेकियों की नीयत में रिया शामिल न हो गई हो।

एक आदमी ने हज़रत सुफ़ियान सूरी (रह0) और उनके साथियों की दावत की तो उस आदमी ने अपने घर वालों से कहा कि उस थाल में रोटी रख कर लाओ जो मैं दूसरे हज के मौक़े पर लाया था पहले हज वाले थाल में रोटी न लाना तो हज़रत सुफ़ियान सूरी (रह0) ने उस आदमी की तरफ़ देखा और फ़रमाया कि इसने इतनी सी बात कहकर अपने हज को बातिल कर दिया।

—: इख़लास :—

तमाम इबादत व अ़म्लियात की नीयत में इख़लास का होना शर्त है और जिस नीयत में इख़लास न हो तो वो रिया है और कोई भी नेक अ़मल जो ख़ालिस (सिर्फ़) अल्लाह तआ़ला के लिये न हो वो महज़ दिखावा है और दिखावे का कोई भी अ़मल क़ाबिले कुबूल नहीं होता और जो शख़्स अपने तमाम आमाल में इख़लास रखता है तो अल्लाह तआ़ला उसके दरजात को बुलन्द फ़रमाता है और उसकी इज़्ज़त को बढ़ाता है।

हदीस पाक में है क़यामत के दिन तीन क़िस्म के लोगों से सवाल होगा एक वो शख़्स जिसे अल्लाह तआ़ला ने इल्म दिया अल्लाह तआ़ला पूछेगा कि मैने तुझे इल्म दिया इस सिलसिले में तूने क्या किया वो अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब मैने अपने इल्म को दिन रात दूसरों तक पहुँचाया फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तूने झूठ कहा बल्कि तेरा इरादा ये था कि लोग तुझे आ़लिम कहें दूसरे शख़्स से सवाल होगा कि मैने तुझे माल दिया तूने उस माल का क्या किया वो अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब मैने तेरी राह में ख़र्च किया सद्क़ा ख़ैरात किया रब तआ़ला फ़रमायेगा तूने झूठ कहा बल्कि तेरा मक़सद ये था कि लोग तुझे सख़ी कहें तीसरे शख़्स से सवाल होगा जो राहे खुदा में क़त्ल हुआ था वो कहेगा ऐ मेरे रब मुझे जिहाद का हुक्म मिला और मैने जिहाद किया और क़त्ल कर दिया गया अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तूने झूठ कहा बल्कि तेरा इरादा ये था कि लोग तुझे बहादुर कहें।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरा ये वो लोग हैं जो जहन्नुम में दाख़िल होंगे और इन पर सबसे पहले आग भड़काई जायेगी। (जामअ़ तिर्मिज़ी—343)

इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम नेक अ़मल में इख़लास पैदा करें और अपना हर नेक अ़मल ख़ालिस (सिर्फ़) अल्लाह तआ़ला के लिये करें ताकि हमारी बख़्शिश हो और हम जहन्नुम के दर्दनाक अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहें।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जब कुछ लोग अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये जमा होकर ज़िक्र करते हैं तो आसमान से एक पुकारने वाला आवाज़ देता है कि इस तरह उठो कि तुम्हें बख़्श दिया गया और तुम्हारी बुराइयाँ नेकियों में बदल दी गयी हैं।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– अगर सच्चे दिल से ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ने वाला भरी हुई ज़मीन के बराबर गुनाह लेकर आयेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे बख़्श देगा। (अत्तरग़ीब वत्तरगीब–2/467)

इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन उसका नफ़्स और शैतान है जो उसे रियाकारी की तरफ़ माइल करता है और सिर्फ़ इख़लास ही इन्सान को रिया से बचा सकता है और इन्सान के दिल में इख़लास तभी आ सकता है कि जब वो दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत से क़ता तआ़ल्लुक हो जाये और इस फ़ानी दुनियाँ से अपना मुहब्बती रिश्ता तोड़ दे और किनारा कशी इख़्तियार करे क्योंकि इन्सान के आमाल उसके दिल के मुताबिक़ होते हैं और दिल की रग़बत जिस तरफ़ होती है उसके आमाल भी उसी तरफ़ माइल होते हैं और जिसका दिल दुनियाँ से मुनक़ताअ़ हो और रब तआ़ला की तरफ़ वाबस्ता हो तो उसके दिल में इख़लास पैदा होता है क्योंकि इख़लास का तआ़ल्लुक़ रब तआ़ला से होता है और जिस अ़मल में कई मक़सद हों वो अ़मल बातिल हो जाता है।

हदीस पाक में है कि जब अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया तो ज़मीन हिली तो अल्लाह तआ़ला ने उस पर पहाड़ों का बोझ रख दिया तो ज़मीन का हिलना बन्द हो गया तब फ़रिश्तों ने कहा कि पहाड़ तो बहुत ताक़तवर हैं फिर अल्लाह तआ़ला ने लोहे को पैदा फ़रमाया जिसने पहाड़ को काट दिया तब फ़रिश्तों ने कहा कि लोहा तो पहाड़ से भी ज़्यादा ताक़तवर है फिर अल्लाह तआ़ला ने आग को पैदा फ़रमाया जिसने लोहे को गला दिया फ़रिश्तों ने कहा कि आग तो लोहे से भी ज़्यादा ताक़तवर है फिर अल्लाह तआ़ला ने पानी को पैदा फ़रमाया जिसने आग को बुझा दिया फ़रिश्तों ने कहा पानी तो आग से भी ज़्यादा ताक़तवर है फिर अल्लाह तआ़ला ने हवा को पैदा फ़रमाया जिसने पानी को गदला कर दिया फ़रिश्तों ने कहा हवा तो पानी

से भी ज़्यादा ताक़तवर है फिर फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया या अल्लाह तेरी मख़लूक़ में इससे भी ज़्यादा ताक़तवर कोई चीज़ है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ है इब्ने आदम (इन्सान) का वो सद्क़ा जो दाँये हाथ से दिया जाये और बाँये हाथ को ख़बर न हो (कि क्या दिया है) (मुस्नद अहमद–3/124)

मज़कूरा बाला हदीस से मालूम हुआ कि पोशीदा अ़मल जो ख़ालिस (सिर्फ़) अल्लाह तआ़ला के लिये किया जाता है वो बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल होता है और इसमें कोई ख़द्शा नहीं है और पोशीदा या वो अ़मल जिसमें इख़लास हो उसका अज्र उसके करने वाले को अल्लाह तआ़ला ज़रुर अ़ता फ़रमायेगा और उसका अ़मल ज़ाया नहीं होगा और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक पोशीदा व ख़ालिस अ़मल सबसे ज़्यादा पसंदीदा होता है

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
बेशक क़यामत के दिन अर्श के साये के सिवा कोई साया न होगा और उस दिन अर्श के साये में वो भी होगा जो दाँये हाथ से सद्क़ा करे और बाँये हाथ को पता न चले।
(सही बुख़ारी–1/191)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
अपने अ़मल को ख़ालिस (अल्लाह तआ़ला के लिये) करो थोड़ा भी काफ़ी होगा। (मुस्तदरक हाकिम–4/306)

इमाम ग़ज़ाली (रह0) फ़रमाते है कि इन्सान का दिल रब्बुल आ़लमीन की नज़र का मुक़ाम है तो उस शख़्स पर तआ़ज्जुब है जो ज़ाहिरी चेहरे का एहतमाम करे उसे धोये और मैल कुचैल से साफ़ सुथरा रखे ताकि मख़लूक उसके चेहरे के किसी ऐब पर मुत्तलाअ़ न हो मगर दिल का एहतमाम न करे जो रब्बुल आ़लमीन की नज़र का मुक़ाम है उसे तो चाहिये था कि दिल को पाकीज़ा रखे और उसे आरास्ता करे और रिया से खाली और सुथरा रखे ताकि रब्बुल आ़लमीन उसके दिल में किसी ऐब को न पाये लेकिन अफ़सोस का मक़ाम है कि दिल तो गन्दगी पलीदी और गलाज़त से लबरेज़ है मगर जिस पर मख़लूक़ की नज़र पड़ती है उसके लिये कोशिश होती है।

—: अम्र बिल माअ़रुफ व नही अ़निल मुन्कर :—
(नेकी का हुक्म देना व बुराई से रोकना)

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वो नेकी का हुक्म दे और बुराई से रोके और मुहतसिब (यानी बुराई या ममनूअ़ बातों को रोकने वाले) के लिये कामिल ईमान या गुनाहों से पाक होना शर्त नहीं बल्कि फ़ासिक़, गुलाम, मर्द व औ़रत सब पर लाज़िम है कि जहाँ बुराई को देखे तो उसे रोके हाँ लेकिन हर बुराई से खुद भी बचे और उससे बाज़ रहने की हर मुमकिन कोशिश करे और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ये अम्र बहुत बेहतर और पंसदीदा है और इस अ़मल का बहुत ज़्यादा सवाब है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और तुम में से एक जमाअ़त ऐसी होनी चाहिये जो अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से रोके और यही लोग मुराद को पहुँचे। (सू0—आले इमरान—104)

इरशादे बारी तआ़ला है—
तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के (भले के) लिये ज़ाहिर की गई है तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो और अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखते हो। (सू0—आले इमरान—110)

हज़रत अनस (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि हमने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) क्या जब तक हम मुकम्मल तौर पर अ़मल न करें तो हमें नेकी का हुक्म नहीं देना चाहिये और जब तक हम बुराई से न बचें तो हमें बुराई से नहीं रोकना चाहिये आपने इरशाद फ़रमाया—तुम नेकी का हुक्म दो अगरचा तुम मुकम्मल तौर पर उस पर अ़मल पैरा न हो और बुराई से रोको अगरचा तुम उस पर कुल्ली तौर पर इजतिनाब (बचाव) नहीं कर रहे हो। (मजमउज्ज़वाइद—7/277)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से अ़र्ज़ किया गया कि इन्सानों में सबसे फ़ज़ीलत वाला इन्सान कौन है आप ने इरशाद फ़रमाया जो सबसे ज़्यादा अल्लाह तआ़ला से डरने वाला, और

ज़्यादा सिला रहमी करने वाला और नेकी का हुक्म देने वाला और बुराई से मना करने वाला हो। (मुअ़जम कबीर तिबरानी—24 / 258)

जब कोई शख़्स नेकी की दावत दे और बुराई से मना करे तो उसे चाहिये कि नरमी व मुहब्बत व अच्छे अख़लाक़ से तल्क़ीन करे और वाअ़ज़ व नसीहत करे इसके बाद भी अगर बुराई को न रोक सके तो सख़्त कलामी से रोके और अगर इसके बाद भी बुराई को न रोक सके तो ताक़त से रोके और अगर ये सब काम करने की जिसमें ताक़त व कुव्वत न हो तो उसे चाहिये कि उसके सामने होने वाली हर बुराई को दिल में बुरा जाने और जो शख़्स किसी बुराई को देखे और ख़ामोश रहे या दिल में भी बुरा न जाने तो वो शख़्स गुनाहगार होगा और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये नेक काम करे और बुराई को रोके और नेकी का हुक्म दे और इस अ़मल के बाइस उसे जो अज़ियत (तकलीफ) मिले वो उस तकलीफ को बर्दास्त करे और सब्र करे तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को बड़ा अज्र (सिला, बदला) अ़ता फ़रमायेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
जो हुक्म दे ख़ैरात का या अच्छी बात का या लोगों में सुलह कराने का और जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा चाहने को ऐसा करे उसे अ़नक़रीब हम बड़ा सवाब देंगे और जो रसूल का ख़िलाफ़ करे बाद उसके कि हक़ का रास्ता उस पर खुल चुका है और मुसलमानों की राह से जुदा चले हम उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह है पलटने की। (सू0—निसा—115)

इरशादे बारी तआ़ला है—
जब उन्होने इस बात को भुला दिया जिसकी उनको नसीहत की गई थी तो हमने उन लोगों को निजात दी जो बुराई से रोकते थे और उन लोगों को बुरे अ़ज़ाब के साथ पकड़ा जिन्होने ज़ुल्म किया क्योंकि वो नाफ़रमानी करते थे। (सू0—आअ़राफ़—165)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जब कोई कौम गुनाहों का अ़मल करती हो और कोई शख़्स उसे रोकने पर क़ादिर हो और अगर वो न रोके तो अ़नक़रीब अल्लाह तआ़ला उन सब को अ़ज़ाब में मुब्तिला कर देगा (जामअ़ तिर्मिज़ी—435)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जो शख़्स बुराई को देखे तो उसे अपने हाथ से रोके अगर इतनी ताक़त न हो तो जुबान से रोके और अगर इसकी भी ताक़त न हो तो दिल में बुरा जाने। (सही बुख़ारी–1/51)

जब हम दीनी तबलीग़ करें तो बेहतर ये है कि सबसे पहले हम खुद नेकी का रास्ता इख़्तियार करें और खुद को हिदायत याफ़्ता करें और पहले खुद की इस्लाह करें फिर लोगों की इस्लाह करें और उन्हें हिदायत दें और खुद भी गुनाहों और बुराइयों से बचें और नेक अ़मल करने की कोशिश करते रहें और निहायत नरमी और अच्छे अख़लाक़ के साथ दीनी तबलीग़ करें और मुबल्लिग़ के लिये ज़रुरी है कि वो जिस बात का हुक्म दे रहा है उसे उस बात का इल्म होना चाहिये और नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने में ऐसे कलिमात का इस्तेमाल न करें जिससे किसी मुसलमान भाई को ईज़ा (तकलीफ़) पहुँचे जिससे वो ख़फ़ा हो जाये।

जैसे गंवार, जाहिल, बेवकूफ़ वग़ैराह बल्कि जो कलिमात कहें उनमें नरमी और सच हो और न झूठ बोलें और न गुस्सा हों और न नाराज़ हों और बेहूदा कलाम से बात न करें और खुद को तकब्बुर व खुद पसंदी से पाक रखें और किसी से नफ़रत न करें और जो हक़ीक़तन जाहिल है उन से बहस न करें बल्कि ख़ामोश रहें और उनसे एराज़ करें।

कुरान मजीद में अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है–
उनसे ज़्यादा किसकी बात अच्छी जो अल्लाह की तरफ़ बुलाता है और खुद भी अच्छे काम करता है। (सू०–हामीम सजदा–33)

इरशादे बारी तअ़ाला है–
ऐ महबूब आप दर गुज़र (माफ़) फ़रमाना इख़्तियार करें और नेकी का हुक्म दें और जाहिलों से किनाराकशी इख़्तियार करें।
(सू०–ऐराफ़–199)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स मेरी उम्मत तक पहुँचाने के लिये दीनी उमूर की चालीस हदीसें याद कर लेगा तो उसे अल्लाह तअ़ाला क़यामत के दिन

आ़लिमे दीन की हैसियत से उठायेगा और बरोज़े क़यामत मैं उसका शफीअ़ और गवाह होऊँगा। (शुअ़बुल ईमान–2/270)

सरकारे दो आ़लम सल्ल्ल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सबब एक आदमी को भी हिदायत दे दे तो वो तुम्हारे लिये दुनियाँ और जो कुछ उसमें है से बेहतर है। (सही मुस्लिम–2/279)

अगर कोई शख़्स नमाज़ में रुकूअ़ सुजूद या और कोई रुकन सही तरह से अदा नहीं करता तो हमें चाहियें कि उसको तन्हाई में समझायें ताकि उसकी समझ में आ जाये और उसके दिल को बुरा भी न लगे इसी तरह अगर कोई काम मस्जिद के आदाब के ख़िलाफ हो जैसे मस्जिद में बेहूदा कलाम दुन्यावी बातचीत खुराफ़ात शोरगुल या खुत्बे के दौरान बातचीत वग़ैराह तो हमें चाहिये कि हम उसे रोकने के लिये हर मुमकिन कोशिश करें इसी तरह बाज़ार से तअ़ाल्लुक़ रखने वाली बुराइयों जैसे ख़रीद फरोख़्त में झूठ, फ़रेब, माल के ऐब को छुपाना, कम तौलना, बेईमानी वग़ैराह को भी हमें रोकना चाहिये इसके अलावा किसी मजलिस या तक़रीब और किसी भी मौक़े पर दावत की महफिल वग़ैराह में वाकैअ़ होने वाली बुराइयों को भी हमें रोकना चाहिये।

इसी तरह अगर कोई शख़्स किसी पर जुल्म व ज़्यादती करता है तो हमें चाहिये कि उसके जुल्म व ज़्यादती को रोकने के लिये हर मुमकिन कोशिश करें और इसी तरह हर बुराई को रोकना और नेकी का हुक्म देना हम पर लाज़िम है और बुराइयों को रोकने का बेहतर तरीक़ा ये है कि नरमी और अच्छे अख़लाक़ से रोके और वाअज़ व नसीहत करें और इल्म के ज़रिये समझायें और कुरान व अहादीस की रोशनी में उनकी इस्लाह करें और अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ और उसके अ़ज़ाब से डरायें और जहन्नुम, क़ब्र और क़यामत के अ़ज़ाब के बयानात से उनके दिल ख़ौफ़ज़दा करें और साथ–साथ जन्नत और उसकी दायमी नेअ़मतों और खूबियों का बयान करें और उसकी तरफ़ रग़बत दिलायें ताकि बुराई करने वाला शख़्स बुराई से रुक जाये और नेकी की तरफ़ माइल हो जाये और जहाँ ज़रुरत हो वहाँ सख़्त कलामी व ताक़त के ज़ोर से बुराई को रोकें और बिला

शरई उज़्र जो शख़्स इस अम्र (काम) (यानी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मना करना) को छोड़ेगा वो गुनाहगार होगा।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स हिदायत की तरफ़ बुलाता है और उसकी पैरवी की जाये तो उसे उस नेकी की दावत का सवाब भी मिलेगा और जो लोग उसकी पैरवी करेंगे उनका सवाब भी मिलेगा और उनके (यानी पैरवी करने वालों के) सवाब में कोई कमी न होगी।
(सुनन इब्ने माजा—19)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
तुम ज़रुर नेकी का हुक्म देते रहना वरना अल्लाह तआ़ला तुम पर अ़ज़ाब भेज देगा और तुम्हारी कोई भी दुआ़ कुबूल नहीं होगी।
(तिर्मिज़ी)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
बेशक अल्लाह तआ़ला रहमत नाज़िल फ़रमाता है और उसके फ़रिश्ते और आसमानों व ज़मीन वाले यहाँ तक कि चीटिंयाँ व मछलियाँ सब दुआ़यें करते हैं उसके लिये जो भलाई की तालीम देता है (मिश्कात)

इमाम गज़ाली रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हर अहले इल्म चाहे आ़लिम हो या आम आदमी उस पर लाज़िम है कि वो अपने इल्म को लोगों तक पहुँचाये और शरीअ़त के अहकाम और मसाइल लोगों को बताये और सिखाये लेकिन इससे क़ब्ल (पहले) खुद की इस्लाह करे फिर घर वालों और पड़ोसियों और शहर वालों को तबलीग़ करे और वाअ़ज़ीन में कुछ ख़सलतों का होना ज़रुरी है जैसे इल्म, परहेज़गारी और हुस्ने खुल्क़ क्योंकि इल्म के बग़ैर वो अच्छे बुरे में इम्तियाज़ (फ़र्क़) नहीं कर सकता और अगर उसके अन्दर परहेज़गारी नहीं होगी तो उसका ये काम ग़रज़ से खाली न होगा और अगर उसका अख़्लाक़ अच्छा नहीं होगा तो वो लोगों से नरमी से बाअ़ज़ (नसीहत) व हिदायत नहीं कर सकेगा और वो लोगों से सख़्त कलामी से पेश आयेगा।

और उसमें ये भी ख़सलत हो कि अपनी तबलीग़ पर लोगों से तारीफ़ की उम्मीद न रखे और अपने इल्म के सबब खुद को मुअज़्ज़ज़ (इज़्ज़तदार) और लोगों को जाहिल गुमान न करे।

क्योंकि लोगों को जाहिल समझना गुनाह है और जो खुद को मुअज़्ज़ज़ और लोगों को जाहिल समझता है उसकी मिसाल ऐसी है कि वो लोगों को आग से बचाता है और खुद जल जाता है और ये इन्तिहाई दर्जे की जहालत है और ये शैतान का जाल है जिसमें वो लोगों को फंसा लेता है और जो बच जाये या अल्लाह तआ़ला जिसे उसके नफ़्सानी ऐबों से मुत्तलाअ़ कर दे तो उसे चाहिये कि पहले खुद की नसीहत करे फिर लोगों को नसीहत करे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और खुद को भूल जाते हो जबकि तुम कुरान पढ़ते हो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं (सू0—बक़राह—44)

इरशादे बारी तआ़ला है—
ऐ ईमान वालो वो बात क्यों कहते हो जो खुद नहीं करते हो। (सू0—सफ़—2)

रसूले अकरम सल्लल्लहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
शबे मेअ़राज मैंने देखा कुछ लोगों के होंठ कैंचियों से काटे जा रहे थे मैंने पूछा तुम कौन हो उन्होंने कहा हम नेकी का हुक्म देते थे और खुद अ़मल नहीं करते थे और बुराई से रोकते थे और खुद नहीं रुकते थे। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब—1/124)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
क़यामत के दिन आ़लिम को लाया जायेगा फिर उसे आग में डाला जायेगा उसकी आँते बाहर निकल आयेंगी तो वो इस तरह चक्कर लगायेगा जैसे गधा चक्की के गिर्द घूमता है अहले जहन्नुम उससे पूछेंगे तो वो कहेगा कि मैं नेकी का हुक्म देता था लेकिन खुद अ़मल नहीं करता था और बुराई से रोकता था लेकिन खुद उसका मुरतकिब था। (सही मुस्लिम—2/41)

—: रियाज़त :—

रियाज़त का माना नफ़्स कशी है यानी ख़्वाहिशात पर क़ाबू करना है और नफ़्स का माना दम, रुह व जान से है जहाँ से ख़्वाहिशात पैदा होती है और इन्सान का नफ़्स बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है जो इन्सान को गुनाहों में मुब्तिला कर देता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है सिवाये उसके जिस पर मेरा रब रहम फ़रमाये बेशक मेरा रब बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (सू0—यूसुफ—53)

इन्सान के हर बुरे अ़मल की इब्तिदा उसके नफ़्स से होती है और इस नफ़्स पर जिसने क़ाबू पा लिया और उसकी ख़्वाहिशात से बचा तो वही सिराते मुस्तक़ीम और निजात की राह पा लेता है हदीस पाक में है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया— जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश करे फिर अपनी ख़्वाहिश को दूर करदे तो अल्लाह तआ़ला उसे बख़्श देता है। (कंजुल उ़म्माल)

इन्सान के गुनाहों की असल जड़ उसका नफ़्स है जो उसे बुराई की तरफ़ ले जाता है और गुनाहों का मुरतकिब (मुजरिम) बना देता है इस नफ़्स को नफ़्से अम्माराह कहते हैं और इस नफ़्स के बाइस इन्सान गुमराह व सरकश हो जाता है और नफ़्स के ताबेअ़ होकर गुनाह पर गुनाह किये जाता है और इस नफ़्से अम्माराह की पैरवी में हलाक हो जाता है और अपनी आख़िरत ख़राब कर लेता है और बिल आख़िर जहन्नुम का ईधन बनता है।

दुनियाँ में इन्सान की हलाकत की वजह दो चीज़ें हैं जिनमें से एक ये है कि वो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ना फ़रमानी करता और वो अपने नफ़्स और उसकी ख़्वाहिशात की पैरवी करता है यानी उसका नफ़्स उसे जिस बात का हुक्म देता है वो वही करता है और दूसरा ये है कि जो इन्सान की फ़ितरत में होता है कि वो हमेशा यही चाहता है कि लोग मेरी तारीफ़ व इज़्ज़त करें और यही तारीफ़ व तौसीफ़ की तमन्ना के

सबब वो सही और ग़लत में इम्तियाज़ (फ़र्क़) नहीं कर पाता और गुनाहों के दलदल में फंसता चला जाता है और वो गुमराह और सरकश हो जाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और उससे बढ़कर गुमराह कौन जो अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे अल्लाह तआ़ला की हिदायत से जुदा बेशक अल्लाह तआ़ला हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (सू0—क़सस—50)

इरशादे बारी तआ़ला है—
क्या आपने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को माअ़बूद बना लिया और अल्लाह तआ़ला ने उसे इल्म के बावजूद गुमराह ठहरा दिया है और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया है फिर उसे कौन अल्लाह तआ़ला के बाद हिदायत कर सकता है तो क्या तुम नसीहत कुबूल नही करते। (सू0—जासिया—23)

नफ़्स इन्सान का दुश्मन है जो उसे गुनाहों की तरफ़ रग़बत दिलाता है और उसके जिस्मी आज़ा (अंगों) से बुरे और गुनाहों के काम कराता है जैसे आँख जो बुरा देखती है हाथ जो बुरा करते हैं जुबान जो बुरा बोलती है कान जो बुरा सुनते हैं और उसके पैर जो बुराई की तरफ़ जाते हैं और उसका दिल जिसमें बुरे ख़्यालात आते हैं और उसका दिमाग़ जो बुरा सोचता है इसी तरह दीग़र आज़ा भी नफ़्स के बाइस बुरा अ़मल करते हैं और इन्सान बहुत से गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है।

जब किसी मर्द की आँख किसी ग़ैर औ़रत पर या किसी औ़रत की आँख किसी ग़ैर मर्द पर पड़ती है तो उसके नफ़्स में शहबत की ख़्वाहिश पैदा होती है अगर उस वक़्त नफ़्स को क़ाबू न किया जाये तो हालात यहाँ तक पहुँचते हैं कि इन्सान ज़िना (औ़रत से हराम कारी) जैसे कबीरा गुनाह का मुरतकिब (मुजरिम) हो जाता है इसलिये अल्लाह तआ़ला ने मर्द व औ़रत को अपनी निगाहें नीची रखने का हुक्म दिया और औ़रत को पर्दा करने का हुक्म दिया

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
मुसलमान मर्दों को हुक्म दो कि अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें ये उनके लिये बहुत सुथरा है अल्लाह तआ़ला को उनके कामों की ख़बर है। (सू0—नूर—30)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और मुसलमान औ़रतों को हुक्म दो कि अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाओ सिंगार न दिखायें मगर जितना खुद ज़ाहिर हो और अपने दुपट्टे गिरेवानों पर डाले रहें। (सू0—नूर—31)

इसलिये हमें चाहिये कि अपनी निगाहों की हिफ़ाज़त करें जैसा कि हमें हुक्म है ताकि हम इसकी वजह से वाकैअ़ होने वाली तमाम बुराईयों और गुनाहों से बच सकें और निगाहों की हिफ़ाज़त के लिये हमें अपने नफ़्स पर क़ाबू करना होगा और उस पर ग़ालिब आना होगा और जो लोग अपने नफ़्स और उसकी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पा लेते और उस पर ग़ालिब आ जाते हैं। वही लोग गुनाहों से बचने में कामयाब होते हैं और वो निजात पाते हैं और जो अपने नफ़्स व उसकी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाने में कामयाब नहीं होते वो गुनाहों में मुब्तिला हो जाते और जहन्नुम के मुस्तहिक़ बन जाते हैं।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
नज़र ज़हर में बुझा हुआ एक शैतानी तीर है तो जिस शख़्स ने अपनी निगाहों को ग़ैर मेहरम (पराई औ़रत) को देखने से बचाया तो अल्लाह तआ़ला उसे ऐसा ईमान अ़ता करेगा जिसकी हलावत (मिठास) वो अपने दिल में महसूस करेगा (मुस्तदरक हाकिम—4/314)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
पहली नज़र (बे इख़्तियारी) माफ़ है और दूसरी (इख़्तियारी) नज़र गुनाह है (मुस्नद अहमद—5/351)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
लोगों की राह गुज़र पर खड़े न हो ताकि वहाँ से गुज़रने वालों को हक़ारत की नज़र से देखो और वहाँ से गुजरने वाली औ़रतों

को बुरी नज़र से देखो और जो शख़्स (लोगों की राह गुज़र पर) इस इरादे से खड़ा रहा (कि वहाँ से गुज़रने वाले लोगों को हक़ारत की नज़र से देखे और वहाँ से गुज़रने वाली ओ़रतों को बुरी नज़र से देखे) तो वो शख़्स उस वक़्त तक हरकत नहीं कर सकता जब तक उस पर दोज़ख़ वाजिब न हो जाये। (कीमयाये सआ़दत—645)

हर इन्सान के साथ एक शैतान होता है जो उसके अन्दर खून की तरह गर्दिश करता है और बुरे कामों की तरफ़ माइल करता है और नेक काम करने से रोकता है और कई तरह की ख़्वाहिशात पैदा करता है जो असल में गुनाह होती हैं इसलिये शैतान हमारा सबसे बड़ा और खुला दुश्मन है इसलिये हमें चाहिये कि हमेशा इस बात को ज़हन में रखें और इससे बचने की हर मुमकिन कोशिश करें। कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है पस उसे अपना दुश्मन ही समझो। (सू0—फ़ातिर—61)

इरशादे बारी तआ़ला है—
शैतान तुम्हें (अल्लाह की राह में ख़र्च करने से रोकने के लिये) मुहताजी से डराता है और बे हयायी का हुक्म देता है।
(सू0—बक़राह—268)

पस जिसने ख़्वाहिशात की पैरवी की वो गुमराह हो जाता है और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र और उसके ख़ौफ़ से बे परवाह हो जाता है और अपनी आख़िरत ख़राब कर लेता है और जो लोग अपने रब से डरते और आख़िरत पर ईमान रखते हैं वो लोग अपने नफ़्स की पैरवी करने से बचते हैं और अल्लाह व रसूल के हुक्म की इत्तेबाअ़ करते हुये नेक अ़मल करते हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और उसका कहा न मानो जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है और वो अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उसका काम हद से गुज़र गया। (सू0—कहफ़—28)

जो शख़्स नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पीछे चलता है तो गोया वो अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करता है क्योंकि वो अपने नफ़्स

के हुक्म का ताबेअ़ होता है जिसके सबब वो हलाल हराम जाइज़ व नाजाइज़ की तमीज़ खो बैठता है और उसे वही बात बेहतर लगती है जो उससे उसका नफ़्स कहता है और वो अपने रब को छोड़कर अपने नफ़्स को अपना माअ़बूद बना लेता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सबसे बुरा माअ़बूद जिसकी दुनियाँ में पूजा की जाती है वो ख़्वाहिश है। (मजमउज्ज़वाइद—1/188)

नफ़्स की कई क़िस्में हैं जिनमें एक नफ़्से लव्वामा होता है ये उन लोगों का नफ़्स होता है जो लोग बुरा काम या कोई गुनाह करने के बाद नादिम (शर्मिन्दा) होते और पछताबा करते हैं और कहते हैं कि हमसे गुनाह हो गया अब हम दोबारा ऐसा गुनाह नहीं करेंगे और अपने रब से गिड़गिड़ाते और तौबा अस्तग़फार करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उनकी मदद फ़रमाता है और दोबारा उन गुनाहों की तरफ़ ले जाने वाले नफ़्स से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और जो नफ़्स से बचाये गये वही क़ामयाब है। (सू0—हश्र—9)

अल्लाह तआ़ला अपने पसंदीदा बन्दों को अपनी रहमत से ये इनाम अ़ता फ़रमाता है कि वो नफ़्सानी ख़्वाहिशात से पाक हो जाते हैं और ऐसे लोगों का नफ़्स नफ्से मुतमइन्ना कहलाता है और अल्लाह तआ़ला उन्हें विलायत से सरफ़राज़ फ़रमाता है और वो अल्लाह तआ़ला के मख़सूस और मुक़र्रब हो जाते हैं।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
जिसने अपने नफ़्स को पाक किया बेशक उसने फ़लाह पाई। (सू—शम्स—9)

इन्सान के ज़हन में कभी—कभी ऐसे बुरे ख़्यालात उसके न चाहते हुये भी आ जाते हैं और इन्सान सोचता है कि हमसे बहुत बड़ा गुनाह हो गया है लेकिन ऐसे बुरे ख़्यालात और वहम शैतान की तरफ़ से आते हैं जो माफ़ होते हैं जब तक कि वो बुरे ख़्यालात

इन्सान की जुबान पर न आयें या जब तक उस पर अ़मल न हो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मेरी उम्मत से वो बाते माफ़ की गई हैं जो दिल में हों मगर जुबान पर न आयें या उस पर अ़मल न करें। (सही बुख़ारी—1/343)

हदीस पाक में है नफ़्स के साथ जिहाद बेहतरीन जिहाद है क्योंकि अपने नफ़्स पर क़ाबू करना इन्सान के लिये बड़ा मुश्किल काम है लेकिन जो लोग अल्लाह व रसूल और आख़िरत पर ईमान रखते हैं जिनके दिल अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से लरज़ते हैं वो लोग ज़रूर अपने नफ़्स पर क़ाबू पाते हैं और वही लोग अक़लमन्द और निजात पाने वाले हैं जो अपने नफ़्स का मुहासिबा करते और उसको क़ाबू करने की तदबीरें करते और उनकी कोशिश अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से कामयाब होती है और वो अपने नफ़्स और उसकी ख़्वाहिशात पर ग़ालिब आ जाते हैं और वो गुनाहों से दूर रहते और नेक अ़मल करते हैं।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अक़लमन्द लोग वो हैं जो अपने नफ़्स का मुहासिवा करते हैं और मौत के बाद के लिये अ़मल करते हैं। (मुस्नद अहमद—4/124)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
समझदार आदमी वो है जिसका नफ़्स उसका तावेअ़ हो और वो मौत के बाद के लिये अ़मल करे और बेवकूफ़ आदमी वो है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पीछे चले। (सुनन इब्ने माजा—324)

हज़रत ग़ौसुल आज़म अब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि अपने नफ़्स की इत्तेबाअ़ (पैरवी) न करो और इससे इजतिनाब (परहेज़) करो और अपनी मिल्कियत से माजूल होकर सब कुछ अपने रब के सपुर्द करके अपने क़ल्ब के दरवाज़े पर इस तरह पहरा दो कि उसमें रब तआ़ला के अहकामात के अलावा कोई दूसरी चीज़ दाख़िल न हो सके इसके अलावा अपने क़ल्ब में हर उस चीज़ का दाख़िला बन्द कर दो जिससे तुम्हें रोका गया है और जिन ख़्वाहिशात को तुमने अपने क़ल्ब से निकाल फेंका है उनको दोबारा अपने क़ल्ब में दाख़िल न होने दो और न उसकी पैरवी करो क्योंकि इन्सान की ख़्वाहिशात उसे राहे खुदा से गुमराह कर देती है

—: ग़ीबत :—
(ज़ुबान की आफ़त)

किसी शख़्स के पोशीदा (छुपे हुये) ऐब को किसी के सामने बयान करना या पीठ पीछे किसी की बुराई करना ग़ीबत कहलाता है और ग़ीबत गुनाह कबीरा (बड़ा गुनाह) है और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ना पंसदीदा फ़ेअ़ल है और रब तआ़ला की नाराज़गी का बाइस है किसी शख़्स के पोशीदा ऐबों को ज़ाहिर करना किसी मुसलमान के लिये सज़ावार नहीं है बल्कि ये बहुत बुरा अ़मल है और ग़ीबत करने वाले शख़्स के लिये मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब हैं जो उसे भुगतने होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
और (लोगों के) ऐब न ढूढों और न पीठ पीछे किसी की बुराई (ग़ीबत) किया करो क्या तुम में से कोई शख़्स पसंद करेगा कि वो अपने मुर्दा भाई का गोस्त खाये तो ये तुम्हें गवारा न होगा और अल्लाह तआ़ला से डरो बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है। (सू0—हुजरात—12)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
शबे मेअ़राज मेरा गुज़र ऐसी क़ौम के पास से हुआ वो लोग अपने नाखूनों से अपने चेहरे छील रहे थे मैने पूछा ऐ जिबरईल ये कौन लोग है जिबरईल ने कहा ये वो लोग हैं जो लोगों की ग़ीबत करते थे। (सुनन अबी दाऊद—2/313)

किसी की ग़ैर मौजूदगी (यानी पीठ पीछे) उसकी बुराई करना अगरचा वो बात सच हो वो ग़ीबत है और अगर वो बात झूठ हो तो वो बोहतान है जो ग़ीबत से भी बड़ा गुनाह है और ग़ीबत ज़िना (औ़रत से हराम कारी) से भी बड़ा गुनाह है हर वो बात जिसमें बुराई ज़ाहिर होती हो वो ग़ीबत है जैसे वो बद अख़लाक़ है नमाज़ नहीं पढ़ता, झूठ बोलता है, ज़कात नहीं देता, हराम माल खाता है, बुरा लिबास पहनता है, या वो बहुत मोटा है या बहुत ज़्यादा काला है या आँखों से भेंड़ा है, लूला लंगडा अपाहिज है या बहुत ज़्यादा कमज़ोर है वग़ैराह यानी किसी की ऐसी बुराई जो अगर उसके

सामने की जाये तो उसे नागवार गुज़रे और वो उसे ना पसंद करे वो ग़ीबत है ग़ीबत करने वाला और सुनने वाला दोनो गुनाहगार होते हैं लेकिन सुनने वाला उस बुराई को अगर बुरा जाने तो सुनने वाला गुनाहगार न होगा और ग़ीबत जुबान के अलावा हाथ आँख और इशारे से भी होती है जो हराम व गुनाह है जैसे लंगड़े की चाल चलना या टेढ़ी आँख बनाना वग़ैराह ताकि किसी शख़्स का हाल ज़ाहिर हो और अगर किसी शख़्स का नाम न लें और ये कहें कि एक शख़्स ने ऐसा काम किया है तो ग़ीबत नहीं लेकिन हाज़िरीन को मालूम हो जाये कि ये इशारा किस शख़्स की तरफ़ मक़सूद है तो वो ग़ीबत है।

ग़ीबत जुबान की बहुत बड़ी आफ़त है और इस आफ़त व गुनाह से बचने के लिये हमें हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिये और दूसरों की बुराईयाँ और ऐबों को देखने की बजाय अपनी बुराईयाँ और ऐबों को देखें और उन्हें दूर करें ताकि गुनाहों से बचें और इसके सबब होने वाले अ़ज़ाब से महफूज़ रहें।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है–
ख़राबी है उस शख़्स के लिये जो (लोगों के मुँह पर) ताना ज़नी करे (और पीठ पीछे) बुराई (ग़ीबत) करे। (सू0–हुमाज़ाह–1)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
ग़ीबत सुनने वाला भी ग़ीबत करने वालों में से एक होता है। (तारीख़े बगदाद–8/266)

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैने हाथ के इशारे से कहा कि फ़लाँ औरत पस्त (छोटा) क़द है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया तुमने ग़ीबत की है। (मुस्नद अहमद–2/384) (दुर्रे मन्सूर–6/94)

ईमान की असल तो ये है कि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब सल्लललाहु अ़लैह वसल्लम को ना पंसद हो वो हमें भी ना पंसद होना चाहिये अगर हम मानते हैं कि हम अल्लाह तआ़ला के बन्दे हैं और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के उम्मती हैं जब हम किसी की बुराई (ग़ीबत) करते हैं तो उसके बदले हमें कुछ

भी हासिल नहीं होता सिवाय गुनाह के जिसका अ़ज़ाब आख़िरत में हमें मिलेगा क्या कभी किसी शख़्स ने किसी की बुराई करने के बदले में माल वग़ैराह या और कोई चीज़ हमें दी है नहीं हरगिज़ नहीं तो जब हमें किसी की बुराई करने के बदले कुछ नहीं मिलता तो हम क्यों किसी की बुराई करें और गुनाहगार बन जाये और ग़ीबत इन्सान की नेकियों को ज़ाया (बर्बाद) कर देती है इसलिये हमें चाहिये कि इस बात पर ग़ौरो फ़िक्र करें और खुद को ग़ीबत से बचायें और अपने दिलों को बद गुमानी से महफ़ूज़ रखे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
ऐ ईमान वालो ज़्यादा तर गुमानों से बचा करो बेशक बाज़ गुमान गुनाह होते हैं। (सू0–हुजरात–12)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
आग खुश्क लकड़ियों को इतनी जल्दी नहीं जलाती जितनी जल्दी ग़ीबत इन्सान की नेकियों को ख़त्म कर देती है।
(अल इसरारूल मरफूआ–206)

किसी मुसलमान को ये हक़ नहीं कि किसी मुसलमान भाई की बुराई या तानाज़नी करे क्योंकि जब हम किसी शख़्स की बुराई करते हैं और अगर उस शख़्स को ये बात मालूम हो जाये कि मेरे मुताअ़ल्लिक़ फ़लाँ शख़्स ने बुराई की है तो उसे तकलीफ़ होती है या जब हम किसी शख़्स को उसके ऐब के लिये उसे ताना देते है तो वो शर्मसार होता है और किसी भी मुसलमान भाई को तकलीफ़ या शर्मसार करना गुनाह है।

अल्लाह तआ़ला व उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हम तमाम मुसलमानों के दरमियान भाई–भाई का रिश्ता क़ायम किया है अगर हम इस रिश्ते को मानें और समझे और अहमियत दें तो शायद ये बुराई हमसे खुद व खुद दूर हो जायेगी और हम किसी की ग़ीबत नहीं करेंगे और गुनाहों से बचने में कामयाब होंगे।

जिस तरह हमारी या हमारे घर के किसी शख़्स की अगर कोई बुराई करे तो हमें बुरा लगता है और हम उस बुराई करने वाले

शख़्स से नाराज़ हो जाते है तो इसी तरह जब हम किसी की बुराई करते हैं तो अल्लाह तआ़ला को बुरा लगता है और वो हमसे नाराज़ हो जाता है क्योंकि हमने जिसकी बुराई की है वो भी अल्लाह तआ़ला का बन्दा है जिस तरह हम उसके बन्दे है और जिस तरह तमाम इन्सान अल्लाह तआ़ला के बन्दे हैं उसी तरह हम तमाम मुसलमान एक दूसरे के भाई हैं।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दो पर हंसें (न मज़ाक उड़ायें) हो सकता है कि वो उन (हंसने वालों) से बेहतर हों और न औ़रतें औ़रतों पर हंसे (न मज़ाक उड़ायें) हो सकता है वो उन हंसने वाली औ़रतों से बेहतर हों और न आपस में ताना ज़नी और न इल्ज़ाम तराशी किया करो और न एक दूसरे के बुरे नाम रखा करो किसी के ईमान (लाने) के बाद उसे फ़ासिक़ व बद किरदार कहना बहुत ही बुरा नाम है और जिसने तौबा न की तो वही लोग ज़ालिम हैं। (सू0—हुजरात—11)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
एक दूसरे से हसद न करो और बाहम (आपस में) दुश्मनी न करो और एक दूसरे की ऐ़ब जोई न करो और न ही एक दूसरे की बुराई (ग़ीबत) करो और अल्लाह के बन्दो भाई—भाई बन आओ। (सही मुस्लिम—2/316)

अल्लाह तआ़ला इन्सान के तमाम गुनाहों को बख़्श देता है जब बन्दा सच्चे दिल से तौबा करता है लेकिन अल्लाह तआ़ला ग़ीबत करने वाले को माफ़ नहीं करता जब तक कि वो माफ़ न करे जिसकी ग़ीबत की गई है इससे अन्दाज़ा लगायें कि देखने में छोटा लगने वाला गुनाह असल में गुनाहे अ़ज़ीम है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अपने आप को ग़ीबत से बचाओ बेशक ग़ीबत ज़िना (औ़रत से हरामकारी) से भी बड़ा गुनाह है क्योंकि आदमी ज़िनाकारी के बाद तौबा करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे माफ़ कर देता है लेकिन ग़ीबत करने वाले का गुनाह उस वक़्त तक माफ़ नहीं होता जब तक कि वो माफ़ न करे जिसकी ग़ीबत गई हो (दुर्रे मन्सूर—6/96)

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई को उसके किसी ऐसे गुनाह का ताना दे जिससे वो तौबा कर चुका हो तो उस (ताना देने वाले को) उस वक़्त तक मौत नहीं आयेगी जब तक कि वो खुद उस गुनाह में मुब्तिला न हो जाये (जिस गुनाह का उसने ताना दिया है)। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब–3/310)

इसलिये हमें चाहिये कि किसी के गुनाह या उसके ऐब पर उसे ताना न दें और न किसी की बुराई (ग़ीबत) करें और हम इस बुराई पर तभी क़ाबू पा सकते हैं जब हम अपने नफ़्स को क़ाबू करें और अपनी जुबान को ज़ायद (ज़्यादा) गुफ्तगू (बात चीत) से रोकें अगर हम ज़्यादा (फ़िज़ूल) बात करेंगे तो ग़ीबत से नहीं बच सकते इसलिये हमें चाहिये जब भी हम कुछ बोलें तो सिर्फ़ अच्छी बात करें या फिर ख़ामोश रहें और हमेशा बुरी बातों से परहेज़ करें ताकि हम गुनाहों से बच सकें और हमारी नेकियाँ ज़ाया (बर्बाद) न हों और हम आख़िरत में मिलने वाले दर्दनाक अज़ाब से महफूज़ रहें और जन्नत के मुस्तहिक़ बन जायें।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जो शख़्स मुझे जुबान और शर्मगाह की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ। (जामअ तिर्मिज़ी–347)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की ऐब पोशी करेगा तो अल्लाह तआला दुनियाँ व आख़िरत में उसकी ऐब पोशी करेगा।
(सही मुस्लिम–2/320, 345)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स अल्लाह तआला और आख़िरत पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे। (सही बुख़ारी–2/889)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम है–
उस शख़्स के लिये खुशख़बरी है जो जुबान की ज़ायद गुफ्तगू को रोक ले और माल में ज़ायद को (अल्लाह की राह) में ख़र्च करे। (बैहकी–4/182)

बाज़ औक़ात ग़ीबत की वजह से फ़ित्ना फ़साद होता है हत्ता कि लड़ाई झगड़े होते हैं जिससे लोगों के दरमियान आपसी तअ़ल्लुक़ ख़राब हो जाते हैं और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो लोगों में ग़ीबत और चुग़ल ख़ोरी करके आपस में तफ़रीक़ (फ़र्क़) डालते हैं और इस काम को वो लोग बहुत अच्छा जानते हैं हालाँकि ये फ़ेअ़ल बहुत बुरा और क़ाबिले मज़म्मत है जो इनसान को जन्नत से दूर और जहन्नुम के क़रीब कर देने वाला है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जायेगा। (सही बुख़ारी—2/895)
(मुस्नद अहमद—5/381)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
लोगों में तफ़रीक़ (फ़र्क़, जुदाई) डालने वाला जन्नत में नहीं जायेगा
(मुस्नद अहमद—4/83)

कुछ लोग ऐसे होते है जिनके दो चेहरे होते हैं जब वो किसी शख़्स के पास जाते हैं तो उनके मुँह पर उनकी झूठी तारीफ़ करते हैं और तरह तरह के मुबालग़े करते हैं और उनसे झूठी हमदर्दी दिखाते हैं और उसकी बुराई या चुग़ली करते हैं जिससे उस शख़्स का झगड़ा या मनमुटाव हुआ हो ताकि बदले में खुद की वाहवाही और इज़्ज़त हासिल करें फिर वो उस शख़्स के पास हैं जिसकी बुराई पहले शख़्स से की थी और वही सब बातें करते हैं जो पहले शख़्स से की थीं ताकि खुद की वाहवाही और इज़्ज़त हो यानी इसकी बुराई उससे और उसकी बुराई इससे करते हैं और दो लोगों के झगड़े या मनमुटाव को ख़त्म करने की बजाय बढ़ाते हैं और उन दोनों के दरमियान दूरियाँ बढ़ाते हैं ऐसे शख़्स को अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला करेगा जो दो चेहरे वाला होता है यानी इसके मुँह पर इसके जैसी और उसके मुँह पर उसके जैसी बात करता है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स दुनियाँ में दो चेहरे वाला होता है तो क़यामत के दिन उसकी दो जुबानें आग की होंगी। (सुनन अबी दाऊद—2/312)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– क़यामत के दिन तुम उस आदमी को सबसे बुरा आदमी पाओगे जिसके दो चेहरे हैं। (सही बुख़ारी–1/496)

किसी की ग़ीबत करना असल में अपनी नेकियों को ज़ाया करना है क़यामत के दिन ग़ीबत करने वाले को अपनी नेकियाँ उन लोगों को देना पड़ेंगी जिस जिस की दुनियाँ में उसने ग़ीबत की होगी तो ज़रा सोचो और ग़ौर करो नेकियाँ कमाना कितना मुश्किल है और उन्हें ज़ाया करना कितना आसान है यानी हम जिसकी ग़ीबत करते हैं तो ज़ाहिरन तो हम उसकी ग़ीबत करते हैं लेकिन असल में हम उसे अपनी नेकियाँ फ्री (मुफ़्त) में देते हैं और बदले में गुनाह लेते हैं

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनकी बुराई (ग़ीबत) उनके ऐब के साथ करना शरअ़न जाइज़ है और उनके ऐब लोगों में ज़ाहिर करें ताकि लोग उससे बचें और अगर हमने उनके ऐबों को लोगों में ज़ाहिर न किया तो लोग उसकी सुहबत पाकर कहीं उस गुनाह में मुब्तिला न हो जायें जिस गुनाह में वो मुब्तिला हैं कुछ बुराईयाँ या ऐब ऐसे होते हैं चाहे ऐलानियाँ हों या पोशीदा जिनके बुरे असरात लोगों पर पड़ने का ख़द्शा हो तो ऐसे बुरे काम करने वाले फ़ाजिर (बदकिरदार) शख़्स की बुराई उसके ऐब के साथ करना चाहिये मिसाल के तौर पर अगर कोई शख़्स शराबी है चाहे पोशीदा हो या ऐलानियाँ हो तो ऐसे शख़्स की सुहवत में कोई भी शख़्स शराबी हो सकता है इसी तरह चोर, जुआरी वग़ैराह या जो शर्म हया की चादर उतार दे और ऐलानियाँ बड़े गुनाह करे तो उसकी भी बुराई उसके ऐब के साथ करो ताकि लोग उससे बचें यानी किसी शख़्स में ऐसी बुराई हो जिसकी सुहवत से किसी की दुन्यावी या उख़रवी या उसके ईमान के नुकसानात का ख़द्शा (ख़ौफ़, ड़र) हो तो ऐसे शख़्स की बुराई उसके ऐब के साथ करना चाहिये।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
फ़ाजिर (बदकिरदार) की बुराई उसके ऐब के साथ करो ताकि लोग उससे बचें और ये ग़ीबत नहीं है। (बैहकी–10/210)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– जो आदमी अपने चेहरे से हया (शर्म) की चादर उतार दे उसकी ग़ीबत नहीं होती। (बैहकी–10/210)

ग़ीबत करने वाले के गुनाह तब तक माफ़ न होंगे जब तक कि वो माफ़ न करे जिसकी ग़ीबत की गई है इसलिये हमें चाहिये कि हमने जिसकी ग़ीबत की है हम उससे माफ़ी माँगे और नादिम (शर्मिन्दा) हों अगर किसी वजह से माफ़ी माँगना मुमकिन न हो तो उसके लिये बख़्शिश की दुआ़ माँगे क्योंकि उसके लिये बख़्शिश की दुआ़ माँगना ग़ीबत का कफ़्फ़ारा है।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– तुम जिसकी ग़ीबत करते हो उसके लिये बख़्शिश (की दुआ़) माँगना ग़ीबत का कफ़्फ़ारा है। (तारीख़े बग़दाद–7 / 303)

जुबान अल्लाह तआ़ला की बहुत बड़ी नेअ़मत है लेकिन ईमान या कुफ़्र और ज़िक्रे इलाही या बुरे कलिमात सब इसी जुबान से ज़ाहिर होते हैं और बहुत से गुनाह इसी जुबान के बाइस सरज़द होते हैं और इस जुबान पर वही शख़्स क़ाबू पाता है जिसके दिल में अल्लाह तआ़ला और आख़िरत का ख़ौफ़ रहता है और वो शख़्स अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के हुक्म की इत्तेबाअ़ करते हुये इस जुबान में लगाम डाल देता है इन्सान को गुमराह करने और गुनाहों में मुब्तिला करने के लिये ये जुबान शैतान का बहुत बड़ा हथियार है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
इन्सान की अक्सर (ज़्यादातर) ख़तायें उसकी जुबान से होती हैं। (शुअ़बुल ईमान–4 / 241)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जिस शख़्स को पसन्द हो कि वो सलामत रहे तो उसे चाहिये कि ख़ामोशी इख़्तियार करे। (शुअ़बुल ईमान–4 / 241)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है जो ख़ामोश रहा उसने निजात पाई। (मुस्नद अहमद–2 / 159)

हज़रत उकबा बिन आमिर (रज़ि0) से मरवी है फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह निजात क्या है आपने इरशाद फ़रमाया अपने ऊपर जुबान को रोक दो और अपने गुनाहों पर रोया करो। (जामअ़ तिर्मिज़ी–347)

जुबान की आफ़तें बे शुमार हैं और इसकी आफ़तों और गुनाहों से बचने के लिये सबसे बेहतर तरीक़ा ख़ामोशी है इसलिये हर शख़्स को चाहिये कि बिला ज़रुरत कुछ न बोले क्योंकि ज़ायद गुफ्तगू से बहुत सी बातें जुबान से ऐसी निकल जाती हैं जो गुनाह होती है और ज़ायद (ज़्यादा) गुफ्तगू (बात चीत) में अच्छी और बुरी बातों में तमीज़ करना दुश्वार हो जाता है इसलिये ख़ामोशी ही इन्सान को इस वबाल से बचा सकती हैं जुबान की आफ़तों में जैसे—बेहूदा कलाम, गाली गलोज, बद कलामी, ताना ज़नी, हंसी मज़ाक, किसी को तकलीफ़ पहुँचाना मस्ख़री किसी का मज़ाक उड़ना, राज़ फ़ाश करना, ग़ीबत, चुग़ली, झूठा वायदा, रियाकारी वग़ैराह है और कभी कभी ऐसे कलिमात जुबान से निकल जाते हैं जो कुफ़्र होते हैं।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— अच्छी बात के अलावा जुबान को रोके रखो क्योंकि इसके ज़रिये शैतान ग़ालिब आ जाता है। (दुर्रे मन्सूर—6/99)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जिस शख़्स की गुफ्तगू ज़्यादा हो उसकी ग़लतियाँ भी ज़्यादा होती हैं और जिसकी ग़लतियाँ ज़्यादा होती हैं उसके गुनाह ज़्यादा होते हैं और जिसके गुनाह ज़्यादा होते हैं वो जहन्नुम के ज़्यादा लायक़ होता है। (मजमउज्ज़वाइद—10/302)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— अल्लाह तआ़ला उस बन्दे पर रहम फ़रमाये जो गुफ्तगू करता है तो नफ़ा हासिल करता है या ख़ामोश रहकर सलामती हासिल करता है। (शुअ़बुल ईमान—4/241)

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि0) से मरवी है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—बन्दे का ईमान उस वक़्त तक दुरस्त नहीं हो सकता जब तक उसका दिल ठीक न हो और उसका दिल उस वक़्त तक ठीक नहीं हो सकता जब तक उसकी जुबान दुरस्त न हो और वो शख़्स जन्नत में दाख़िल न होगा जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से महफ़ूज़ न हो।
(मुस्नद अहमद—3/198)

एक ऐराबी ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की खिदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया मुझे कोई ऐसा अ़मल बतायें जिसके बाइस मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ तो आपने इरशाद फ़रमाया— भूके को खाना खिलाओ, प्यासे को पानी पिलाओ, नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको और ऐसा न कर सको तो अपनी जुबान को भलाई की बातों में महदूद रखो (यानी अपनी जुबान से सिर्फ़ अच्छी बात कहो) (मुस्नद अहमद—4/299)

हर शख़्स को चाहिये कि बे वजह व बे मक़सद गुफ्तगू न करे क्योंकि जो गुफ्तगू (बात चीत) बे मक़सद होती है उससे इन्सान को कुछ भी हासिल नहीं होता बल्कि वो अपना क़ीमती वक़्त को ज़ाया (बर्बाद) करता है जबकि वो वक़्त फिर उसे दोबारा नहीं मिलेगा इसलिये उसे चाहिये कि उस वक़्त में खुद को ज़िक्रे इलाही में मशगूल रखे या दुरुद शरीफ़ का विर्द करे या दीनी तबलीग़ करे और अच्छी बात करे और ऐसा कोई काम करे जो उसे दुनियाँ व आख़िरत में नफ़ा (फ़ायदा) दे यही उसके लिये सबसे बेहतर है और यही उसके लिये निजात का रास्ता है

और हमें चाहिये कि खुद का मुहासिवा करें और अपने ऐबों को देखें और उन्हें दूर करें और अपनी आख़िरत पर ग़ौरो फ़िक्र करें और इल्म हासिल करें और अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों पर उसका शुक्र अदा करें और अपने गुनाहों पर नादिम (शर्मिन्दा) हों और तौबा करें और अपनी बख़्शिश की दुआ़ माँगें ताकि हमारी दुनियाँ और आख़िरत बेहतर हो जाये और नेक काम करें ताकि उसका अज़्र पायें और बे मक़सद गुफ्तगू और दुनियाँ दारी की फ़िज़ूल बातों में अपना वक़्त ज़ाया न करें या फिर ख़ामोश रहें क्योंकि फ़िज़ूल बात करने से बेहतर ख़ामोशी है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसललम ने फ़रमाया—
इन्सान के हुस्ने इस्लाम में बे मक़सद बातों का छोड़ना भी है। (सुनन इब्ने माजा—295)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है अच्छी गुफ्तगू सदक़ा है। (मुस्नद अहमद—2/316)

सरवरे कौनेन सल्लल्ललाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— मैं तुम्हें वो अ़मल न बताऊँ जो बदन पर हल्का हो और मीज़ान पर भारी होगा आप से अ़र्ज किया गया वो क्या है आप ने फ़रमाया— वो ख़ामोशी, अच्छे अख़लाक़ और बे मक़सद बात को छोड़ देना है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब—3 / 533)

और हमें चाहिये कि अपनी जुबान से किसी को बुरा न कहें बल्कि खुद को बुरा जाने और खुद में बुराई ढूँढें और उसे दूर करें बाज़ लोग बिना सोचे समझे किसी को काफ़िर या फ़ासिक़ कह देते हैं और ऐसा कहना गुनाह है जब तक कि उसकी पूरी तरह से तहक़ीक़ न करलें और न किसी को उसके ऐब या गुनाह के लिये ताना दें कि हो सकता है कि उसने अपने गुनाहों से तौबा करली हो और न किसी का मज़ाक उड़ायें कि कहीं ऐसा न हो कि मज़ाक उड़ाने वाला खुद मज़ाक न बन जाये और झूठी क़सम या किसी से झूठा वायदा न करो और न किसी का राज़ फाश करो क्योंकि किसी का राज़ उसके पास अमानत होता है और ज़्यादा क़सम खाना झूठा होने की अ़लामत है और जुबान से कभी बेहुदा कलाम न कहें और जब भी कोई बात कहें तो पहले उसको खूब सोचें फिर अगर अच्छी बात हो तो कहें वरना ख़ामोश रहें और कोई ऐसी बात न कहें जो बुरी या गुनाह हो या जिसके कहने से किसी को बुरा लगे लेकिन हक़ बात हमेशा कहें चाहे उसका अंजाम कुछ भी हो परवाह न करें और यही हर मुसलमान के हक़ में बेहतर है।

अक़्लमन्द शख़्स वो है लोगों की वजाय खुद में बुराई ढूँढे और उसे दूर करने की हर मुम्किन कोशिश और तदबीरें करे और बेवकूफ़ शख़्स वो है जो अपनी बुराइयों की बजाय लोगों की बुराइयाँ देखे और अपने वक़्त को ज़ाया करे और गुनाहगार हो जाये अब ज़रा सोचें और ग़ौर करें कि हम अक़्लमन्द हैं या बेवकूफ़ हालाँकि किसी की बुराई ढूँढने या बद गोई या ग़ीबत करने से हमें सिवाय नुकसान के कुछ भी हासिल नहीं होता तो फिर हम क्यों किसी की बुराई करें और गुनाह कमायें इसलिये हमें चाहिये सिर्फ़ अपनी बुराइयों और गुनाहों का मुहासिबा करें और उन्हें दूर करें और खुद को नेक अ़मल की तरफ़ माइल करें ताकि अल्लाह तआ़ला से हम उसका बेहतर अज्र पायें।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अपने आप को फुहश कलामी (बेहुदा बात) से बचाओ बेशक अल्लाह तआ़ला फुहश कलामी को पसन्द नहीं करता।
(मुस्नद अहमद—2/195)

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
ऐ ईमान वालो वायदों को पूरा करो। (सू0—मायदा—1)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
वायदा पूरा करना अ़तिया देना है। (मजमउज्ज़वाइद—4/166)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
मोमिन ताअ़न करने वाला लानत भेजने वाला फुहश गोई करने वाला और बद कलामी करने वाला नहीं होता। (बैहकी—10/243)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
कोई शख़्स किसी दूसरे पर कुफ़्र या फ़िस्क़ का इल्ज़ाम लगाता है तो अगर वो शख़्स ऐसा न हो तो वो बात कहने वाले की तरफ़ लौट आती है। (सही बुख़ारी—2/893)

अच्छी गुफ्तगू से ईमान ताज़ा होता है और ज़ायद व फ़िज़ूल और बेहूदा गुफ्तगू से गुनाह सरज़द होते हैं हदीस पाक में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जब कोई शख़्स अपने मस्ख़रेपन से लोगों को हंसाता है तो अल्लाह तआ़ला उस पर गुस्सा व नाराज़ होता है हत्ता कि जब तक उसको जहन्नुम में दाख़िल (होने का फ़ैसला) न कर दे राज़ी नहीं होता।
(बुख़ारी, मुस्लिम)

मनकूल है कि हज़रत इमाम हसन बसरी (रह0) से किसी शख़्स ने कहा कि फ़लाँ शख़्स ने आपकी ग़ीबत की है तो आपने ग़ीबत करने वाले आदमी को खजूरों का एक थाल भर कर उसके पास भेजा और साथ में कहला भेजा कि सुना है तुमने मुझे अपनी नेकियाँ हद्या की हैं तो मैनें उसका मुआवज़ा देना बेहतर समझा इसलिये मैनें खजूरों से भरा थाल तुम्हारे पास भेजा है।

—: गुस्सा :—

गुस्सा इन्सान का दुश्मन है और जो दुश्मन को दोस्त बनायेगा तो वो उससे सिर्फ़ नुकसान उठायेगा बाज़ औक़ात तो गुस्से की वजह से इन्सान को बड़े—बड़े नुकसान उठाने पड़ते हैं जो उसके लिये बहुत बड़ी परेशानी का सबब होते हैं फिर उसके पास सिवाये पछताबे के कोई चारा नहीं होता और इस गुस्से के बाइस इन्सान को दुन्यावी नुकसान के साथ आख़िरत का भी नुकसान होता है।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
गुस्सा ईमान को इस तरह ख़राब कर देता है जिस तरह एलवा (कड़वा फल) शहद को ख़राब कर देता है। (कंजुल उ़म्माल—3/140)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जो शख़्स गुस्सा करता है वो जहन्नुम के किनारे जा लगता है। (दुर्रे मन्सूर—4/99)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— जो शख़्स अपने गुस्से को रोकता है तो अल्लाह तआ़ला उससे अपने ग़ज़ब को रोक देता है।

गुस्सा इन्सान की अक़्ल को खा जाता है और जब इन्सान में अक़्ल नहीं रहती है तो उसमें सोचने समझने की ताक़त नहीं रहती फिर वो ऐसे काम करता है जिसमें उसे सिर्फ़ नुकसान उठाना पड़ता है और बाज़ औक़ात गुस्से के सबब इन्सान से बड़े—बड़े गुनाह सरज़द हो जाते हैं जिनका अंजाम बहुत बुरा और तकलीफ़ ज़दा होता है जो इन्सान को भुगतना पड़ता है और कुछ गुनाहों के सबब आख़िरत में अ़ज़ाब की शक्ल में कई तरह की मुसीबतो परेशानी से इन्सान को दो चार होना पड़ेगा गुस्सा इन्सान के नफ़्स की तरफ़ से है और शैतान का बेहतर हथियार है जो इन्सान को गुनाहों की तरफ़ माइल करता है।

और जो शख़्स अपने नफ़्स पर क़ाबू कर लेता है तो वही शख़्स गुस्से को भी क़ाबू करने में कामयाब होता है और उस पर ग़ालिब आ जाता है और जो शख़्स अपने गुस्से को क़ाबू रखते हुये

उसे पी जाता है और जो ऐसा अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये करता है तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को बेहतर अज्र (इनाम) अ़ता फ़रमाता है और उसके दिल को ईमान से भर देता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स गुस्से को पी जाता है अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उस शख़्स को ये इख़्तियार देगा कि वो जिस हूर को चाहे पसन्द करे। (मुस्नद अहमद–3/440)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ला को उस घूँट से ज़्यादा कोई घूँट पसन्द नहीं जिसे कोई बन्दा पी लेता है तो अल्लाह तआ़ला उसके दिल को ईमान से भर देता है। (कंजुल उ़म्माल–15/873)

अल्लाह तआ़ला रहीमो करीम है जो अपने बन्दों की भलाई चाहता है इसलिये अपने बन्दों से फ़रमाता है कि गुस्सा तुम्हारे लिये बेहतर नहीं है इसलिये इसे क़ाबू में रखो और मेरी रज़ा के लिये इसे पी जाया करो ताकि तुम्हें किसी तरह का नुकसान न उठाना पड़े और तुम हर परेशानी से महफ़ूज़ रहो और जो लोग अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये अपने गुस्से पर ग़ालिब रहते और उसे पी जाते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन लोगों को अपना ख़ास और मुक़र्रब बन्दा बना लेता है और उनकी दुनियाँ व आख़िरत दोनो बेहतर हो जाती हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
और गुस्सा पीने वाले और लोगों को माफ़ करने वाले और नेक लोग अल्लाह तआ़ला के महबूब हैं। (सू0–आले इमरान–134)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
कोई बन्दा उस घूँट से ज़्यादा अज्र (सवाब) वाला घूँट नहीं पीता जो वो अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये गुस्से का घूँट पीता है। (सुनन इब्ने माजा–319)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–जो शख़्स अपनी ज़ुबान को रोके तो

अल्लाह तआ़ाला उसकी पर्दा पोशी करता है और जो शख़्स अपने गुस्से को रोके और उसे क़ाबू में रखे तो अल्लाह तआ़ाला उसे अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा और जो शख़्स अल्लाह तआ़ाला की बारगाह में उज़्र पेश करे (यानी तौबा करे) तो अल्लाह तआ़ाला उसकी माअ़ज़रत को कुबूल फ़रमाता है।
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–3/525)

इमाम गज़ाली (रह0) फ़रमाते हैं नफ़्स अम्माराह बहुत सरकश जिद्दी और बदफितरत शैः है और इसकी शरारतों से बचना बहुत ज़रुरी है क्योंकि ये निहायत नुकसान देने वाला दुश्मन है और इसकी आफ़तें निहायत सख़्त हैं और इसका इलाज बहुत मुश्किल काम है इसकी बीमारी निहायत ख़तरनाक बीमारी है और इसकी दवा सब दवाओं से ज़्यादा दुश्वार है और नफ़्स घर का चोर है और चोर जब घर में ही छुपा हो तो उससे महफ़ूज़ रहना मुश्किल होता है और वो ज़्यादा नुकसान पहुँचाता है और ये एक महबूब दुश्मन है जब इन्सान को किसी से मुहब्बत होती है तो उसे उसके ऐब नज़र नहीं आते बल्कि मुहब्बत की वजह से महबूब के ऐबों से अन्धा रहता है क्योंकि मुहब्बत वाली आँख हर ऐब से अन्धी होती है अगर इस नफ़्स को बहुत ज़लील व ख़्वार रखा जाये तो इस पर लगाम लगाई जा सकती है और इसे क़ाबू किया जा सकता है।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–जबरदस्त वो नहीं जो (कुश्ती लड़ने में) अपने मुक़ाबिल (सामने वाले) को पछाड़ दे बल्कि जबरदस्त वो है जो गुस्से के वक़्त अपने आप को क़ाबू में रखे। (बुख़ारी शरीफ़)

—: हसद :—

अल्लाह तआ़ला की किसी शख़्स को अ़ता कर्दा नेअ़मत जैसे माल, औलाद इल्म मर्तबा ओहदा ज़मीनो जायदाद वग़ैराह पर जलना या ये सोचना कि ये नेअ़मत किसी तरह इससे छिन जाये और ये इस नेअ़मत से महरुम हो जाये तो इस तरह की सोच व ख़्याल को हसद कहते हैं और ये ऐसा गुनाह है जो दूसरे गुनाहों की तरफ़ राग़िब करता है क्योंकि जब कोई शख़्स किसी से उसकी नेअ़मत के बाइस हसद करता है तो सोचता है कि उसे उसकी नेअ़मतों से कैसे महरुम किया जाये फिर वो नई—नई तरकीबें लगाता है और कई तरह की तदबीरें करता है और सही व ग़लत और जाइज़ व नाजाइज़ में तमीज़ खो बैठता है और नतीजा ये होता है कि वो इस हसद के बाइस कई तरह के गुनाहों में मुब्तिला हो जाता है जैसे— झूठ, चुग़ली, ग़ीबत, चोरी, डकैती, क़त्ल, आगजनी वग़ैराह।

और इसके अलावा वो तमाम काम ऐसे करता है जो गुनाह होते हैं और वो ये तमाम काम इसलिये करता है ताकि अल्लाह तआ़ला ने जो नेअ़मत उसे दी है वो किसी तरह उससे छिन जाये और इन तमाम गुनाहों के सबब वो (हासिद) अपनी दुनियाँ व आख़िरत ख़राब कर लेता है और उस अ़ज़ाब को भूल जाता है जो उसे क़ब्र, क़यामत और जहन्नुम में भुगतने होगें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
क्या वो लोगों से उस फ़ज़्ल व नेअ़मत पर हसद करते हैं जो अल्लाह तआ़ला ने उनको अ़ता फ़रमाई (सू0—निसा—54)

तमाम ज़मीनो व आसमानों और जो कुछ उनमें मौजूद है उन सब का हक़ीक़ी मालिक सिर्फ़ रब्बुल आ़लमीन है और अल्लाह तआ़ला ने हम तमाम इन्सानों को दुनियाँ में कुछ चीज़ों का ज़ाहिरी मालिक बनाया है तो दुनियाँ में हम जिन चीज़ों के मालिक होते हैं तो हमें ये इख़्तियार होता है कि हम जिस चीज़ के मालिक हैं उस चीज़ को हम जैसे चाहें वैसे इस्तेमाल में लायें और अपने माल को जहाँ चाहें वहाँ खर्च करें चाहे मोटर वाहन खरीदें या घर बनायें, ज़मीन खरीदें या घर के कामों में ख़र्च करें या चाहे किसी को दे दें चाहे

अल्लाह की राह में ख़र्च करें क्योंकि हमें पूरा इख़्तियार होता है और हमसे कोई भी कुछ नहीं कह सकता और न हमारे हाथों को माल सर्फ़ (ख़र्च) करने से रोक सकता है क्योंकि हम उस माल के मालिक हैं और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ ख़र्च करते हैं।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला पूरी कायनात का मालिक है और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जिसे जो चाहे अ़ता करता है और उसे पूरा इख़्तियार है इस पर किसी को एतराज़ करने का हक़ नहीं बनता और जो लोग उसकी अ़ता कर्दा नेअ़मत पर हसद करते हैं तो गोया वो अल्लाह तआ़ला पर एतराज़ करते हैं और ये बहुत बड़ा गुनाह है और ऐसा गुनाह करने वाला जहन्नुमी है।

हदीस पाक में वारिद है कि हासिद (हसद करने वाला) वग़ैर हिसाब जहन्नुम में दाख़िल होगा हमारी इस्लामी खवातीन में हसद की बीमारी बहुत ज़्यादा पाई जाती है जब वो दूसरी औ़रतों के कपड़े, सोने, चाँदी के ज़ेवरात, मकान, माल वग़ैराह को देखती हैं तो उनके दिलों में हसद पैदा होता है और वो हसद के बाइस अपने ईमान को बर्बाद कर लेती हैं।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मोमिन के दिल में ईमान और हसद दोनों एक साथ जमा नहीं हो सकते। (शुअ़बुल ईमान—5/266)

हसद करने से हमें कुछ भी हासिल नहीं होता सिवाये मुसीबतो परेशानी और आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब के और इसके अलावा हासिद हसद की बीमारी में इतना मुब्तिला हो जाता है जो उसे दिन रात खाये जाती है हसद के बाइस वो अपने गुनाहों में दिन रात इज़ाफ़ा करता रहता है और इसके साथ साथ वो अपनी नेकियों को भी ज़ाया (बर्बाद) करता रहता है और अपने रब और उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से दूरी बनाता है और उनकी नाराज़गी का सबब बनता है।
सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
हसद करने वाले, चुग़ली करने वाले और काहिन का मुझसे और मेरा उनसे कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। (मजमउज्ज़वाइद—8/172)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जैसे आग लकड़ी को खा जाती है। (सुनन इब्ने माजा–320) (सुनन अबी दाऊद–4/360)

इसलिये हमें चाहिये कि हसद जैसे गुनाह से बचने के लिये हर मुमकिन कोशिश करें और इससे बचने का एक बेहतर तरीक़ा ये भी है कि हम हर मामलात में हमेशा अपने से नीचे वाले शख़्स को देखें जिसे अल्लाह तआ़ला ने हमसे कमतर रखा और जब हम किसी ऐसे शख़्स को देखें तो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करें कि अल्लाह तआ़ला ने हमें इससे बेहतर बनाया है और अगर अपने से ज़्यादा नेअ़मत वाले शख़्स को देखें तो हसद न करें बल्कि अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें कि अल्लाह तआ़ला हमें भी वो नेअ़मत अ़ता करे जो उसे अ़ता की है फिर देना या न देना अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी और उसके इख़्तियार में है।

क्योंकि अल्लाह तआ़ला हर इन्सान को उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ अ़ता नहीं करता बल्कि इन्सान के लिये जो बेहतर होता है उसे वही अ़ता करता है और इसमें हिकमते इलाही है जो हम छोटी सी अक़्ल वाले समझ नहीं सकते इसलिये हमें चाहिये हम सिर्फ़ ये गुमान रखें कि जो मेरे रब ने हमें दिया है वही मेरे लिये बेहतर है और इसी में मेरी भलाई पोशीदा (छुपी हुई) है और अल्लाह तआ़ला की हर एक नेअ़मत पर उसका शुक्र बजा लायें और जो नेअ़मत न मिले उस पर सब्र करें यही हर इन्सान के लिये बेहतर है।

क्योंकि अल्लाह तआ़ला किसी को दुनियाँ में ज़्यादा नेअ़मतें अ़ता करता है और किसी को आख़िरत में ज़्यादा अ़ता करेगा और उसके लिये आसानी और राहत होगी और अपने किसी मुसलमान भाई से हसद न करो बल्कि ज़रुरत के वक़्त हर मुसीबतो परेशानी में उसकी माली और बदनी मदद करो और जो शख़्स किसी मुसलमान भाई की मुसीबतो परेशानी में खुश होता है तो अल्लाह तआ़ला खुश होने वाले शख़्स को मुसीबतो परेशानी में मुब्तिला कर देता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– अपने भाई की परेशानी पर खुशी का इज़हार मत करो कहीं (ऐसा न हो कि) अल्लाह तआ़ला उसे उस (परेशानी) से निजात दे दे और तुम्हें उसमें मुब्तिला कर दे। (जामअ़ तिर्मिज़ी–4/227)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है अपने से नीचे दर्जे वाले की तरफ़ देखा करो ऊपर के दर्जे के लोगों की तरफ़ नज़र मत करो अगर तुम इस तरह करोगे तो अल्लाह तआ़ला की किसी भी नेअ़मत को तुम हक़ीर न जानोगे। (सुनन इब्ने माजा–4/443)

हर इन्सान को अपनी क़िस्मत का ही मिलता है और किसी दूसरे की क़िस्मत का हमें नहीं मिल सकता और हमारी क़िस्मत का किसी दूसरे को नहीं मिल सकता क्योंकि किसी की क़िस्मत किसी दूसरे पर तक़सीम नहीं की जाती ज़रा सोचो कि कुछ चीज़ें ऐसी भी हमारे पास मौजूद हैं जो हमें बेहद पसन्द हैं और अगर हमारी पसंदीदा चीज़ों को हमसे छीन कर किसी दूसरे शख़्स को दे दी जायें तो हम कैसा महसूस करेंगे इसलिये हमें चाहिये कि किसी की किसी भी नेअ़मत पर हसद न करें क्योंकि किसी भी नेअ़मत पर हसद करना हिमाक़त व ज़हालत और गुनाह है और अपनी तक़दीर पर क़नाअ़त करना (राज़ी रहना) और शाकिर रहना हमारे लिये दुनियाँ व आख़िरत में बेहतर और अज्रे अ़ज़ीम का बाइस है।

हसद व तकब्बुर के बाइस शैतान की अस्सी (80) हज़ार साल की इबादत ज़ाया हो गई और वो हमेशा के लिये ज़लालत व लानत और गुमराही के गहरे समुन्दर में ग़र्क़ हो गया एक बुजुर्ग का कॉल है कि कीना रखने वाला दीनदार नहीं हो सकता और लोगों के ऐब निकालने वाला इबादत गुज़ार नहीं हो सकता और चुग़ल ख़ोर को अमन नसीब नहीं हो सकता और हासिद नुसरते खुदावन्दी से महरुम रहता है।

—: क़यामत का बयान :—

हज़रत इसराफील (अ़लै0) जब पहली बार सूर फूँकेंगे तो आसमानों और ज़मीनों वाले तमाम लोग बेहोश हो जायेंगे यानी हर ज़िन्दा चीज़ मर जायेगी सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह तआ़ला बाक़ी रखे फिर इसराफ़ील (अ़लै0) दोबारा सूर फूँकेंगे जिसकी शिद्दत से तमाम क़ब्रें फट जायेंगी और तमाम मुर्दे बाहर निकल आयेंगे।

सूर एक सींग की तरह है जैसे बिगुल होता है और उसकी गोलाई ज़मीन व आसमान की चौड़ाई जैसी है और सूर का फूँकना एक सख़्त चीख़ होगी और सूर इसराफ़ील (अ़लै0) के मुँह के क़रीब है और वो रब तआ़ला के हुक्म के मुन्तज़िर हैं कि कब उन्हें सूर फूँकने का हुक्म मिले और वो सूर फूँकें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
और जब दोबारा सूर फूँका जायेगा तो वो दिन (यानी क़यामत) काफ़िरों पर बड़ा सख़्त होगा (और) उन पर हरगिज़ आसान न होगा। (सू0—मुदस्सिर—8,—10)

अल्लाह तआ़ला कुरान मजीद में इरशाद फ़रमाता है—
और (जिस वक़्त दोबारा) सूर फूँका जायेगा तो वो फ़ौरन अपनी क़ब्रों से निकलकर अपने रब की तरफ़ तेज़ी से चलेंगे (और) वो कहेंगे हाय हम बर्बाद हो गये हमें किसने सोते से जगा दिया ये (ज़िन्दा होना) वही तो है जिसका खुदा ए रहमान ने वायदा किया था और रसूलों ने सच फ़रमाया था। (सू0—यासीन—51,—52)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और उन्होंने अल्लाह तआ़ला की क़द्र न जानी जैसा उसका हक़ था और वो क़यामत के दिन समेट देगा सब ज़मीनों को और सब आसमान लपेट दिये जायेंगे और सूर फूँका जायेगा तो जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीनों में हैं सब बेहोश हो जायेंगे सिवाये उसके जिसे अल्लाह चाहेगा फिर जब सूर फूँका जायेगा (तो) वो सब अचानक देखते हुये खड़े हो जायेंगे (सू0—जुमर—67,68)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जब अल्लाह तआ़ला ने मुझे मबऊ़स फ़रमाया तो सूर फूँकने वाले फ़रिश्ते को पैग़ाम भेजा पस उसने सूर को मुँह से लगाया हुआ है और वो इन्तज़ार में है कि कब फूँकने का हुक्म दिया जाये सुनो उस फूँक से डरो। (तारीख़ इब्ने असाकर–3/22)

फिर क़ब्रों से निकलने के बाद तमाम लोग नंगे पाँव नंगे जिस्म मैदाने महशर की तरफ़ तेज़ी से चलेंगे सिवाय अल्लाह तआ़ला के मख़सूस और मुक़र्रब बन्दों के और मैदाने महशर की ज़मीन हमवार (बराबर) होगी उसमें न कोई ऊँच नीच होगी और न कोई टीला होगा और वहाँ रब तआ़ला के अ़र्श के साये के अलावा कोई और साया न होगा और वो ज़मीन दुनियाँ की ज़मीन की तरह न होगी बल्कि उसे बदल दिया जायेगा और लोगों के दिल ख़ौफ़ ज़दा होंगे और आँखें झुकी हुई होंगी और मैदाने महशर में तमाम मख़लूक़ जमा होगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
जिस दिन ज़मीन व आसमान दूसरी ज़मीन से बदल जायेंगे और सब लोग अल्लाह तआ़ला के सामने खड़े होंगे। (सू0–इब्राहीम–48)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
क़यामत के दिन लोगों का हश्र एक सफेद ज़मीन पर होगा जिस तरह छने हुये आटे की रोटी और उसमें किसी के लिये कोई आड़ न होगी। (सही बुख़ारी–2/965)

क़यामत के दिन ज़मीनों आसमानों में कुछ भी बाक़ी न रहेगा और वो अपने अन्दर की हर चीज़ को बाहर निकाल कर फेंक देगी और सितारे झड़ पड़ेंगे और चाँद व सूरज बे नूर हो जायेंगे और चारो तरफ़ अंधेरा छा जायेगा समुन्दर सूख जायेंगे और पहाड़ धुनकी हुई ऊन की तरह उड़ाये जायेंगे और लोग बिखरे हुये पतंगों की तरह होंगे और क़यामत के दिन लोगों की शर्मगाहें खुली होने के बावजूद लोग क़यामत की हौलनाकियों और सख़्त मुसीबतो परेशानी के बाइस उसे देखने से बे नियाज़ रहेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
जब धूप लपेटी जायेगी और जब तारे झड़ पड़ेंगे और जब पहाड़ चलाये जायेंगे और जब वहशी जानवर जमा किये जायेंगें और जब समुन्दर सुलगाये जायेंगे और जब रुहें बदनों से मिला दी जायेंगी और जब ज़िन्दा दफ़न की हुई लड़की से पूछा जायेगा कि वो किस गुनाह के बाइस क़त्ल की गई थी और जब नामे आमाल खोले जायेंगे और जब आसमान जगह से खींच लिया जायेगा और जहन्नुम भड़काई जायेगी और जन्नत पास लायी जायेगी तो हर शख़्स जान लेगा जो कुछ उसने हाज़िर किया है (सू0—तकवीर—1, 14)

इरशादे बारी तआ़ला है—
उस दिन हर शख़्स अपनी—अपनी फ़िक्र में होगा जो उसे (दूसरी तरफ़ देखने से) बे नियाज़ करेगी। (सू0—अ़बस—37)

इरशादे खुदावन्दी है—
हर चीज़ फ़ानी है सिवाये रब तआ़ला की ज़ात के (सू0—क़सस—37)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़यामत के दिन लोग नंगे पाँव नंगे बदन (जिस्म) और ख़त्ना किये हुये उठेंगे और उनको पसीने ने लगाम डाल रखी होगी।
(मुस्तदरक हाकिम—4 / 564)

मैदाने महशर में चीख़ पुकार मची होगी पुल सिरात और मीज़ान क़ायम किया जायेगा और जहन्नुम भड़काई जायेगी और लोगों को उनके आमाल नामे उनके हाथों में दिये जा रहे होंगे और वो उसमें देखेंगे जो उन्होंने दुनियाँ में अच्छे और बुरे काम किये होंगे और लोग सख़्त ख़ौफ़ और परेशानियों में घिरे होंगे सिवाय अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब नेक सालिहीन बन्दों के और वो अल्लाह तआ़ला की रहमत के साये में होंगे और कुछ लोग जहन्नुम में डाले जा रहे होंगे और कितने ही लोग ज़लील व रुसवा होंगे और कितनों की परदा पोशी होगी और कितने ही लोग शर्मसार हो रहे होंगे और बहुत लोग निजात पा जायेंगे और बहुत से लोग अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे और कई लोगों को अल्लाह तआ़ला की रहमत हासिल होगी और हमें अपना पता नहीं कि मेरा हाल क्या होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और एक चिंघाड़ होगी वो सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर हो जायेंगे तो आज किसी जान पर ज़ुल्म न होना और तुम्हें बदला मिलेगा

अपने किये का बेशक जन्नत वाले आज दिल पसन्द मशाग़िल में लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे वो और उनकी बीवियाँ सायों में होंगी तख़्तों पर तकिया लगाये उनके लिये मेवा है और उनके लिये जो माँगे उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुआ (सू0—यासीन—53,—58)

इरशादे बारी तआ़ला है—
दिल दहलाने वाली क्या वो दिल दहलाने वाली और क्या तुम जानते हो दहलाने वाली क्या है वो योमे क़यामत है जिस दिन (सारे) लोग फैले पतंगे की तरह होंगे और पहाड़ धुनकी हुई ऊन की तरह हो जायेंगे पस जिस (के आमाल) के पलड़े हल्के होंगे तो उनका ठिकाना हाविया होगा और क्या तुम जानते हो हाविया क्या है (वो जहन्नुम की) सख़्त दहकती हुई आग (का इन्तिहाई गहरा गढ़ा) है। (सू0—क़ारिया—1,—8)

इरशादे खुदावन्दी है—
हरगिज़ काम न आयेंगे तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद क़यामत के दिन (अल्लाह तआला) तुम्हें इन से अलग कर देगा और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को देख रहा है (सू0—मुम्तहिना—3)

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
और गुमराह लोंगों को हम क़यामत के दिन उनके मुँह के बल उठायेंगे अंधे, गूँगे और बहरे और उनका ठिकाना जहन्नुम है जब कभी (आग) बुझने पर आयेगी हम उसे और भड़का देंगे। (सू0—बनी इसराईल—97)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसने हलाल तरीक़े से दुनियाँ तलब की और (बिला ज़रुरत) भीक मांगने से बचा और अपने पड़ोसी पर रहम किया तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उस शख़्स से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकता होगा (मिश्कात)

मैदाने हश्र में तमाम मख़लूक़ जिन्न, इन्सान, शैतान, जानवर, दरिन्दे, परिन्दे सब जमा होंगे और सूरज उनके बहुत ज़्यादा क़रीब होगा जिसकी गर्मी की शिद्दत के बाइस लोगों के दिमाग़ खौलते होंगे।

और जुबानें सख़्त प्यास की वजह से बाहर को खिंच रहीं होंगी और लोगों के दिल ख़ौफ़ से जल रहे होंगे और हर बाल के नीचे से पसीना बह रहा होगा हत्ता कि वो ज़मीन पर जारी हो जायेगा बाज़ का पसीना उसके घुटनों तक बाज़ का सुरीन और बाज़ का पसीना कानों की लौ तक और कुछ लोग उस पसीने में ग़ायब होने के क़रीब होंगे और लोग चालीस साल तक टकटकी बाँधे खड़े रहेंगे इस दरमियान किसी का हिसाबो किताब न होगा और न मीज़ान क़ायम होगा और लोग ख़ौफ़ ज़दा परेशान हाल खड़े होंगे और मुन्तज़िर होंगे कि अल्लाह तआ़ला लोगों का हिसाबो किताब शुरु करे इस बीच कुछ लोग कहेंगे ऐ मेरे रब मुझे इस मुसीबतो परेशानी और हिसाब के इन्तज़ार से निजात दे और वो दिन पचास हज़ार साल का एक दिन होगा जिसमें तमाम मख़लूक़ का हिसाब होगा।

इसलिये हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआ़ला की राह में इस दुनियाँ में इस क़दर पसीना बहायें ताकि क़यामत के दिन निकलने वाले पसीने और क़यामत की सख़्तियों और तकलीफ़ों से महफ़ूज़ रहें और नमाज़, रोज़ा, हज, जिहाद, मोमिन की हाजत रवाई, नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना और दीगर नेक अ़मल और इबादत में अपना पसीना बहायें ताकि क़यामत के दिन राहत व अमन पायें और क़यामत के दिन मसाइबो आलाम से निजात पायें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
वो अ़ज़ाब का दिन (यानी क़यामत) जिसकी मिक़दार पचास हज़ार बरस है। (सू0—मआ़रिज—4)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़यामत के दिन एक शख़्स को हिसाबो किताब के लिये खड़ा किया जायेगा तो उससे इतना पसीना निकलेगा कि एक सौ प्यासे ऊँट सैराब हो जायें। (मुस्नद अहमद—1/304)

हजरत अबू हुरैरा (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—क़यामत के दिन लोगों को पसीना आयेगा हत्ता कि उनका पसीना ज़मीन में सत्तर हाथ फैल जायेगा और उनके मुँह को बन्द करके कानों तक चला जायेगा।
(सही बुख़ारी—2/967)

हज़रत उकबा बिन आमिर (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—क़यामत के दिन सूरज ज़मीन के क़रीब हो जायेगा तो लोगों को पसीना आयेगा बाज़ लोगों का पसीना उनकी ऐड़ियों तक जायेगा बाज़ का पिन्डली के निस्फ़ तक बाज़ का घुटनों तक पहुँचेगा कुछ का रानों तक और बाज़ का पसीना मुँह तक पहुँचेगा और बाज़ का पसीना उसे ढाँप देगा। (मुस्नद अहमद—4/157)

जिस दिन ज़मीन में ज़लज़ला पैदा होगा और ज़मीन अपने तमाम बोझ बाहर निकाल देगी और जब समुन्दर उबलेंगे उस दिन यानी योमे क़यामत तमाम लोग अपने रब के हुजूर पेश होंगे और उनकी आँखें ख़ौफ़ से खुली हुई और दिल परेशान होंगे और लोग अपने हिसाबो किताब के इन्तज़ार में खड़े होंगे लेकिन रब तआ़ला न उनसे कलाम करेगा और न उनके मामलात में नज़र करेगा और लोग भूके प्यासे बुरे हाल में होंगे उस दिन दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे से ग़ाफ़िल हो जायेगी और हमल वाली औ़रतों का हमल साक़ित हो जायेगा और उस दिन हर शख़्स अपने किये हुये आमाल को अपने सामने पायेगा।

उस दिन कोई किसी के काम न आयेगा माँ बाप औलाद के काम न आयेंगे बीवी ख़ाविन्द से दूर भागेगी भाई—भाई को नहीं पहचानेगा औलाद अपने माँ बाप से दूर भागेगी और उस सख़्त दिन में सबको अपनी—अपनी पड़ी होगी और कोई किसी को नफ़ा न दे सकेगा और उस दिन अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब से बचाने वाला कोई न होगा और कुछ लोगों को जहन्नुम की तरफ़ ले जाया जायेगा और बाज़ को औंधा करके मुँह के बल जहन्नुम में डाला जायेगा।

और ज़ालिमों की माअज़रत भी उन्हें कोई फ़ायदा न देगी और पोशीदा बातें ज़ाहिर होंगी और लोगों की जुबानें गूँगीं कर दी जायेंगीं और उनके जिस्म के आज़ा (अंग) उनके आमालों की गवाही देंगे और मीज़ान (तराजू) क़ायम की जायेगी और जहन्नुम सामने लायी जायेगी और आग भड़काई जायेगी और उस दिन लोगों को सिर्फ़ अपनी फ़िक्र होगी कि किसी तरह अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब से बच जायें लेकिन उस दिन कुछ लोग हंसते खुशियाँ मनाते होंगे और उनके चेहरे रोशन होंगे ये वो लोग होंगे जिन्होंने दुनियाँ की

बजाय आख़िरत को तरजीह दी और अपनी तमाम उम्र अल्लाह तआ़ला व उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी में गुज़ारी होगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—

जब ज़मीन थरथरा दी जायेगी जैसा उसका थरथराना ठहरा है और ज़मीन अपने (तमाम) बोझ बाहर फेंक देगी और आदमी कहेंगे इसे क्या हुआ उस दिन वो अपनी ख़बरें बतायेगी इसलिये कि तुम्हारे रब ने उसे हुक्म भेजा उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ फिरेंगे कई राह होकर ताकि अपना किया दिखायें तो जो एक ज़र्रा बराबर भी नेकी करेगा वो उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा बराबर भी बुराई करेगा वो उसे देखेगा। (सू0—ज़िलज़ाल—1,—8)

इरशादे बारी तआ़ला है—

आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे और (उनके) हाथ हमसे बात करेंगे और उनके पाँव उनके आमाल की गवाही देंगे। (सू0—यासीन—65)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—

फिर जब आयेगी वो (क़यामत) कान फाड़ने वाली चिंघाड़ उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई और अपने माँ बाप और जोरु और बेटों से उनमें से हर एक को उस दिन एक ही फ़िक्र होगी कि वही उसे बस है कितने मुँह उस दिन रोशन होंगे हंसते खुशियाँ मनाते और कितने ही मुँह पर उस दिन गर्द पड़ी होगी उन पर स्याही चढ़ रही होगी ये वही हैं काफ़िर बदकार (सू0—अ़बस—33,—42)

इरशादे बारी तआ़ला है—

तुम तो (गुनाह करते वक़्त) उस ख़ौफ़ से भी पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे कान तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे और तुम्हारी आँखे और तुम्हारी खालें (गवाही देंगी) लेकिन तुम गुमान करते थे कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे बहुत से कामों को नहीं जानता और तुम्हारा यही गुमान जो तुमने अपने रब के बारे में क़ायम किया तुम्हें हलाक कर गया सो तुम नुकसान उठाने वालों में से हो गये हो। (सू0—हामीम सज्दा—22,—23)

इरशादे खुदावन्दी है—

ऐ लोगो अपने रब से डरो बेशक क़यामत का ज़लज़ला बड़ी सख़्त चीज़ है जिस दिन तुम उसे देखोगे हर दूध पिलाने वाली अपने दूध

पीते बच्चे को भूल जायेगी और हमल वाली अपने हमल को साक़ित कर देगी तू लोगों को देखेगा जैसे नशे में और वो नशे में न होंगे कि अल्लाह की मार बड़ी सख़्त होगी। (सू0—हज—1,—2)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अगर माँ बाप का औलाद पर क़र्ज़ होगा तो माँ बाप अपनी औलाद से क़र्ज़ माँगेंगे वो जवाब देगा मैं तो तुम्हारी औलाद हूँ इस जवाब का उन पर कोई असर न होगा बल्कि वो तमन्ना करेंगे कि इस पर हमारा और ज़्यादा क़र्ज़ होता। (तिबरानी)

रोज़े क़यामत हर छोटी बड़ी चीज़ के मुताअ़ल्लिक़ सवाल होगा और लोग कई तरह की सख़्तियों और परेशानियों में मुब्तिला होंगे और उनके तमाम आज़ा (अंग) काँप रहे होंगे और उस वक़्त कुछ लोग तमन्ना करेंगे कि काश मैं ख़ाक हो जाता और कुछ लोग ये तमन्ना करेंगे कि हमारे आमाल हमारे रब के सामने पेश न हों ताकि हम ज़लील व रूसवा होने से बच जायें और बाज़ लोग यूँ कहेंगे ऐ मेरे रब हमें वापस दुनियाँ में भेज दे ताकि हम अच्छे काम करें तो हमें चाहिये कि हम यही गुमान करें कि हमें अल्लाह तआ़ला ने दुनियाँ में वापस भेजा है और हम कसरत से नेक आमाल करें और अल्लाह तआ़ला के फ़रमाबरदार बन्दे बनें ताकि क़यामत के दिन हम गुनाहगारों की फ़ेहरिस्त में खड़े न हों और अल्लाह तआ़ला हमें अपनी रहमत के साये में जगह अ़ता करे।

और दुनियाँ के थोड़े दिनों में ज़्यादा दिनों के लिये तैयारी करें ताकि क़यामत के दिन अपने नेक आमालों का नफ़ा उठायें जिसकी खुशी बे इन्तिहा होगी इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम गुनाहों से तौबा करें और अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के अहकामात पर अ़मल पैरा हो जायें और सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का बताया हुआ रास्ता इख़्तियार करें और उनके फ़ेअ़ल और सुन्नतों पर कसरत से अ़मल करें क्योंकि जब क़यामत के हौलनाक मंजर का तसव्वुर इन्सान को ख़ौफ़ ज़दा कर देता है तो ज़रा सोचो हक़ीक़त में जब वो मंजर हमारी आँखों के सामने होगा तो हमारा क्या हाल होगा।

लेकिन ज़्यादातर लोगों के दिलों में आख़िरत पर ईमान मज़बूत नहीं है इसकी दलील ये है कि दुनियाँ की गर्मी सर्दी और

अपनी ज़िन्दगी की ऐशो इशरत व तमाम राहतों व आराम के लिये हम कई तरह के इन्तज़ामात व कोशिश और तदबीरें करते हैं लेकिन क़ब्र क़यामत व जहन्नुम की गर्मी और निहायत सख़्ती व अज़ाब और बेशुमार मुसीबतों परेशानी का हम इन्तज़ाम नहीं करते और न कोशिश न तदाबीर करते हैं हालाँकि हम आख़िरत का ज़ुबान से इज़हार करते हैं लेकिन हमारे दिल उससे ग़ाफिल हैं और यही ग़फलत हमें बहुत बड़े ख़सारे की तरफ़ ले जा रही है जो हमारी हलाकत का सबब बनेगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
जब आसमान शक़ हो और अपने रब का हुक्म सुने और उसे सज़ावार यही है और जब ज़मीन दराज़ की जाये और जो कुछ उसमें है (उसे बाहर) डाल देगी और खाली हो जायेगी और अपने रब का हुक्म सुने और उसे सज़ावार यही है ऐ आदमी बेशक तुझे अपने रब की तरफ़ ज़रुर दौड़ना है फिर उससे मिलना है तो वो जो अपना नामये आमाल दाहिने हाथ में दिया जायेगा उससे अ़नक़रीब आसान हिसाब लिया जायेगा और (वो) अपने घर वालों की तरफ़ खुशी—खुशी पलटेगा। (सू0—इनशिक़ाक़—1,—15)

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
गोया जिस दिन वो (यानी क़यामत) को देखेंगे तो कहेंगे कि हम तो दुनियाँ में रहे एक शाम या दिन चढ़े। (सू0—नाज़िआत—46)

और कुछ लोग यूँ कहेंगे इरशादे खुदावन्दी है—
ऐ मेरे रब हमने देखा और सुना पस तू हमें लौटा दे ताकि हम अच्छे काम करें। (सू0—सजदा—12)

नबी अकरम सल्लल्लहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़यामत का दिन मोमिन पर आसान होगा हत्ता कि दुनियाँ में फ़र्ज़ नमाज़ की अदायगी से भी थोड़ा वक़्त मालूम होगा।
(मुस्नद अहमद—3/75)

क़यामत के दिन रब तआ़ला के हुक्म से जहन्नुम को लाया जायेगा और वो मख़लूक़ की तरफ़ दहाड़ेगी और जोश मारती हुई उन लोगों की तरफ़ आयेगी जिन्होंने दुनियाँ में अल्लाह तआ़ला की

नाफ़रमानी की होगी और बुरे काम किये होंगे और वो (जहन्नुम) काफ़िर बदकार ज़ालिम और मुजरिमों की तरफ़ चिंघाड़ती हुई आयेगी तो उस वक़्त हालते मन्ज़र क्या होगा जिसका कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता और लोगों के दिल ख़ौफ़ से भरे होंगे और कुछ लोग जहन्नुम में जा गिरेंगे।

उस दिन अल्लाह तआ़ला लोगों से सवाल करेगा कि मैंने तुझे जवानी दी तूने उसे कहाँ खर्च किया मैंने तुझे मुहलत दी उस मुहलत में तूने क्या किया मैने तुझे माल दिया उस माल को तूने कहाँ ख़र्च किया मैने तुझे इ्ल्म के ज़रिये इज्ज़त बख़्शी तूने उस इ्ल्म का क्या किया क़यामत के दिन इन्सान अपनी जगह से हिल न सकेगा जब तक उससे चार बातों की पूछ न हो जाये– 1–उम्र किस काम में गुज़ारी, 2–अपने इ्ल्म पर कितना अ़मल किया, 3–माल कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया, 4–और अपने जिस्म को किस काम में लगाया।

दुनियाँ में लोग अपने घर वालों से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करते हैं और बाज़ लोग तो एसे हैं जो अपने घर वालों की तमाम ख़्वाहिशात को पूरा करने लिये माल कमाने में दिन रात लगे रहते हैं हत्ता कि हराम व हलाल का तमीज़ भी नहीं रखते लेकिन क़यामत के दिन अ़ज़ाब की सख़्ती का आ़लम ये होगा कि अ़ज़ाब में गिरफ़्तार लोग ये आरजू करेंगे कि काश मेरे अ़ज़ाब के बदले मेरी बीवी मेरे बच्चे मेरे भाई मेरे ख़ानदान वालों को अ़ज़ाब दे दिया जाये और मुझे इस अ़ज़ाब से निज़ात (रिहाई) मिल जाये।

और उस दिन अल्लाह तआ़ला अपने नेक सालेह मोमिन बन्दों के गुनाहों की परदापोशी फ़रमायेगा और हर एक शख़्स को आमाल नामा दिया जायेगा जिसमें उसके तमाम आमाल दर्ज होंगे जो इन्सान ने दुनियाँ में किये होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है– वो उसे (यानी क़यामत) को दूर समझ रहे हैं और हम उसे नज़दीक देख रहें हैं जिस दिन आसमान होगा गली हुई चाँदी और पहाड़ ऐसे हल्के हो जायेंगे जैसे ऊन और कोई दोस्त किसी दोस्त से बात

न पूछेगा और उन्हें देखकर मुजरिम आरज़ू करेगा काश इस दिन के अ़ज़ाब के छुटने के बदले में दे दें अपने बेटे और अपनी बीवी और अपना भाई और अपना ख़ानदान जिसमें वो रहता था और जितने ज़मीन में हैं (वो) सब फिर ये बदला देना (क्या) उसे बचा लेगा हरगिज़ नहीं वो तो भड़कती हुई आग है खाल उतार लेने वाली बुला रही है उसको जिसने पीठ दी और मुँह फेरा।
(सू0—मआ़रिज—6,—17)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
रोज़े क़यामत हर मर्द व औ़रत के आमालों के गवाही ज़मीन देगी जिसकी पीठ पर इन्सान ने जो आमाल किये होंगे।
(मुस्नद अहमद व तिर्मिज़ी)

सरवरे कौनने सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
(क़यामत के दिन) अल्लाह तआ़ला तुममें से हर एक से इस तरह सवाल करेगा कि दरमियान में कोई पर्दा हाइल न होगा।
(मुस्नद अहमद—4/377)

रोज़े क़यामत मख़लूक़ को तीन जमाअ़तों में बाँटा जायेगा एक वो होंगे जिनके पास कोई नेकी न होगी तो जहन्नुम से एक सियाह गर्दन निकलेगी और उन लोगों को उचक ले जायेगी और वो जहन्नुम में चले जायेंगे और दूसरी जमाअ़त में वो लोग होंगे जिन पर कोई गुनाह न होगा और एक मुनादी आवाज़ देगा जो लोग हर हाल में अल्लाह तआ़ला की रज़ा पर राज़ी रहे और सब्र व शुक्र पर क़ायम रहे और गुनाहों से बचते रहे और नेक अ़मल करते रहे वो लोग खड़े हो जायें और जन्नत की तरफ़ चल पड़ें।

और तीसरी जमाअ़त में वो लोग होंगे जिनकी नेकियाँ और गुनाह मिले जुले होंगे लेकिन उन्हें मालूम न होगा कि उनके गुनाह ज़्यादा हैं या नेकियाँ ज़्यादा हैं तो उनको ये बात बताने के लिये अल्लाह तआ़ला मीज़ान क़ायम करेगा हालाँकि अल्लाह तआ़ला से ये बात मख़्फ़ी (छुपी) नहीं क्योंकि वो हर ज़ाहिर व पोशीदा का जानने वाला है और वो तमाम मख़लूक़ का हाल जानता है और हर शख़्स के दिलों के राज़ों से बा ख़बर है जो इन्सान करता है या जो करने वाला है अल्लाह तआ़ला उसे बख़ूबी जानता है।

लेकिन वो लोगों को उनके गुनाहों और नेकियों के कम या ज़्यादा होने की पहचान करायेगा।

ताकि माफ़ी के वक़्त उसका फ़ज़्लो करम और अ़ज़ाब के वक़्त उसका अद्ल व इन्साफ ज़ाहिर हो ताकि कोई ये न कहे कि मेरे साथ इन्साफ नहीं हुआ और लोगों की आँखें उस तराज़ू पर लगी होंगी और दिल काँप रहे होंगे और ये वक़्त निहायत ख़ौफ़ का वक़्त होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–
जब हो जायेगी होने वाली उस वक़्त उसके होने में किसी को इन्कार की गुन्जाइश न होगी किसी को पस्त करने वाली और किसी को बुलन्दी देने वाली (यानी क़यामत) जब ज़मीन थरथरा कर काँपेगी और पहाड़ रेज़ा–रेज़ा हो जायेंगे जैसे धूप में गुबार के बारीक फेले हुये ज़र्रे और तुम तीन क़िस्म के हो जाओगे तो दाहिनी तरफ़ वाले कैसे दाहिनी तरफ़ वाले और वाँयी तरफ़ वाले कैसे वाँयी तरफ़ वाले और जो सबक़त ले गये वो तो सबक़त ले गये।
(सू0–वाक़िआ़–1,–9)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और वाँयी तरफ़ वाले कैसे वाँयी तरफ़ वाले जलती हवा और खौलते हुये पानी में जलते धुयें की छाँव में जो न ठन्डी हो न इज़्ज़त की बेशक वो इससे पहले नेअ़मतों में थे और बड़े गुनाह की हट रखते थे और कहते थे जब हम मरकर हड्डियाँ हो जायेंगे तो क्या हम ज़रुर उठायें जायेंगे और क्या हमारे बाप दादा भी तुम फ़रमादो सब अगले और सब पिछले ज़रुर इकट्ठा किये जायेंगे एक जाने हुये दिन की मियाद पर तो ज़रुर थोहड़ के पेड़ में से खाओगे फिर उससे पेट भरोगे फिर उस पर खोलता हुआ पानी पियोगे जैसे सख़्त प्यासे ऊँट पीते हैं ये उनकी मेहमानी है इन्साफ़ के दिन।
(सू0–रहमान–39,–57)

एक दिन नबी अकरम सल्ल्ल्लहु अ़लैह वसल्लम अपना सरे अनवर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि0) की गोद में था कि आप को औंन्घ आ गई इस दौरान उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि0) को आख़िरत की याद आ गई और आप रो पड़ी

हत्ता कि आपके आँसू बह निकले और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के रुख़सार मुबारक पर जा पड़े आप बेदार हुये तो आपने पूछा ऐ आयशा क्यों रो रही हो आपने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह मुझे आख़िरत का ख़्याल आ गया था कि आप क़यामत के दिन अपने घर वालों को याद रखेंगे या नहीं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया उस ज़ात की कसम जिसके कब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि हम ज़रुर याद रखेंगे मगर तीन जगह हर शख़्स अपने आप को याद रखेगा जब तराजू पर (आमाल का) वज़न किया जायेगा हत्ता कि आदमी देखेगा कि उसका तराजू हल्का है या भारी और आमाल नामा मिलने के वक़्त वो देखेगा कि उसका आमाल नामा दाँये हाथ में आता है या बाँये हाथ में और पुल सिरात के पास। (सुनन अबी दाऊद–2/298)

क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला तमाम मख़लूक़ में अद्ल व इन्साफ फ़रमायेगा अगर किसी शख़्स का किसी दूसरे शख़्स पर कोई हक़ बाक़ी है तो उसकी नेकियाँ उस हक़दार को दे दी जायेंगी और अगर उसके पास नेकियाँ कम हुई तो हक़दार के गुनाह उसे दे दिये जायेंगे इस तरह अल्लाह तआ़ला लोगों के दरमियान इन्साफ़ करेगा ताकि किसी पर किसी का कोई हक़ बाक़ी न रहे और सबको इन्साफ़ मिल जाये मिसाल के तौर पर दुनियाँ में किसी शख़्स का किसी दूसरे शख़्स पर क़र्ज़ है और उसने वो क़र्ज़ अदा नहीं किया तो क़यामत के दिन उस क़र्ज़दार को अपनी नेकियाँ उस क़र्ज़ के बदले देनी होंगी इसी तरह जैसे किसी ने किसी की अमानत में ख़्यानत की या किसी को गाली दी या किसी तरह की अज़िय़त (तकलीफ़) पहुँचाई, किसी का हक़ मारा या किसी यतीम का माल खाया, किसी की बेईमानी की या किसी का क़त्ल किया या किसी पर जुल्म व ज़्यादती की वग़ैराह।

तो जिन नेकियों को हासिल करने के लिये हम दुनियाँ में मशक़्क़त उठाते और अपना माल खर्च करते हैं तो वो नेकियाँ हमसे छीन ली जायेंगी और उन्हें दे दी जायेगी जिनके हुक़ूक़ हमारे ज़िम्मे थे और हम नेकियों से खाली हो जायेंगे इसलिये हमें चाहिये कि मरने से पहले अपने गुनाहों से तौबा करें क्योंकि तौबा का मौक़ा वहाँ नहीं मिलेगा और जो फ़राइज़ हमसे छूट गये हैं उन्हें अदा करें और गुनाहों से बचें और कसरत से नेक अ़मल करें।

और जिनके हुकूक़ हमारे ज़िम्मे हैं उन्हें अदा करें और उनसे माफ़ी तलब करें और जिन हुकूक़ों को अदा करना किसी वजह से मुश्किल या नामुमकिन हो तो हमें चाहिये कि ज़्यादा से ज़्यादा नेकियाँ कमायें ताकि क़यामत के दिन उन हक़दारों को दे सकें जिनके हुकूक़ हमारे ज़िम्मे हैं और हम नेकियों से बिल्कुल खाली न हों क्योंकि क़यामत के दिन अल्लाह तआला के सामने हम कोई उज़्र पेश न कर सकेंगे और न हमारी माअज़रत कुबूल की जायेगी और वो दिन इन्तिहाई सख़्त होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
आज हर जान को उसके आमाल का (पूरा) बदला दिया जायेगा (और) आज कोई ना इन्साफ़ी न होगी बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (सू0—मोमिन—17)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मेरी उम्मत का मुफ़लिस (ग़रीब) वो शख़्स है जो क़यामत के दिन रोज़ा, नमाज़, हज, ज़कात (वग़ैराह) के साथ आयेगा लेकिन उसने किसी को गाली दी होगी या किसी का माल खाया होगा या किसी का खून बहाया होगा या किसी को मारा होगा पस उस (हक़दार) को उसकी कुछ नेकियाँ दे दी जायेंगी और दूसरों को भी फिर अगर उसकी नेकियाँ ख़त्म हो गई तो हक़दारों के गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे। (मुस्नद अहमद—2/390)

जिन गुनाहों का तआ़ल्लुक़ हुकूकुल्लाह से है जैसे रोज़ा, नमाज़, हज ज़कात वग़ैराह और अगर हमने इनकी अदायगी में कोताही की या किसी वजह से हम अदा नहीं कर सके लेकिन फिर भी उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला अपने महबूब के सद्क़े और तुफ़ैल हमें माफ़ फ़रमायेगा और अपनी बख़्शिश की रब तआ़ला से उम्मीद की जा सकती है लेकिन जिसके ज़िम्मे लोगों के हुकूक़ हैं और अगर हमने उनकी अदायगी नहीं की या उन हक़दारों से हमने माफ़ी नहीं माँगी या उन हक़दारों ने हमें माफ़ न किया तो वो तब तक माफ़ न होंगे जब तक वो हक़दार हमें माफ़ न कर दें जिनके हुकूक़ हमारे ज़िम्मे हैं लेकिन अल्लाह तआ़ला अपने मख़सूस और मुक़र्रब बन्दों के

गुनाहों को माफ़ कराने के लिये उसके हक़दारों को किसी न किसी तरह राज़ी करेगा और उनके हक़दारों से उन्हें माफ़ी दिलवायेगा इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआ़ला के फ़रमाबरदार बन्दे बनें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की इताअ़त करें ताकि हम भी अल्लाह तआ़ला के मख़सूस और मुक़र्रब बन्दे बन जायें और अपनी इबादत और नेक अ़मल अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करने के लिये इख़लास के साथ करें न कि लोगों को दिखाने के लिये करें।

ख़ालिस अ़मल जो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करने की नीयत से किया जाता है जिसमें बिल्कुल दिखावा न हो वही अ़मल अल्लाह तआ़ला की बारगाह में कुबूल होता है और जो लोग अपने तमाम नेक अ़मल सिर्फ़ रब तआ़ला के लिये करते हैं वही लोग अल्लाह तआ़ला के मख़सूस और मुक़र्रब बन्दे होते हैं और कुछ गुनाह ऐसे भी होते हैं जिन्हें हम छोटा समझते है लेकिन असल में वो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बड़े गुनाह होते हैं इसलिये हमें चाहिये कि हम छोटे–छोटे गुनाहों से भी बचें और उनसे परहेज़ करें कि ना मालूम किस गुनाह पर हमारी पकड़ हो जाये और हम अ़ज़ाब में मुब्तिला कर दिये जायें।

हज़रत अनस (रज़ि0) से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप एक दिन तशरीफ़ फ़रमां थे तो हमने देखा कि आप हंस रहे हैं हत्ता कि आपके दाँत मुबारक नज़र आने लगे हज़रत उमर फ़ारुक (रज़ि0) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों हंसने की वजह क्या है आपने फ़रमाया मेरी उम्मत के दो आदमी अल्लाह तआ़ला के सामने दो ज़ानू हुये उनमें से एक ने कहा ऐ मेरे रब मेरे इस साथी से मेरा हक़ दिलादे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया अपने भाई का हक़ अदा करो उसने कहा ऐ मेरे रब मेरी नेकियों में से तो कुछ भी न बचा अल्लाह तआ़ला ने तलब करने वाले से फ़रमाया इसके पास तो कोई नेकी बची ही नहीं तो उसने कहा ये शख़्स मेरे गुनाह ले ले फिर अल्लाह तआ़ला ने तलब करने वाले से फ़रमाया अपना सर उठाओ और जन्नत में देखो जब उसने जन्नत की तरफ़ देखा और कहा मुझे सोने और चाँदी के बुलन्द महल दिखाई दे रहे हैं जिनमें मोती जड़े हुये नज़र आते हैं और ये किस नबी या सिद्दीक़ या

शोहदा के लिये हैं अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जो इसकी क़ीमत अदा करे उसने अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब इसकी क़ीमत कौन अदा कर सकता है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया तू दे सकता है उसने अ़र्ज़ किया इसकी क़ीमत क्या है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया तू अपने इस भाई को माफ़ कर दे उसने कहा ऐ मेरे रब मैने इसको माफ़ कर दिया फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया अपने इस भाई का हाथ पकड़कर जन्नत में चले जाओ इसके बाद हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया ऐ लोगो अल्लाह से डरो और आपस में सुलह रखो बेशक अल्लाह तआ़ला मोमिनों के दरमियान सुलह कराता है। (मुस्तदरक हाकिम–4/576)

इन होलनाक और दिल दहलाने वाले मन्ज़र के बाद लोगों को पुलसिरात की तरफ़ ले जाया जायेगा और वो जहन्नुम के ऊपर एक पुल है जो तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा बारीक़ है तो जब हम उस तेज़ी और बारीक़ी को देखेंगे जिस पर हमें गुज़रना होगा तो हमारे दिल कितने ख़ौफ़ ज़दा होंगे और इस पुल के नीचे जहन्नुम होगी जिसमें शोले मारती हुई आग होगी और लोग उसमें फ़िसल फ़िसल कर गिर रहे होंगे तो वो मन्ज़र कितना ख़ौफ़नाक होगा।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
पुल सिरात तलवार से ज़्यादा तेज होगी मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतों को फ़रिश्ते इससे बचा लेंगे और उस दिन फ़िसलने वालों की तादाद ज़्यादा होगी। (शुअबुल ईमान–1/331)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि0) से मरवी है हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसललम ने फ़रमाया–कि लोग जहन्नुम के पुल के ऊपर से गुज़रेंगे जिसके दाँये बाँये काँटेदार मुड़े हुये सिरे वाले लोहे होंगे पस कुछ लोग बिजली की चमक की तरह गुज़रेंगे कुछ हवा की तरह कुछ दौड़ने वाले घोड़े की तरह कुछ आम चाल से कुछ घुटनों के बल कुछ सुरीन के बल और कुछ घसिटते हुये पुल के ऊपर से गुज़रेंगे फ़िर शफ़ाअ़त की इजाज़त दी जायेगी (मुस्नद अहमद–3/26)

क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम)

के अलावा सिद्दीक़ीन, शुहदा, उ़ल्मा और अल्लाह तआ़ला के यहाँ जिसे मक़ाम हासिल है उनकी शफ़ाअ़त कुबूल फ़रमायेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
उस दिन किसी की शफ़ाअ़त काम न देगी मगर उसकी खुदाये रहमान ने जिसे इज़्न (व इजाज़त) दे दी है और जिसकी बात से वो राज़ी हो गया है। (सू0—ताहा—109)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जब क़यामत का दिन होगा तो मै तमाम नबियों का इमाम व ख़तीब और उनके लिये शफ़ाअ़त का दरवाज़ा खोलने वाला होऊँगा। (मुस्नद अहमद—5/137)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बेशक मैं क़यामत के दिन ज़मीन पर पड़े हुये पत्थरों और ढ़ेलों की तादाद से ज़्यादा लोगों की शफ़ाअ़त करूँगा (मजमउज्ज़वाइद—10/380)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
मैं औलादे आदम (अ़लैहस्सलाम) का सरदार हूँ लेकिन मुझे इस पर फख़्र नहीं मैं वो हूँ जिसके लिये सबसे पहले क़ब्र खुलेगी मैं सबसे पहले शफ़ाअ़त करूँगा और सबसे पहले मेरी शफ़ाअ़त कुबूल होगी और मेरे ही हाथ में हम्द का झंडा होगा जिसके नीचे आदम (अ़लैहस्सलाम) और सब लोग होंगे। (मुस्नद अहमद—3/2)

क़यामत के दिन जब लोग इंतिहाई सख़्तियों और तकलीफ़ों से गुज़र रहे होंगे फिर वो एक दूसरे से कहेंगे कि तुम्हारी क्या हालत हो गयी है क्या तुम किसी ऐसे शख़्स को तलाश नहीं करते जो रब तआ़ला के यहाँ तुम्हारी सिफ़ारिश करे फिर वो एक दूसरे से कहेंगे कि हज़रत आदम अ़लैहस्सलाम के पास जाओ चुनाँचा फिर वो हज़रत आदम अ़लैहस्सलाम के पास जायेंगे और कहेंगे क्या आप नहीं देखते कि हमारी क्या हालत हो गयी है और हम कितनी मुसीबतो परेशानी से गुज़र रहे हैं आप रब तआ़ला से हमारी सिफ़ारिश फ़रमायें फ़िर हज़रत आदम (अ़लैह0) फ़रमायेंगे आज मेरा रब बहुत ग़ज़बनाक है जो इससे पहले कभी न हुआ और न कभी इतने गज़ब में होगा तुम मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ

फिर वो हज़रत नूह अ़लैहस्सलाम के पास जायेंगे फिर वो हज़रत इब्राहीम अ़लैहस्सलाम के पास जायेंगे फिर वो हज़रत मूसा अ़लैहस्सलाम के पास जायेंगे लेकिन सबके पास यही जवाब मिलेगा मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ मेरा रब आज बहुत ग़ज़बनाक है जो इससे पहले न कभी हुआ और न कभी होगा फिर वो ईसा अ़लैहस्सलाम के पास जायेंगे और उनसे भी यही जवाब पायेंगे कि मेरे अलावा किसी और के पास चले जाओ मेरा रब आज बहुत ग़ज़ब में है फिर ईसा अ़लैहस्सलाम फ़रमायेंगे कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के पास चले जाओ।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया फिर लोग मेरे पास आयेंगे और अ़र्ज़ करेंगे ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम आप अल्लाह तआ़ला के रसूल और आख़िरी नबी हैं हमारी शफ़ाअ़त फ़रमायें आप नहीं देखते कि हमारी क्या हालत हो गयी है और हम किस मुसीबतो परेशानी में हैं फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—पस मैं अ़र्श के नीचे आऊँगा और अपने रब के हुज़ूर सजदा रेज़ हो जाऊँगा।

फिर कहा जायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) अपना सर मुबारक उठायें और माँगे आपको अ़ता किया जायेगा नीज़ शफ़ाअ़त फ़रमायें कुबूल की जायेगी चुनाँचा मैं अपना सर उठाऊँगा और कहूँगा या अल्लाह मेरी उम्मत को बख़्श दे पस कहा जायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) अपनी उम्मत के उन लोगों को जिन पर कोई हिसाब नहीं उन्हें जन्नत के दरवाज़े से दाख़िल कर दें। (सही मुस्लिम—1/111)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
हर नबी के लिये एक मक़बूल दुआ़ होती है और मैंने उस दुआ़ को क़यामत के दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त के लिये छुपाकर रख दिया है। (सही मुस्लिम—1/83)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) से मरवी है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—क़यामत के दिन अम्बियाकिराम (अ़लैह0) के लिये सोने के मुनब्बर होंगे पस वो उन पर बैठेंगे

और मेरा मुनब्बर बाक़ी रह जायेगा मैं उस पर नहीं बैठूँगा बल्कि मैं अपने रब के सामने खड़ा रहूँगा मुझे ये ख़ौफ़ लाहक़ होगा कहीं मैं जन्नत में न चला जाऊँ और मेरी उम्मत पीछे न रह जाये मैं कहूँगा या अल्लाह मेरी उम्मत मेरी उम्मत अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) आप क्या चाहते हैं मैं आपकी उम्मत से क्या सुलूक करुँ मैं कहूँगा ऐ मेरे रब इनका हिसाब जल्द कर दें पस मैं शफ़ाअ़त करुँगा। (मजमउज्ज़वाइद–10/380)

हम मुसलमानों को क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला की रहमत शफ़क़त और बख़्शिश सिर्फ़ हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े और तुफ़ैल और उनकी शफ़ाअ़त के बाइस मिलेगी क्योंकि हमारे पास इतने नेक आमाल नहीं जो हमें जन्नत में ले जाने के लिये काफ़ी हों क़यामत दिन अगर हमारा कोई सहारा होगा तो वो सिर्फ़ प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का सहारा होगा जो हमें जहन्नुम से बचाकर जन्नत में ले जायेंगे बहुत लोग ऐसे होंगे जिन्हें जहन्नुम के हवाले कर दिया गया होगा और वो जहन्नुम के सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे।

लेकिन हमारे आक़ा हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की शफ़ाअ़त के सबब वो जहन्नुम से निकाल लिये जायेंगे अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा जिसके अन्दर एक राई के दाने के बराबर भी ईमान है उसे जहन्नुम से निकाल लो तो ये उन मुसलमानों के लिये कितनी बड़ी खुशी होगी जिसका कोई तसव्वुर भी नही कर सकता।

हमारा मुसलमान होना अल्लाह तआ़ला की सबसे बड़ी रहमत और नेअ़मत है जो हमें सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसललम के सद्क़े और तुफ़ैल में हमें अ़ता हुई है और हमारा मुसलमान होना हमारे लिये बड़े फ़ख़्र की बात है लेकिन हमें भी चाहिये कि जिनकी शफ़ाअ़त का हम दम भरते हैं हम उनकी हर बात मानें और उनके बताये हुये रास्तों पर चलें ताकि क़यामत के दिन हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसललम की हमें कुरबत हासिल हो और उनके नज़दीक जाने में हमें शर्मिन्दगी न हो इसलिये हमें चाहिये कि उनकी सुन्नतों पर अ़मल करें और कसरत से दुरुदो सलाम के नज़राने पेश करें और अल्लाह की इ़बादत और नेक अ़मल के ज़रिये सरवरे कायनात

सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के दिल को खुशी पहुँचायें ताकि उम्मती होने का हक़ अदा हो और हम फख्र से कह सकें कि हम अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दे हैं और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के उम्मती हैं और आख़िरत के अ़ज़ाब से बे फ़िक्र और महफ़ूज़ हो जायें।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ला के यहाँ सौ रहमतें हैं जिनमें से एक रहमत उसने जिन्नों, इन्सानों, परिन्दों, जानवरों और कीड़े मकोड़ों के दरमियान रखी हैं उसी के ज़रिये वो एक दूसरे पर रहम व मेहरबानी करते हैं और निन्नियानवे (99) रहमतों को रोक रखा है उनके ज़रिये क़यामत के दिन वो अपने बन्दों पर रहम फ़रमायेगा।
(सही मुस्लिम–2/356)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन फ़रमायेगा जिस शख़्स ने मुझे एक दिन या एक मक़ाम पर भी याद किया या डरा उसे जहन्नुम से निकाल दो। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब–4/261)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
क़यामत के दिन हर मोमिन को किसी दूसरे दीन का एक शख़्स दिया जायेगा और मोमिन से कहा जायेगा कि ये तेरे बदले दोज़ख़ में जायेगा। (सही मुस्लिम–2/360)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है–
अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन मुसलमान की जगह किसी यहूदी या ईसाई को जहन्नुम में दाख़िल करेगा। (सही मुस्लिम–2/360)

—: सच और हक़ :—

झूठ बोलना गुनाह कबीरा और जहन्नुम में ले जाने वाला अ़मल है और सच व हक़ बात कहना अल्लाह तआ़ला के नज़दीक पसंदीदा अ़मल है और अल्लाह तआ़ला की खुशनूदी हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है और हमेशा सच व हक़ बात कहने वाले शख़्स के दरजात को अल्लाह तआ़ला बुलन्द फ़रमाता है हदीस पाक में है अगर कोई शख़्स किसी हाकिम या बादशाह के सामने हो और उसे मालूम हो कि अगर मैंने इसके सामने सच या हक़ बात कही तो ये हमें क़त्ल कर देगा तो उसे चाहिये कि सच व हक़ बात कहे अगरचा क़त्ल कर दिया जाये तो उसे शहादत का दर्जा मिलेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो इंसाफ़ पर खूब क़ायम हो जाओ (और) अल्लाह तआ़ला के लिये गवाही देने वाले हो अगरचा इसमें तुम्हारा अपना नुकसान हो या माँ बाप का या रिश्तेदारों का और जिस पर गवाही दो (चाहे) ग़नी हो या फ़क़ीर। (सू0—निसा—135)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और जब तुम लोगों मे फ़ैसला करो तो इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो (सू0—निसा—58)

इरशादे खुदावन्दी है—
बेशक अल्लाह तआ़ला इंसाफ़ करने वालों को पसन्द फ़रमाता है (सू0—मायदा—42)

मज़कूरा बाला आयात से वाज़ेह हुआ कि इन्सान को हमेशा सच और हक़ पर क़ायम रहना चाहिये चाहे उसका किसी भी तरह का नुकसान हो क्योंकि थोड़ा सा दुन्यावी नुकसान उसे सच और हक़ के बाइस मिलने वाले अ़ज़ीम सवाब से महरुम कर देता है और इसके साथ—साथ सच व हक़ बात न कहने वाला गुनाहगार हो जाता है और आख़िरत में अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ होता है और जो शख़्स सच व हक़ बात नहीं कहता और झूठ बोलता है और ना इंसाफ़ी करता है तो वो कुछ वक़्त के लिये थोड़ा सा नफ़ा उठाता है और इस गुनाह के बाइस मिलने वाले अ़ज़ाब को भूल जाता है।

जो निहायत सख़्त होगा और क़यामत के दिन वो ज़लील व रूसवा और शर्मसार होगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और जब बात कहो इंसाफ़ की कहो अगरचे तुम्हारे रिश्तेदार का मामला हो (सू0—अनआम—160)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अपने आप को झूठ से बचाओ कि झूठ बोलने वाला बदकार के साथ है और वो दोनों दोज़ख़ में होंगे। (मुस्नद अहमद—1—7)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
झूठ रिज़्क को घटाता है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब—3/596)

अल्लाह तआला सच व हक़ बात कहने वालों को महबूब रखता है और सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम भी उस शख़्स से मुहब्बत करते हैं जो सच और हक़ बात कहता है और नाहक़ और झूठ बोलने वाला शख़्स अल्लाह तआला की नाराज़गी का सबब बनता है और जब बन्दा झूठ बोलता है तो रहमत के फ़रिश्ते उससे दूर चले जाते हैं और वो फ़रिश्ते उससे नफ़रत करते हैं और उसके नामये आमाल में गुनाह लिख देते हैं।

हम अल्लाह तआला के बन्दे हैं और अल्लाह व रसूल पर हमारा ईमान है तो हमें चाहिये कि उनकी फ़रमाबरदारी करें और हमेशा हक़ और सच पर क़ायम रहें चाहे दुनियाँ में हमें कितनी भी बड़ी परेशानी का सामना करना पड़े और जब तक कोई शरई उज़्र न हो तब तक झूठ न बोलें जैसे दो मुसलमान भाइयों की जुदाई या बाहमी झगड़ा हो और उसे ख़त्म कराने के लिये झूठ बोलना जाइज़ है इसी तरह अगर झूठ से क़ौम या मज़हब का कोई शरई फायदा हो या जिहाद के मौक़े पर झूठ बोलना जाइज़ है लेकिन अगर शरई उज़्र न हो तो झूठ बोलना बहुत बड़ा गुनाह है और जो लोग सच व हक़ पर क़ायम रहते हैं तो अल्लाह तआला उनकी इज़्ज़त को बढ़ाता है और उनके इस फ़ेअल के बाइस बेशुमार इनामात अता फ़रमाता है और आख़िरत में इस अमल के सबब बेहतर अज्र अता

फ़रमायेगा सच व हक़ बात कहना अफ़ज़ल जिहाद है और नाहक़ व झूठ बात का कहना अल्लाह व रसूल और कुरान पर कामिल ईमान न होने की दलील है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
झूठ तो सिर्फ़ वो लोग बोलते हैं जो अल्लाह तआ़ला की आयात पर ईमान नहीं रखते। (सू0—नहल—105)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बेशक जब बन्दा झूठ बोलता है तो फ़रिश्ता एक मील दूर चला जाता है क्योंकि झूठ से बू फैलती है। (जामअ़ तिर्मिज़ी—291)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
सबसे अच्छा जिहाद ज़ालिम बादशाह के सामने हक़ बात कहना है (सुनन इब्ने माजा—199)

—: हलाल व हराम और तिजारत :—

हलाल माल को अल्लाह तआ़ला पसन्द फ़रमाता है और हराम माल अल्लाह के ग़ज़ब को बढ़ाता है और हराम माल वो आफ़त है जो दुनियाँ व आख़िरत के लिये वबाले जान है और ये शैतान का जाल है जिसमें वो इन्सान को आसानी से फंसा लेता है और हराम माल कमाने की तरफ़ उसे राग़िब करता है और इन्सान समझता है कि हराम माल कमाकर उसने फ़ायदे का सौदा किया है और वो इस पर खुश होता है लेकिन असल में उसने बहुत बड़े ख़सारे का सौदा किया है जो दुनियाँ व आख़िरत में उसके लिये बहुत बड़े नुकसान और सख़्त अ़ज़ाब का सबब होगा क्योंकि हराम माल की बुनियाद झूठ, फ़रेब, धोका और बेईमानी पर होती है जो गुनाह है या फिर वो किसी की अमानत में ख़यानत करता या किसी का हक़ मारता तो क़यामत के दिन उसे इसका हिसाब देना होगा और अपनी नेकियों को उस माल के बदले उस हक़दार को देनी होगी और माल के बदले नेकियाँ देना कितनी बड़ी हिमाक़त है और अपनी नेकियों को ज़ाया (बर्बाद) करना खुद के नुकसान और हलाक़त का सबब है और नेकियाँ कमाना मुश्किल काम है क्योंकि शैतान हमें नेक काम करने से रोकता है और बुरे काम की तरफ़ राग़िब करता है और हमारा नफ़्स और उसकी ख़्वाहिशात हराम माल के ज़रिये हमें जहन्नुम की तरफ़ ले जाती है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जो आदमी हराम माल कमाता है और अगर उसमें से सद्क़ा करे तो अल्लाह तआ़ला कुबूल नहीं करता और अगर वो हराम माल छोड़कर मर जाये तो वो माल जहन्नुम का सामान बनता है। (बैहक़ी—4/84)

इसलिये हमें चाहिये कि वक़्त और असबाब कैसे भी हों चाहे हमारे मुवाफ़िक़ हों या हमारे ख़िलाफ हों हमें हमेशा हराम माल से बचना चाहिये और सिर्फ़ हलाल माल हासिल करना चाहिये यही हमारे लिय बेहतर है और अक़्लमन्द शख़्स वही है जो हलाल माल कमाये और अपनी दुनियाँ और आख़िरत के लिये फ़ायदे का सौदा करे और बेवकूफ़ शख़्स वो है जो हराम माल कमाये और अपनी दुनियाँ और आख़िरत ख़राब कर ले और नुकसान उठाये और घाटे का सौदा करे

और हलाल रोज़ी कमाने के साथ साथ हमें चाहिये कि हम शरीअ़त के तमाम अहकामात और फ़राइज़ को भी न भूलें और उन पर अ़मल पैरा रहें और अपनी तिजारत के दरमियान नमाज़, रोज़ा वग़ैराह दीगर इबादात और नेक अ़मल का एहतमाम करते रहें और तिजारत और दुन्यावी कामों की मसरुफ़ियत में भी हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफ़िल न हों और हर हाल में हर वक़्त अल्लाह तआ़ला की याद और उसका ख़ौफ़ अपने दिलों में रखें और नेक अ़मल करते रहें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
कुछ लोग वो हैं जिन्हें उनकी तिजारत (ख़रीद फरोख़्त) और सौदा गिरी अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र नमाज़ और ज़कात की अदायगी से नहीं रोकती वो डरते हैं उस दिन से जिसमें उलट जायेंगे दिल और आँखें। (सू0—नूर—37)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स दुनियाँ में रिज़्क हासिल करने में मुब्तिला हुआ लेकिन इस अ़मल ने उसे आख़िरत के अ़मल से न रोका तो क़यामत के दिन उस शख़्स को हिसाब ख़ौफ़ ज़दा नहीं करेगा और न वो किसी परेशानी में मुब्तिला होगा। (कंजुल उ़म्माल—5/832)

सबसे पहले हमें ये बात ज़हन नशीन कर लेनी चाहिये कि हर जानदार ज़मीन पर चलने वाले का रिज़्क अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे करम पर है और इन्सान का जितना रिज़्क उसके मुक़द्दर में होता है वो हर हाल में उस तक पहुँचता है और किसी इन्सान का रिज़्क कोई दूसरा हरगिज़ नहीं खा सकता इसलिये इनसान को चाहिये कि अपने रिज़्क के लिये कोशिश व तदबीर और अपनी क़िस्मत पर हमेशा क़ायम रहे तो जब अल्लाह तआ़ला हर जानदार को रिज़्क अ़ता करता है तो फिर हम क्यों हराम माल कमायें और गुनाहगार बनें और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब का बाइस बनें।

इन्सान चाहे जितना हराम माल जमा करे बिल आख़िर उसे छोड़कर जाना है क्योंकि कफ़न में जेब नहीं होती और उसका छोड़ा हुआ माल उसकी मौत के बाद उसके लिये बे मतलब और बे मायनी

हो जाता है और वो माल उसके वारिसों का ख़ज़ाना होता है तो वो शख़्स कितना बड़ा अहमक़ है जो हराम माल कमाये और अपने वारिसों के लिये छोड़ जाये ताकि वो लोग उस माल पर ऐश करें और खुद उस हराम माल के बाइस क़ब्र में अ़ज़ाब भुगते और क़यामत के दिन उस माल का अल्लाह तआ़ला के सामने हिसाब दे और उस दिन तमाम मख़लूक़ के सामने शर्मिन्दगी और ज़लालत उठाये और जहन्नुम का ईंधन बने।

इसलिये हमें चाहिये कि सच व हक़ और ईमानदारी से माल कमायें और झूठ, धोका, फ़रेब और बेईमानी जो कि शैतान की सिफ़त और उसका जाल है उससे खुद को बचायें और सिर्फ़ ईमानदारी से हलाल रिज़्क कमायें ताकि अल्लाह तआ़ला की रज़ा और खुशनूदी हासिल हो और हमारी नेक व जाइज़ तमन्नायें और दुआ़यें बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल हों और हमारी दुनियाँ और आख़िरत बेहतर और बाख़ैर हो और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब से हम महफूज़ रहें और हमारा ख़ात्मा बा ईमान हो।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सच्चा ताजिर (व्यापारी या दुकानदार) क़यामत के दिन सालिहीन (नेक लोग) व शुहदा के साथ उठाया जायेगा। (जामअ़ तिर्मिज़ी—195)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जो आदमी हलाल रिज़्क की तलब से थक कर शाम करे तो वो रात यूँ गुज़ारता है कि उसकी बख़्शिश हो जाती है और वो सुबह यूँ करता है कि अल्लाह तआ़ला उससे राज़ी होता है।
(मजमउज़्ज़वाइद—4/63)

हज़रत सईद रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आप बारगाहे खुदावन्दी में दुआ़ कर दें कि अल्लाह तआ़ला मेरी हर दुआ़ को कुबूल कर लिया करे तो आपने इरशाद फ़रमाया—हलाल रोज़ी खाओ तुम्हारी हर दुआ़ कुबूल होगी। (मजमउज़्ज़वाइद—10/295)

बाज़ लोग अपनी तिजारत में हलाल हराम का इम्तियाज़ (फ़र्क़) नहीं

रखते और वो इसलिये माल कमाते हैं ताकि वो लोगों पर सबक़त ले जायें और वो ज़्यादा माल कमाने में लगे रहते हैं और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र नहीं करते और माल कमाने की मशग़ूलियत के सबब उनके पास रोज़ा, नमाज़ हज वग़ैराह के लिये उनके पास वक़्त नहीं रहता और माल को बढ़ाने और जमा करने के बाइस वो ज़कात की अदायगी नहीं करते बस यूँ ही थोड़ा बहुत लोगों को दिखाने के लिये ग़रीब मिस्कीन को देते हैं ताकि लोग जानें कि फ़लाँ शख़्स ज़कात ख़ैरात करता है और वो अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफ़िल रहते हैं और रात दिन माल कमाने में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ कर देते हैं।

हालाँकि हर शख़्स जानता है कि वो चाहे सोने और चाँदी के पहाड़ जमा करले या चाहे जितने माल के ख़ज़ाने उसके पास हों बिल आख़िर सब छोड़कर जाना है और माल व सोने और चाँदी से कोई अपनी भूक या प्यास नहीं मिटा सकता बल्कि हर शख़्स वही खाता है जो रब तआ़ला ज़मीन से पैदा करता है और हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की मिल्कियत है हम सिर्फ़ उसका इस्तेमाल करते और दुनियाँ से कूच कर जाते हैं और जो माल इन्सान दुनियाँ में छोड़ जाता है उस माल से वो नफ़ा नहीं उठा सकता और न ही वो उस छोड़े हुये माल का मालिक होता है लेकिन जो माल वो अल्लाह की राह में ख़र्च कर देता है वो माल क़यामत तक उसका साथी और मददगार होता है और उस माल से वो नफ़ा उठाता है और उस माल से वो अल्लाह तआ़ला से बेहतर जज़ा पाता है।

सरवरे कौनेने सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स इसलिये माल कमाता है कि अपने माँ बाप और औलाद को बेनियाज़ करे और खुद भी बेनियाज़ रहे और माँगने से बचे तो वो अल्लाह तआ़ला के रास्ते पर है और जो दूसरों पर तकब्बुर करने और माल बढ़ाने की ग़रज़ से माल कमाता है तो वो शैतान के रास्ते पर है। (मुअ़जम कबीर तिबरानी—19/139)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो आदमी दस दिरहम के बदले एक कपड़ा ख़रीदे और उसमें एक दिरहम हराम का हो तो जब तक उस पर वो कपड़ा रहेगा तब तक अल्लाह तआ़ला उसकी नमाज़ कुबूल नही करता।
(मुस्नद अहमद—2/98)

बाज़ लोग जब रात को सोते हैं तो उन्हें ये फ़िक्र नहीं रहती कि सुबह उठकर वक़्ते फज्र नमाज़ अदा करनी है मस्जिद जाना है कुरान पाक की तिलावत करनी है और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करना है जो हमें रोज़ी देता है खिलाता है पिलाता है पहनाता है और जिसने हमें दुनियाँ में नेअ़मतें अ़ता कीं और वही आख़िरत में जन्नत अ़ता करेगा बल्कि उन्हें माल और तिजारत की फ़िक्र रहती है कि सुबह उठकर जल्दी बाज़ार पहुँचेंगे ताकि ज़्यादा माल कमायें ताकि लोगों में हम मुअ़ज़्ज़ज़ हो जायें और वो ज़्यादा माल कमाने के सबब हलाल व हराम का तमीज़ नहीं रखते और दुनियाँ को तरजीह देते और आख़िरत को भूल जाते हैं और खुद का दुनियाँ में आने का मक़सद सिर्फ़ माल कमाना और उस माल से ऐशो आराम करना ख़्याल करते हैं और इसी में मुब्तिला रहते हैं और दिनो रात हराम माल कमाने के साथ–साथ अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करते हैं।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– ज़मीन पर सबसे अच्छी जगह मस्जिद और सबसे बुरी जगह बाज़ार है और बाज़ार वालों में सबसे बुरे लोग वो हैं जो सबसे पहले बाज़ार जाते हैं और सबसे आख़िर में वापस आते हैं। (मिश्कात–71)

इसलिये हमें चाहिये कि हम सुबहो शाम अपनी तिजारत से मुताअ़ल्लिक़ मुहासिबा (हिसाबो किताब) करें और देखें कि हमसे आज क्या–क्या गुनाह हुये क्या–क्या ग़लतियाँ हुई हैं और जो माल हमने कमाया उसमें हराम माल है या नहीं और अपनी तिज़ारत के दरमियान जो भी हमसे गुनाह या ग़लतियाँ या बुराइयाँ हमसे हुई हों उन्हें दूर करने की हर मुमकिन कोशिश करें।

सिर्फ़ हलाल माल कमायें और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते रहें कि तिजारत के दरमियान हाइल होने वाले गुनाहों और हराम माल कमाने से अल्लाह तआ़ला हमें बचाये और शैतान के शर से महफ़ूज़ रखे ताकि हमारे माल में बरकत हो और हमें चाहिये कि अपने माल को बेचते वक़्त झूठ न बोलें अगर माल में कोई ऐब हो तो ख़रीददार को बतादें और बेईमानी, धोका, फ़रेब और झूठ से कोई सौदा न बेंचे बल्कि अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुताबिक़ तिजारत करें।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
झूठी क़सम से सौदा तो बिक जाता है लेकिन ये बरकत को मिटा देती है। (सही बुख़ारी–1/280)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
किसी सौदा बेचने वाले को ये हलाल नहीं कि उसके ऐब को ज़ाहिर न करे। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/574)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
लालच से बचो इसने तुमसे पहले बहुत लोगों को हलाक किया है। (मुस्नद अहमद–2/191)

इमाम ग़ज़ाली (रह0) फ़रमाते हैं कि हराम गिज़ा खाने वाला शख़्स नेक काम करने से महरुम रहता है और अगर इत्तफ़ाक़न कोई कारे ख़ैर (नेकी का काम) उससे हो जाये तो वो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक मक़बूल व मन्जूर नहीं होता बल्कि रद्द कर दिया जाता है तो ऐसा शख़्स नेक काम के करने में जो वक़्त और कुव्वत सर्फ़ करता है तो उसे बे फायदा मशक़्क़त व मेहनत और वक़्त ज़ाया करने के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) रिवायत है अल्लाह तआ़ला ऐसे शख़्स की नमाज़ कुबूल नहीं करता जिसके शिकम में गिज़ाये हराम पड़ी हो।

—: ख़शीयते इलाही :—
(ख़ौफ़े ख़ुदा)

अल्लाह तआला तमाम ज़मीनों और आसमानों का ख़ालिक़ व मालिक है और कायनात की तख़लीक़ करने वाला और उसके निज़ाम को चलाने वाला और तमाम मख़लूक़ को रिज़्क अता करने वाला परवरदिगार है जन्नत और दोज़ख़ बनाने वाला जज़ा और सज़ा देने वाला हाकिमुल हाकिमीन है और क़ायनात में कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी तसबीह बयान न करता हो और उसके सिवा हर चीज़ फ़ानी है तो जब हर चीज़ का मालिक रब्बुल आलमीन है तो हमें चाहिये कि हम उसकी इबादत करें और उसी का ख़ौफ़ अपने दिलों में रखें और उसकी नाराज़गी और उसके अज़ाब से डरें जिससे कोई बचाने वाला नहीं सिवाय खुद अल्लाह तआला के और अल्लाह तआला का अज़ाब बड़ा सख़्त है जिसका लाखवाँ हिस्सा भी कोई बर्दास्त नहीं कर सकता अगर एक लम्हे के लिये क़ब्र, क़यामत या जहन्नुम के अज़ाब की एक झलक इन्सानों को दिखा दी जाये तो दुनियाँ में इन्सान का जीना दुश्वार हो जाये और वो गुनाह के नाम से भी काँप उठे और हम उस मालिके कायनात के बन्दे हैं इसलिये हमें चाहिये कि उसकी बन्दगी करें और उसके बन्दे होने का सबूत पेश करें और अपने रब के तमाम अहकामात पर अमल पैरा हो जायें और कसरत से नेक अमल करें और ख़ौफ़े दुनियाँ को दिलों में जगह न दें बल्कि सिर्फ़ अपने रब से डरें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
और तुम मुझसे डरो अगर तुम मोमिन हो। (सू0—आले इमरान—175)

इरशादे बारी तआला है—
तुम फ़रमादो कौन तुम्हें रोज़ी देता है आसमान और ज़मीन से और कौन मालिक है तुम्हारे कान और आँखों का और कौन निकालता है ज़िन्दे को मुर्दे से और मुर्दे को ज़िन्दे से और कौन तमाम तदबीरें करता है तो कहेंगे अल्लाह तआला तो तुम फ़रमादो क्यों नहीं डरते (सू0—जुमर—73)

ख़ौफ़े ख़ुदा हमें गुनाह करने से रोकता है और नेक अमल की तरफ़ राग़िब करता है और जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके दिल

अल्लाह के ख़ौफ़ के बाइस लरज़ते हैं और उनकी आँखें अल्लाह की मुहब्बत और ख़ौफ़ के सबब रोती हैं वो जन्नत वाले हैं और अल्लाह तआ़ला ने उन पर दोज़ख़ को हराम कर दिया है और अल्लाह तआ़ला उनकी तमाम ख़ताओं को अपने रहमों करम से माफ़ कर देता है और उन्हें अपना दोस्त रखता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक ज़ालिम एक दूसरे के दोस्त हैं और डर वालों का दोस्त अल्लाह है। (सू0—जासिया—19)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से रोता है वो हरगिज़ जहन्नुम में दाख़िल न होगा। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब—2/271)

जो लोग अल्लाह तआ़ला की रज़ा और उसके ख़ौफ़ के सबब दुनियाँ और लोगों से बे परवाह रहते हैं वही लोग दुनियाँ और आख़िरत में कामयाब होते हैं चाहे लोग उनके मुताअ़ल्लिक़ कुछ भी कहें या उनके बारे में कैसा भी गुमान रखें लेकिन उन्हें तो बस हर वक़्त हर हाल में अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ रहता है और डरते हैं उस दिन से (यानी क़यामत से) कि जब अल्लाह तआ़ला के हुजूर खड़ा होना होगा और अपने तमाम आमाल का हिसाब देना होगा जिस दिन कोई किसी के काम न आयेगा सिवाय उसके नेक आमाल के और वो डरते हैं उस जहन्नुम से जिसका ईधन इन्सान और पत्थर हैं और इस ख़ौफ़ के बाइस वो गुनाहों से बचते हैं और नेक अ़मल करते हैं और उन्हें उनके नेक आमाल के बदले अल्लाह तआ़ला तमाम अ़ज़ाबों से महफ़ूज़ रखेगा और उन्हें जन्नत अ़ता करेगा जिसमें वो हमेशा रहेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और जो अपने रब के हुजूर खड़ा होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोका तो बेशक उसका ठिकाना जन्नत है। (सू0—नाज़िआ़त—40)

और जो लोग अल्लाह से नहीं डरते और जिनके दिल से अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ निकल जाता है तो उनके दिल से आख़िरत का

भी ख़ौफ निकल जाता है और वो गुनाहों की तरफ़ माइल हो जाते है और उसी में मुब्तिला रहते हैं और वो दुनियाँ और जो कुछ उसमें मौजूद है उसी को सब कुछ समझते हैं और वो अल्लाह व रसूल का रास्ता छोड़कर शैतान के रास्ते पर चल पड़ते हैं और उनका हर अ़मल दुनियाँ और दुनियाँ के लोगों के लिये होता है और वो अपनी आख़िरत से बे ख़बर हो जाते हैं और खुद को बहुत बड़ी मुसीबत और हलाकत में डालते हैं और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से नहीं डरता तो उसे दुनियाँ की हर चीज़ ख़ौफ़ ज़दा करती है और जिसका हर अ़मल सिर्फ़ रज़ाये इलाही और दिल में ख़ौफ़े खुदा होता है तो दुनियाँ की हर चीज़ उससे डरती है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से डरता है तो उससे हर चीज़ डरती है और जो ग़ैरुल्लाह से डरे उसे हर चीज़ ख़ौफ़ ज़दा करती है। (शुअ़बुल ईमान—1/483)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स लोगों की नाराज़गी में अल्लाह तआ़ला की रज़ा तलाश करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे मशक़्क़त (सख़्ती) से बचा लेता है और जो आदमी लोगों की रज़ा हासिल करने के लिये अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे लोगों के सपुर्द कर देता है। (मजमउज़्ज़वाइद—10/225)

मज़कूरा बाला अहादीस मुबारका से मालूम हुआ कि हमें हर हाल में सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ अपने दिलों में रखना चाहिये और अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करना चाहिये न कि लोगों की और लोग अगर नाराज़ हो तो बेशक हो जायें लेकिन हमसे हमारा रब कभी न नाराज़ हो हमें ऐसे काम करना चाहिये और हमेशा अपने दिल में अपने रब का ख़ौफ़ रखते हुये उसकी मर्ज़ी और रज़ा के मुताबिक़ हर अ़मल करना चाहिये चाहे हमें कितनी भी मुसीबतो परेशानी का सामना करना पड़े ताकि हमें अल्लाह तआ़ला की कुर्बत (नज़दीकी) हासिल हो और हम अपने हर नेक अ़मल का बेहतर सिला (बदला) पायें और हमारी मग़फिरत हो जाये और हम जन्नत के मुस्तहिक़ बन जायें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और जो अपने रब से डरते हैं उनकी सवारियाँ गिरोह के गिरोह जन्नत की तरफ़ चलाई जायेंगी जब वो वहाँ पहुँचेंगे और जन्नत के दरवाज़े खुले होंगे और (जन्नत) के दरोग़ान (निगरान) उनसे कहेंगे तुम पर सलाम हो तुम खूब रहे तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने को (सू0—ज़ुमर—73)

जब दुनियाँ में हमसे कोई ऐसा गुनाह हो जाता है जो कानूनन जुर्म होता है तो हम गुनाह करने के बाद बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ ज़दा हो जाते हैं और पुलिस के डर से भागे भागे फिरते हैं और हमारा अमन चैन चला जाता है और कानून और पुलिस के ख़ौफ़ के बाइस हम रात को सो नहीं पाते क्योंकि हमारे दिल में उसका डर रहता है कि कहीं अगर पुलिस ने हमें पकड़ लिया तो हमें सज़ा देगी और ज़लील व ख़्वार करेगी और हमें क़ैद करके जेल भेज देगी और हमें मारेगी और पीटेगी।

और अगर किसी तरह हम पुलिस से बच भी गये और अदालत में हाज़िर हो गये तो हमें फिर उस जज का ख़ौफ़ सताता है जो हमारा फ़ैसला करेगा और उस जज के सामने हमारी पेशी होगी और हम ख़ौफ़ ज़दा होंगे कि कहीं जज हमारे गुनाह के सबब हमें सज़ा न दे दे और हमें जेल में क़ैद करदे और हम उस वक़्त जज के सामने कितने डरे हुये होते हैं और हमारी आँखे डर की वजह से डरी हुयी होतीं हैं और हमारा दिल काँप रहा होता है और जिस्म के तमाम आज़ा (अंगो) में अजीब हरकत होती है और उस वक़्त हम तमाम दुनियाँ को भूल जाते हैं और हमारा ज़हन और हमारी निगाहें सिर्फ़ जज के फ़ैसले पर लगी होती हैं कि ना मालूम जज हमारे मुताअ़ल्लिक़ क्या फ़ैसला दे और हमें कौन सी सज़ा सुना दे।

तो जब एक गुनाह के बाइस हमें पुलिस और जज का इतना ज़्यादा ख़ौफ़ रहता है और हम दुन्यावी सज़ा से डरते हैं जो कि सिर्फ़ कुछ मुद्दत की क़ैद है तो ज़रा सोचो हमसे दुनियाँ में हजारों गुनाह सरज़द हुये हैं तो हमें उन हज़ारों गुनाहों के सबब रब तआ़ला के यहाँ क़यामत के दिन मिलने वाली सज़ाओं से

कितना ज़्यादा डरना चाहिये और अपने रब का कितना ज़्यादा ख़ौफ़ रखना चाहिये जो तमाम जहानों का हाकिमुल हाकिमीन है और हमें अपने रब के सामने पेश होना होगा और अपने तमाम आमालों का हिसाब देना होगा और हमारा रब हर शख़्स का फ़ैसला करेगा और हमें अपने-अपने गुनाहों के बाइस जो सज़ा मिलेगी वो इतनी निहायत सख़्त और दर्दनाक होगी जिसके मुक़ाबले दुनियाँ की सज़ा कुछ भी नहीं और आख़िरत की सज़ा इतनी सख़्त है कि जिसका तसव्वुर इन्सान को ख़ौफ़ ज़दा कर देता है तो उसकी हक़ीक़त का आ़लम क्या होगा।

जब हमारे जिस्म को कीड़े-मकोड़े साँप और बिच्छु खा रहे होंगे और हम पूरी तरह से आग में ग़र्क़ हो जायेंगे और खाने को काँटे दार खाना और पीने को खौलता हुआ पानी और पीप और आग और लोहे की जंजीरों में जकड़े हुये होंगे तो उस वक़्त हमारा क्या हाल होगा इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ हमेशा अपने दिलों में रखें और गुनाहों से बचें और अल्लाह व रसूल के मुताबिक़ नेक अ़मल करें और उनके फ़रमाबरदार बनें और जो गुनाह हम से हुये हैं उन गुनाहों की अल्लाह तआ़ला से माफ़ी माँगें और मुस्तक़बिल में कोई गुनाह न करने का अहद करें ताकि क़यामत के दिन जब रब के सामने हमारी पेशी हो तो मेरे रब का फ़ैसला हमारे हक़ में बेहतर हो और हम रब तआ़ला के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहें और जन्नत और उसकी दायमी नेअ़मतों के वारिस बन जायें।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से जिस मोमिन की आँख से आँसू निकलता है चाहे वो मख्खी के पर के बराबर हो अल्लाह तआ़ला उस पर दोज़ख़ हराम कर देता है। (शुअ़बुल ईमान-1/491)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया- जब मोमिन का दिल अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से लरज़ता है तो उससे उसकी ख़तायें इस तरह झड़ जाती हैं जिस तरह दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं। (शुअ़बुल ईमान-1/491)

—: सब्र की फ़ज़ीलत :—

ईमान किसी एक चीज़ का नाम नहीं है बल्कि तमाम इबादात और अ़मलियात के मुकम्मल होने पर ईमान मुकम्मल होता है और सब्र ईमान का निस्फ़ (आधा) और अहम हिस्सा है और अल्लाह तआ़ला की कुर्बत (नज़दीकी) हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है और सब्र दोज़ख़ से आज़ादी का सबब है और जन्नत का रास्ता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सब्र आधा ईमान है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब—4/277)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
सब्र जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है (इसरारुल मरफ़ूआ—145)

इन्सान के लिये सबसे मुश्किल अ़मल सब्र करना है क्योंकि शैतान हमें इस अ़मल के करने से रोकता है और जब वो हमारे नफ़्स पर ग़ालिब आ जाता है तब हमारे लिये सब्र करना बहुत मुश्किल हो जाता है और जो शख़्स अपने नफ़्स पर क़ाबू पा लेता है उसके लिये सब्र करना आसान हो जाता है कुरान मजीद और अहादीस मुबारका में सब्र की बहुत फ़ज़ीलत आयी है अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों को अपने महबूब बन्दों में शुमार करता है और अल्लाह तआ़ला उनके साथ होता है और उनकी मदद फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला जिस बन्दे का साथी और मददगार हो जाये और उसे अपना महबूब बनाले फिर उस बन्दे का मक़ाम और मर्तबा सर बुलन्द हो जाता है और अल्लाह तआ़ला तमाम मुश्किलात से उसे निजात देता है और उसके दरजात को बुलन्द फ़रमाता है और क़यामत के दिन वाक़ेअ़ होने वाली सख़्तियों से वो महफ़ूज़ रहेगा और हिसाब उसे ख़ौफ़ ज़दा नहीं करेगा और अपने सब्र के बाइस वो जन्नत में दाख़िल होगा और अल्लाह तआ़ला साबिरों को पसन्द करता है और उन्हें अपनी रहमत के साये में जगह अ़ता फ़रमाता है

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो बेशक अल्लाह तआ़ला साबिरों (सब्र करने वालों) के साथ है। (सू0—बक़राह—153)

इरशादे बारी तआ़ला है–
सब्र वाले अल्लाह तआ़ला के महबूब हैं। (सू0–आले इमरान–159)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
ना पसंदीदा पर सब्र करने में बहुत भलाई है।
(मुस्नद अहमद–1/307)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जब मैं अपने बन्दे को किसी आज़माइश में डालता हूँ और वो अपनी बीमारी में किसी से शिकवा व शिकायत नहीं करता और सब्र करता है तो मैं उसे पहले से ज़्यादा सेहतमंद करता हूँ और उस पर कोई गुनाह बाक़ी नहीं रहता और अगर मैं उसे मौत दूँ तो उसे अपनी रहमत में छुपा लेता हूँ। (बैहकी–3/375)

सब्र की कई क़िस्में हैं जैसे किसी मुसीबत या परेशानी में सब्र करना और इताअ़त व इ़बादत की मशक़्क़तों पर सब्र करना और नफ़्स को गुनाहों की तरफ़ जाने से रोकने पर पर सब्र करना और नेक अ़मल और इ़बादत में नीयत को रिया (दिखावा) से पाक रखना भी सब्र है और जुबान, दिल नज़र हत्ता कि जिस्म के तमाम आज़ा (अंगो) को गुनाहों से पाक रखना भी सब्र है और किसी की जुल्म व ज़्यादती पर गुस्सा न आना और उसका बदला न लेना भी सब्र है इसके अलावा माल का ज़ाया होना या दीगर दुन्यावी नुकसान या बीमारी वग़ैराह पर किसी से शिकवा शिकायत न करना बल्कि अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना और दिल में ये ख्याल करना कि मेरा रब अगर चाहता तो हमें इससे भी बड़ी परेशानी दे सकता था या इससे भी ज़्यादा हमारा नुकसान हो सकता था या इससे भी ज़्यादा हमारा माल ज़ाया हो सकता था ऐसा गुमान रखना भी सब्र है

और जो इन तमाम बातों पर सब्र करता है वो अल्लाह तआ़ला का मुक़र्रब बन्दा बन जाता है और अल्लाह तआ़ला साबिरों को उनके सब्र पर बे हिसाब अज्र अ़ता फ़रमाता है और सब्र करना हुक्मे इलाही है और जो सब्र नहीं करता गोया वो खुद का और ज़्यादा नुकसान करता है मिसाल के तौर पर अगर हम पर किसी

भी तरह की मुसीबतो परेशानी आ जाये या हम किसी बीमारी में मुब्तिला हो जायें या हमारा माल ज़ाया हो जाये या दीगर नुकसान हो जायें और हम लोगों से उसका शिकवा शिकायत करें तो क्या वो लोग हमारी परेशानी से हमें निजात दिला सकते हैं या हमारी बीमारी को दूर कर सकते हैं या हमारे ज़ाया माल को वापस दिला सकते हैं हरगिज़ वो ऐसा नहीं कर सकते और अगर हम सब्र करेंगे तो अल्लाह हमसे राज़ी होगा और हमारी तमाम मुसीबतो परेशानी को दूर करेगा और हमें सब्र करने के बदले अल्लाह तआ़ला बेहतर सिला अ़ता फ़रमायेगा तो हर मामलात में सब्र करना हमारे लिये बेहतर और अज्र का बाइस है और जो सब्र नहीं करता उसे ख़सारे के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
आप फ़रमादें ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाये और रब से डरे और जिन्होने भलाई की उनके लिये इस दुनियाँ में भी भलाई है और सब्र करने वालों को उनका सवाब भरपूर दिया जायेगा बे गिनती (बे हिसाब)। (सू0—जुमर—10)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और अपने रब के हुक्म पर साबिर रहो। (सू0—दहर—26)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है जो मेरी क़ज़ा (हुक्म) पर राज़ी नहीं और जो मेरी अ़ता पर मेरा शुक्र गुज़ार नहीं उसे चाहिये कि मेरे सिवा कोई दूसरा खुदा तलाश करले। (शुअ़बुल ईमान—1/218) (तारीख़ इब्ने असाकर—6/128)

हर इन्सान को अपनी ख़्वाहिश व मर्ज़ी के मुताबिक़ दुनियाँ में सब कुछ नहीं मिलता किसी न किसी चीज़ की कमी ज़रूर रह जाती है हर इन्सान दुनियाँ में माल, औलाद, बीवी बच्चे ताक़त शक्लो सूरत ज़मीन जायदाद मर्तबा सब कुछ अपने मुताबिक़ चाहता है जो उसे नही मिलता बल्कि अल्लाह तआ़ला जिसे जो चाहता है वो अ़ता करता है और वही उसके लिये बेहतर होता है और अल्लाह तआ़ला

कायनात का ख़ालिक़ व मालिक है और वही उसके निज़ाम को चलाता है और किसको क्या देने और क्या न देने में अल्लाह तआला की हिकमत है अगर हर इन्सान को उसकी ख़्वाहिश और मर्ज़ी के मुताबिक़ दुनियाँ में मिलता तो दुनियाँ का निज़ाम (सिस्टम) बिगड़ जाता और हर इन्सान को ज़िन्दगी जीने में दुश्वारी हो जाती क्योंकि कोई भी शख़्स छोटा या कम दर्जे वाला काम नहीं करता और कोई मजदूरी नहीं करता किसान मेहनत मशक़्क़त उठाते हुये खेतों में ग़ल्ला नहीं उगाता और कोई भी शख़्स गन्दगी साफ़ नहीं करता और कौन हमारे मकानों की तामीर करता और कौन हमारे लिये ज़मीन से पानी निकालता और कौन हमारे लिये पहनने को कपड़े तैयार करता वग़ैराह बहुत से काम ऐसे हैं जिसमें धूप और उसकी शिद्दत को बर्दास्त करना पड़ता है तो उन कामों को कोई भी नहीं करता।

हत्ता कि इन्सान के खाने पीने पहनने और मकानों की तामीरात और सफ़र पर आने जाने के सामान वग़ैराह तमाम चीज़ों का निज़ाम बिगड़ जाता और ये सारे काम इन्सान खुद नहीं कर सकता था और इन्सान को अपनी दुन्यावी तमाम ज़रूरतों को पूरा करना उसके लिये ना मुमकिन हो जाता है और इस तरह दुनियाँ का निज़ाम बिगड़ जाता और इन्सान को अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने में इन्तिहाई व बे शुमार मुश्किलें और परेशानियाँ दरपेश आतीं इसलिये अल्लाह तआला ने इन्सान की भलाई व आसानी और बेहतरी व राहत के लिये तमाम इन्सानों में इख़्तिलाफ़ रखा है जो उसके लिये अल्लाह तआला की रहमत है और अल्लाह तआला किसी के साथ ज़र्रा बराबर भी ना इंसाफ़ी नहीं करता।

अल्लाह तआला ने जिसे ग़रीबी दी या किसी बीमारी में मुब्तिला किया या दीगर परेशानियाँ दी तो उससे आख़िरत में उसी तरह आसान हिसाब लिया जायेगा और अगर मज़कूरा हालातों पर उसने सब्र किया तो वो उसका बेहतर अज्र पायेगा जिसका वो तसव्वुर भी नहीं कर सकता अल्लाह तआला सब्र करने वालों के गुनाहों को नेकियों मे बदल देता है और अल्लाह तआला ने जिसे दुनियाँ में अमीरी व आफ़ियत दी तो अल्लाह तआला उससे उसी तरह हिसाब लेगा इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआला हमें जिस हाल में भी रखे हम उसके शुक्र गुज़ार रहें और हर मुसीबतो परेशानी में सब्र व

तहम्मुल (ज़ब्त) पर मज़बूती से क़ायम रहें और उस पर इस्तिक़ामत हासिल करें ताकि हम इसका बदला पायें और इसी में हमारी भलाई व बेहतरी है और दुनियाँ व आख़िरत में कामयाबी व कामरानी है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वो तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आये और वो तुम्हारे हक़ में बुरी हो और अल्लाह तआ़ला जानता है और तुम नहीं जानते। (सू0—बक़राह—216)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और जो कुछ तुम्हारे पास है वो ख़त्म हो जायेगा और जो अल्लाह तआ़ला के पास है वो बाक़ी रहेगा और ज़रूर सब्र करने वालों को (हम) उनका सिला देंगे। (सू0—नहल—96)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला जिसके लिये भलाई चाहता है उसे तकलीफ़ में मुब्तिला कर देता है। (सही बुख़ारी—2/873)

दुनियाँ आज़माइश का घर है और इन्सान की आफ़ियत (ऐशो आराम) और उसकी मुसीबतो परेशानी में उसकी जाँच होती है कि वो कैसे अ़मल करता है और दुनियाँ में कोई ऐसा शख़्स नहीं जिसे अल्लाह तआ़ला ने आज़माइश में न डाला हो और जो शख़्स इस आज़माइश में ख़रा उतरता है वो अल्लाह तआ़ला के इम्तिहान में पास हो जाता है और वही कामयाबी की मन्ज़िल पर फ़ाइज़ होता है और वो निजात पाने वालों में से हो जाता है और बेशुमार अज्र व इनामात का मुस्तहिक़ बन जाता है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
और ज़रूर हम तुम्हें आज़मायेंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से और खुशख़बरी है उन सब्र वालों के लिये कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो वो कहें कि हम अल्लाह तआ़ला के माल हैं और हमको उसी तरफ़ फिरना है। (सू0—बक़राह—155—156)

इरशादे बारी तआ़ला है—
बेशक तुम्हारी आज़माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में (सू0—आले इमरान—185)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अम्बियाकिराम (अ़लै0) को आज़माइश में डाला गया फिर औलिया इज़ाम को फिर उनके मुशाबा (मिस्ल) को फिर उसके बाद उन जैसे लोगों को आज़माया गया। (मुस्तदरक हाकिम—3/323)

सबसे पहले हमें ये बात ज़हन नशीन कर लेनी चाहिये कि दुनियाँ और जो कुछ उसमें मौजूद है उसका हक़ीक़ी मालिक अल्लाह तआ़ला है और जो नेअ़मतें हमें मयस्सर हुईं हैं उनका बरतना कुछ दिनों का है बिल आख़िर वो नेअ़मतें एक दिन हमसे छिन जायेंगी क्योंकि वो अल्लाह तआ़ला की अमानत है और अगर वो नेअ़मतें हमसे छिन जायें तो हमें किस बात का ग़म करना चाहिये जबकि हक़ीक़तन वो नेअ़मतें हमारी थी ही नहीं जैसे दुनियाँ में हम कुछ माल या कोई चीज़ किसी को वक़्त ज़रूरत देते हैं और फिर कुछ वक़्त के बाद अपना माल या कोई चीज़ जो हमने उसे दी थी तो उससे वापसी का मुतालबा करते हैं और वापस ले लेते हैं जैसे हमने किसी को कुछ रूपया बतौर उधार दिया और कुछ वक़्त बाद उससे वापस ले लिया।

तो वापस करने वाले शख़्स को किसी बात का ग़म या परेशानी नहीं होनी चाहिये क्योंकि वो माल तो उसका था ही नहीं वो तो हमारा था और हमने वापस ले लिया बल्कि उसे तो हमारा एहसान मानना चाहिये कि उसने हमारे माल को कुछ वक़्त तक इस्तेमाल किया इसी तरह हर चीज़ का असल मालिक अल्लाह तआ़ला है अगर वो हमें कोई नेअ़मत अ़ता करे तो हम उसका शुक्र अदा करें और अगर कोई नेअ़मत हमें न मिले तो उस पर सब्र करें और कोई नेअ़मत आकर चली जाये या कोई दुन्यावी नुकसान हो जाये तो हमें चाहिये ग़म न करें बल्कि ये गुमान करें कि ये नेअ़मत तो हमारी थी ही नहीं ये नेअ़मत तो अल्लाह तआ़ला की थी तो हम क्यों और किस बात पर ग़म करें इसी तरह हम सब अल्लाह तआ़ला की अमानत हैं अगर हम में से कोई बच्चा बड़ा या बूढ़ा फ़ौत हो जाये तो ग़मगीन न हो बल्कि सब्र करें और कहें कि फ़ौत

होने वाला तो अल्लाह तआ़ला की अमानत था जो उसने वापस ले लिया और अपनी हर मुसीबतो परेशानी या बीमारी में सब्र करें क्योंकि हर मुसीबतो परेशानी या बीमारी को दूर करना सिर्फ़ रब तआ़ला के दस्ते कुदरत में है न कि किसी इन्सान के इख़्तियार में है जो वो हमारी परेशानी को दूर कर सके तो हर परेशानी में सब्र करें और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें कि अल्लाह तआ़ला हमारी तमाम परेशानियों को अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े और तुफ़ैल दूर फ़रमाये और हमें इससे निजात दे और इसके साथ–साथ हम ये भी गुमान रखें कि दुनियाँ में जो परेशानी या बीमारी हमें मिली है तो हो सकता है कि ये हमारी आज़माइश हो या हमारे गुनाहों की सज़ा हो जो हमें अपने गुनाहों के सबब मिल रही है या फिर हमारी मुसीबतो परेशानी के ज़रिये रब तआ़ला हमारे गुनाहों को मिटा रहा हो और उन्हें नेकी में बदल रहा हो हालाँकि दुनियाँ की बड़ी से बड़ी सज़ा और सख़्त से सख़्त मुसीबत व परेशानी और इन्तिहाई तकलीफ़ ज़दा बीमारी आख़िरत की निहायत सख़्त और दर्दनाक मुसीबतो परेशानी के मुक़ाबले कुछ भी नहीं है और रब तआ़ला जिसको दुनियाँ में उसके गुनाहों की सज़ा देता है तो आख़िरत में उसे उस गुनाह की दोबारा सज़ा नहीं देगा।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ला जिसको उसके गुनाहों के सबब दुनियाँ में सज़ा देता है तो आख़िरत में अल्लाह तआ़ला उसको दोबारा सज़ा नहीं देगा। (सुनन इब्ने माजा–190)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जिसकी चोरी न हो या बीमार न हो तो वो ख़ैर से खाली है।
(कंज़ुल उ़म्माल–11/101)

जो शख़्स रात भर बीमार रहे और सब्र और ज़ब्त से काम ले और अल्लाह का शुक्र अदा करे और ख़्याल करे कि अल्लाह तआ़ला ने हमें जो बीमारी या परेशानी दी है अगर वो चाहता तो इससे भी बड़ी बीमारी या परेशानी हमें दे सकता था क्योंकि हर चीज़ उसके कब्ज़े कुदरत में है तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स के गुनाहों को माफ़ फ़रमां देता है जो मुसीबतो परेशानी हमें मिलती हैं अगर हम दूसरों की मुसीबतो परेशानी पर ग़ौर करें तो हमें अपनी परेशानी

छोटी और कमतर लगेगी और जब हम उस पर सब्र करेंगे तो बेहतर सिला पायेंगे और अगर हम सब्र न करें और लोगों से अपनी मुसीबतो परेशानी के मुताअ़ल्लिक़ शिकवा शिकायत करें तो हमें कुछ भी हासिल न होगा और न हमारी परेशानी कोई दूर कर सकेगा बल्कि सब्र के सबब मिलने वाले सवाब से भी हम महरूम रह जायेंगे इसलिये हमें चाहिये कि हर हाल में हमेशा सब्र पर क़ायम रहें और दुनियाँ में जो भी मुसीबतो परेशानी हमें मिले उसे अपने गुनाहों का कफ़्फ़ारा गुमान करें और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और जो मुसीबतें तुम्हें पहुँचती हैं तो उस (बद आमाली) के सबब से पहुँचती हैं जो तुम्हारे हाथों ने कमायी होती हैं हालाँकि बहुत सी (कोताहियों) को वो माफ़ फ़रमां देता है। (सू0—शूरा—30)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं किसी बन्दे पर उसके माल या उसकी जान या उसकी औलाद पर बला नाज़िल करूँ और बन्दा सब्र और ज़ब्त से काम लेता है तो क़यामत के दिन मुझे इस बात पर हया आयेगी कि मैं उसका हिसाब लूँ और उसके लिये मीज़ान क़ायम करूँ। (अल फिरदौस—3/172)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
दुनियाँ मोमिन के लिये क़ैद खाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है। (सही मुस्लिम—2/407)

हमें हर हाल में साबिर व शाकिर रहना चाहिये और जो हमें अपनी क़िस्मत से मिले उस पर क़नाअ़त करना चाहिये और अपने तमाम मामलात को अल्लाह तआ़ला के सपुर्द कर देना चाहिये यही हमारे लिये बेहतर है और अल्लाह तआ़ला के हर हुक्म और उसकी रज़ा को दिल से तसलीम करें और अल्लाह व रसूल के अहकामात की ताअ़मील व तकमील करें और मेरा रब हमें जिस हाल में भी रखे उस हाल पर हम खुश व राज़ी रहें क्योंकि वो मेरा मालिक और ख़ालिक़ है और हम उसके बन्दे और गुलाम हैं और मेरे तमाम अहवाल के मुताअ़ल्लिक़ मेरे रब का जो फ़ैसला हो हम उस फ़ैसले पर राज़ी रहें और सब्र व शुक्र पर क़ायम रहें जिस तरह बन्दा जब

अपनी माँ के शिकम (पेट) में होता है तो उस वक़्त उसके तमाम मामलात अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार में होते हैं और वही पाक ज़ात उस बन्दे को उसकी माँ के शिकम (पेट) में रिज़्क अ़ता करता है और उसके आज़ा (अंगो) को बनाता है और उसकी हड्डियाँ और उन पर गोस्त चढ़ाता है और उसकी शक्लो सूरत को बनाता है और उसी के हुक्म से उसका दिल और दीगर आज़ा हरकत में आते हैं इसी तरह हमें चाहिये कि अपने दुन्यावी तमाम मामलात को अल्लाह तआ़ला के सपुर्द कर दें और अपनी हर मुसीबतो परेशानी या आफ़ियत और तंगी या फ़राख़ी हर हाल में सिर्फ़ अपने रब पर तवक्कुल रखें और अपने उस हाल को खुशी खुशी कुबूल करें और सब्रो इस्तक़ामत और शुक्र पर हमेशा क़ायम रहें ताकि अल्लाह तआ़ला की रज़ा और खुशनूदी और कुर्बत हमें हासिल हो जो हमारे लिये अल्लाह तआ़ला की रहमतों और राहतों और मशर्रतों का बाइस बने और हमें कामयाबी व कामरानी और फ़राख़ी हासिल हो और जिन चीज़ो के मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह व रसूल ने हमें मुमानियत की है उन चीज़ों से हमेशा इजतिनाब करें और उनसे बचने व दूर रहने की हर मुमकिन कोशिश करें।

और अपने तकलीफ़ ज़दा हालातों पर बारगाहे खुदावन्दी से कभी मायूस व ना उम्मीद न हों बल्कि सिद्क़ दिल से अपने रब से माअज़रत और आ़जिज़ी के साथ दुआ़ करते रहें और अपनी दुआ़ की मक़बूलियत के मुन्तज़िर रहें और यक़ीन रखें कि रब तआ़ला हमारी दुआ़ओं को ज़रुर कुबूल फ़रमायेगा और अपनी तमाम परेशानियों और तंगी के वक़्त अपने रब के लिये हुस्ने ज़न रखें और उसी पर भरोसा रखें कि अल्लाह तआ़ला के सिवा हमारी परेशानियों से हमें कोई दूसरा निजात नहीं दिला सकता और हमारी हाजतों को मेरे रब के सिवा कोई पूरा नहीं कर सकता क्योंकि तमाम इन्सानों की हाजतों की तकमील सिर्फ़ रब तआ़ला के दस्ते कुदरत में है इसलिये सिर्फ़ अपने रब पर मुकम्मल भरोसा रखें और उसी से सवाल करें और अपने रब के सिवा तमाम मख़लूक़ से बे नियाज़ रहें इन्सान पर कभी एक सा वक़्त नहीं रहता और उसमें तबदीली होती रहती है पस हमें चाहिये कि अपनी परेशानी के वक़्त घबरायें नहीं और ना ही अपने दिलों मे ना उम्मीदी को जगह दें और न जल्दबाज़ी करें बल्कि सब्र और ज़ब्त से काम लें और वक़्त व हालातों की तब्दीली का इन्तज़ार करें क्योंकि हर चीज़ का एक

वक़्त मुअ़इयन (मुक़र्रर) होता है और हर चीज़ की एक इन्तिहा होती है जैसे रात सुबह में तब्दील होती है और गर्मी सर्दी में और सर्दी गर्मी में तब्दील होती है और अगर कोई शख़्स रात के वक़्त दिन के उजाले का मुतलाशी हो तो उसे सिर्फ़ तारीकियाँ ही हासिल होंगी और अपने रब से किसी भी हाल में ना खुशी और ना शुक्री का इज़्हार न करें बल्कि उसकी रज़ा पर राज़ी रहें और अपनी तक़्दीर की तल्ख़ी और शीरीं दोनों हालतों में साबिर व शाकिर रहें।

क़ज़ाये इलाही पर इज़्हारे नाराज़गी से ग़ज़बे खुदावन्दी का ख़तरा है रिवायत में है कि किसी नबी ने अपनी किसी तकलीफ़ पर अल्लाह तआ़ला की बारगाह में शिकवा किया तो रब तआ़ला की तरफ़ से वह़ी आई कि तू मेरा शिकवा करता है हालाँकि मैं मज़म्मत और शिकवा का मुस्तहिक़ नहीं हूँ और तू ऐसी ना मुनासिब बात का इज़्हार कर रहा है और मेरी क़ज़ा (हुक्म) पर नाराज़गी का इज़्हार कर रहा है क्या तू ये चाहता है कि मैं तेरी ख़ातिर दुनियाँ बदल दूँ या तेरी ख़ातिर लौहे महफ़ूज़ में तबदीली करदूँ और ऐसी चीज़ तेरे लिये मुक़द्दर कर दूँ जिसे तू चाहे अगरचा मैं उसको न चाहूँ और ऐसी चीज़ तेरे लिये मुहैया करूँ जो तुझे पसन्द हो और मुझे पसन्द न हो मुझे अपनी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम अगर तेरे दिल में आइन्दा कभी इस तरह का ख़्याल गुज़रा तो मैं ज़रुर तुझसे नबूवत का मुक़द्दस लिबास उतार लूगाँ और तुझे नारे जहन्नुम में डाल दूगाँ। इसलिये ज़रा सोचो और होश के साथ ग़ौर करो कि रब तआ़ला अपने नबियों और बरगज़ीदा बन्दों से ऐसी गुफ्तगू फ़रमां कर डाँट रहा है तो हमारे साथ कैसी गुफ्तगू कर सकता है कि जिसने सारी उम्र में सिर्फ़ एक बार शिकवा किया तो उन पर रब तआ़ला के गुस्से और नाराज़गी का ये आ़लम है तो उस शख़्स पर गुस्से और नाराज़गी का आ़लम क्या होगा जो बेसब्री के बाइस चीखे़ और चिल्लाये और जिसकी सारी उम्र शिकवा और शिकायतों में गुज़री हो तो उसका अंजाम क्या होगा।

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि0) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन को जो भी बीमारी या परेशानी या रंजो ग़म या जो भी अज़ि़यत पहुँचती है हत्ता कि उसे काँटा भी लगता है तो अल्लाह तआ़ला इन चीज़ों के ज़रिये उसके गुनाह मिटाता है। (बुख़ारी शरीफ़)

—: शुक्र की फज़ीलत :—

अल्लाह तआ़ला ने हमें बेशुमार नेअ़मतों से नावाज़ा है जिनका शुमार करना नामुमकिन है अगर हम सिर्फ़ अपने जिस्म के आज़ा (अंगों) पर ग़ौर करें जो तमाम नेअ़मतों का मजमुआ़ है और हमारा इन्सान होना और उस पर मुसलमान होना सबसे बड़ी नेअ़मत है और अल्लाह तआ़ला हमारी दुन्यावी ज़रुरतों को फ़राहम करता है और वही पाक ज़ात जो हमें खिलाता पिलाता और पहनाता और वही माल औलाद वग़ैराह अ़ता करता है और उसी पाक ज़ात ने जन्नत और उसकी नेअ़मतें और लज्ज़तें हमारे लिये पैदा फ़रमाई हैं जो हमें हमारे नेक आमाल के सबब हमें अ़ता करेगा इसलिये हमें चाहिये कि हम उस परवर दिगार के शुक्र गुज़ार बन्दे बनें और अपने रब का कसरत से शुक्र अदा किया करें हालाँकि अल्लाह तआ़ला की तमाम नेअ़मतों का शुक्र अदा करने के लिये अगर हम अपनी पूरी ज़िन्दगी सर्फ़ कर दें फिर भी उसका शुक्र अदा नहीं कर सकते क्योंकि उसकी तमाम नेअ़मतों के मुक़ाबले हमारी पूरी ज़िन्दगी का शुक्र एक ज़र्रा बराबर भी नहीं है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
और अगर तुम अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुमार करना चाहो तो नहीं कर सकोगे बेशक अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला मेहरबान है (सू0—नहल—18)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और अ़नक़रीब हम शुक्र करने वालों को उनका सिला देंगे। (सू0—आले इमरान—145)

इरशादे खुदावन्दी है—
अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और ज़्यादा दूँगा और अगर ना शुक्री करोगे तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है। (सू0—इब्राहीम—7)

अगर किसी शख़्स की आँख की रोशनी चली जाये तो उसे एहसास होता है कि आँख कितनी बड़ी नेअ़मत है इसी तरह जिस्म का कोई भी हिस्सा ख़राब हो जाये या जिस्म से जुदा हो जाये तो इन्सान को पता चलता है कि वो कितनी बड़ी नेअ़मत है और इसके अलावा

तमाम नेअ़मतें जो हमें मयस्सर हुई हैं वो सब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की अ़ता कर्दा हैं इसमें किसी ग़ैर का दख़ल नहीं है और न किसी के इख़्तियार में है इसलिये हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआ़ला के शुक्र गुज़ार बन्दे बनें ताकि अल्लाह तआ़ला की रज़ा और खुशनूदी हमें हासिल हो जब हम दुनियाँ में किसी के साथ कोई नेकी या भलाई का काम करते हैं तो वो शख़्स नेकी और भलाई के बदले में शुक्रिया कहता है तो हम उसके शुक्रिया कहने पर बहुत खुश हो जाते हैं और उसे अच्छा शख़्स गुमान करते हैं और मुस्तक़बिल में दोबारा उसके साथ नेकी या भलाई करने के लिये तैयार रहते हैं

तो जब हम किसी के शुक्रिया कहने पर खुश हो जाते हैं और दोबारा उसके साथ भलाई करने का इरादा करते हैं तो ज़रा सोचो जब हम अपने रब का शुक्र अदा करेंगे तो वो हमसे कितना ज़्यादा खुश और राज़ी होगा और हमारा परवरदिगार गफूर व रहीम है जिसकी रहमत और शफ़क़त के हज़ारवें हिस्से का शुमार करना या अंदाजा लगाना नामुमकिन है वो पाक ज़ात तो इतनी रहीमो करीम है कि वो अपने फ़रमाबरदार बन्दों और नाफ़रमान बन्दों को भी नेअ़मतें अ़ता करता है उस मालिके कायनात की रहमत इतनी वसीअ़ है कि जिसमें नेक और बदकार ज़ालिम बन्दों को भी जगह मिलती है जब गुनाहगार ज़ालिम बन्दे अपने रब से अपने गुनाहों की माफ़ी तलब करते हैं और नेक अ़मल करते हैं तो रब तआ़ला उनकी तौबा को कुबूल फ़रमाता है और अपनी रहमत से उन्हें बख़्श देता है और जो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता है तो अल्लाह तआ़ला उससे खुश व राज़ी हो जाता है और शुक्र करने वालों को उनके शुक्र के बदले दुनियाँ व आख़िरत में बेशुमार इनामात से सरफ़राज़ फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला शाकिरों (शुक्र करने वालों) को पसन्द फ़रमाता है और जो लोग उसकी नेअ़मतों पर शुक्र अदा नहीं करते तो अल्लाह तआ़ला उन्हें नापसन्द फ़रमाता है और उनसे नाराज़ रहता है और उनकी नाशुक्री के बाइस अल्लाह तआ़ला उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तिला करेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई पाकीज़ा चीज़ें और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो अगर तुम उसकी इ़बादत करते हो।
(सू0—बक़राह—172)

इरशादे बारी तआ़ला है–
तो अल्लाह तआ़ला की दी हुई हलाल पाकीज़ा रोज़ी खाओ और अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों का शुक्र अदा करो। (सू0–नहल–114)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– खाना खाकर शुक्र अदा करने वाला सब्र करने वाले रोज़दार की तरह हैं। (मुस्नद अहमद–4/343)

अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़लूक़ में इख़्तिलाफ़ रखा है किसी को अमीर बनाया किसी को ग़रीब बनाया किसी को मेहनत व मशक़्क़तों में डाला किसी को ऐशो इशरत में रखा किसी को मुसीबतो परेशानी में मुब्तिला किया और किसी को अ़फियत व फ़राख़ी में रखा और ये तमाम इख़्तिलाफ़ हिकमते इलाही हैं और मख़लूक़ के लिये आसानी व राहत व बेहतरी और अल्लाह तआ़ला की रहमत हैं और अल्लाह तआ़ला हमें जिस हाल में भी रखे हमें उसका शुक्र अदा करना चाहिये ताकि आख़िरत में हम बेहतर जज़ा के पायें।

क्योंकि दुनियाँ की ज़िन्दगी हमेशगी का घर नहीं है बल्कि थोड़े दिनों का बरतना है और हमेशगी का घर तो आख़िरत है जहाँ इन्सान को हमेशा रहना है दुनियाँ रास्ता है मंज़िल नहीं है और हर इन्सान की मंज़िल आख़िरत है और हम मुसाफ़िर हैं जो दुनियाँ के रास्तों पर सफ़र कर रहे हैं और हर मुसाफ़िर वापस अपने घर को आता है तो हमें चाहिये कि हम सिर्फ़ अपने हमेशगी वाले घर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करें और दुनियाँ में हमें जो मिले उस पर रब तआ़ला का शुक्र अदा करें और जो न मिले उस पर सब्र करें और उससे बेपरवाह रहें।

क्योंकि हर चीज़ का बरतना थोड़े दिनों का है और हमेशा दुन्यावी तमाम मामलात में अपने से नीचे वाले लोगों को देखें कि उन पर कितनी मुसीबतो परेशानी है तो हम पर ये हक़ीक़त वाज़ेह हो जायेगी कि हमें अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों से ज़्यादा बेहतर नेअ़मतें अ़ता की हैं तो इस तरह हम अपने रब के शुक्र गुज़ार बन्दे बन जायेंगे जो बड़ा करम करने वाला है इसलिये हमें चाहिये कि चाहे जैसे भी असबाब हों हम अल्लाह तआ़ला का कसरत से शुक्र

अदा करें और अल्लाह व रसूल के अहकामात पर अ़मल पैरा हो जायें और कसरत से नेक अ़मल करें और अपने रिज़्क व नेअ़मतों व तकलीफ़ों और परेशानियों के मुताअल्लिक़ न ग़मगीन हों और न फ़िक्र करें क्योंकि जो कुछ हमारे मुक़द्दर में होगा वो हमें हर हाल में अ़ता होगा उसे कोई दूसरा हासिल नहीं कर सकता चाहे लाख कोशिश करे क्योंकि हर जानदार का रिज़्क अल्लाह तआ़ला के इख़्तियार और उसके ज़िम्मे करम पर है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा (जानदार) नहीं कि जिसका रिज़्क अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे करम पर न हो। (सू0—हूद—6)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स दुन्यावी मामलात में अपने से नीचे वाले लोगों को देखे और दीनी मामलात में अपने से ऊपर वाले लोगों को देखे तो अल्लाह तआ़ला उसे साबिर व शाकिर लिखता है (यानी सब्र करने वाला और शुक्र करने वाला लिखता है) (कंजुल उ़म्माल—3/231)

शुक्र की कई क़िस्में हैं जिसमें सबसे बड़ी व अहम ये है कि तमाम नेअ़मतों को खुदा की दैन समझना शुक्रे ऐन है और हर शख़्स के लिये भलाई चाहना और किसी से किसी भी मामलात में हसद न करना ये दिल का शुक्र है किसी भी तरह की मुसीबतो परेशानी व रंजो अलम या आ़फियत व खुशहाली इन तमाम हालतों में अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाना ये जुबान का शुक्र है और नज़र से किसी ना मेहरम को न देखना और कोई भी बुरी चीज़ न देखना और नज़र को बुरी ख़्वाहिशात से पाक रखना ये नज़र का शुक्र है और अपने जिस्म के आज़ा (अंगों) को नाजाइज़ व हराम कामों से महफ़ूज़ रखना ये जिस्म के आज़ा का शुक्र है नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, सद्क़ा ख़ैरात वग़ैराह नेक अ़मल करना भी अल्लाह तआ़ला का शुक्र है और अगर इसके बरअ़क्स (ख़िलाफ़) कोई काम करता है तो गोया वो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा नहीं करता और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक वो ना शुक्रा और ना पसंदीदा बन्दों में शुमार किया जाता है और वो अल्लाह तआ़ला की रहमत से महरुम रहता है और अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी का सबब बनता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
बेशक अल्लाह तआ़ला उसे राह नहीं देता जो झूठा हो या ना शुक्रा हो। (सू0—जुमर—3)

इरशादे बारी तआ़ला है—
अल्लाह तआ़ला पसन्द नहीं करता ना शुक्रा और बड़ा गुनाहगार। (सू0—बक़राह—276)

इरशादे खुदावन्दी है—
इन्सान हलाक हो वो किस क़दर ना शुक्रा है उसे किस चीज़ से बनाया पानी की बूँद से उसे पैदा किया फिर उसे तरह—तरह के अंदाज़ों पर रखा फिर उसके लिये रास्ता आसान किया फिर उसे मौत दी और क़ब्र में रखवाया फिर जब चाहेगा उसे बाहर निकालेगा (सू0—अ़बस—17,—22)

हर इन्सान की ज़िन्दगी कई तरह के उतार चढ़ाव से गुज़रती है कभी खुशी कभी ग़म कभी आराम कभी तकलीफ़ और इन तमाम हालातों में हर इन्सान को सब्र व शुक्र पर क़ायम रहना चाहिये क्योंकि इन तमाम हालातों में अल्लाह तआ़ला की रज़ा व खुशनूदी और बन्दे की आज़माइश मख़्फ़ी (छुपी) होती है और हमारे ज़हन में कभी ये ख़्याल नहीं आना चाहिये कि हम फ़लाँ चीज़ से महरुम हैं बल्कि हर मुसीबत परेशानी में ये गुमान रखें कि इससे भी बड़ी और सख़्त तर परेशानियाँ हैं जो हमारे रब ने हमें नहीं दीं और कुछ नेअ़मतें ऐसी भी हमारे पास मौजूद हैं जो औरों के पास नहीं हैं और ऐसा गुमान रखना भी अल्लाह तआ़ला का शुक्र है।

बाज़ लोग कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़लाँ शख़्स को बहुत ज़्यादा माल और बहुत सी नेअ़मतें अ़ता की हैं जबकि वो बदकार और ज़ालिम है फिर भी अल्लाह तआ़ला उस पर मेहरबान है और फ़लाँ शख़्स नेक सालेह है और वो कई तरह की परेशानियों में मुब्तिला है और अल्लाह तआ़ला ने उसे ज़्यादा माल और कई तरह की नेअ़मतों से महरूम रखा है और उस पर अल्लाह तआ़ला की मेहरबानी नहीं है तो इस तरह के गुमान बिल्कुल ग़लत और बे बुनियाद होते हैं।

बल्कि इस तरह के तमाम मामलात मशीयते इलाही पर मबनी होते हैं और उनमें कई तरह की हिकमतें छुपी होती हैं जिसे हर शख़्स नहीं समझ सकता है लेकिन रब तआ़ला जिसे इल्म और हिकमत की समझ अ़ता करे वही इस फ़लसफ़े को समझ सकता है अल्लाह तआ़ला किसी को बहुत ज़्यादा नेअ़मतें अ़ता करता है और किसी को मुफ़लिसी में मुब्तिला कर देता और इस तरह अल्लाह तआ़ला दोनों तरह के लोगों की आज़माइश करता है कि कौन कैसे अ़मल करता है और नेक लोगों के उनके गुनाहों के बाइस दुनियाँ में कई तरह की परेशानियाँ देकर अल्लाह तआ़ला उन्हें बा ईमान उठाता है और उनकी परेशानियों के सबब उनके गुनाहों को बख़्श देता है और उनकी आख़िरत बेहतर हो जाती है और वो लोग आख़िरत में अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और अ़ज़ाब से अम्नो अमान में रहेंगें और क़यामत की सख़्तियों से अमन चैन व राहत और आराम पायेंगे और बाज़ ना फ़रमान बदकार को उनकी कुछ नेकियों का बदला जो वो दुनियाँ में करता है अल्लाह तआ़ला उसे दुनियाँ में ही कई तरह की नेअ़मतें देकर पूरा करता है क्योंकि जब नाफ़रमान बदकार शख़्स से दुनियाँ में कोई नेकी सरज़द होती है तो अल्लाह तआ़ला उसे उस नेकी का बदला दुनियाँ में ही दे देता है लेकिन आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं होता है और अल्लाह तआ़ला उसे बदकार व बेईमान उठाता है और आख़िरत के अ़ज़ाबों में मुब्तिला कर देता है।

अल्लाह तआ़ला किसी के साथ ना इंसाफ़ी नहीं करता है अल्लाह तआ़ला किसी को उसके गुनाहों की सज़ा दुनियाँ में देता है और किसी को दुनियाँ में ढ़ील देता है और उसके गुनाहों की सज़ा उसे आख़िरत में भुगतनी होगी तो आख़िरत की सज़ा से दुनियाँ की सज़ा लाख गुना बेहतर है पस हमें चाहिये कि हम इन पोशीदा बातों और हिकमतों मे न पड़ें बल्कि अल्लाह तआ़ला हमें जिस हाल में भी रखे हम सब्र और शुक्र पर क़ायम रहें और हमेशा ये गुमान रखें कि अल्लाह तआ़ला जो करता है वो हर इन्सान के हक़ में बेहतर होता है और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का जानने वाला है और हम कुछ भी नहीं जानते इसलिये हमारा हर हाल में सब्र व शुक्र पर क़ायम रहना ही दुनियाँ व आख़िरत में हमारे लिये बेहतर है और हर इन्सान को अल्लाह तआ़ला एक वक़्त मुक़र्रर तक मुहलत देता है अब बन्दे की मर्ज़ी है चाहे तो अल्लाह

व रसूल का रास्ता इख़्तियार करे और नेक अ़मल करे और दुन्यावी परेशानियों और तकलीफ़ों पर सब्र व शुक्र पर हमेशा क़ायम रहें और अल्लाह तआ़ला की रज़ा व खुशनूदी हासिल करें और अपनी आख़िरत बेहतर बनाये या फिर उस मुहलत में चाहें तो शैतान का रास्ता इख़्तियार करे और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करें और गुनाह व बदकारी करें और सब्र व शुक्र पर क़ायम न रहें और अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करें और अपनी आक़िबत ख़राब करलें हमें हमेशा ये यक़ीन रखना चाहिये कि हर नेक अ़मल का अज्र रब तआ़ला हमें ज़रुर अ़ता करेगा चाहे दुनियाँ में मिले या आख़िरत में मिले और ऐसा यक़ीन रखना मज़बूत ईमान की दलील है और हर वक़्त हर हाल में सब्र व शुक्र पर क़ायम रहना असल ईमान है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–
और अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों के आमाल से बे खबर नहीं बल्कि वो उस दिन तक के लिये मुहलत दे देता है जिस दिन आँखें खुली की खुली रह जायेंगी। (सू0–इब्राहीम–42)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
और उस बात के पीछे न पड़ो जिसका तुम्हें इल्म नहीं।
(सू0–बनी इसराईल–36)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और हम उन्हें इसलिये मुहलत (ढ़ील) देते हैं कि वो और गुनाह में पड़ें और उनके लिये मेरे पास ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।
(सू0–आले इमरान–178)

इरशादे खुदावन्दी है–
और अगर अल्लाह तआ़ला लोगों को उनके जुल्म पर गिरफ़्त करता तो ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़ता मगर उन्हें एक ठहराये हुये वायदे (मुक़र्रर वक़्त तक) मुहलत देता है फिर जब उनका वायदा आयेगा न एक घड़ी पीछे हटेंगे और न आगे बढ़ेगें।
(सू0–नहल–61)

हमें हमेशा ये गुमान रखना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला के सिवा हमें

कोई भी नफ़ा या ज़रर (नुकसान) नहीं दे सकता और हुक्मे इलाही के वग़ैर हमारा कोई भी भला नहीं कर सकता और अ़ताये इलाही के वग़ैर हमें कोई भी नेअ़मत नहीं मिल सकती और हमारी मुसीबतो परेशानी या आ़फियत (अमन चैन आराम) भी रब तआ़ला की मर्ज़ी और क़ज़ा में है

और वो जिसे चाहता है उसे वही मिलता है और उसकी अ़ता से ही हर बच्चे का रिज़्क उसके वालिदैन को मिलता है जिससे उसकी परवरिश होती है और हक़ीक़त में हम अपनी जानों और मालों के सिर्फ़ अमीन (अमानतदार) हैं और हर चीज़ का असल मालिक सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला है और जो चीज़ हमें लोगों से हासिल होती है वो भी रब तआ़ला के हुक्म से होती है।

और हमें चाहिये कि अपनी तमाम नेअ़मतों को अपनी ताक़त व कुव्वत की तरफ़ या किसी ग़ैर की तरफ़ या अपनी कोशिश व तदबीर या तिजारत की तरफ मन्सूब न करें बल्कि सिर्फ़ अपने रब की तरफ़ मन्सूब करें और कहें कि ये मेरे रब का फ़ज़्लो करम है और तंगी व फराख़ी दोनों हालतों में अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहें और सब्र व शुक्र पर क़ायम रहते हुये अल्लाह तआ़ला के अहकामात पर अ़मल पैरा हो जायें।

जब अल्लाह तआ़ला हमें दुनियाँ की नेअ़मतों से महरुम रखे और हमारी मुसीबतो परेशानी में इज़ाफ़ा करे तो हमें चाहिये कि अल्लाह तआ़ला पर मुकम्मल एदक़ाद (अक़ीदा, यक़ीन और भरोसा) रखें और हुस्ने ज़न के साथ गुमान करें कि अल्लाह तआ़ला हमें सिराते मुस्तक़ीम पर चलाना चाहता है और अपनी बारगाह में मेरी इज़्ज़त और मरातिब को बढ़ाना चाहता है और इन असबाब के ज़रिये मेरी इस्लाह कर रहा है जो हमारे लिये बाइसे ख़ैर है और हमें अल्लाह तआ़ला का एहसान मन्द और शुक्र गुज़ार होना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला हमें दुन्यावी लज़्ज़ात से दूर रख कर हमें गुनाहों से महफूज़ रखना चाहता है और हमारी नेकियों का कसीर सवाब अ़ता करना चाहता है और आख़िरत में मुक़र्बीन के दरजात पर फाइज़ करना चाहता है।

—: तवक्कुल :—

तवक्कुल का माना और मफ़हूम ये है कि अपनी ज़ुबान के साथ—साथ अपने दिल से भी अल्लाह तआला की तौहीद का इक़रार करना और अल्लाह तआला पर कामिल (मुकम्मल) यक़ीन (भरोसा) रखने का नाम तवक्कुल है और अल्लाह तआला के हर हुक्म पर राज़ी रहना और अल्लाह तआला जिस हाल में भी रखे उस हाल पर साबित क़दमी रहना और सब्र व शुक्र पर इस्तिक़ामत पाने का नाम तवक्कुल है और कामिल ईमान के लिये तवक्कुल का होना शर्त है बग़ैर तवक्कुल के किसी का ईमान मुकम्मल नहीं हो सकता और जिस शख़्स के अन्दर तवक्कुल की सिफ़त पाई जाये तो वो कामिल ईमान वाला है और वो अल्लाह तआला का मुक़र्रब और महबूब बन्दा है और अल्लाह तआला तवक्कुल करने वाले शख़्स से मुहब्बत करता है और उसे अल्लाह तआला की नज़दीकी हासिल होती है और तवक्कुल के सबब बन्दा उस मक़ाम पर फाइज़ होता है जहाँ उसका तआल्लुक़ रब तआला से जुड़ जाता है और उसकी दुआयें बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल होती हैं और वो अल्लाह तआला के ग़ज़ब से महफूज़ रहता है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाता है—
बेशक तवक्कुल वाले अल्लाह तआला के महबूब (बन्दे) हैं बेशक अल्लाह तआला तवक्कुल करने वालों से मुहब्बत करता है। (सू0—आले इमरान—159)

इरशादे बारी तआला है—
अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम ईमान वाले हो। (सू0—मायदा—23)

इरशादे खुदावन्दी है—
और अल्लाह तआला पर ही मोमिनों को भरोसा करना चाहिये। (सू0—इब्राहीम—11)

तौहीद की बुनियाद तवक्कुल है यानी अल्लाह एक है जो तमाम जहानों का मालिक व ख़ालिक़ है और कायनात की हर एक चीज़ उसके हुक्म के ताबेअ़ है ज़मीनों और आसमानों में ज़र्रा बराबर भी

कोई चीज़ हरकत करती है तो उसे उसकी ख़बर है बग़ैर हुक्मे इलाही के कायनात में कोई भी चीज़ हरकत नहीं कर सकती वो ही तमाम जहानों को पालने वाला और उसके निज़ाम को चलाने वाला एक अकेला ख़ालिक़ व राज़िक है जो हर जानदार पर अपना फ़ज़्लो करम करता है और उन्हें रिज़्क अ़ता फ़रमाता है इसलिये हमें चाहिये कि सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर ही तवक्कुल रखें क्योंकि वो ही ज़मीनों और आसमानों के तमाम ख़ज़ानों का मालिक है।

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से उस माँ से भी ज़्यादा मुहब्बत और शफ़क़त करता है जो माँ अपने बच्चों से करती है इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआ़ला पर हम तवक्कुल रखें और अपने तमाम मामलात को रब तआ़ला के सपुर्द कर दें चाहे अल्लाह तआ़ला हमें ऐशो इशरत में रखे या मुसीबतो परेशानी या रंजो अलम में मुब्तिला रखे चाहे तो रिज़्क दे चाहे तो रिज़्क न दे चाहे तो भूका रखे चाहे तो सेर होकर खिलाये यानी हर हाल में अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल रखें और अपने किसी भी हाल पर ग़मगीन न हों और न खुद को कभी मायूस करें बल्कि अपने रब पर भरोसा रखें क्योंकि वही पाक ज़ात है जो हमें तमाम मुश्किलात से निजात दिला सकती है और अपने रिज़्क की तंगी के वक़्त परेशान न हों बल्कि रब तआ़ला पर भरोसा रखें क्योंकि हर जानदार के रिज़्क का वक़्त मुअ़इयन है जो वक़्त मुक़र्ररा पर उस तक ज़रूर पहुँचता है।

जो लोग अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल (भरोसा) करते हैं वो अपनी दुन्यावी तमाम मुश्किलात से निजात पाते हैं और उनकी दुनियाँ व आख़िरत दोनो तवक्कुल के बाइस बेहतर हो जाती हैं और वो बुलन्द मक़ाम पर फाइज़ हो जाते हैं और अ़ज़ाबे इलाही से अमान पाते हैं और उन्हें सिराते मुस्तक़ीम की सआ़दत का शरफ़ हासिल होता है वो जन्नत के मुस्तहिक़ हो जाते हैं और जो शख़्स दुनियाँ और दुनियाँ के असबाब पर तवक्कुल (भरोसा) करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे दुनियाँ से जोड़ देता है जो उसका किसी भी तरह का कुछ भी भला नहीं कर सकती क्योंकि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई किसी का भला नहीं कर सकता इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम मामलात में हर मुमकिन कोशिश व तदबीर पर क़ायम

रहते हुये सिर्फ़ रब तआ़ला पर तवक्कुल करें जैसा कि तवक्कुल करने का हमें हक़ है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–
और जो अल्लाह से डरे तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये निजात की राह निकाल देगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क देगा जहाँ उसका गुमान भी न हो और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह तआ़ला उसे काफ़ी है। (सू0–तलाक़–2,–3)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स सबसे तआ़ल्लुक़ तोड़कर अल्लाह तआ़ला से तआ़ल्लुक़ जोड़ता है तो अल्लाह तआ़ला उसे हर मशक़्क़त में किफ़ायत करता है और उसकी ज़रूरतों को पूरा करता है और उसे वहाँ से रिज़्क अ़ता करता है जिस जगह से उसका गुमान भी नहीं होता और जो शख़्स दुनियाँ से तआ़ल्लुक़ जोड़ता है तो अल्लाह तआ़ला उसे दुनियाँ के सपुर्द कर देता है। (शुअ़बुल ईमान–2/28)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
अगर तुम अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करो तो वो तुम्हें इस तरह रिज़्क देगा जैसे परिन्दों को रिज़्क अ़ता फ़रमाता है। (मुस्नद अहमद–1/30)

सरवरे कौनेन सल्लल्लहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
जो बन्दों से इज्ज़त तलब करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे ज़लील करता है। (कंज़ुल उ़म्माल–9/77)

आ़फ़ियत व मसाइबो आलाम में हर इन्सान की पहचान की जाती है कि इन दोनो हालतों में वो किस हद तक तवक्कुल पर खुद को क़ायम रखता है और हर इन्सान के लिये राहत व मशर्रत व अमन चैन अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रहमत व आज़माइश हैं लेकिन इन तमाम हालातों में इन्सान के लिये साबित क़दमी रहना मुश्किल होता है और इन्सान समझता है कि हम पर अल्लाह तआ़ला की बहुत ज़्यादा रहमत और मेहरबानी है जो हमें अल्लाह तआ़ला ने बहुत ज़्यादा नेअ़मतों से नवाज़ा है और हमें आ़फ़ियत और मशर्रत

में रखा है लेकिन वो अपनी इन तमाम हालतों में अपनी आज़माइश को भूल जाता है और शैतान उसे बहकाता है जिसके बाइस वो अपने दिल में ये गुमान करता है कि ये सब कुछ मेरी मेहनत व मशक़्क़त और मेरी कोशिशों का नतीजा है और उसका नफ़्स उसे इस बात पर मुतमईन कर देता है और वो अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करना छोड़ देता है और वो दुनियाँ और उसके असबाब पर तवक्कुल (भरोसा) करता है और वो अल्लाह तआ़ला के बजाय दुनियाँ से वाबस्ता हो जाता है और वो बहक जाता है और अपनी तमाम नेअ़मतों को अल्लाह तआ़ला का अ़तिया गुमान नहीं करता और इस तरह वो अल्लाह तआ़ला का ना शुक्र हो जाता है और अपने बेहतर हालातों पर वो तकब्बुर करने लगता है और वो गुनाहों की तरफ़ माइल हो जाता है और बड़ा गुनाहगार बन जाता है।

इसी तरह हर मुसीबतो परेशानी या रिज़्क की तंगी या किसी बीमारी वग़ैराह में भी अल्लाह तआ़ला की रहमत व आज़माइश होती है क्योंकि हर परेशानी इन्सान के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है कि बन्दे के गुनाह उसकी परेशानियों के सबब मिटाये जाते हैं और उसकी आज़माइश की जाती है और अल्लाह तआ़ला देखता है कि बन्दा अपनी तमाम परेशानियों में मुझ पर तवक्कुल रखता है या नहीं रखता और वो सब्र करता है या नहीं करता और अगर वो अपनी तमाम मुसीबतो परेशानी में सब्र पर क़ायम रहते हुये अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल (भरोसा) रखता है तो वो अपनी आज़माइश में पास हो जाता है और इसके सबब उसकी बख़्शिश हो जाती है।

इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम मामलात को अल्लाह तआ़ला के सपुर्द कर दें और अपने इख़्तियार में कुछ भी न रखें और अपनी तमाम मुसीबतो परेशानी के लिये अपने रब से दुआ़ करें क्योंकि हमें हमारी परेशानियों से सिवाये रब तआ़ला के कोई भी निजात नहीं दिला सकता और यही हमारे हक़ में बेहतर है हदीस पाक में हैं कि एक दिन का बुखार एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है मज़कूरा हदीस से मालूम हुआ कि हर परेशानी अल्लाह तआ़ला की रहमत है जिसके ज़रिये इन्सान के गुनाहों को मिटाया जाता है इसलिये हमें चाहिये कि आ़फ़ियत और मशर्रत के वक़्त भी अपने रब को याद रखें और तमाम नेअ़मतें जो हमें मयस्सर हुई हैं

उन नेअ़मतों को अल्लाह तअ़ाला का अ़तिया गुमान करें और इसी तरह मुसीबतो परेशानी रंजो अलम व रिज़्क़ की तंगी में भी अल्लाह तअ़ाला की रहमत गुमान करें और सब्र करें ताकि हमारे गुनाहों की बख़्शिश हो और हमारी मग़फिरत हो जाये और इन दोनो हालतों में अल्लाह तअ़ाला पर तवक्कुल रखें और अपनी तमाम परेशानियों में हर मुमकिन कोशिश और बेहतर तदबीरें करना न छोड़े जैसा कि किसी बीमारी में दवाई का इस्तेमाल करना ज़रुरी है इसी तरह अपने हर मामलात में अच्छी कोशिश और बेहतर तदबीर करना हम पर वाजिब है और इसके साथ–साथ सिर्फ़ और सिर्फ़ रब तअ़ाला पर तवक्कुल रखें।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अल्लाह तअ़ाला अपने बन्दों को आज़माइश में डालकर उसकी जाँच करता है जिस तरह तुम में से कोई एक सोने को आग में डालकर जाँचता है तो उनमें से बाज़ कुन्दन और बाज़ उसमें कम दर्जे का सोना बनकर निकलता है और उनमें से बाज़ तो काले जले हुये होते हैं। (मुस्तदरक हाकिम–4/314)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है ऐ अल्लाह के बन्दो दवाई का इस्तेमाल किया करो बेशक अल्लाह तअ़ाला ने बीमारी और इलाज दोनो को पैदा फ़रमाया है। (सुनन अबी दाऊद–2/183)

हदीस पाक में आता है कि अल्लाह तअ़ाला जब किसी शख़्स की दो आँखें लेता है (यानी दुनियाँ में जो अन्धा होता है) तो सवाब के तौर पर अल्लाह तअ़ाला उसे जन्नत अ़ता करने से कम पर राज़ी नहीं होता मज़कूरा हदीस मुबारका इस बात पर दलालत करती है कि इन्सान की दुन्यावी हर परेशानी में बेशुमार फ़ायदे हैं जो उसके लिये दुनियाँ व आख़िरत में भलाई व बेहतरी का सबब होते हैं और इन्सान का तवक्कुल उसके लिये राहतो मशर्रत व कामयाबी व कामरानी का बेहतरीन ज़रिया है पस हमें चाहिये कि जिस तरह कायनात की हर चीज़ उसके ताबेअ़ है उसी तरह हम भी पूरी तरह से अल्लाह तअ़ाला के हुक्म के ताबेअ़ हो जायें और अल्लाह तअ़ाला के फ़रमाबरदार बन्दे बन जायें और उसी पर भरोसा करें और

अल्लाह तआ़ला हर तकलीफ़ो परेशानी के बाद राहत देता है और हर परेशानी के सबब गुनाह मिटाता है और हर परेशानी पर सब्र के सबब अज्र अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करने और उसके हर हुक्म पर राज़ी रहने के सबब अल्लाह तआ़ला बेशुमार इनामात अ़ता फ़रमाता है इसलिये हमें हर हाल में अल्लाह तआ़ला पर ही तवक्कुल करना चाहिये चाहे कितनी भी मुश्किलात से हमें गुज़रना पड़े क्योंकि हो सकता है थोड़ी सी परेशानी पर अल्लाह तआ़ला पर हमारा तवक्कुल हमारी निजात व बख़्शिश का ज़रिया बन जाये और वो हमसे खुश व राज़ी हो जाये क्योंकि अल्लाह तआ़ला निहायत मेहरबान और बड़ा बख़्शने वाला रहीमो करीम है जो हमें हर तकलीफ़ो परेशानी पर सब्र व तवक्कुल के सबब बहुत ज़्यादा अज्र व इनाम अ़ता फ़रमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (सू0—इनशिराह—5,—6)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क्या तुम चाहते हो कि तुम भटके हुये गधों की तरह हो जाओ कि तुम्हें कोई बीमारी न आये। (शुअ़बुल ईमान—7/164)

जब किसी बन्दे का मुकम्मल एतमाद (भरोसा) मख़लूक़ से मुनक़ताअ़ हो जाता है और अल्लाह तआ़ला से वाबस्ता हो जाता है तो उस बन्दे पर अल्लाह तआ़ला की बेशुमार रहमतों का नुजूल होता और उसे वो सब कुछ हासिल होता है जिसका वो तसव्वुर भी नहीं कर सकता और उसे वो नेअ़मतें, व राहतें और मशर्रतें मयस्सर आती हैं जो उसके गुमान में भी नहीं होतीं फिर उसे न कोई ग़म रहता और न कोई परेशानी रहती और फिर वो अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी हासिल करता है और अल्लाह तआ़ला का मख़सूस व मुक़र्रब बन्दा बन जाता और दुनियाँ व आख़िरत में वो आला मक़ाम पर फाइज़ हो जाता है इसलिये हमें चाहिये कि अपने तल्ख़ व तुर्श हालातों और मुसीबतो परेशानी के वक़्त सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल (भरोसा) रखें क्योंकि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई भी हमारे तल्ख़ व तुर्श हालातों में तबदीली नहीं ला सकता।

—: अल्लाह व रसूल की मुहब्बत :—

अल्लाह तआ़ला बुलन्द व बाला है और उस पाक ज़ात की तारीफ़ तमाम तारीफ़ों में अफ़ज़ल व आला है अगर तमाम इन्सान और तमाम जिन्न मिलकर भी रब तआ़ला की तारीफ़ व तौसीफ़ करें तो उस पाक परवर दिगार की तारीफ़ व तौसीफ़ के कलिमात कभी ख़त्म न होंगे और उनकी तमाम ज़िन्दगी ख़त्म हो जायेगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
आप फ़रमां दीजिये अगर समुन्दर मेरे रब के कलिमात लिखने के लिये रोशनाई हों तो मेरे रब के कलिमात ख़त्म न होंगे और समुन्दर ख़त्म हो जायेंगे। (सू0—कहफ़—109)

इरशादे बारी तआ़ला है—
वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माअ़बूद नहीं (हक़ीक़ी) बादशाह है हर ऐब से पाक है और सलामती देने वाला है अमन व अमान देने वाला हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इज़्ज़त व अ़ज़मत देने वाला सल्तनत व किब्रियाई वाला है। (सू0—हश्र—23)

इरशादे खुदावन्दी है—
(ऐ मेहबूब मुकर्रम) आप फ़रमादें वो अल्लाह है जो एक है अल्लाह तआ़ला सबसे बेनियाज़ है न उसकी कोई औलाद और न वो किसी से पैदा हुआ और न ही कोई उसका हमसर है। (सू0—इख़लास)

अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत ईमान है और उससे बेहद मुहब्बत ईमान की जान और ईमान की कमाले इन्तिहा है और मुहब्बते इलाही के वग़ैर हर दिल मुर्दा है और उसका ईमान महज़ दिखावा है हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि कायनात में सबसे ज़्यादा मुहब्बत अपने रब और उसके प्यारे मेहबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से करे और तमाम हदों को पार करते हुये उनकी मुहब्बत में ग़र्क़ हो जाये और हमेशा दुनियाँ की हर चीज़ की मुहब्बत पर अल्लाह व रसूल की मुहब्बत ग़ालिब रहे। अल्लाह व रसूल के हर हुक्म की इत्तेबाअ़ करना और हर हाल में अल्लाह व रसूल के फ़रमाबरदार रहना ये अल्लाह व रसूल से मुहब्बत की दलील है और जो शख़्स

अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करता है तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स से उससे भी ज़्यादा मुहब्बत करता है और अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो उसके मक़ाम और मर्तबे को दुनियाँ व आख़िरत में बुलन्द फ़रमाता है और जो लोग अल्लाह व रसूल से मुहब्बत नहीं करते वो लोग बे ईमान हैं और उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
और जो लोग ईमान वाले हैं वो (हर एक से बढ़कर) अल्लाह तआ़ला से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करते है। (सू0—बक़राह—165)

इरशादे बारी तआ़ला है—
वो (अल्लाह) उनसे मुहब्बत करता होगा और वो उस (अल्लाह) से मुहब्बत करते होंगे। (सू0—मायदा—54)

इरशादे खुदावन्दी है—
आप फ़रमादें अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा कुँबा और तुम्हारी कमाई के माल और वो सौदा जिसके नुकसान का तुम्हें डर है तुम्हारी पसन्द के मकानात ये चीज़े अल्लाह व रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हैं तो इन्तज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपना हुक्म (यानी अ़ज़ाब) लाये और अल्लाह तआ़ला फ़ासिक़ों (ना फ़रमानों) को हिदायत नहीं देता। (सू0—तौबा—24)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
बेशक अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को भी देता है जिससे मुहब्बत करता है और उस शख़्स को भी देता है जिससे मुहब्बत नहीं करता लेकिन ईमान सिर्फ़ उन लोगों को अ़ता फ़रमाता है जिनसे मुहब्बत करता है। (शुअ़बुल ईमान—4/395)

अल्लाह व रसूल से मुहब्बत का तकाज़ा ये है कि इन्सान अल्लाह व रसूल से मुहब्बत की तमाम हदों को पार कर जाये यही अल्लाह व रसूल से सच्ची मुहब्बत है और अल्लाह तआ़ला इन्सान को दुनियाँ में जिस हाल में भी रखे वो अपने उस हाल पर राज़ी व

खुश हो और अपने दिल में दुनियाँ की बड़ी से बड़ी नेअ़मतों की मुहब्बत पर अल्लाह व रसूल की मुहब्बत को तरजीह दे और अपने दिल में अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत को सबसे ज़्यादा जगह दे क्योंकि इस दिल का असल मालिक रब्बुल आ़लमीन है जिसने इस दिल को बनाया है और अल्लाह तआ़ला हमारा मालिक जो हमारी हयात से लेकर वफ़ात तक इस दरमियान में हमारी ज़रुरतों को फ़राहम करता है।

जब दुनियाँ में हम बहुत ज़्यादा मेहनत व मशक़्क़त उठाते हैं तब जाकर कुछ माल जमा कर पाते हैं और अपनी ज़रुरत के कुछ सामान फराहम करते हैं और मकानात की तामीर करते हैं तो ज़रा सोचो मकान की तामीर और कुछ सामान फराहम करने के लिये हम कितनी मेहनत व मशक़्क़त उठाते हैं तो क्या अल्लाह तआ़ला की जन्नत और उसकी नेअ़मतें हमें वग़ैर कुछ किये मिल सकती हैं हरगिज़ नहीं मिल सकतीं जब तक कि हम अल्लाह व रसूल से सच्ची मुहब्बत न करें और उनकी फ़रमाबरदारी करते हुये नेक अ़मल न करें और सच्ची मुहब्बत की दलील ये है कि जो चीज़ अल्लाह व रसूल को पसन्द हो वो हमें भी पसन्द हो और जो चीज़ अल्लाह व रसूल को पसन्द न हो वो चीज़ हमें भी ना पसन्द हो और सिर्फ़ वही काम करें जिन कामों को करने का अल्लाह व रसूल ने हमें हुक्म दिया है यही सच्ची मुहब्बत और असल ईमान है

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और जितने ज़मीन में पेड़ हैं सब कलम हो जायें और समुन्दर उसकी स्याही और उसके पीछे सात समुन्दर और हों तब भी अल्लाह तआ़ला की बातें ख़त्म न होंगी बेशक अल्लाह तआ़ला इज़्ज़त व हिकमत वाला है। (सू0—लुक़मान—27)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
तुम में से कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि तमाम चीज़ों से ज़्यादा अल्लाह व रसूल तुम्हें महबूब न हो।
(मुस्नद अहमद—3/207)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करो क्योंकि वो तुम्हें नेअ़मतें अ़ता करता है और मुझसे मुहब्बत करो क्योंकि अल्लाह तआ़ला मुझसे मुहब्बत करता है। (मुस्तदरक हाकिम—3/150)

अल्लाह तआ़ला की इ़बादत और बन्दगी में तब तक लज़्ज़त नहीं आ सकती जब तक कि दिलों में अल्लाह व रसूल की मुहब्बत न हो और अल्लाह व रसूल की मुहब्बत के वग़ैर कोई भी दिल ईमान की हलावत (मिठास) नहीं पा सकता और न ही उसका ईमान कामिल हो सकता है और ईमान के कई दरजात होते हैं जिनमें सबसे आला दर्जा उसका होता है जिसके दिल में अल्लाह व रसूल की सबसे ज़्यादा मुहब्बत होती है।

हमें ये सोचना चाहिये कि दुनियाँ में हमारा वुजूद किसने क़ायम किया और किसने दुनियाँ में हमें तमाम नेअ़मतें अ़ता की किसने हमारी भूक मिटाई और हमें खाना खिलाया और किसने हमारी प्यास बुझाई और हमें पानी पिलाया और किसने हमें कपड़ा पहनाया और हमें रहने के लिये घर अ़ता किया और किसने हमें औलाद अ़ता की और किसने हमारी ज़रुरतों को पूरा किया किसने हमारे लिये जन्नत और उसकी नेअ़मतें तैयार कीं तो हमें पता चलता है सिर्फ़ और सिर्फ़ मेरे रब ने ये सब कुछ हमारे लिये किया है तो हमें इस बात पर ग़ौर करना चाहिये कि मेरे मालिक मेरे रब ने मेरे लिये इतना कुछ किया है तो हमें भी चाहिये कि हम उसके फ़रमाबरदार बन्दे बनें और उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की इताअ़त करें और अल्लाह व रसूल की मुहब्बत से अपने दिलों को मुनव्वर करें।

मेरा रब अगर चाहता तो दुनियाँ में आने से क़ब्ल या फ़ौरन बाद हमें मौत दे देता लेकिन उसने हमें ज़िन्दगी अ़ता की और अपने रहमो करम के साये में ज़िन्दा रखा हम उस रब तआ़ला की रहमत और उसके तमाम एहसानात का कभी हक़ अदा नहीं कर सकते लेकिन उससे बेइन्तिहा मुहब्बत व उसकी फ़रमाबरदारी करके उसके बन्दे होने का सबूत पेश कर सकते हैं और हमेशा अपने रब को अपना मालिक और खुद को उसका बन्दा और गुलाम तसव्वुर करें और अपनी पूरी ज़िन्दगी अल्लाह व रसूल की मुहब्बत और उनकी फ़रमाबरदारी में सर्फ करदें और हुक्मे इलाही के ताबेअ़ रहें यही असल बन्दगी है इसलिये हमें चाहिये अपने प्यारे मुस्तफ़ा सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के हुक्म और सुन्नतों को अपने अ़मल में लायें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के

हर हुक्म को अल्लाह तआ़ला का हुक्म जानें क्योंकि अल्लाह व रसूल बाहम जुदा नहीं और ना ही उनकी मुहब्बत जुदा है अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को अपने नूर से पैदा फ़रमाया और नूर आपस में जुदा नहीं होता हर चीज़ का साया होता है लेकिन नूर का साया नहीं होता है इसलिये मेरे मुस्तफ़ा रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के जिस्म अक़दस का साया नहीं था क्योंकि आप सरापा नूर थे रब तआ़ला ने कलमये तइयब में ये बात वाज़ेह कर दी कि मेरे महबूब को कोई हमसे जुदा गुमान न करे यानी ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह इस कलमे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया—नहीं है कोई माअ़बूद सिवाये अल्लाह के मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं अल्लाह तआ़ला ने अपने और अपने महबूब के नाम के बीच में व या और का लफ़्ज़ इस्तेमाल नहीं किया ताकि कोई मेरे महबूब को हमसे जुदा गुमान न करे बल्कि अपने नाम के साथ अपने महबूब का नाम जोड़ दिया।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला ने रसूल की इताअ़त को अपनी इताअ़त और हुज़ूर की बैत को अपनी बैत और हुज़ूर की अज़िय़त (तकलीफ़) को अपनी तकलीफ़ क़रार दिया इसलिये हमें चाहिये कि हम सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करें जिनके सबब और तवस्सुल से हमें दीन इस्लाम मिला और इन्हीं के सदक़े और तुफ़ैल से हमें बख़्शिश और जन्नत मिलेगी और हमें चाहिये कि कायनात में सबसे ज़्यादा मुहब्बत अपने रब और उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से करें और अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारें ताकि हम अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सच्चे उम्मती होने का शरफ़ पायें और दुनियाँ व आख़िरत में कामयाबी व कामरानी की मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हाने की सआ़दत हमें नसीब हो।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
(ऐ महबूब) आप फ़रमादें अगर तुम अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तेबाअ़ करो अल्लाह तआ़ला तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमां देगा और अल्लाह तआ़ला निहायत बख़्शने वाला मेहरबान है। (सू0—आले इमरान—31)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसके नज़दीक उसके अहल व अ़याल और सब लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ। (सही मुस्लिम–1/49)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो कोई गुनाह उसे नुकसान नहीं देता। (दुर्रे मन्सूर–1/261) (यानी जो गुनाह अंजाने में या ना चाहते हुये भी या शैतान के वसवसे के बाइस सरज़द हो जाते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन्हें दर गुज़र फ़रमां देता है)

हज़रत ग़ौसुल आज़म अब्दुल क़ादिर जीलान (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की जानिब नज़र रखो जो तुम्हारी तरफ़ नज़रे करम किये हुये है और उसी की तरफ़ मुतवज्जे रहो जिसकी तवज्जौ तुम्हारी तरफ़ है और उसी से मुहब्बत करो जो तुमसे मुहब्बत करता है और अपना हाथ उसी के हाथ में दो जो तुम्हें गिरने से बचाता है और जो तुम्हें जहालत की तारीकियों से निकालकर हलाकत से महफ़ूज़ रखता है और जो तुम्हें बदगुमानियों से निजात देता है और बहुत ज़्यादा बुराइयों का हुक्म देने वाले नफ़्स से रिहाई अ़ता करता है और जो तुम्हें बेशुमार नेअ़मतों से नवाज़ता है और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करता है तो बताओ तुम दुनियाँ की मशगूलियत में कब तक नादान बने रहोगे और अल्लाह तआ़ला से कब तक ऐराज़ करते रहोगे और कब तक ख़्वाहिशात की इत्तेबाअ़ में आख़िरत से ग़ाफिल रहोगे और कब तक तुम्हारा तअ़ाल्लुक़ खुदा के सिवा ग़ैरों से क़ायम रहेगा ग़ौर करो कि तुम कहाँ हो और तुम्हारा और सारे जहान का तख़लीक़ (पैदा) करने वाला कौन है वही अव्वल और वही आख़िर है और उसी की तरफ़ सब को लौटना है और उसके सामने हाज़िर होना है और हर शैः उसके कब्ज़े कुदरत में हैं और उसकी अज़मत व शान बहुत बुलन्द व बाला है

—: रज़ाये इलाही :—

अल्लाह तआ़ला की रज़ा पर राज़ी रहना और उसकी हर अ़ता पर उसके शुक्र गुज़ार रहना ये मोमिन की अ़लामत है और हर इन्सान पर लाज़िम है कि अपने तमाम मामलात में अपने रब की रज़ा का मुतलाशी और तालिब रहे और हुक्मे इलाही के मुताबिक़ अ़मल करे यही उसके हक़ में सबसे बेहतर और बाइसे ख़ैर है और यही निजात का रास्ता है जो उसे गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर सिराते मुस्तक़ीम पर ले आता है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
तो मैं डराता हूँ उस आग से जो भड़क रही है बदबख़्तों के लिये जिसने झुठलाया और मुँह फेरा और परहेज़गारों को इस आग से बहुत दूर रखा जायेगा जो अपना माल देता है पाक साफ़ (सुथरा) और किसी पर उसका एहसान नहीं जिसका बदला दिया जाये वो तो सिर्फ़ अपने रब की रज़ा चाहता है जो सबसे बुलन्द है और बेशक अ़नक़रीब वो राज़ी हो जायेगा। (सू0—लैल—14—21)

इरशादे बारी तआला है—
और अपने रब की पाकी बयान करो और सबसे टूटकर उसी के हो रहो (सू0—मुज़म्मिल—8)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है जो मेरी क़ज़ा (हुक्म) पर राज़ी नहीं और जो मेरी अ़ता पर मेरा शुक्र गुज़ार नहीं उसे चाहिये कि मेरे सिवा कोई दूसरा खुदा तलाश कर ले। (शुअ़बुल ईमान—1/218) (तारीख़ इब्ने असाकर—6/128)

जो बात मर्ज़ी व ख़्वाहिश के ख़िलाफ हो उस पर राज़ी रहना और सब्र करना और फराख़ी (खुशहाली) के वक़्त अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना ये मोमिन का आला मक़ाम है और हर नेक अ़मल जैसे रोज़ा, नमाज़, ज़कात, सद्क़ा ख़ैरात, दीनी तबलीग़ हज वग़ैराह दीग़र तमाम नेक अ़मल जो सिफ़ रब तआ़ला की रज़ा हासिल करने के लिये किये जाते हैं तो वो तमाम अ़मल बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल होते हैं और अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी होता है और उनके लिये बड़ा सवाब है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
जो हुक्म दे ख़ैरात का या अच्छी बात का या लोगों में सुलह कराने का और जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा चाहने को ऐसा करे उसे अ़नक़रीब हम बड़ा सवाब देंगे। (सू0—निसा—114)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और जो तुम ज़कात देते हो (सिर्फ़) अल्लाह तआ़ला की रज़ा चाहते हुये तो उन्हीं के दूने हैं। (सू0—रुम—39)

इरशादे खुदावन्दी है—
और खाना खिलाते हैं उस (अल्लाह) की मुहब्बत में मिस्कीन और यतीम को (और) उनसे कहते हैं कि हम तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये खाना देते हैं तुमसे कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं माँगते बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन (यानी क़यामत) के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी और उन्हें उनके सब्र पर जन्नत और रेशमी कपड़े (इसके) सिले में दिये जायेंगे (और वो) जन्नत में तख़्तों पर तकिया लगाये (बैठे और लेटे) होंगे ना उसमें धूप देखेंगे न सर्दी और उन (जन्नत के दरख़्तों) के साये उन पर झुके होंगे और गुच्छे झुकाकर नीचे कर दिये जायेंगे। (सू0—दहर—8,—14)

ईमान की मज़बूत रस्सी अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत और उसकी रज़ा है इसलिये हमें चाहिये कि इस रस्सी को हर हाल में हमेशा थामे रहें ताकि हमारा ईमान हमेशा सलामत रहे और हमारे क़दम कभी राहे खुदा से डगमगा न पाँयें अल्लाह तआ़ला हमें दुनियाँ में किसी हाल में भी रखे उसके हर हुक्म की इत्तेबाअ़ करना और उसकी रज़ा पर राज़ी रहना और खुलूस दिल से अल्लाह तआ़ला को अपना मालिक व मौला और खुद को बन्दा व गुलाम तसलीम करना और अपनी शीरी व तल्ख़ी और परेशानी व खुशहाली इन तमाम हालतों में अपने रब से खुश व राज़ी रहना और सच्चे दिल से उसका इज़हार करना अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बहुत बड़ा मक़ाम है और अल्लाह तआ़ला उन बन्दों को चुन लेता है जिनका हर काम रज़ाये इलाही होता है और जो हर मुसीबतो परेशानी के

वक़्त अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहते हैं तो अल्लाह तआला उन्हें भलाई और हिदायत अता फ़रमाता है और क़यामत के दिन राहतो मशर्रत और अमनो अमान अता फ़रमायेगा और उन्हें बग़ैर हिसाब जन्नत में दाख़िल करेगा इसलिये हमें चाहिये कि हम पर कितनी ही बड़ी मुसीबतो परेशानी हो या रिज़्क की तंगी या कोई बीमारी हो इन तमाम हालतों में सब्र करें और अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहें और कहें ऐ मेरे रब तू राज़ी हो जा चाहे मुझे इससे भी ज़्यादा परेशानी दे दे और अपने रब से अपनी परेशानी पर खुशी का इज़हार करें जिस तरह हम आफ़ियत व फ़राख़ी के वक़्त या किसी नेअमत के मिलने पर खुश होते हैं और जो हमें अपने नसीब से मिले उस पर क़नाअत करें ताकि अल्लाह तआला हमसे राज़ी हो जाये और हम बदले में बेशुमार अज्र (सवाब) पायें।

इन्सान की दुन्यावी ज़िन्दगी में चाहे जैसे भी असबाब हों उसके लिये सबसे ज़्यादा अहम व ज़रूरी है कि अल्लाह तआला को राज़ी रखे और हर मामलात में उसकी रज़ा तलाश करे और उसे हासिल करने के लिये हर मुमकिन कोशिश व बेहतर तदाबीर का करना बन्दे के लिये दुनियाँ व आख़िरत में सआदत का मक़ाम और नेक बख़्ती की अलामत है और अपनी मसाइबो तकालीफ़ में रब तआला की रहमत से ना उम्मीद न हो बल्कि सब्रो इस्तिक़ामत के ज़रिये अपने रब को राज़ी करे और मुकम्मल भरोसा रखे कि अनक़रीब रब तआला हमारी परेशानियों और तकलीफ़ों से हमें ज़रूर निजात अता फ़रमायेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक जो ईमान लाये और अच्छे काम किये वही तमाम मख़लूक़ में बेहतर हैं (और) उनका सिला उनके रब के पास है बसने के बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहें उनमें वो हमेशा हमेशा रहेंगे अल्लाह तआला उनसे राज़ी और वो अल्लाह तआला से राज़ी ये उसके लिये है जो अपने रब से डरे। (सू0—बइयना—7,—8)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
उस शख़्स के लिये खुशख़बरी है जिसको इस्लाम की हिदायत दी गई और ज़रुरत के मुताबिक़ रिज़्क दिया गया और वो उस पर राज़ी हो।(अल विदाया वननिहाया—5/94)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मिलने वाले थोड़े से रिज़्क पर राज़ी होता है तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स के थोड़े से अ़मल पर राज़ी होता है। (मुस्नद अहमद–6/19)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला कुछ लोगों को ये मर्तबा अ़ता करेगा कि उड़ते हुये जन्नत में दाख़िल होंगे फ़रिश्ते उनसे पूछेंगे कि तुम लोग मीज़ान (तराज़ू) और पुल सिरात देख चुके तो वो कहेंगे नहीं तो फिर फ़रिश्ते पूछेंगे कि तुम्हें ये मर्तबा किस अ़मल के बदले में मिला है तो वो कहेंगे कि हम गुनाहों से दूर रहते थे और अल्लाह तआ़ला ने हमें जो रिज़्क दिया हम उस पर राज़ी रहते थे। (कीमयाये सआ़दत–900)

हर इन्सान के लिये सबसे बेहतर ये है कि अपनी तमाम उम्र अपने रब को राज़ी करने में सर्फ़ कर दें और अपने रब की रज़ा हासिल करना अपनी ज़िन्दगी का अहम मक़सद बना लें और जब किसी काम का इरादा करे तो उस काम के मुताअ़ल्लिक़ ग़ौर करे कि मेरे इस काम को करने से क्या मेरा रब राज़ी होगा या नहीं और जब नतीजा ये पाये कि मेरे इस काम को करने से मेरा रब राज़ी होगा तो उस काम को अच्छी तरह अंजाम दे और नतीजा ये पाये कि मेरे इस काम को करने से मेरा रब नाराज़ होगा तो उस काम को हरगिज़ न करे इसी में हमारी भलाई व ख़ैर और बेहतरी है।

इसी तरह जब कोई शख़्स किसी मुसीबतो परेशानी में मुब्तिला हो तो वो उस पर सब्र करे क्योंकि सब्र के बाइस अल्लाह तआ़ला उस शख़्स से खुश और राज़ी होगा और अगर वो सब्र न करे तो वो ख़सारा उठायेगा क्योंकि सब्र न करने सबब अल्लाह तआ़ला उससे राज़ी न होगा और सब्र के बाइस मिलने वाले बेशुमार अज्र से वो महरूम रहेगा और वो खुद अपनी मुसीबतो परेशानी से निजात भी नहीं पा सकता क्योंकि किसी इन्सान के इख़्तियार में नहीं है कि वो तमाम आफ़तों और मुसीबतों परेशानी से खुद को महफ़ूज़ रख सके क्योंकि तमाम चीज़े रब तआ़ला के दस्ते कुदरत और उसके इख़्तियार में हैं और वो जिसे जब चाहे किसी

परेशानी में मुब्तिला कर दे जिसे जब चाहे परेशानियों से निजात दे दे और उसे ऐशो इशरत और नेअ़मतों से मालामाल कर दे तो उसके लिये बेहतर यही है कि अपनी मुसीबतो परेशानी में सब्र के ज़रिये अपने रब को राज़ी करे और हर इन्सान के लिये ज़रुरी है कि वो अपने तमाम मामलात में रब तआ़ला की रज़ा को मक़सूद रखते हुये अल्लाह व रसूल के तमाम अहकामात पर अ़मल पैरा हो और हर हाल में अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहे और जो लोग अल्लाह व रसूल के हुक्म की इत्तेबाअ़ करते हैं और उस पर राज़ी रहते हैं तो अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी रहता है और यही लोग दुनियाँ व आख़िरत में कामयाब होते हैं और बेशुमार इनामात के मुस्तहिक़ होते हैं और अ़ज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रहते हैं और जो लोग अल्लाह व रसूल के हुक्म की नाफ़रमानी करते और अपने रब को नाराज़ करते और आख़िरत के ख़ौफ़ बे परवाह होते हैं और रब के हुक्म व रज़ा पर राज़ी नहीं रहते वही लोग अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब का शिकार होंगे और उनके लिये निहायत सख़्त अ़ज़ाब है

तमाम फ़राइज़ों की अदायगी और हर नेक अ़मल में अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है अगर किसी शख़्स ने अपने फ़राइज़ों की अदायगी व नेक आमालों में अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करना मक़सूद नहीं रखा बल्कि अपने नेक आमालों में किसी ग़ैर की रज़ा को हासिल करना मक़सूद रखा या दिखावा किया तो उसके तमाम आमाल अकारत हो जाते हैं और उसके आमाल उसे कोई भी नफ़ा नहीं देते और उसकी सारी मेहनत ज़ाया हो जाती है जो उसने उन आमालों में करने में की थी और उन आमालों के बाइस मिलने वाले अज्र से वो हमेशा महरुम रहेगा।

जिस काम को करने से हमारा रब हमसे नाराज़ हो जाये वो काम बुरा है और जिस काम को करने से हमारा रब हमसे राज़ी हो वो काम चाहे छोटा ही क्यों न हो लेकिन अल्लाह तआ़ला के नज़दीक वो बड़े अज्र का मुस्तहिक़ होता है इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह व रसूल के हुक्म की इत्तेबाअ़ करें और वही काम करें जो अल्लाह व रसूल को पसन्द हो और अपने हर अ़मल में सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा को शामिल करें ताकि हमारा रब हमसे

राज़ी हो जाये और कोई भी काम ऐसा न करें जिसके बाइस मेरा रब हमसे नाराज़ हो जाये और अल्लाह तआ़ला हमें दुनियाँ में जिस हाल में भी रखे हम उस हाल पर अपने रब से राज़ी रहें यही हमारे लिये सबसे बेहतर है और यही तमाम आफ़तों व मुसीबतों और क़ब्र व क़यामत के सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब से महफ़ूज़ जन्नत का रास्ता है इसलिये इसी को तरजीह और अहमियत दें और कसरत से नेक अ़मल करें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का। (सू0—निसा—59)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
जो अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाबरदारी करे उसने बड़ी कामयाबी पायी। (सू0—अहज़ाब—71)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने उसके लिये जहन्नुम की आग है जिसमें वो हमेशा रहेंगे। (सू0—जिन्न—23)

इरशादे खुदावन्दी है—
और न किसी मोमिन मर्द को (ये) हक़ हासिल है और न किसी मोमिन औ़रत को कि जब अल्लाह तआ़ला और उसका रसूल किसी काम का फ़ैसला (या हुक्म) फ़रमादे तो उनके लिये अपने (इस) काम में (करने या न करने) का कोई इख़्तियार हो (और) जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करता है वो यक़ीनन खुली गुमराही में भटक गया। (सू0—अहज़ाब—36)

और हमें चाहिये कि अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को अपने ज़ाहिर व बातिन से फ़ना कर दें और तमाम हरकात व सकनात, ग़म व खुशी, मर्ज़ व सेहत, आराम व तकलीफ यानी हर हाल में अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहें और सब्र व इस्तिक़ामत और शुक्र पर क़ायम रहें

—: तौबा की फ़ज़ीलत :—

अल्लाह तआ़ला का रहमो करम और एहसान है कि जिसने हम तमाम मुसलमानों को तौबा का तोहफ़ा अ़ता किया जो इन्सान के गुनाहों की बख़्शिश का ज़रिया है इन्सान गुनाह करने के बाद जब अपनी जुबान और खुलूस दिल से बारगाहे खुदावन्दी में तौबा करता है तो अल्लाह तआ़ला जो ग़फूरुर्रहीम है वो अपने बन्दों के तमाम गुनाहों को बख़्श देता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
बेशक मैं बहुत ज़्यादा बख़्शने वाला हूँ उस शख़्स को जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अ़मल किया और हिदायत पर (क़ायम) रहा। (सू0—ताहा—82)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और वही है जो अपने बन्दों की तौबा कुबूल फ़रमाता है और गुनाहों को माफ़ करता है और जानता है जो कुछ तुम करते हो।
(सू0—शूरा—25)

इरशादे खुदावन्दी है—
ये किताब का उतरना अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है जो इज्ज़त वाला इल्म वाला है गुनाह बख़्शने वाला तौबा कुबूल करने वाला सख़्त अ़ज़ाब देने वाला बड़े इनाम देने वाला उसके सिवा कोई माअ़बूद नहीं उसी की तरफ़ फिरना है। (सू0—मोमिन—3)

अगर अल्लाह तआ़ला इन्सान के गुनाहों के सबब उसे सज़ा देता तो दुनियाँ में चन्द लोगों के सिवा हर इन्सान को सज़ा मिलती क्योंकि शैतान हमें हर वक़्त वसवसों के ज़रिये हमें गुनाहों की तरफ़ राग़िब करता है और हमारा नफ़्स हमें बुरी ख़्वाहिसात की तरफ़ माइल करता है और हमसे कई तरह के छोटे बड़े सगीरा व कबीरा गुनाह सरज़द हो जाते हैं लेकिन जब कोई शख़्स गुनाह का इरतिकाब करता है फिर वो अपने गुनाह पर नादिम (शर्मिन्दा) होता और अपने रब की बारगाह में रोता और गिड़गिड़ाता और अल्लाह तआ़ला से माफ़ी तलब करता और दोबारा गुनाह न करने का अहद करता है तो अल्लाह तआ़ला उसके गुनाह को बख़्श देता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–
अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह बयान करो और उससे बख़्शिश माँगो वो बहुत तौबा कुबूल करने वाला है। (सू0–नसर–3)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और जो बुराई करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश चाहे तो वो अल्लाह तआ़ला को बख़्शने वाला मेहरबान पायेगा। (सू0–निसा–110)

इरशादे खुदावन्दी है–
बेशक वो खूब तौबा करने वालों को बख़्श देता है। (सू0–बनी इसराईल–25)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
नदामत (शर्मिन्दगी) ही तौबा है। (मुस्नद अहमद)

एक और रिवायत में है कि जब अल्लाह तआ़ला ने इब्लीस (शैतान) पर लानत फ़रमाई तो शैतान ने मुहलत माँगी तो अल्लाह तआ़ला ने उसे क़यामत तक के लिये मुहलत दे दी तो इब्लीस ने कहा कि जब तक इन्सान के जिस्म में रूह है मैं उसमें से नहीं निकलूँगा यानी उसे बहकाता रहूँगा और गुनाहों की तरफ़ राग़िब करता रहूँगा ताकि इन्सान कसीर (बहुत ज़्यादा) गुनाहों का मुरतकिब (मुजरिम) हो जाये तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया मुझे अपनी इज्ज़त व जलाल की क़सम जब तक इन्सान के जिस्म में रूह है मैं उसकी तौबा कुबूल करता रहूँगा। (मुस्नद अहमद–3/29)

जन्नत के आठ दरवाज़े हैं जो खुलते और बन्द होते हैं लेकिन तौबा का दरवाज़ा कभी बन्द नहीं होता जब तक कि सूरज मग़रिब (पश्चिम) से न निकलने लगे (यानी क़यामत के क़रीब ये दरवाज़ा बन्द हो जायेगा) अल्लाह तआ़ला चाहता है कि मेरे गुनाहगार बन्दे मुझसे माफ़ी तलब करें ताकि मैं उन्हें माफ़ कर दूँ और अल्लाह तआ़ला तौबा करने वालों को पसन्द फ़रमाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत तौबा करने वालों और पाक रहने वालों को पसन्द फ़रमाता है। (सू0–बक़राह–222)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— तुम में से बेहतरीन शख़्स वो है जो गुनाहों में मुब्तिला होने की सूरत में तौबा करे। (शुअ़बुल ईमान—5/410)

बाज़ लोग ये ख़्याल करते हैं कि हमारे गुनाह इतने ज़्यादा हैं कि शायद ही अल्लाह माफ़ करे लेकिन असल में ऐसा बिल्कुल नहीं है और इस तरह का गुमान रखना कम इल्मी व अल्लाह तआ़ला पर मुकम्मल एतक़ाद न होने की दलील है इन्सान को अल्लाह तआ़ला की रहमत से कभी मायूस व ना उम्मीद नहीं होना चाहिये बल्कि अल्लाह तआ़ला के लिये हमेशा हुस्ने ज़न व अच्छा गुमान रखे चाहे इन्सान के गुनाह समुन्दर के झाग के बराबर हों पस सच्चे दिल से तौबा करे और मुस्तक़बिल में गुनाह न करने का अहद करे।

और अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करे और ऐसे काम करे जो अल्लाह व रसूल को पसन्द हों और अल्लाह व रसूल के ना पसंदीदा कामों से ऐराज़ करे और अल्लाह व रसूल से सच्ची मुहब्बत करे और अपने तमाम अ़मल रब तआ़ला की रज़ा के लिये करे और हर हाल में अपने रब को राज़ी रखे और किसी भी सूरत में अपने रब को नाराज़ न करे और हर बुराई और गुनाह के इरतिक़ाब से खुद को मामून (महफ़ूज़) रखने के लिये हर मुमकिन कोशिश करे तो अल्लाह तआ़ला उसके तमाम गुनाहों को बख़्श देता है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
(ऐ महबूब) आप फ़रमादें ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है वो अल्लाह तआ़ला की रहमत से ना उम्मीद न हों बेशक अल्लाह तआ़ला उनके तमाम गुनाहों को बख़्श देगा बेशक वही बख़्शने वाला मेहरबान है और अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करो और उसके हुजूर गर्दन रखो क़ब्ल इसके कि तुम पर अ़ज़ाब आये फिर तुम्हारी मदद न हो। (सू0—जुमर—53,—54)

इरशादे बारी तआ़ला है—
क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है। (सू0—तौबा—104)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अगर तुम गुनाहों का इरतिकाब (जुर्म) करो हत्ता कि तुम्हारे गुनाह आसमान तक पहुँच जायें फिर तुम नादिम (शर्मिन्दा) हो और अल्लाह तआ़ला से तौबा करो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी तौबा कुबूल फ़रमायेगा। (सुनन इब्ने माजा–323)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जब कोई शख़्स गुनाहों से तौबा कर लेता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों को हुक्म देता है कि बन्दे के सारे गुनाहों को भूल जाओ ताकि कोई उसका गवाह न रहे। (कीमयाये सआ़दत–645)

जब इन्सान गुनाह करता है तो उस वक़्त वो गुनाहगार होता है लेकिन जब वो तौबा की तमाम शराइतो को अदा करता है तो उसकी तौबा बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल होती है और वो फिर से मोमिन हो जाता है इन्सान को अपनी तौबा की कुबूलियत में शक नहीं करना चाहिये और तौबा की मक़बूलियत की कुछ निशानियाँ भी हैं जैसे बन्दा खुद को गुनाहों से दूर रखता हो और हर बुराई और गुनाह से बचने की हर मुमकिन कोशिश करता हो और नेक अ़मल करता हो और दुनियाँ की थोड़ी सी चीज़ पर क़नाअ़त करता हो और अल्लाह तआ़ला उसे जिस हाल में भी रखे वो अपने उस हाल पर राज़ी रहता हो और वो अपना हर अ़मल अल्लाह तआ़ला की रज़ा और आख़िरत के लिये करता हो और उसका दिल ख़ौफ़े खुदा से लरज़ता हो व उसकी आँखें अल्लाह व रसूल की मुहब्बत में नम हो जाती हों और वो अपनी जुबान से अच्छे कलिमात कहता हो और वो अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल की इत्तेबाअ़ करते हुये सर्फ़ करता हो और ये तमाम बातें और सिफ़ात जिस शख़्स के अन्दर पायी जायें तो समझो कि उसकी तौबा बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल हो गयी है और वो गुनाहों से इस तरह पाक हो गया है जैसे उसने कभी कोई गुनाह किया ही न हो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
गुनाहों से तौबा करने वाला उस शख़्स की तरह है जिसका कोई गुनाह न हो। (सुनन इब्ने माजा–323)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– जब कोई बन्दा गुनाह करने के बाद अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश तलब करता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाता है ऐ फ़रिश्तो तुम गवाह हो जाओ मैंने इसे बख़्श दिया।
(मुस्नद अहमद–2/492)

हदीस पाक में वारिद है कि तौबा इन्सान के गुनाहों को इस तरह मिटा देती है जैसे पानी मैल को दूर कर देता है और इन्सान के दिलों को भी लोहे की तरह जंग लग जाती है और तौबा करने से वो जंग साफ हो जाती है इसलिये हमें चाहिये कि हम खुलूस दिल से तौबा करें और हर बुराई से बाज़ रहें और गुनाहों से इजतिनाब करें कहीं ऐसा न हो कि हमें मौत आ जाये और फिर हमें तौबा का मौक़ा न मिले और हम अंधेरी क़ब्र में क़यामत तक के लिये क़ैद कर दिये जायें और वहाँ हमारे गुनाहों के सबब दर्दनाक अ़ज़ाब में हम मुब्तिला कर दिये जायें और हमारे ऊपर दहकती आग और साँप और बिच्छू व कीड़े मकोड़े अ़ज़ाब की शक्ल में मुसल्लत कर दिये जायें और हम तन्हाई और अंधेरे में चीख़ते चिल्लाते रहें जहाँ हमारी कोई भी मदद न कर सकेगा सिवाय हमारे नेक आमाल के।

क्या हमारा नाज़ुक बदन उस आग की गर्मी व शिद्दत व साँप और बिच्छुओं व कीड़े मकोड़ों का हमारे जिस्म को काटना और खाना बर्दास्त कर सकेगा जो दुनियाँ की थोड़ी सी तेज धूप व गर्मी और काँटे की चुभन को बर्दास्त नहीं कर सकता इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब से डरें और सच्चे दिल से तौबा करें और आइन्दा गुनाह न करने का मज़बूत क़सद (पक्का इरादा) करें और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के वसीले से अल्लाह तआ़ला से माफ़ी तलब करें ताकि हमारी तौबा जल्द कुबूल हो और कसरत से नेक अ़मल करें और अल्लाह व रसूल के फ़रमाबरदार बन जायें।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
जब वो अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब (वो) तुम्हारे हुजूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह तआ़ला से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअ़त फरमायें तो वो ज़रूर अल्लाह तआ़ला को बहुत तौबा कुबूल करने वाला बहुत मेहरबान पायें। (सू0–निसा–64)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– जिसने अस्तग़फार को लाज़िम पकड़ लिया तो अल्लाह तआ़ला उसकी तमाम मुश्किलों में आसानी और हर ग़म से आज़ादी और बे हिसाब रिज़्क अ़ता फ़रमायेगा। (सुनन अबी दाऊद–2 / 122)

कुछ गुनाह ऐसे होते हैं जिनका तअ़ाल्लुक़ अल्लाह तआ़ला के हुकूक़ से होता है जैसे रोज़ा, नमाज़ हज, ज़कात शराब नोशी, जुआ, ज़िना,बदनिगाह वग़ैराह और कुछ गुनाहों का तअ़ाल्लुक़ बन्दों के हुकूक़ से होता है जैसे चोरी, ग़ीबत, चुग़ली, माँ बाप या किसी मुसलमान को अज़्ज़ियत (तकलीफ़) देना, बच्चों और वीबी के हुकूकों को अदा न करना, यतीम का माल खाना, किसी की अमानत में ख़्यानत, किसी का क़र्ज़ अदा न करना, किसी की बेईमानी करना, किसी पर जुल्म व ज़्यादती करना वग़ैराह।

अल्लाह तआ़ला के हुकूक़ से तअ़ाल्लुक़ रखने वाले गुनाहों को तौबा के बाद अल्लाह तआ़ला उसे माफ़ फ़रमां देता है लेकिन जो गुनाह बन्दों के हुकूक़ से तअ़ाल्लुक़ रखते हैं उन्हें अल्लाह तआ़ला माफ़ नहीं करता जब तक कि वो माफ़ न करें जिनके हुकूक़ हमारे ज़िम्मे हैं इसलिये हमें चाहिये कि अगर हमने किसी के साथ जुल्म व ज़्यादती की है या किसी का हम पर कोई हक़ बाक़ी है तो पहले उससे माफ़ी माँगे और अगर किसी का हम पर कोई क़र्ज़ बाक़ी है तो उसे अदा करें और सच्चे दिल से अल्लाह तआ़ला से माफ़ी तलब करें और कसरत से तौबा करते रहें ताकि जाने अनजाने या भूल से जो हमसे गुनाह हो जायें तो उन गुनाहों को अल्लाह तआ़ला माफ़ करदे और चलते फिरते उठते बैठते तौबा अस्तग़फार करते रहें और इस तरह की तौबा की सआ़दत जिसको हासिल हो जाये वो जहन्नुम की आग से महफूज़ रहेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
बेशक जिन्होंने ईज़ा (तकलीफ़) दी मुसलमान मर्दो और मुसलमान औ़रतों को फिर तौबा न की उनके लिये आग का अ़ज़ाब है बेशक जो ईमान लाये और अच्छे काम किये उनके लिये बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं यही बड़ी कामयाबी है। (सू0–बुरुज–10,–11)

कुछ गुनाह ऐसे भी होते हैं कि जिसकी सज़ा उसके करने वाले को ज़रुर मिलेगी चाहे वो शख़्स नमाज़ी परहेज़गार क्यों न हो और चाहे कितने ही नेक अ़मल करे लेकिन उसकी तौबा बारगाहे खुदावन्दी में कभी कुबूल न होगी और उसे सख़्ततर अ़ज़ाब भुगतने होंगे और बिल आख़िर वो जहन्नुम में दाख़िल किया जायेगा।

जैसे वो लोग जिन्होंने इमाम आली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहस्सलाम और उनके अहले खानदान और दीगर तमाम लोगों पर करबला में कहर बरपा किया और उन पर निहायत जुल्म व ज़्यादती व खूँरेजी की और उनका ये फ़ेअ़ल हुकूमत और इक़्तिदार के बाइस शहीदाने करबला पर निहायत जुल्म था जो अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सख़्त नाराज़गी और अल्लाह तआ़ला के गज़ब का सबब बना और वो तमाम लोग दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तिला किये जायेंगे और उन्हें इन्तिहाई सख़्तियों व परेशानियों से गुज़रना होगा और वो जहन्नुम का ईधन बनेंगे और उसमें वो हमेशा हमेशा रहेंगे हालाँकि वो लोग मुसलमान थे और इस्लाम के अरकानो को भी अदा करते थे लेकिन उनके तमाम नेक अ़मल उन्हें कोई नफ़ा न दे सकेंगे और उनके तमाम अ़मल ज़ाया हो जायेंगे।

इसी तरह जो लोग अल्लाह व रसूल की शान में गुस्ताख़ी करते या बदगुमानी करते हैं तो उनकी नमाज़ें उनके रोज़े और उनकी शबे बेदारी और दीगर तमाम नेक अ़मल उन्हें कोई फ़ायदा न दे सकेंगे और वो जहन्नुम में दाख़िल किये जायेंगे इसलिये हमें चाहिये कि हम इस तरह के अ़ज़ीम गुनाहों से बचें बल्कि उनका तसव्वुर भी अपने दिलों में न लायें और सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ताज़ीमो अदब और एहतराम के साथ साथ उनके अहले बैत अतहर और तमाम आले रसूल और औलियाएकिराम व बुजुर्गानेदीन और दीगर वो नेक लोग जिनसे अल्लाह व रसूल मुहब्बत करते हैं इन तमाम लोगों के मुताअ़ल्लिक़ बदगुमानी न करें और छोटी से छोटी भी गुस्ताख़ी करने से बचें क्योंकि कुछ गुनाह और बदगुमानियाँ ऐसी होती हैं जिनकी तौबा नहीं सिर्फ़ सज़ा है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है–
ऐ ईमान वालो (किसी भी मामले में) अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरते रहो (कि कहीं रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की बे अदबी न हो जाये) बेशक अल्लाह तआ़ला (सब कुछ) सुनने वाला और खूब जानने वाला है ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें ऊँची न करो उस ग़ैब बताने वाले नबी की आवाज़ से और उनके हुजूर चिल्लाकर बात न करो जैसे तुम आपस में एक दूसरे से करते हो (ऐसा न हो) कि तुम्हारे सारे आमाल अकारत (बर्बाद) हो जायें और तुम्हें ख़बर भी न हो। (सू0–हुजरात–1,–2)

मज़कूरा आयात से ये बात वाज़ेह हो गई कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की शान में छोटी से छोटी गुस्ताख़ी भी कुफ़्र है और अल्लाह तआला के नज़दीक सख़्त ना पसन्दीदा है और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब का बाइस है क्योंकि अल्लाह तआ़ला को ये गवारा नहीं कि मेरे महबूब की शान में कोई ज़र्रा बराबर भी गुस्ताख़ी या बे अदबी करे तो जब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से सिर्फ़ ऊँची आवाज़ में बात करने से इन्सान के तमाम आमाल ज़ाया (बर्बाद) हो जाते हैं तो ज़रा सोचो उन लोगों का हश्र क्या होगा जो लोग अपनी बद अक़ीदगी बद जुबानी और बद गुमानी के ज़रिये हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की शाने अक़्दस में बे शुमार गुस्ताख़ियाँ करते हैं।

मज़कूरा आयते करीमा से मालूम हुआ सिर्फ ऊँची आवाज़ में बात करने से इन्सान के तमाम आमाल यानी रोज़ा, नमाज़, हज, ज़कात, सदक़ा, ख़ैरात वग़ैराह सब अकारत (बर्बाद) हो जाते हैं और उसे ख़बर भी नहीं होती कि हमसे हुजूर सल्ललाहु अ़लैह वसल्लम की गुस्ताख़ी का गुनाह हो गया है और इसमें हिकमत ये है कि अगर बन्दे को ख़बर हो जाये कि हमसे हुजूर की गुस्ताख़ी का गुनाह हो गया है तो वो अल्लाह तआ़ला से उस गुनाह की माफ़ी तलब करेगा और वो बारगाहे खुदावन्दी में रोयेगा और गिड़गिड़ायेगा और अल्लाह तआ़ला ग़फ़ूरुर्रहीम है जो अपने बन्दों की तौबा को कुबूल फ़रमाता है और उनके गुनाहों को बख़्श देता है इसलिये अल्लाह तआ़ला गुस्ताख़े रसूल को इस बात की ख़बर भी नहीं होने देता कि उससे हुजूर की गुस्ताख़ी का गुनाह हो गया है।

ताकि वो उस गुनाह के लिये मुझसे तौबा न करे और कुफ़्र की हालत में ही उसे मौत आये और फिर मैं उसे सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब दूँ तो वो शख़्स कितना बदबख़्त है कि जिसे अपने गुनाहों की ख़बर न हो और उसे तौबा भी नसीब न हो और तमाम गुस्ताख़े रसूल जहन्नुम में दाख़िल किये जायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
जो लोग रसूलुल्लाह को (अपनी बद अक़ीदगी, बद गुमानी और बद जुबानी के ज़रिये) अज़्ज़ियत पहुँचाते हैं उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सू0–तौबा–61)

गज़बये तबूक पर जाते हुये रास्ते में तीन मुनाफ़िकों में से दो आदमी बोले कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का ख़्याल है कि हम रोम पर ग़ालिब आ जायेंगे ये ख़्याल बिल्कुल ग़लत है और तीसरा शख़्स ख़ामोश था मगर उनकी बात पर हंसता था तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उन तीनों को बुलाकर पूछा तो वो बोले हम तो यूँ हीं रास्ता काटने के लिये हंसी मज़ाक (दिल्लगी) करते जा रहे थे तब अल्लाह तआ़ला ने आयत नाज़िल फ़रमाई और उन्हें काफ़िर क़रार दिया।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया–
और ऐ महबूब अगर तुम उनसे पूछो तो वो कहेंगे कि हम तो सिर्फ़ (सफ़र काटने के लिये) बातचीत और दिल्लगी करते थे आप फ़रमां दीजिये क्या तुम अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ मज़ाक करते हो (अब) तुम बहाने न बनाओ बेशक तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये। (सू0–तौबा–65,–66)

मज़कूरा आयते करीमा से ये बात वाज़ेह हुई कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के मुताल्लिक़ बद गुमानी बद अक़ीदगी या बद जुबानी गुनाहे अ़ज़ीम और कुफ़्र है और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तौहीन या बेअदबी अल्लाह तआ़ला की बेअदबी है और ये बात भी वाज़ेह हो गई है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के मुताअ़ल्लिक़ अगर कोई बद गुमानी या किसी तरह की गुस्ताख़ी करे और उसे सुनने वाला शख़्स ख़ामोश रहे या हंसे और

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की हिमायत में कुछ न कहे तो वो भी उन्हीं में शामिल है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है–
बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह और उसके रसूल को उन पर अल्लाह तआ़ला की लानत है दुनियाँ और आख़िरत में और अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (सू0–अहज़ाब–57)

अल्लाह तआ़ला ने कुरान मजीद में कई मक़ामात पर अपने महबूब के आदाब बयान फ़रमाये हैं कि मेरे महबूब से ऊँची आवाज़ में बात न करो और उनके हुज़ूर जब पेश हों तो बड़े अदब व एहतराम से पेश हो और जब वो अपने हुजरे मुबारक में आराम फ़रमाँ हों तो उनके आने का इन्तज़ार करो और जब हुज़ूर के घर दावत पर बुलाये जाओ तो खाना खाकर फ़ौरन चले जाओ और वहाँ ज़्यादा देर तक न रूका करो और वो जो कुछ फ़रमायें उसे व ग़ौर सुना करो और मेरे महबूब को राइना न कहा करो व दीगर तमाम अदबो एहतराम और उनकी ताज़ीमो तकरीम का हमें हर हाल में सही अक़ीदा रखना चाहिये यही असल ईमान है और जिनके दिलों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत और सही अ़कीदा नहीं तो वो मुसलमान ही नहीं हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
ऐ ईमान वालो (नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को अपनी तरफ़ मुतवज्ज़ै करने के लिये) राइना मत कहा करो बल्कि (अदब से) यूँ अ़र्ज़ करो उन्ज़ुरना (कि हुज़ूर हम पर नज़रे करम फ़रमाइये) कहा करो और पहले से बग़ौर सुना करो और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सू0–बक़राह–104)

अगर किसी शख़्स से भूले से या अंजाने में हुज़ूर की शान में गुस्ताख़ी हो जाये और वो सच्चे दिल से बारगाहे खुदावन्दी में माफ़ी तलब करे तो रब तआ़ला उसकी तौबा कुबूल फ़रमाता है लेकिन जो लोग नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की शाने अक़दस में बद अक़ीदी बद जुबानी और बद गुमानी के ज़रिये

गुस्ताख़ी करते हैं और कुफ़्र की हदों को पार कर आगे बढ़ जाते हैं तो ऐसे लोगों की तौबा हरगिज़ कुबूल न होगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक जिन लोगों ने अपने ईमान के बाद कुफ़्र किया फिर वो कुफ़्र में बढ़ते गये उनकी तौबा हरगिज़ कुबूल नहीं की जायेगी और वही लोग गुमराह हैं। (सू0—आले इमरान—90)

अपने गुनाहों पर पशेमान होने और आइन्दा गुनाहों से बाज़ रहने और बुराइयों से इजतिनाब व ऐराज़ के अहद का नाम तौबा है पस खुलूस दिल से तौबा करो और आइन्दा गुनाह न करने का अहद करो क्योंकि जब अल्लाह तआ़ला किसी के दिल को तौबा में सच्चा और ख़ालिस पाता है तो उसकी तौबा कुबूल फ़रमाता है।

—: जहन्नुम का बयान :—

जहन्नुम निहायत बुरी और दर्दनाक सख़्त अ़ज़ाब की जगह है अगर किसी शख़्स को सिर्फ़ दूर से ही इसका मुशाहिदा करा दिया जाये तो उसकी ज़िन्दगी दुश्वार हो जाये और उसकी रातों की नींद चली और वो दुनियाँ की तमाम नेअ़मतों व लज़्ज़तों को भूल जाये और वो अपनी तमाम उम्र उसकी फ़िक्र और उससे निजात पाने में सर्फ़ कर दे। दुनियाँ में इन्सान की पूरी उम्र जो सिर्फ़ मुसीबतो परेशानी रंजो अलम में गुज़रे तो वो जहन्नुम की एक दिन की ज़िन्दगी से ज़्यादा बेहतर है।

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन कुफ़्फ़ार में से एक शख़्स को लाया जायेगा जो दुनियाँ में नाज़ो नेअ़मत में पला होगा और फिर कहा जायेगा कि इसको जहन्नुम की आग में एक गोता दो फिर उससे कहा जायेगा तुमने कभी नेअ़मत देखी है वो कहेगा नहीं फिर जिसने दुनियाँ में सख़्त तकलीफ़ उठाई होगी उसको लाया जायेगा और कहा जायेगा कि जन्नत में एक गोता दो फिर उससे कहा जायेगा कि तुमने दुनियाँ में कोई तकलीफ़ देखी वो कहेगा नहीं यानी जहन्नुम की सख़्त तकलीफ़ें दुनियाँ की तकलीफ़ों से लाखों करोड़ों गुना ज़्यादा सख़्त होंगी और दुनियाँ की तमाम नेअ़मतें और लज़्ज़तें जन्नत के मुक़ाबले एक ज़र्रा बराबर भी नहीं है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
(जहन्नुम में) काफ़िर के लिये आग के कपड़े काते गयें हैं और उनके सरों पर खौलता हुआ पानी डाला जायेगा जिससे गल जायेगा जो कुछ उनके पेटों में है और उनकी खालें और उनके लिये लोहे के गुर्ज़ हैं जब घुटन के सबब उसमें से निकालना चाहेंगे तो फिर उसी में लौटा दिये जायेंगे और हुक्म होगा कि चखो आग का अ़ज़ाब। (सू0—हज—19—22)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और तुममें से कोई ऐसा नहीं कि जिसका गुज़र दोज़ख़ के ऊपर से न हो ये तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर ठहरी हुई बात है फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उसमें छोड़ देंगे जो घुटनों के बल उसमें गिरेंगे। (सू0—मरयम—71,—72)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अल्लाह तआ़ला के हुक्म से जहन्नुम की आग को एक हज़ार साल जलाया जायेगा हत्ता कि वो सुर्ख़ हो गई फिर एक हज़ार साल जलाया गया कि सफेद हो गई फिर एक हज़ार साल जलाया गया कि सियाह हो गई और अब वो सियाह अंधेरी है।
(शुअ़बुल ईमान–1/489)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जहन्नुमी का निचला होंठ उसके सीने पर गिरा होगा और ऊपर वाला होंठ उसके चेहरे को ढाँप लेगा। (जामअ़ तिर्मिज़ी–371)
(यानी आग की तपिश और उसकी शिद्दत के बाइस जहन्नुमी के होंठ सूज कर निहायत मोटे हो जायेंगे और उस पर शख़्त प्यास की शिद्दत से उनका बुरा हाल होगा)

काफ़िर नाफ़रमान मुजरिम जहन्नुम के सख़्त अंधेरे में होंगे और वो आग में इस तरह लिपटे होंगे कि चारों तरफ़ से आग उन पर छा जायेगी जो निहायत दर्दनाक होगी और कुछ लोंगो को आवाज़ दी जायेगी ऐ फ़लाँ बिन फ़लाँ तूने दुनियाँ में अपनी उम्र ना फ़रमानी में गुज़ारी और बुरे आमाल किये अब चखो मज़ा इस आग का और उन्हें औंधा करके आग में फेंक दिया जायेगा जहाँ पीने के लिये खौलता हुआ पानी और जहन्नुमियों का पीप पिलाया जायेगा और बड़े–बड़े साँप और बड़े–बड़े बिच्छू जो उन्हें काटेंगे और फ़रिश्ते जहन्नमियों को गुर्ज़ से मारेंगे।

तो वहाँ वो चीख़ेंगे चिल्लायेंगे और मौत की तमन्ना करेंगे लेकिन उन्हें मौत न आयेगी और उनके चेहरे सियाह हो जायेंगे और वो वहाँ अपने गुनाहों पर पछतायेंगे और अफ़सोस करेंगे लेकिन उनकी नदामत और अफ़सोस उन्हें कोई नफ़ा न दे सकेगा और उन्हें आग का तौक़ पहनाया जायेगा और चेहरों के बल घसीटते हुये आग में फेंक दिया जायेगा और बाज़ तो उस आग में इस तरह डूबे हुये होंगे जैसे कोई शख़्स पानी में डूबता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–
जहन्नुम उसके पीछे लगी और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा

बा मुश्किल (वो) उसको थोड़ा–थोड़ा घूँट पियेगा और गले से नीचे न उतार सकेगा और उसे हर तरफ़ से मौत आयेगी लेकिन वो मरेगा नहीं और उसके पीछे बड़ा ही सख़्त अ़ज़ाब होगा।
(सू0–इब्राहीम–16,–17)

इरशादे बारी तआ़ला है–
जो हमेशा दोज़ख़ में रहने वाले हैं उन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जायेगा वो उनकी आँतो को काटकर टुकड़े–टुकड़े कर देगा।
(सू0–मुहम्मद–15)

इरशादे खुदावन्दी है–
बेशक अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िकों और काफ़िरों को जहन्नुम में इकट्ठा करेगा। (सू0–निसा–140)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जहन्नुमियों को सबसे हल्का अ़ज़ाब ये होगा कि उन्हें आग के जूते पहनाये जायेंगे जिसकी गर्मी से उनका दिमाग़ खौलता होगा।
(सही बुख़ारी–4/262) (सही मुस्लिम–1/115)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
अगर जहन्नुम के पीप का एक डोल दुनियाँ में डाल दिया जाये तो ज़मीन वालों को बदबूदार बना दे। (मुस्नद अहमद–3/83)

जहन्नमियों के लिवास और उनके बिछौने सब आग के होंगे और वो आग में इस तरह उबलेंगे जैसे हंडिया उबलती हैं और जब उनके चमड़े जल जायेंगे तो फिर नये बना दिये जायेंगे और उन्हें तरह–तरह के अ़ज़ाब दिये जायेंगे और उनकी पेशानियों को लोहे के गुर्ज से तोड़ा जायेगा हत्ता कि उनकी पेशानियाँ चूर–चूर हो जायेंगी और उनके जिस्म पर बिच्छू चिमटें होंगे और उनके मुँह से पीप निकलेगी उनके जिगर फट जायेंगे और आँखो के डीले उनके चेहरों पर निकल पड़ेंगे और उनके रुख़सारो का गोस्त गलकर गिर जायेगा और उनकी हड्डियाँ गोस्त से खाली हो जायेंगी और वो जंजीरों में जकड़े हुये घसीटे जायेंगे और आग में दहकाये जायेंगे और इनके अलावा जहन्नमियों को बेशुमार अ़ज़ाब दिये जायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक हमने काफ़िरों के लिये तैयार कर रखी है ज़ंजीरें और तौक़ और भड़कती हुई आग। (सू0—दहर—4)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और काफ़िरों को खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब (दिया जायेगा ये) बदला (होगा) उनके कुफ़्र का। (सू0—यूनुस—4)

इरशादे खुदावन्दी है—
उन्हें आग का बिछौना है और आग ही ओढ़ना है और ज़ालिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। (सू0—आअ़राफ़—41)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जहन्नुम में कुछ साँप हैं जो ऊँट की गर्दन जैसे हैं वो एक मर्तबा डसेंगे तो उसका दर्द वो चालीस साल तक महसूस करेंगे और उसमें खच्चर की तरह बिच्छू हैं वो एक बार डसेंगे तो वो उसकी तकलीफ़ चालीस साल तक महसूस करेंगे (मुस्नद अहमद—4/119)

सरवरे क़ायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
आग ने अपने रब के यहाँ शिक़ायत करते हुये अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब बाज़ ने बाज़ को खा लिया चुनाँचा उसे दो बार साँस लेने की इजाज़त दी गई एक साँस सर्दियों में और एक साँस गर्मियों में तो गर्मियों में जो तुम्हें हरारत और सर्दियों में जो ठंडक महसूस होती है ये वही दो साँसे हैं। (सही मुस्लिम—1/224)

इन्सान के गुनाहों के मुताबिक़ जहन्नुम में मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब दिये जायेंगे किसी को कम और किसी को ज़्यादा और जहन्नुम में कई तबक़ात हैं और उनमें कई वादियाँ हैं जहन्नमियों को उनके जुर्म व बुरे आमाल के मुताबिक़ अलग—अलग तबक़ों में रखा जायेगा और उनमें कुछ तबक़ात ऐसे हैं जो इंतिहाई गहरे हैं जिसकी गहराई का अंदाज़ा लगाना ना मुमकिन है और जहन्नमियों पर होने वाले अ़ज़ाबों का शुमार करना भी ना मुमकिन है।

हदीस पाक में है कि जहन्नमियों पर भूक का अ़ज़ाब डाला जायेगा

पस वो खाना माँगेंगे तो उनको गले में अटकने वाला काँटेदार खाना दिया जायेगा जो उनके गले में अटक जायेगा फिर उन्हें ख़्याल आयेगा कि दुनियाँ में अटके हुये खाने को हम पानी से नीचे उतारा करते थे तब वो पानी माँगेंगे तो उन्हें खौलता हुआ पानी दिया जायेगा जब वो पानी उनके क़रीब किया जायेगा तो उनके चेहरों को भून कर रख देगा और उनके चेहरों की खाल उतरकर गिर जायेगी और जब वो पानी पियेंगे तो जो कुछ उनके पेटों में होगा सब को काटकर रख देगा हत्ता कि उनके पाख़ाने के मक़ाम से निकलेगा।

जहन्नुम की आग इतनी तेज़ और सख़्त होगी कि अगर जहन्नमियों को दुनियाँ की आग जहन्नुम की आग के बदले में मिले तो वो इस दुनियाँ की आग को लेना पसन्द करेंगे और उसमें खुशी खुशी दाख़िल हो जायेंगे हदीस पाक में है कि दुनियाँ की आग को रहमत के सत्तर (70) पानियों से धोया गया है तब इतनी तेज़ और सख़्त है तो जहन्नुम की आग का आ़लम क्या होगा जो तीन हज़ार साल तक दहकाई गई है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया—
बेशक थूहर (काँटेदार फल) का पेड़ गुनाहगारों की खुराक़ है गले हुये ताँबे की तरह पेट में जोश मारेगा जैसे खौलता हुआ पानी जोश मारता है फिर (हुक्म होगा) उसे पकड़कर भड़कती हुई आग की तरफ घसीटते हुये ले जाओ फिर उसके ऊपर खौलते हुये पानी का अ़ज़ाब डालो। (सू0—दुखान—43,—50)

इरशादे बारी तआ़ला है—
बेशक हमने ज़ालिमों के लिये आग तैयार कर रखी है जिसकी दीवारें उन्हें घेर लेंगी और अगर वो पानी की फ़रियाद करेंगे तो उन्हें खौलता हुआ पानी दिया जायेगा जो खौलते हुये धातु की तरह होगा जो उनके मुँह को भून देगा क्या ही बुरा पीना है और दोज़ख़ बुरी ठहरने की जगह। (सू0—कहफ़—29)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जहन्नमियों को गले में फंसने वाली खुराक़ काँटेदार खाना ज़क्कुम दिया जायेगा जो गले में अटक जायेगा चुनाँचा वो पानी तलब

करेंगे तो उन्हें खौलता हुआ पानी दिया जायेगा जब वो पानी उनके चेहरों के क़रीब होगा तो उनके चेहरों को भून देगा और जब वो पानी उनके पेट में दाख़िल होगा तो पेट में जो कुछ है (आँते वग़ैराह) उन्हें काटकर बाहर निकाल देगा। (जामअ़ तिर्मिज़ी–370)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया अगर ज़क़्कूम (जहन्नमियों के खाने) का एक क़तरा दुनियाँ के समुन्दर में गिर जाये तो दुनियाँ वालों की ज़िन्दगी दुश्वार करदे तो उनका क्या हाल होगा जिनका खाना ज़क़्कूम होगा। (सुनन इब्ने माजा–331)

जहन्नमियों पर रोना मुसल्ल्त किया जायेगा और वो इतना रोयेंगे कि आँसू ख़त्म हो जायेंगे फिर वो खून के आँसू रोयेंगे और किसी के मुँह में आग की लगाम दी जायेगी और किसी को दोज़ख़ियों का पसीना पिलाया जायेगा और किसी को दोज़ख़ियों की पीप पिलाई जायेगी और बाज़ लोगों की शर्मगाह में जंजीरें डाली जायेंगीं और उसे आग में इस तरह भूना जायेगा जैसे कि सीक में कबाब भूने जाते हैं और बाज़ को खौलते हुये पानी में गोता दिया जायेगा तो उसका तमाम गोस्त गलकर गिर जायेगा और हड्डियों के ढाँचे के सिवा कुछ न बचेगा।

कुछ लोगों के चेहरों पर आग लिपटी होगी और जिसने दुनियाँ में खुदकुशी की होगी उसको जहन्नुम में उसी तरह का अ़ज़ाब दिया जायेगा जैसे किसी शख़्स ने किसी ऊँची जगह से कूदकर जान दी होगी तो उस शख़्स को जहन्नुम में आग के पहाड़ पर चढ़ाया जायेगा तो उस पर उसे सत्तर साल तक चढ़ाया जायेगा और सत्तर साल तक उसे नीचे गिराया जायेगा इस तरह खुदकुशी करने वालों को मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब दिये जायेंगे और दोज़ख़ियों के चेहरे सियाह होंगे और वो लोग आग के तौक़ और ज़ंजीरों में जकड़े होंगे और गधों की तरह चिल्लाते होंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–
बेशक हमारे पास भारी बेड़ियाँ और (दोज़ख़ की) भड़कती हुई आग है और हलक़ में अटक जाने वाला खाना और निहायत दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सू0–मुज़म्मिल–12,–13)

इरशादे बारी तआ़ला है—
जब उनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और ज़ंजीरों से घसीटे जायेंगे फिर खौलते हुये पानी में फिर आग में दहकायें जायेंगे।
(सू0—मोमिन—71,—72)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम मेरे बन्दों में जो भी बन्दा जितनी शराब पियेगा मैं उसे उतनी ही पीप पिलाऊँगा और जो मेरे ख़ौफ़ से शराब छोड़ देगा तो मैं उसे पाक साफ़ हौज़ो से पिलाऊँगा। (मुस्नद अहमद)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जहन्नमियों पर रोना मुसल्लत किया जायेगा तो वो रोयेंगे हत्ता कि उनके आँसू ख़त्म हो जायेंगे फिर वो खून के साथ रोयेंगे हत्ता कि उनके चेहरों पर गढ्ढे पड़ जायेंगे कि अगर उसमें कश्तियाँ छोड़ी जायें तो वो चल पड़े। (सुनन इब्ने माजा—330)

जहन्नुमी कहेंगे कि काश दुनियाँ में हमने आख़िरत कमाई होती तो आज इन दर्दनाक सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला न होते और जन्नत की दायमी नेअ़मतों और लज़्ज़तों का लुत्फ़ उठा रहे होते और सबसे बड़ी नेअ़मत अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात और दीदार का शरफ़ हमें हासिल होता और हम जन्नत में ऐशो आराम से रह रहे होते लेकिन हमने जन्नत के बदले हक़ीर दुनियाँ व माल का सौदा किया और अ़ज़ीम नेअ़मत यानी जन्नत को खो दिया और बहुत बड़े ख़सारे में चले गये और वो दुनियाँ भी हमारी न हुई और अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ना फ़रमानी ने हमें जहन्नुम में पहुँचा दिया और हमने खुद अपने आप को हलाक कर लिया और कभी न ख़त्म होने वाले अ़ज़ाब की तरफ़ आ पहुँचे जहाँ हमें हमेशा अ़ज़ाब भुगतना होगा और न कभी हमें मौत आयेगी।

जहन्नुमी रब तआ़ला से फ़रियाद करेंगे—
ऐ मेरे रब हमें निकाल दे कि हम अच्छे काम करें जो पहले नहीं करते थे। (सू0—फ़ातिर—37)

फिर रब तआला फ़रमायेगा—
क्या हमने तुम्हें इस क़दर उम्र नहीं दी थी कि उसमें जो नसीहत हासिल करना चाहते तो कर सकते थे और तुम्हारे पास डर सुनाने वाला आया पस अ़ज़ाब चखो ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (सु0—फ़ातिर—37)

फिर जहन्नुमी कहेंगे—
हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आ गई थी और हम गुमराह लोग थे ऐ हमारे रब हमें इससे निकाल दे पस अगर हम दोबारा वही काम करें तो बेशक़ हम ज़ालिम होंगे। (सू0—मोमिनून—106,—108)

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा—
इसमें ज़िल्लत व रुसवाई के साथ रहो और मुझसे बात न करो। (सू0—मोमिनून—108)

हम अपने नफ़्स और उसकी ख़्वाहिसात के गुलाम हैं और अपने नफ़्स की इताअ़त व फ़रमाबरदारी करते हैं लेकिन अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ना फ़रमानी करते हैं हम अंधेरों से डरते हैं अंधेरी रात में तन्हा वीराने और बयाबान जंगलों में जाने से हम डरते हैं और हमारे दिल ख़ौफ़ से काँपते हैं लेकिन हमारे दिल अपने रब से बे ख़ौफ़ रहते हैं और अंधेरी क़ब्र का डर हमें नहीं सताता जहाँ हमें मुद्दतों रहना है और क़यामत की सख़्तियों और हौलनाकियों और निहायत सख़्त व दर्दनाक अ़ज़ाब और दोज़ख़ की आग के दहकते हुये शोलों से हम ख़ौफ़ज़दा नहीं होते क्या हमारा जिस्म आतिशे दोज़ख़ के शोलों को बर्दास्त कर सकेगा।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सुन लो जन्नत ख़िलाफ़े नफ़्स काम करने से हासिल होगी और दोज़ख़ में लोग शहवात (ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात) की पैरवी की वजह से जायेंगे।

—: मुशाबहत :—

अल्लाह तआ़ला की बनाई हुयी किसी भी चीज़ को बदलना बहुत बुरा फ़ेअ़ल है और हर शख़्स को इस बुराई से बचना चाहिये तमाम मामलात में नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की इताअ़त और उनकी सुन्नतों पर अ़मल करना चाहिये यही हर शख़्स के लिये सबसे बेहतर है और खुद को अल्लाह व रसूल की मुहब्बत और ईमान के नूर से ज़ीनत दो ताकि हम अल्लाह व रसूल के महबूब हो जायें।

काला ख़िज़ाब और मुशाबहत की मुमानियत व मज़म्मत अहादीस मुबारका में वारिद हैं जिनमें चन्द अहादीस मुन्दरजा ज़ैल है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सियाह (काला) ख़िज़ाब जहन्नमियों का ख़िज़ाब है।
(सही मुस्लिम—2/199)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
सियाह (काला) ख़िज़ाब वाले जन्नत की खुश्बू भी न सूघेंगे।
(बैहकी—7/311)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
सफेद बाल न उखेड़ो क्योंकि ये मोमिन का नूर है।
(मुस्नद अहमद—2/212)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
सुर्ख रंग मोमिन का ख़िज़ाब है। (मुस्तदरक हाकिम—3/526)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो जिससे मुशाबहत करे वो उन्हीं में से है। (मुस्नद अहमद—2/5)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
औ़रत का अपनी भवों को उखेड़ना और पतला करके खूबसूरत बनाना जाइज़ नहीं और जो ऐसा करे उस पर लानत है।
(सही बुख़ारी—2/880)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– जो औ़रत मर्दों जैसी शक्लो सूरत बनाये वो जन्नत में न जायेगी। (सुनन निसाई)

बुख़ारी व तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–लानत हो जनाना मर्दों और मर्दानी औ़रतों पर नीज़ फ़रमाया–इन्हें अपने घरों से निकाल दो।
(दाढ़ी के फ़ज़ाइल–इमाम अहमद रज़ा रह०)

अबू दाऊद व इब्ने माजा की हदीस है हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने लानत फ़रमाई उस मर्द पर जो औ़रत का पहनावा पहने और उस औ़रत पर जो मर्द का पहनावा पहने।
(दाढ़ी के फ़ज़ाइल–इमाम अहमद रज़ा रह०)

—: दुरुदो सलाम की फ़ज़ीलत :—

दुरुदो सलाम एक ऐसा महबूब और मक़बूल अ़मल है जो कुर्बे इलाही और कुर्बे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पाने का बेहतरीन ज़रिया है हम तमाम इ़बादत और नेक अ़मल रब तआ़ला के लिये करते हैं लेकिन इन तमाम आमाल के करने में हमसे कुछ कोताही भी हो जाती है या उन आमालों के करने में कुछ ग़लतियाँ भी हमसे हो जाती हैं या हम उनके सही आदाब अदा नहीं कर पाते या इस दरमियान हमसे कुछ गुनाह या ऐसी बुराई वाक़ेअ़ हो जाती है जिसके सबब हम ख़्याल करते हैं कि मेरी इ़बादत या नेक अ़मल बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल होगा या नहीं और हमें हमेशा इस बात का ख़द्शा रहता है लेकिन रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर दुरुदो सलाम भेजने के अ़मल में कुबूलियत का कोई ख़द्शा नहीं है क्योंकि ये अ़मल बारगाहे खुदावन्दी में ज़रुर मक़बूल होता है।

दीगर इ़बादत हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की इताअ़त की अ़लामत है लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर दुरुदो सलाम भेजना ये हुजूर से मुहब्बत की अ़लामत है और मुहब्बते रसूल के सबब हमारा हर अ़मल बारगाहे खुदावन्दी में क़ाबिले कुबूल होता है तमाम इ़बादत हुक्मे इलाही है लेकिन दुरुदो सलाम हुक्मे इलाही के साथ—साथ सुन्नते इलाही भी है और अल्लाह तआ़ला और उसके तमाम फ़रिश्ते हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर दुरुद भेजते हैं इसलिये इस अ़मल को ख़ास और ज़्यादा अहमियत और फ़ज़ीलत हासिल है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दुरुद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले नबी पर तो ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरुद और सलाम भेजो। (सू0—अहज़ाब—56)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसने मुझ पर सुबह व शाम दस बार दुरुद पाक पढ़ा उसे क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (मजमउज़्ज़वाइद—10/163)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो मुझ पर पचास मर्तबा दिन भर में दुरुद पढ़ेगा तो क़यामत के दिन में उससे मुसाफ़ाह करुँगा। (अल कौलुल बदीअ)

सरवरे क़ायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो मुसलमान मुझ पर दुरुद पाक पढ़ता रहता है तो फ़रिश्ते उस पर रहमत भेजते रहते हैं अब बन्दे की मर्ज़ी है कम पढ़े या ज़्यादा। (इब्ने माजा—1/490)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रहमते नाज़िल फ़रमाता है और दस गुनाह माफ़ करता है और दस दरजात बुलन्द फ़रमाता है। (मिश्कात, नसाई शरीफ़)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मुझ पर दरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और तुम्हारे बातिन की पाकीज़गी है। (अल कौलुल वदीअ)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढ़े उसके लिये अल्लाह तआ़ला एक क़ीरात अज्र लिखता है और एक क़ीरात उहद पहाड़ के जितना है। (अल कौलुल वदीअ) (मुसन्निफ अब्दुल रज़्ज़ाक—1/39)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जिसने मुझ पर एक मर्तबा दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और उसके नामे आमाल में दस नेकियाँ लिखता है। (तिर्मिज़ी—2/27)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
तुम जहाँ पर भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो क्योंकि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (मुअ़जम कबीर तिबरानी—3/82)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जिसने मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर

दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस मर्तबा दुरुद पढ़े अल्लाह तआ़ाला उस पर सौ रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सौ मर्तबा दुरुद पाक पढ़े तो अल्लाह तआ़ाला उसकी दोनो आँखो के दरमियान लिख देता है कि ये जहन्नुम की आग से आज़ाद है और अल्लाह तआ़ाला क़यामत के दिन उसको शुहदा के साथ रखेगा। (मुअ़जम औसत–5/252)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– जब दो दोस्त आपस में मुलाक़ात करते हैं और मुसाफ़ाह करते हैं और दुरुद पाक पढ़ते हैं तो उन दोनो के जुदा होने से पहले उनके गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है–
जिस शख़्स को ये बात पसन्द हो कि जब वो दरबारे इलाही में हाज़िर हो और अल्लाह तआ़ाला उससे राज़ी हो तो उसे चाहिये कि मुझ पर दुरुद पाक की कसरत करे। (अल कौलुल वदीअ)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
बरोज़े क़यामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वो लोग होंगे जो दुनियाँ में मुझ पर ज़्यादा दुरुद पाक पढ़ते होंगे। (तिर्मिज़ी–2/27)

हज़रत अबी बिन काअ़ब (रज़ि0) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम मेरे पास इबादत से फ़ारिग़ होकर जो वक़्त बचता है मैं उसमें एक तिहाई वक़्त दुरुदो सलाम में सर्फ़ करता हूँ क्या दुरुदो सलाम के लिये इतना वक़्त काफ़ी है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया ठीक है लेकिन कुछ और बढ़ा दो तो बेहतर है अ़र्ज़ किया आइन्दा मैं आधा वक़्त दुरुदो सलाम पर सर्फ़ करुँगा हुज़ूर ने फ़रमाया ठीक है लेकिन कुछ और बढ़ा दो तो बेहतर है अ़र्ज़ किया फिर मैं दो तिहाई वक़्त दुरुदो सलाम पर सर्फ़ करुँगा फिर फ़रमाया इसमें भी इज़ाफ़ा करो तो बेहतर है जब उन्होंने ये फ़रमान सुना तो बोले फिर मैं सारा वक़्त दुरुदो सलाम पर सर्फ़ करुँगा फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–तब अल्लाह तआ़ाला तेरे तमाम काम संवार देगा और तुझे किसी चीज़ की हाजत नहीं रहेगी।

हर दुआ आसमान और ज़मीन के दरमियान ठहरी रहती है जब तक हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की बारगाह में हद्यये दुरुद दरपेश न किया जाये। (तिर्मिज़ी—2/28)

फ़रिश्तों के कई गिरोह हैं और उनके काम भी मुख़्तलिफ़ हैं और उनकी इबादत भी अलग—अलग हैं और जिसको जो काम या इबादत का हुक्म मिला है वो वही काम और वही इबादत करते हैं और उसके अलावा कोई दूसरा काम या कोई दूसरी इबादत नहीं कर सकते जैसे कोई ज़िक्रे इलाही में मशगूल रहता है कोई अल्लाहु अकबर का विर्द करता है कोई सुबहान अल्लाह की तस्बीह करता है कोई सजदे में कोई क़याम में अल्लाह तआला की इबादत करता हैं लेकिन दुरुदो सलाम के मामले में अल्लाह तआला ने सबको हुक्म दे रखा है और तमाम फ़रिश्ते नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरुद भेजते हैं और हम बन्दों के लिये भी यही हुक्म है और तमाम अइयाम में दुरुद पाक पढ़ने की सबसे ज़्यादा फ़ज़ीलत योमे जुमा को है इसलिये जुमा के दिन हमें चाहिये कि कसरत से दुरुद पाक पढ़े और इस दिन दुरुद पाक पढ़ने की हदीस पाक में बड़ी फ़ज़ीलत आई है इसलिये इस दिन बड़े ज़ौक़ और शौक़ के साथ नबी अकरम सल्लल्लहु अलैह वसल्लम की बारगाहे अक़दस में ज़्यादा से ज़्यादा दुरुदो सलाम के नज़राने पेश करें ताकि हमें हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की मुहब्बत और कुर्बत हासिल हो और हम इस अमल की बेहतर जज़ा पायें।

रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
शबे जुमा और रोज़े जुमा मुझ पर दुरुद पाक की कसरत करो और जो ऐसा करेगा तो क़यामत के दिन मैं उसका शफ़ीअ व गवाह बनूँगा। (शुअबुल ईमान—3/111)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स रोज़े जुमा मुझ पर सौ बार दुरुद पढ़े तो क़यामत के दिन उसके साथ एक ऐसा नूर आयेगा अगर वो सारी मख़लूक़ में तक़सीम कर दिया जाये तो सब को किफ़ायत करे।
(हिल्यातुल औलिया—8/49)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जो शख़्स मुझ पर रोज़े जुमा दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा तो क़यामत के दिन में उसकी शफ़ाअ़त करुँगा। (कंज़ुल उ़म्माल)

फरमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
शबे जुमा व रोज़े जुमा मुझ पर कसरत से दुरुद पढ़ो क्योंकि तुम्हारा दुरुद मुझ पर पेश किया जाता है (मुअ़जम औसत—1/84)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसने मुझ पर रोज़े जुमा सौ बार दुरुद पाक पढ़ा उसके दो सौ साल के गुनाह माफ़ होंगे। (कंज़ुल उ़म्माल)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स रोज़े जुमा और शबे जुमा सौ बार दुरुद पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसकी सौ हाजतें पूरी करेगा सत्तर आख़िरत की और तीस दुनियाँ की। (शुअबुल ईमान—3/111)

अल्लाह तआ़ला की इबादत के लिये कुछ हदें हैं और हदों के दायरे में रहकर ही हमें इबादत करनी होती है जैसे पाँच नमाज़ों का वक़्त मुक़र्रर है इन वक़्तो में ही नमाज़ अदा करने से नमाज़ अदा होती है और अगर वक़्त निकल जाये तो क़ज़ा लाज़िम आती है और इन नमाज़ों की भी हद है यानी पाँच से ज़ायद फ़र्ज़ नमाज़ अदा नहीं कर सकते और अगर करेंगे तो वो निफ़िली इबादत शुमार की जाती है इसी तरह रमज़ान के रोज़े हैं जिनके लिये रमज़ानुल मुबारक का महीना होना शर्त है और तीस से ज़्यादा रोज़े नहीं रख सकते और अगर रखेंगे तो वो निफ़िली रोज़े शुमार किये जायेंगे और उसमें भी वक़्त मुक़र्रर है यानी सुबह सादिक़ से गुरूबे आफ़ताब तक का वक़्त रोज़े के लिये मुक़र्रर है और इस हद से कोई बाहर नहीं जा सकता।

इसी तरह हज के लिये भी दिन मुक़र्रर है इनके अलावा दीगर अइयाम (दिनों) में हज नहीं हो सकता लेकिन रब तआ़ला ने दुरुदो सलाम के लिये कोई पाबंदी या हद मुक़र्रर नहीं की बल्कि हमें पूरी आज़ादी दी कि सुबहो शाम रात दिन

चलते फिरते उठते बैठते जब चाहो जितनी बार चाहो मेरे महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर दुरुदो सलाम भेजो और जो इस अ़मल से महरूम रहा उसके लिये हलाकत है और वो कुर्बे इलाही और कुर्बे रसूल से महरुम रहता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसके पास मेरा ज़िक्र हुआ और उसने दुरूद न पढ़ा उसने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (मुअ़जम कबीर तिबरानी—3/128)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूदा हो जिसके पास मेरा ज़िक्र हो और वो मुझ पर दुरूद न पढ़े। (हाकिम)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— जिसके पास मेरा ज़िक्र हो और वो मुझ पर दुरूद न पढ़े तो उसने मुझसे जफ़ा की। (मुसन्निफ अब्दुल रज़्ज़ाक—2/142)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
जो लोग अपनी मजलिस में अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े बग़ैर उठ गये तो तो वो बदबूदार मुर्दार उठे। (शुअ़बुल ईमान—2/215)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो मुझ पर दुरुद पाक पढ़ना भूल गया वो जन्नत का रास्ता भूल गया। (अल कौलुल वदीअ)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जिसके पास मेरा ज़िक्र हो वो मुझ पर दुरुद न पढ़े तो वो लोगों में कंजूस तरीन शख़्स है। (मुस्नद अहमद—1/429)

जब हम किसी जान पहचान वाले या दोस्त अहबाब या किसी अजनबी से मुलाक़ात करते हैं तो मुलाक़ात की इब्तिदा (शुरुआ़त) सलाम से करते हैं या जब किसी मुसलमान भाई के घर में दाख़िल होते हैं तब भी हम सबसे पहले सलाम करते हैं क्योंकि

तअ़ाल्लुक़ का आगाज़ सलाम फिर कलाम से होता है और ये फ़ेअ़ल अल्लाह व रसूल के नज़दीक बहुत ज़्यादा पसंदीदा है और हुक्मे इलाही भी है।

कुरान मजीद में अल्लाह तअ़ाला इरशाद फ़रमाता है—
ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा दूसरो के घरों में दाख़िल न हुआ करो जब तक कि तुम उनसे इजाज़त न ले लो और उसमें रहने वालों को (दाख़िल होते ही) सलाम न कर लो ये तुम्हारे लिये बेहतर है। (सू0—नूर—27)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
बेशक मग़फिरत को बाजिब करने वाली बातों में सलाम का फैलाना और हुस्ने कलाम भी है। (कंज़ुल उ़म्माल—9/116)

जब हम किसी अजनबी से से राब्ता क़ायम करते हैं या जान पहचान करते हैं तो सबसे पहले हम सलाम करते हैं और सलाम का सिलसिला जब काफ़ी दिनों तक चलता रहता है तो हमारे तअ़ाल्लुक़ात में मज़बूती आती है और इसी सलाम के तसुलसुल से आपस में मुहब्बत पैदा होती है इसलिये अगर हम चाहते हैं कि हमारा भी तअ़ाल्लुक़ सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से बेहतर और मज़बूत हो और बाहम मुहब्बत पैदा हो तो हमें चाहिये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर दुरूदो सलाम की कसरत करें ताकि हमारे और उनके दरमियान बेहतर तअ़ाल्लुक़ात और मुहब्बत का रिश्ता क़ायम हो और हमें उनकी नज़दीकी हासिल हो।

अल्लाह तअ़ाला बन्दे की नमाज़ को तब तक कुबूल नहीं करता जब तक कि बन्दा अपनी नमाज़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर सलाम न भेजे और किसी शख़्स की नमाज़ उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं होती जब तक कि वो अल्लाह के महबूब पर सलाम न भेजे।

यानी जब हम नमाज़ में तशहुद के लिये बैठते हैं और क़ायदा की हालत में जब हम अत्तह्यातु पढ़ते हैं तो जब तक अस्सलामुअ़लैका अइयुहन्नबीइयु व रहमतुल्लाहि व बराकातहू पूरी न

पढ़ें तब तक नमाज़ मुकम्मल नहीं होती हालाँकि नमाज़ अल्लाह तआला की इबादत है लेकिन अल्लाह तआला को गवारा नहीं कि मेरी इबादत में जब तक मेरे महबूब पर सलाम न भेजोगे तब तक मैं अपनी इबादत को कुबूल नहीं करूँगा।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिबरईल (अ़लै0) मेरे पास आये और कहा कि या रसूलुल्लाह क्या आप इस बात पर राज़ी नहीं कि आपकी उम्मत से जो शख़्स एक बार दुरूद भेजे तो उस पर दस रहमतें नाज़िल हों और जो एक बार सलाम भेजे तो उस पर दस बार सलामती हो।
(मुस्नद अहमद—1/441)

हजरत अबू हुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया— जब कोई शख़्स मुझे सलाम भेजता है तो मैं उसके सलाम का जवाब देता हूँ। (अबू दाऊद व बैहकी)

हदीस पाक में है कि अल्लाह तआला ने आपकी क़ब्र शरीफ़ पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है जो आपके उम्मतियों के सलाम आप तक पहुँचाता है। (मुस्नद अहमद—1/441)

मज़कूरा बाला अहादीस मुबारका से ये मालूम हुआ कि जब हम नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर सलाम भेजते हैं तो हमारे आक़ा हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम गुम्बदे खज़रा से हमें जवाब देते हैं और सलाम सलामती की दुआ़ है तो ज़रा सोचो कि हमें हमारे सलाम के जबाब में हमारे आक़ा हमें सलामती की दुआ़ देते हैं जो हमारे लिये दुनियाँ व आख़िरत में भलाई और ख़ैर और सआ़दत का मक़ाम है।

और सलाम इस्लाम का बेहतरीन अ़मल और सलामती पाने का बेहतरीन ज़रिया है और अल्लाह तआ़ला ने अपने तमाम अम्बियाकिराम अ़लैहिमुस्सलाम को सलाम फ़रमाया इसलिये ये अ़मल सुन्नते रसूल के साथ—साथ सुन्नते इलाही भी है और सलाम का सिलसिला तो जन्नत में भी क़ायम रहेगा जब लोग अल्लाह रब्बुल इज्ज़त के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे तो रब तआ़ला फ़रमायेगा

अस्सलामु अ़लैकुम या अहलल जन्नती (यानी ऐ जन्नतियों तुम पर सलाम हो) और जब लोग जन्नत के दरवाज़ों से जन्नत में दाख़िल होंगे तो जन्नत के दरोग़ान कहेंगे कि तुम पर सलाम हो।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
और उस (जन्नत) के दरोग़ान कहेंगे कि तुम पर सलाम हो तुम खूब रहे तो हमेशा रहने के लिये जन्नत में दाख़िल हो जाओ। (सू0—जुमर—73)

इरशादे बारी तआ़ला है—
वो इस (जन्नत) में न कोई बेहुदगी सुनेंगे और न कोई गुनाह की बात मगर एक ही बात (कि सलाम वाले हर तरफ़ से) सलाम ही सलाम सुनेंगे। (सू0—वाक़िया—25,—26)

इरशादे बारी तआ़ला है—
उन पर (यानी जन्नत वालों पर) सलाम होगा मेहरबान रब की तरफ़ से फ़रमाया हुआ। (सू0—यासीन—58)

इरशादे खुदावन्दी है—
सलाम हो नूह पर सब जहानों में बेशक हम नेकोकारों को इस तरह बदला दिया करते हैं बेशक वो हमारे (कामिल) ईमान वाले बन्दों में से थे फिर हमने दूसरो को ग़र्क़ कर दिया। (सू0—सफ़्फ़ात—79,—82)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
सलाम हो इब्राहीम पर इसी तरह हम मुहसिनों को सिला दिया करते हैं बेशक वो हमारे आला दर्जे के (कामिल) बन्दों में से थे। (सू0—सफ़्फ़ात—109,—111)

इरशादे बारी तआला है—
और तमाम रसूलो पर सलाम हो। (सू0—सफ़्फ़ात—181)

—: खाने के आदाब और भूक से :—
कम खाने की फ़ज़ीलत

अल्लाह तआ़ला की बेशुमार नेअ़मतों में खाना भी एक बड़ी नेअ़मत है और अगर हमारे खाने का तरीक़ा अल्लाह व रसूल के हुक्म और सुन्नतों के मुताबिक़ हो तो वो खाना हमारे लिये बाइसे रहमत और बरकत होता है और भूक से ज़्यादा खाना खिलाफ़े सुन्नत और जिस्म को कई नुकसानात देने वाला होता है जो बहुत सी बीमारियों को पैदा करता है और भूक से कम खाना हमारे लिये हर हाल में बेहतर है अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ की एक हद मुक़र्रर की है और खाने की भी एक हद है और इस हद के अन्दर ही रहने में ही हमारी भलाई है क्योंकि हद से आगे बढ़ने वाले अल्लाह तआ़ला को पसन्द नहीं हैं।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और खाओ और पियो और हद से आगे न बढ़ो बेशक हद से आगे बढ़ने वाले उस (परवर दिगार) को पसन्द नहीं हैं। (सू0—आअ़राफ़—31)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अपनी भूक के तीन हिस्से करो एक खाना, एक पानी और एक साँस के लिये। (सुनन इब्ने माजा—248)

अगर कोई शख़्स ये गुमान रखे कि कम खाने से इन्सान की सेहत ख़राब हो जाती है और वो कमज़ोर हो जाता है तो उसका ये गुमान बिल्कुल ग़लत और बे बुनियाद है बल्कि ज़्यादा खाने से दुनियाँ और आख़िरत में नुकसान होगा और दुनियाँ का नुकसान ये है कि उसकी सेहत ख़राब रहेगी और ज़्यादा खाने के सबब वो कई तरह की बीमारियों में मुब्तिला होगा और आख़िरत का नुकसान ये है कि कम खाने के सबब आख़िरत में अल्लाह तआ़ला उसे जो इनामात अ़ता करेगा तो वो उन इनामात से महरुम रहेगा और जो शख़्स अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुताबिक़ कम खाता है और अपने खाने में अल्लाह तआ़ला की खुशनूदी और रज़ा चाहता है तो अल्लाह तआ़ला उसे दुनियाँ में बीमारियों से महफ़ूज़ रखता और वो सेहतमंन्द रहता है और अल्लाह तआ़ला उसे आख़िरत में बेशुमार

इनामात से सरफ़राज़ फ़रमायेगा और लोग उसके इनामात को देखकर रश्क करेंगे और भूक से कम खाने वाले का दिमाग़ तेज़ और दिल होशियार होता है और अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुताबिक़ हर काम करना हर शख़्स के लिये बेहतर और बाइसे ख़ैर है और भूक से कम खाना अल्लाह व रसूल के नज़दीक पसंदीदा फ़ेअ़ल है और ईमान का तकाज़ा ये है कि जो चीज़ अल्लाह व रसूल को पसन्द हो वही हमें भी पसन्द होना चाहिये।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
हर चीज़ की ज़कात है और जिस्म की ज़कात भूक है।
(सुनन इब्ने माजा—126)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स ख़्वाहिश के बावजूद एक लुक्मा भी छोड़ेगा उसके लिये जन्नत में एक दर्जा बुलन्द होगा।

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों के सामने उस बन्दे पर फख़्र करता है जो दुनियाँ में कम खाता है और फ़रमाता है ऐ फ़रिश्तों तुम गवाह हो जाओ मेरा बन्दा खाने के लिये जितने लुक्मे छोड़गा मैं उसे जन्नत में उतने ही दरजात अ़ता करुँगा (कंजुल उ़म्माल—15/776)

जब कोई शख़्स भूक से कम खाता है तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स का ज़िक्र फ़रिश्तों में करता है और कहता है कि ऐ फ़रिश्तों देखो मेरे उस बन्दे को जो मेरी रज़ा के लिये भूक से कम खाता है और उस बन्दे पर अल्लाह तआ़ला फख़्र करता है तो वो बन्दा कितना खुशनसीब है जिसका ज़िक्र अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों में करे फिर अल्लाह तआ़ला उस शख़्स के लिये अपनी रहमत के दरबाज़े खोल देता है और जो लोग सेर होकर खाते हैं वो इस रहमत से महरुम रहते हैं और क़यामत के दिन भूके रहेंगे और अल्लाह व रसूल के नज़दीक वो बुरे लोग हैं।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
मेरी उम्मत के बुरे लोग वो है जो नेअ़मतों में पलते हैं और उनका

मक़सद तरह–तरह के खाने और उम्दाह लिबास है।
(अत्तरग़ीब, वत्तरहीब–3/115)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
मोमिन एक आँत में खाता है और मुनाफ़िक़ सात आँतो में खाता है।
(सही बुख़ारी–2/812)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
जो लोग दुनियाँ में कम खाते हैं वो क़यामत में सेर होकर खायेंगे।

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की हयाते तइयबा का अगर हम मुतालाअ़ करें तो हमें पता चलता है कि अल्लाह तआ़ला के महबूब सरवरे कायनात इमामुल अम्बिया रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के घर कई–कई दिनों तक चूल्हा नहीं जलता था अगर आप चाहते तो सोने के पहाड़ आपकी मिल्कियत में होते लेकिन आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये फ़ाक़ा कशी इख़्तियार की और आपकी पूरी हयाते तइयबा में आपके दहन मुबारक में कभी दो रंग के खाने एक साथ जमा नहीं हुये और आपका और आपके सहाबाकिराम (रज़ि0) का कई–कई दिनों का फ़ाक़ा हुआ करता था।

दुनियाँ में बे शुमार औलियाकिराम और बुज़ुर्गानेदीन तशरीफ़ लाये और उनका हमेशा यही मामूल रहा कि वो भूक से कम खाते और अपने खाने में नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का तरीक़ा इख़्तियार करते थे और खाने के आदाब और सुन्नतों पर अ़मल करते थे और हम खुद को हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का आशिक़ और गुलाम कहते हैं तो क्या हम पर ये लाज़िम नहीं कि हम उनके हुक्म और सुन्नतों को अपने अ़मल में लायें और खाने के तमाम आदाबों पर अ़मल करें और हमेशा भूक से कम खायें ताकि दुनियाँ व आख़िरत में उसका बेहतर अज्र पायें।

हदीस पाक में है कि खातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा रोटी का एक टुकड़ा लेकर सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो आपने

पूछा कि ये टुकड़ा कैसा है तो उन्होने अ़र्ज़ किया कि मैने एक रोटी पकाई थी तो मैने आपके बग़ैर खाना पसन्द नहीं किया इसलिये मैं आपके पास ले आयी फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—ऐ मेरी बेटी फ़ातिमा तीन दिन के बाद ये पहला खाना है जो तुम्हारे वालिद के दहन मुबारक में दाख़िल हुआ है। (मुअ़जम कबीर तिबरानी—1/259)

हमें चाहिये कि हमेशा बैठ कर खायें पियें और भूक से कम खायें और खड़े होकर कभी कुछ न खायें पियें और कभी किसी खाने को बुरा न कहें क्योंकि हमारे आक़ा सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने कभी खाने की बुराई नहीं की अगर अच्छा लगा तो तनावुल फ़रमाया नहीं तो छोड़ दिया और रोटी के चार टुकड़े करके खायें और रोटी अगर ज़मीन पर गिर जाये तो साफ़ करके खालें और रोटी की इज़्ज़त करें और रोटी से कभी हाथ न पोंछे और गर्म खाना न खायें क्योंकि गर्म खाने में बरकत नहीं होती और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने कभी गर्म खाना तनावुल नहीं फ़रमाया

और खाने से पहले अपने दानों हाथों को पानी से धोयें लेकिन पौंछें नहीं लेकिन खाना खाने के बाद हाथ धोकर कपड़े से पौंछ लें और दाँतों को उँगली से साफ़ करके कुल्ली करें और दस्तर ख़्वान पर बैठकर कुछ लोग मिलकर खाना खायें क्योंकि ऐसे खाने में बरकत ज़्यादा होती है और खाना खाते वक़्त कोई ऐसी बुरी बात या ऐसी बात जिससे घिन आये न कहें और पानी को तीन साँसों में रोककर पियें और साँस को बर्तन से बाहर लें और अगर कहीं ऐसा मौक़ा आये कि खाना कुर्सी मेज़ पर हो तो अपने जूते चप्पल उतारकर खाना खायें और खाने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ें और खाना खाने के बाद अलहम्दु लिल्लाह कहें ताकि जो खाना हमें अल्लाह तआ़ला ने खिलाया है उसका शुक्र अदा हो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
खड़े होकर और लेटकर पानी न पियें। (सही मुस्लिम —2/173)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
खाने के गिरे हुये टुकड़े को जो उठाकर खाये वो बे फ़िक्री की ज़िन्दगी गुज़ारता है और उसकी औलाद बा ख़ैर रहती है। (अल विदाया वन्निहाया)

—: निकाह और फ़िज़ूल ख़र्ची :—

निकाह करना रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सुन्नत है लेकिन निकाह से जुड़े हुये तमाम कामों को अगर हम सुन्नत के मुताबिक़ करें तो सही मायने में यही सुन्नत पर अ़मल है मगर आज हालात ये हैं कि शादी ब्याह में सिर्फ़ निकाह को छोड़कर बाक़ी ज़्यादातर काम खिलाफ़े शरअ़ किये जाते हैं बाज़ लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत और गुलामी का दावा करते हैं लेकिन काम जाहलियत और शैतान के करते हैं ज़रा सोचें कि शादी ब्याह में हम कितने काम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सुन्नतों और तरीक़ों पर करते हैं।

जब हम अपने लड़के की शादी का इरादा करते हैं तो सबसे पहले हमारे दिल में एक ख़्वाहिश पैदा होती है कि लड़की मालदार घर की और खूबसूरत हो ताकि हमें ज़्यादा माल मिले और हमारी लोगों में इज़्ज़त और वाहवाही हो लेकिन हम ये भूल जाते हैं कि हर इन्सान का रिज़्क और उसके मिलने का वक़्त मुअइयन है जो उसे हर हाल में अपने वक़्त पर मिलकर रहेगा और अल्लाह तआ़ला मालिक व मुख़्तार है और इज़्ज़त और ज़िल्लत सिर्फ़ रब तआ़ला के इख़्तियार में है वो जिसे जो चाहे अ़ता करता है और जो चीज़ रब तआ़ला के इख़्तियार में है वो चीज़ हम बन्दों से कैसे हासिल कर सकते हैं ये बात ग़ौर करने की है लेकिन हम इस पर ग़ौर नहीं करते और न इसके अंजाम के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं।

अगर हम दुनियाँदार फ़ैशन परस्त नाज़ो नख़रे वाली बे नमाज़ी और अपने से बड़ो की इज़्ज़त न करने वाली घमंडी और ख़र्चीली लड़की को अगर हम अपने घर की बहू बनाते हैं तो हमारे घर का माहौल बदतर हो जायेगा और अगर दीनदार नमाज़ी रोज़दार नेक सीरत वाली पर्दा नशीन और बड़ो की इज्ज़त व छोटो पर रहम व शफ़क़त करने वाली नेक लड़की से अगर अपने लड़के का निकाह कर दें तो हमारे घर का माहौल कितना बेहतर और खुशहाल हो जायेगा और वो लड़की अपने शौहर के साथ—साथ अपनी सास व श्वसुर की भी फ़रमाबरदारी करेगी और घर के तमाम लोगों का बेहतर ख़्याल रखेगी और अगर बदसीरत लड़की होगी तो घर को जंग का मैदान बना देगी।

और वो घर में आते ही अपने शौहर के साथ अलग रहेगी घर में किसी का ख़्याल नहीं रखेगी घर की खुशियाँ और रौनक़ ख़त्म कर देगी और जिस बेटे को हमने अपनी उम्मीदों के साथ परवरिश करके बड़ा किया जिसकी तालीमो तरबियत के लिये हमने बड़ी तकलीफ़ें उठाई और उसके तमाम इख़राजात के लिये हमने मेहनत व मशक़्क़त उठाई कि वो हमारा सहारा बनेगा लेकिन उस बहू के अलग होते ही वो बेटा भी हमसे अलग हो जायेगा और हमारी तमाम उम्मीदें टूट जायेंगी और हमारे बुढ़ापे का सहारा हमसे छिन जायेगा इसलिये हमें चाहिये कि अपने बेटे की शादी (निकाह) के लिये ऐसी लड़की का इन्तिख़ाब करें जो सिर्फ़ दीनदार नेक सीरत हो माल व खूबसूरती की ख़्वाहिश न करें कि कहीं ये ख़्वाहिश हमारे उन ख़्वाबों को चकना चूर न कर दे जो ख़्वाब हमने अपने लिये सजाये हैं और हम अपनी औलाद के होते हुये भी खुद को बे औलाद महसूस करें और तमाम ज़िन्दगी अपने ग़लत फ़ैसले पर पछताते रहें और अफ़सोस करते रहें।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
औ़रत से उसके हुस्न (खूबसूरती) और माल की वजह से निकाह न करो बल्कि उसके दीन के बाइस उससे निकाह करो।
(सुनन इब्ने माजा—135)

बसा औक़ात देखा गया है जब कोई शख़्स अपने लड़के के रिश्ते के इरादे से जब किसी लड़की वाले के घर जाता है तो लड़की के घर वालों से एक सवाल करता है कि क्या लड़की कुरान व उर्दू पढ़ी हुई है लेकिन यही सवाल किसी दूसरे से पूछने से पहले क्या कभी उसने अपने आप से भी किया है कि हमारा लड़का कुरान व उर्दू पढ़ा है क्या कुरान मजीद का पढ़ना मर्दों के लिये ज़रुरी नहीं है हालाँकि हर मुसलमान मर्द व औ़रत के लिये बेहद ज़रूरी है कि वो कुरान मजीद की तालीम हासिल करे ताकि वो दुन्यावी व उख़रवी फ़वाइद और अज्र व इनामात से बहरावर हो।

और बाज़ लोग तो ऐसे भी हैं कि जब उनसे किसी लड़की की शादी के रिश्ते की बात की जाये तो वो लड़की की नेक सीरत व

अख़लाक़ और दीनदारी के मुताअ़ल्लिक़ नहीं पूछते बल्कि उनका पहला सवाल ये होता है कि शादी कैसी करेंगे और शादी में रुपया और जहेज़ में क्या–क्या देंगे ये शादी है या तिजारत है शादी के नाम पर माल की तिजारत करने वाले क्या वो अपनी मौत से बे ख़बर हैं हालाँकि मौत उनसे बे ख़बर नहीं बल्कि मौत उन्हें हर वक़्त अपने घेरे मे लिये रहती है और अपने वक़्त मुक़र्ररा पर वारिद हो जाती है फिर वो माल जो शादी के नाम पर लिया था वो सब यहीं रह जाता है और उनके किसी काम नहीं आता और वो क़ब्र में दफ़न हो जाते हैं और उन पर मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब मुसल्लत कर दिये जाते हैं और क़यामत के दिन वो शर्मशार व रुसवा होंगे और उस माल के हिसाब के लिये उन्हें अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के सामने खड़ा होना होगा और हिसाब देना होगा।

बाज़ लोग अपनी बेटियों की शादी सरमायादार शराबी, जुआरी, और बदआमाली शख़्स से कर देते हैं हालाँकि वो उसके बद आमाली होने पर मुत्तलाअ़ होते हैं लेकिन उन्हें तो सिर्फ़ लड़के की मालदारी से मतलब रहता है और माल के बाइस उनकी आँखें लड़के में पायी जाने वाली तमाम बुराईयों और ऐबों से अन्धी रहती हैं और वो सोचते है कि मेरी बेटी ऐशो आसाइश में रहेगी और इस पर वो फ़ख़्र और बहुत खुशी का इज़हार करते हैं और खुद को बहुत अ़क़्लमंद और होशियार समझते हैं हालाँकि वो बहुत बड़े अहमक़ हैं जो अपनी बेटियों पर आने वाली मुसीबतो परेशानियों से अन्जान रहते हैं क्योंकि अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करते हुये शादी ब्याह के कामों को अन्जाम देना और अल्लाह व रसूल को नाराज़ करना फिर अपनी बेटी की ऐशो इशरत व खुशहाल ज़िन्दगी की अल्लाह तआ़ला से उम्मीद व ख़्वाहिश रखना क्या ये हिमाक़त नहीं है।

जिस तरह हर मर्द की ख़्वाहिश होती है कि मेरी वीबी नेक सीरत अच्छे अख़लाक़ व खुशमिज़ाज और फ़रमांबरदार हो इसी तरह हर औ़रत की भी ख़्वाहिश होती है कि मेरा शौहर नेक व अच्छी आ़दत वाला हो और उसका बरताव अच्छा हो और हर तरह से मेरा ख़्याल रखे और हमेशा हमसे खुश रहे और कभी

नाराज़ न हो और हमारी ख़्वाहिशात व ज़रुरियात का ख़्याल रखे लेकिन किसी शराबी, जुआरी, बेदीन और बदआमाली से इस तरह की उम्मीद व ख़्वाहिश रखना महज़ बातिल व हिमाक़त है और जो लोग अपनी बेटियों की ख़्वाहिशों को अपने पैरों तले कुचलकर उनकी शादी किसी बदआमाली, बेदीन शख़्स से कर देते हैं और उन्हें हमेशा के लिये ग़म व परेशानियों के दलदल में फेंक देते हैं जहाँ से वो कभी निकल नहीं पातीं और उनकी ज़िन्दगी ग़म व तकलीफ़ों के अंधेरों और मुसीबतो परेशानियों से लबरेज़ रास्तों पर गुज़रती है और उनकी तमाम ख़्वाहिशात उनके दिलों में दफ़न हो जाती है क्या हम ज़ालिम हैं जो ऐसा करके अपनी बेटियों पर जुल्म करते हैं।

इसलिये हमें चाहिये अपनी बेटियों की ख़्वाहिशों को ज़हन में रखते हुऐ अपनी बेटी की शादी के लिये ऐसे लड़के का इन्तिख़ाब करें जो नेक सीरत व दीनदार हो ताकि हमारी बेटियाँ नेक व खुशहाल रहें और उन्की ज़िन्दगी खुशगवार व शादाब हो और वो नेक खाविन्द की सुहवत में नेक अ़मल करें ताकि उन्की दुनियाँ व आख़िरत दोनों बेहतर हो जायें।

लेकिन बसा औक़ात हमें देखने को मिलता है कि जब कोई शख़्स अपनी लड़की की शादी का इरादा करता है तो वो यही ख़्वाहिश रखता है कि लड़का दीनदार हो या न हो सिर्फ़ मालदार हो चाहे वो ऐबदार या बदकार हो जब हम अपने से ज़्यादा मालदार लोगों में रिश्ता करते हैं तो हमें उनके मुताबिक़ ज़्यादा ख़र्च करना पड़ता है चाहे हम क़र्ज़दार क्यों न हो जायें और उनके मुताबिक़ हमें जहेज़ व दीगर इन्तज़ामात करने होते हैं लेकिन हमें सिर्फ़ इस बात की परवाह और फ़िक्र होती है कि मेरी बेटी बड़े घर की बहू बन जाये और उसका मुस्तक़बिल बेहतर हो जाये और वो ऐशो आराम की ज़िन्दगी गुज़ारे लेकिन हमें इस बात पर भी ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये कि अगर लड़का बद आमाली शराबी जुआरी बेदीन बे नमाज़ी होगा तो कहीं उसकी सुहवत पाकर मेरी लड़की भी अपने दीन से दूर न हो जाये और उसकी दुनियाँ व आख़िरत दोनो ख़राब हो जायें और दुनियाँ

की ज़ैबो ज़ीनत में उलझ कर अल्लाह व रसूल की इताअ़त से बे परवाह हो जायेगी तो ज़रा सोचो अगर हम अपनी लड़की के लिये सिर्फ़ मालदार लड़का देखते हैं और दीनदार लड़का नहीं देखते और उससे अपनी लड़की का निकाह कर देते हैं तो ज़रा सोचो क्या हम उसकी भलाई या बेहतरी चाह रहे हैं या फिर उसे गुनाहों के दलदल में धकेल कर उसे जहन्नुम की तरफ़ ले जा रहे हैं क्या हम अपनी बेटी के दुश्मन हैं जो ऐसा कर रहे हैं।

और इस तरह की ख़्वाहिशात की वजह से शादी ब्याह में बहुत ज़्यादा इख़राजात और फ़िज़ूल ख़र्ची होती है जिसके बाइस निकाह से बरकत चली जाती है क्योंकि जिस निकाह में फ़िज़ूल ख़र्ची और ख़िलाफ़े शरअ़ काम होते हैं उस निकाह में बरकत नहीं होती।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
सबसे बरकत वाला निकाह वो है जिसमें ख़र्चा सबसे कम हो। (मिश्कात–268)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–
और वो लोग जो ख़र्च करते हैं तो न हद से आगे बढ़ें और न तंगी इख़्तियार करें बल्कि इन दोनो के बीच एतदाल पर रहें
(सू0–फुरकान–67)

मुन्दरजा बाला हदीस व कुरान की रोशनी में ये बात वाज़ेह हुई कि हमें फ़िज़ूल ख़र्ची से बचना चाहिये और निकाह में नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सुन्नतों और उनके तरीक़ों और उनके अहकाम को अ़मल में लाना चाहिये ताकि हमारे निकाह में बरकतों और रहमतों का नुज़ूल हो और अल्लाह व रसूल की हमें रज़ा और खुशनूदी हासिल हो और जो लोगों की खुशनूदी चाहता है वो अल्लाह तआ़ला की खुशनूदी से महरूम रहता है इसलिये हमारे लिये वही काम बेहतर है जिसमें अल्लाह व रसूल की रज़ा व खुशनूदी शामिल हो और जो काम अल्लाह व रसूल को ना पसन्द हो वो काम हमें नहीं करना चाहिये इसी में हमारी भलाई और बेहतरी है और अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिये कुछ हदें मुक़र्रर की हैं और हमें चाहिये कि उन हदों को न तोड़ें और उन हदों के दायरे में रहकर ही काम करें अगर हम सच्चे मुसलमान हैं और अपना भला

चाहते हैं और खुद को अल्लाह तआ़ला का बन्दा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का उम्मती और गुलाम कहते हैं तो हमें चाहिये अल्लाह व रसूल के तमाम अहकामात पर अ़मल पैरा हो जायें ताकि हम रब तआ़ला के ग़ज़ब व नाराज़गी से बच जायें और अल्लाह व रसूल के फ़रमाबरदार और पसन्द तरीन बन्दों में हमारा शुमार हो और अल्लाह व रसूल की हमें कुरबत नसीब हो और हमारी मग़फ़िरत हो जाये और हम निजात पाने वालों में से हो जायें

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–
और खाओ और पियो और हद से ज़्यादा ख़र्च न करो बेशक वो (अल्लाह तआ़ला) फ़िज़ूल ख़र्च करने वालों को पसन्द नहीं करता। (सू0–आअ़राफ़–21)

निकाह होने से क़ब्ल (पहले) हज़ारों रुपये की फ़िज़ूल ख़र्ची की जाती है जो बिल्कुल बे मायना और बे मतलब होती है जब लड़की या लड़के का रिश्ता तय होता है तो उस रस्म में सैकड़ों लोग आते हैं जिसमें दोनो तरफ़ से फ़िज़ूल ख़र्ची होती है और उसमें मोटर वाहन का ख़र्च और खाने व तरह–तरह के नाश्ते का ख़र्च फिर उन आने वाले लोगों को नज़राने की शक्ल में कुछ रुपये भी दिये जाते हैं फिर उसके बाद दूसरी रस्म अदा की जाती है जिसे गोद भराई कहते है इस रस्म में भी दोनों तरफ़ से बहुत ज़्यादा फ़िज़ूल ख़र्ची की जाती है और इस दरमियान अगर ईदुल फ़ित्र का त्यौहार आ गया तो दोनों तरफ से ईदी के नाम पर एक दूसरे के यहाँ माल व सामान पहुँचाये जाते हैं और हज़ारों रूपया फ़िज़ूल ख़र्च होता है।

फिर उसके बाद मंगनी की रस्म अदा की जाती है उसमें भी बहुत ज़्यादा फ़िज़ूल ख़र्ची होती है फिर उसके बाद निकाह की तारीख़ तय की जाती है तो उसमें भी बहुत लोग शिर्कत करते और हज़ारो रूपया फ़िज़ूल ख़र्च हो जाता है हत्ता कि निकाह होने तक रस्मों रिवाज़ के नाम पर हज़ारों लाखों रूपयों की बर्बादी और फ़िज़ूल ख़र्ची की जाती है और ये तमाम रस्में और इनके इख़राजात जो ज़िक्र हुये हैं क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और आपके सहाबाकिराम रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हुम में से किसी ने इन रस्मों

और तरीक़ों को इख़्तियार किया है या इस तरह से फ़िज़ूल ख़र्ची की है जो हम कर रहे हैं हालाँकि ये तमाम ग़ैर शरई उमूर हैं और ग़ैर मुस्लिमों के रस्मो रिवाज़ है जिन्हें हम अपना रहे हैं और उस पर अ़मल कर रहे हैं और फिर भी हम कहते हैं कि हम सुन्नते रसूल अदा कर रहे हैं हालाँकि हक़ीक़त ये है कि हम झूठ बोल रहे हैं और अल्लाह व रसूल की इताअ़त के बजाय ग़ैर मुस्लिमों की रस्मो रिवाज़ की पैरवी कर रहे हैं और अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को नाराज़ कर रहे हैं और इन तमाम मामलात पर हम बहुत ज़्यादा खुशी का इज़हार करते हैं क्या अल्लाह व रसूल को नाराज़ करके हमारा खुश होना क्या हमारे लिये बेहतर और दुरस्त है बल्कि हमारे लिये बहुत बुरा है और हमें इस बात पर ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये और शादी ब्याह में ग़ैर शरई उमूर व तमाम बुराइयों को ख़त्म करने की पहल व कोशिश करनी चाहिये और अल्लाह व रसूल के हुक्म और सुन्नतों के मुताबिक़ शादी ब्याह से मुताअ़ल्लिक़ तमाम कामों को अन्जाम देना चाहिये।

शादी ब्याह के मौक़े पर जहेज़ और दीगर कई तरह के इख़राजात जिसमें लाखो रूपये ख़र्च होते हैं अगर हम अल्लाह व रसूल के हुक्म और सुन्नतों के मुताबिक़ शादी ब्याह करें तो हम फ़िज़ूल ख़र्ची करने से बच जायेंगे और हमारा माल भी ज़ाया (बर्बाद) होने से बच जायेगा और अल्लाह व रसूल के हुक्म और सुन्नतों पर अ़मल के सबब हम बेहतर अज्र (सवाब) पायेंगे जो हमारी दुनियाँ और आख़िरत के लिये फायदेमन्द और बेहतर होगा।

अक्सर लोग शादी ब्याह में दिखावा और वाहवाही के लिये लाखों रूपया ख़र्च कर देते हैं लेकिन ऐसे ख़र्चो ने ग़रीबों के लिये मुश्किल खड़ी कर दी है जहेज़ व दीगर ख़र्च गुनाह नहीं हैं लेकिन उनका तरीक़ा और उसकी हदें हैं और उन्हीं के मुताबिक़ जहेज़ व दीगर इख़राजात करें ताकि लोगों को किसी भी तरह की परेशानियों से न गुज़रना पड़े इसलिये हमें चाहिये कि बैन्ड़ बाजा आतिश बाज़ी वग़ैराह दीगर उन तमाम कामों से बचना चाहिये जिनमें फ़िज़ूल ख़र्ची शामिल हो अगर हमें ज़्यादा माल ख़र्च करने का शौक़ है तो अपने माल को ऐसी जगह ख़र्च करें कि जिससे हमें फ़ायदा हो जैसे कि अल्लाह तआ़ला की राह में कसरत से ख़र्च करें

मुहताजों को दें रिश्तेदारों की मदद करें गुरबा मसाकीन की मदद करें ताकि हम उसका बेहतर अज्र पायें।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—
और क़राबत दारों को उनका हक़ अदा करो और मुहताजों और मुसाफ़िरों को भी दो और (अपना माल) फ़िज़ूल ख़र्ची में मत उड़ाओ बेशक फ़िज़ूल ख़र्ची वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ही ना शुक्रा है। (सू0—बनी इसराईल—26,—27)

मज़कूरा कुरान मजीद की आयात पर हमें ग़ौर करना चाहिये कि अल्लाह तआला ने फ़िज़ूल ख़र्च करने वालों को शैतान का भाई क़रार दिया है तो क्या हममें से कोई ये पसन्द करेगा कि हम शैतान के भाई कहलायें बाज़ लोग तो अपने लड़कों की शादी बग़ैर माल लिये या बग़ैर कुछ तय किये करते ही नहीं और ये ख़्याल करते हैं कि हम लड़की वालों पर एहसान कर रहे हैं और लड़की वालों को इस हद तक दबाते हैं कि उन्हें मजबूरन लड़के वालों की माँगें पूरी करनी पड़ती हैं चाहे इसके लिये उन्हें क़र्ज़ लेना पड़े क्या ये हुजूर सल्लल्लहु अ़लैह वसल्लम या सहाबाकिराम का तरीक़ा है क्या हम भूल गये हैं कि हम मुसलमान हैं जबकि हमारा हर काम नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के तरीक़े पर होना चाहिये न कि लोगों के तरीक़े पर होना चाहिये और जो लोग शादी ब्याह में माल वग़ैराह की माँग करते तो गोया वो अपनी आख़िरत ख़राब करते हैं जिसका अंजाम बहुत बुरा होगा जो उन्हें हर हाल में भुगतना होगा जो लोग हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के तरीक़ों और सुन्नतों के बजाय ग़ैर मुस्लिमों के तरीक़ों व रस्मों रिवाज़ पर अ़मल करते हैं तो वो खुद के लिये बहुत बुरा करते हैं हदीस पाक में है जो जिस क़ौम का तरीक़ा इख़्तियार करे वो उन्हीं में से है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स माल होने के बावजूद माँगता है तो गोया वो जहन्नुम के अंगारे माँगता है। (सही मुस्लिम—1/333)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स बे नियाज़ी के बावजूद माँगता है तो वो क़यामत के दिन

यूँ आयेगा कि उसके चेहरे पर गोश्त नहीं होगा सिर्फ़ हड्डियाँ होंगी जो हरकत करेंगी। (मुस्तदरक हाकिम—1/407)

इसलिये हमें चाहिये कि शादी ब्याह में माल वग़ैराह या दीगर कोई भी चीज़ का सवाल न करें क्योंकि बिला ज़रुरत माँगना बहुत बड़ा गुनाह है और जब अल्लाह तआला ने हमें भिकारी नहीं बनाया तो फिर हम क्यों लोगों से भीक माँगे और भिकारियों के मिस्ल हो जायें और साथ ही गुनाहगार भी हो जायें और हमें इस गुनाह के अ़ज़ाब में मुब्तिला होना पड़े क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की जुबाने मुबारक से निकला हुआ हर क़ौल हक़ है क्योंकि क़ौले रसूल असल में क़ौले इलाही होता है।

बाज़ लोग कह दिया करते हैं कि अगर हम लोगों की तरह शादी ब्याह नहीं करेंगे तो हमें लोगों के सामने शर्मसार होना पड़ेगा और लोग हमें बुरा आदमी गुमान करेंगे और अगर हमने लोगों की बात न मानी तो लोग हमसे नाराज़ हो जायेंगे और बुरा मान जायेंगे तो उन लागों के सामने दो रास्ते हैं एक ये कि हम उन लोगों की बात माने जो जाहिलाना और ख़िलाफ़े शरअ़ काम करते और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करते हैं ताकि वो लोग हमसे नाराज़ न हों चाहे अल्लाह व रसूल हमसे नाराज़ हो जायें और हम गुनाहगार व अज़ाबे इलाही के सज़ावार हो जायें और चाहे अल्लाह की रहमत व बरकत और खुशनूदी हमें न मिले लेकिन मख़लूक़ की खुशनूदी हमें ज़रूर हासिल हो और लोग हमसे खुश रहें।

और दूसरा रास्ता ये कि हम अल्लाह व रसूल की इताअ़त और फ़रमाबरदारी करते हुये अपने तमाम कामों को अंजाम दें और अपने तमाम कामों में अल्लाह व रसूल की रज़ा व खुशनूदी को मक़सूद रखें चाहे तमाम लोग हमसे नाराज़ हो जायें लेकिन हमसे कभी भी किसी हाल में भी हमारा रब और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम नाराज़ न हों ताकि हम दुनियाँ व आख़िरत में उसका अज्र पायें और अ़ज़ाबे इलाही से महफूज़ रहें तो इस तरह हमारे लिये दो रास्ते हैं या तो अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करते हुये ख़िलाफ़े शरअ़ काम करें और लोगों को खुश करें और अल्लाह व रसूल को नाराज़ करे या फिर अल्लाह व रसूल के मुताबिक़ काम करें और

अल्लाह व रसूल को खुश करें और लोगों को नाराज़ करें अब फ़ैसला आप के हाथ में चाहे तो लागों को नाराज़ करें या अल्लाह व रसूल को नाराज़ करें ।

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि जहाँ बुराई को देखे तो उसे रोकने की कोशिश करे और अगर बुराई को रोकने की ताक़त न हो तो दिल में बुरा जाने यही अल्लाह व रसूल ने हमें हुक्म दिया है और ख़ासकर उ़ल्मा हज़रात को चाहिये कि वो हर बुराई को रोकने की हर मुमकिन कोशिश करें क्योंकि उ़ल्मा की बात का लोगों पर ज़्यादा असर होता है और उन्हें चाहिये कि ऐसी मजालिस और तक़रीबों से ऐराज़ करें जहाँ ख़िलाफे शरअ़ काम होते हैं और निकाह पढ़ाने के लिये शर्त रखें कि अगर कोई काम ख़िलाफ़े शरअ़ होगा तो मैं निकाह नहीं पढ़ाऊँगा और ना ही मैं उसमें शिर्कत करुँगा चाहे उ़ल्मा हज़रात को इसमें कितना ही नुकसान क्यों न उठाना पड़े।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
जो हुक्म दे ख़ैरात का या अच्छी बात का या लोगों में सुलह करने का और जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा चाहने को ऐसा करे उसे अ़नक़रीब हम बड़ा सवाब देंगे और जो रसूल के ख़िलाफ़ करे बाद इसके कि हक़ का रास्ता उस पर खुल चुका और मुसलमानों की राह से जुदा राह चले तो हम उसे उसके हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह है पलटने की। (सू0–निसा–115)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स बुराई को देखे तो उसे अपने हाथ से रोके अगर इतनी ताक़त न हो तो जुबान से रोके और अगर इसकी भी ताक़त न हो तो दिल में बुरा जाने। (सही बुख़ारी–1/51)

आला हज़रत अहमद रज़ा खाँ रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते है–
किसी ख़िलाफ़े शरअ़ मजलिस में जाना जाइज़ नहीं और वहाँ पर खाना भी जाइज़ नहीं और अगर खाना दूसरी जगह हो तो आम लोगों को खाने में हर्ज़ नहीं लेकिन आ़लिम या मुक्तदा (इमाम व पेशवा) का वहाँ पर भी खाना जाइज़ नहीं। (फ़तावा रज़विया–24/134)

इस बदलते दौर में एक नया फ़ैशन ईज़ाद हुआ है कि लोग खड़े होकर खाना पीना अपनी शान और इ़ज़्ज़त समझते हैं जबकि ये जाहिलाना तरीक़ा है जो ख़िलाफ़े सुन्नत और आदाबे खाना के ख़िलाफ़ है।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
हरगिज़ तुम में से कोई खड़े होकर कुछ न पिये और अगर भूल से पी ले तो उसे चाहिये कि कै़ (उल्टी) कर दे। (मिश्कात–2/373)

क्या हम खाने पीने के आदाब और तहज़ीब को भूल गये हैं जो हम ग़ैर मुस्लिमों के तरीक़ों को अपना रहे हैं और बाज़ तो ऐसे हैं कि वो खाने की इ़ज़्ज़त नहीं करते और उसे बर्बाद करते हैं क्या वो लोग नहीं जानते कि ये रिज़्के इलाही की बे अदबी और तौहीन है शादी ब्याह व दीगर तक़रीबों में गर्म रोटियाँ तलब करते हैं और ठन्डी रोटियों को छोड़ देते हैं जो बाद में कूड़े के ढ़ेर में पड़ी होती हैं और वो खाने की अहमियत को नहीं समझते कि खाना अल्लाह तआ़ला की कितनी बड़ी नेअ़मत है जो हमारा रब अपने फ़ज़्लो करम से हमें अ़ता करता है।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
गर्म खाने में बरकत नहीं होती लिहाज़ा इसे ठन्डा करके खाओ और आपने कभी गर्म खाना तनावुल नहीं फ़रमाया। (बैहकी–7/280)

बे पर्दगी और बे हयायी का ये हाल है कि आदमी और औ़रतें साथ साथ खा पी रहे हैं और वो अल्लाह तआ़ला के हुक्म की नाफ़रमानी कर रहे है और आख़िरत के ख़ौफ़ से बे परवाह होकर खुद को हलाकत में डाल रहे हैं इसके अलावा दूल्हा भाती की रस्में हो रहीं हैं जिसमें औ़रतें और लड़कियाँ मर्दो से बाहम हंसी मज़ाक करते हैं भाभी देवर के काजल लगाती है जबकि देवर और भाभी के दरमियान शरअ़न पर्दा है और ये सारे काम ख़िलाफ़े शरअ़ हैं और अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का बाइस है और हम कितने ना फ़रमान हैं जो अल्लाह व रसूल को नाराज़ करके खुशी का इज़हार करते हैं जिसने हमें तमाम नेअ़मतों से नवाज़ा और हम उसके हुक्मों को नज़र अंदाज़ कर रहे हैं और शैतान की बात मानकर उस पर

अ़मल कर रहे है हमें इन तमाम बातों पर ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये और खुद को बदलना चाहिये।

बाज़ लोग निकाह के बाद तीसरे दिन खाना करते हैं और कहते हैं कि हम वलीमा कर रहे हैं जो सुन्नते रसूल है हालाँकि वलीमा दूसरे दिन के खाने को कहते हैं और तीसरे दिन का खाना सिर्फ़ रिया और दिखावा है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
पहले दिन का खाना हक़ और दूसरे दिन का खाना सुन्नत और तीसरे दिन का खाना रियाकारी (दिखावा) है और जो शख़्स शौहरत के लिये ऐसा करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे रुसवा करेगा (सही मुस्लिम–1 / 458)

अक्सर शादी ब्याह व दीगर तक़ारीब में कोई शख़्स कॉपी पेन लेकर बैठता है जो लोगों का व्यवहार (रूपया पैसा) लिखता है लेकिन रूपया पैसा लिखवाने वालों में ज़्यादातर लोगों की नीयत ये होती है कि हमने जितना रूपया लिखवाया है उससे ज़्यादा हमें वापस मिलेगा जब हमारे यहाँ कोई तक़रीब या शादी का मौक़ा होगा हालाँकि इस नीयत से व्यवहार करना शख़्त ना जाइज़ है अल्लाह तआ़ला ने कुरान मजीद में इसकी मुमानियत फ़रमाई है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
और ज़्यादा पाने की नीयत से किसी पर एहसान न करो।
(सू0–मुदस्सिर–6)

इसलिये हमें चाहिये कि हर हाल में अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी करें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सुन्नत और तरीक़ों पर अ़मल करते हुये शादी ब्याह करें ताकि बाइसे रहमत और बरकत हो और अच्छी नीयत के साथ निकाह करें ताकि शादी शुदा ज़िन्दगी बेहतर व खुशहाल और सर सब्ज़ व शादाब हो और पाक दामनी हासिल हो और हमारी ज़िन्दगी दीन के रास्ते पर चलते हुये अमन चैन व मशर्रतों में गुज़रे और दुनियाँ और आख़िरत में हम कामयाबी और कामरानी से सरफ़राज़ हों।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
निकाह को ऐलानियाँ करो और निकाह को मस्जिद में मुनअ़क़िद करो और उस पर दफ़ बजाओ। (सही बुख़ारी—1/500)
(जामअ़ तिर्मिज़ी—175)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
निकाह को ज़ाहिर (ऐलानियाँ) करो चाहे छलनी बजाने से हो। (बैहकी—7/290)

एक बार रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम एक सहाबी के घर तशरीफ़ ले गये तो वहाँ कुछ लड़कियाँ दफ़ के साथ गा रहीं थीं तो आपने सुना उन में से एक कहती थी कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हमारे बीच मौजूद हैं जो कल की बात (मुस्तक़बिल) को जानते हैं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया इसे छोड़ दो और वही कहो जो पहले कह रहीं थीं। (सुनन इब्ने माजा—138)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जिसने किसी का माल पाने के सबब निकाह किया तो अल्लाह तआ़ला उसका रिज़्क़ कता करेगा और अगर इज़्ज़त पाने के सबब निकाह किया तो अल्लाह तआ़ला उसकी ज़िल्लत में ज़्यादती करेगा और अगर इसलिये निकाह किया कि पाक दामनी हासिल हो अल्लाह तआ़ला उस निकाह में बरकत अ़ता करेगा। (तिबरानी)

आज कल शादी ब्याह व दीगर छोटी बड़ी तक़रीब में शोहरत और वाहवाही के लिये अक्सर बहुत ज़्यादा इख़राजात किये जाते हैं जो फ़िज़ूल ख़र्ची पर मबनी होते हैं ताकि लोग हमारी तारीफ़ और वाहवाही करें और उस पर हम बहुत ज़्यादा खुश होते हैं लेकिन हम ये नहीं सोचते कि मेरे इस काम से क्या मेरा रब भी हमसे खुश है या हमसे नाराज़ है हालाँकि हर मुसलमान के लिये वही काम बेहतर है जिस काम से अल्लाह व रसूल खुश व राज़ी हों लेकिन हम लोगों को खुश करने और उनसे तारीफ़ और वाहवाही हासिल करने के लिये उन कामों से भी परहेज़ नहीं करते जिन कामों की अल्लाह व रसूल ने हमें मुमानियत फ़रमाई है।

ज़रा सोचो कि हम लोगों से तारीफ़ व वाहवाही हासिल करने के लिये हज़ारो रुपये फ़िज़ूल ख़र्च कर देते हैं लेकिन बदले में हमें क्या मिलता है क्या लोगों की तारीफ़ हमारा कुछ भला कर सकती है या हमारे ख़र्च हुये रुपये हमें वापस दिला सकती है जो हमने मेहनत और मशक़्क़त से कमाये थे और हज़ारो रुपये सिर्फ़ तारीफ़ पाने के लिये ख़र्च करना महज़ घाटे का सौदा है जो सिर्फ़ बेवकूफ़ लोग करते हैं जो अपनी सौदा को घाटे में बेचते हैं और अपनी तिजारत में नुकसान उठाते हैं और उस पर अल्लाह व रसूल की नाराज़गी जो हमें बहुत बड़े ख़सारे (नुकसान) की तरफ़ ले जाती है

बाज़ लोग तो ऐसे भी होते हैं जो शादी ब्याह व दीगर तक़ारीब में हज़ारों रुपया फ़िज़ूल ख़र्च कर देते हैं लेकिन अगर कोई ग़रीब मिस्कीन मुहताज अगर उनकी तक़रीब में खाना माँगे तो वो उन्हें झिड़क कर भगा देते हैं हालाँकि जो रुपया हम ख़र्च कर देते हैं वो हमें वापस नहीं मिलता लेकिन ग़रीब मिस्कीन और मुहताज को दिये हुये खाने का अज्र रब तआ़ला हमें ज़रुर अ़ता फ़रमायेगा जो ग़रीब मिस्कीन हमारा खाना खाने के बाद हमारे लिये दुआ़ये ख़ैर करते हैं उनकी दुआ़ हमारे लिये ख़ैरो बरकत का सबब बनती है इसलिये हमें चाहिये कि जहाँ हम बहुत लोगों के लिये खाने का इन्तज़ाम करें वहीं कुछ फुक़रा मसाकीन मुहताजों के लिये भी इन्तज़ाम करें ताकि हमारे यहाँ से कोई माँगने वाला खाली और मायूस होकर न लौटे और किसी ग़रीब मिस्कीन को खाना खिलाने से कभी कुछ नहीं घटता बल्कि अल्लाह तआ़ला उससे कई गुना ज़्यादा अ़ता करता है और अल्लाह तआ़ला खुश व राज़ी होता है कि मेरे ग़रीब मिस्कीन बन्दों को उसने खाना खिलाया और रब तआ़ला की रहमत जोश में आती है और उस पर रहमतों और बरकतों का नुजूल होता है और वो दुनियाँ और आख़िरत में कसीर नफ़ा उठाने वालों की फेहरिस्त में शामिल हो जाता है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—

और मंगता को न झिड़को और अपने रब की नेअ़मत का खूब चर्चा करो। (सु0—दुहा—10,—11)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—

आदमी का भूके को खाना खिलाना उसे जन्नत में ले जायेगा। (मजमउज्ज़वाइद—5/17)

इसलिये हमें चाहिये कि हर काम को करने से पहले सोचें कि मेरे इस काम को करने से क्या अल्लाह व रसूल हमसे खुश और राज़ी होंगे या नहीं और नतीजा ये पायें कि इस काम को करने से अल्लाह व रसूल हमसे खुश व राज़ी होंगे तो उस काम को ज़रुर बेहतर तरीक़े से अंजाम दें और अगर नतीजा ये पायें कि मेरे इस काम से अल्लाह व रसूल हमसे नाराज़ हो जायेंगे तो उस काम को हरगिज़ न करें। शादी ब्याह में शामिल तमाम ग़ैर शरई उमूर व ग़ैर मुस्लिमों के रस्मो रिवाज से परहेज़ करें और बाज़ रहें जैसे बैन्ड बाजा, आतिश बाज़ी, दूल्हे के हाथों में मेंहदी और कंघन और मढ़ा और उसकी रस्में, जैसे पाँच या सात घड़ो में पानी भरना, हल्दी व चावल के छापे लगाना, भात के नाम पर कपड़े वग़ैराह माँगना और उनका पहनना भाभी का दूल्हे को काजल लगाना, दूल्हा भाती, जूता चुराई की रस्में व घोड़ा उतराई के पैसे माँगना जो भिकारियों का काम है और आदमी औ़रतों का बाहम मेलजोल व गुफ्तगू व खड़े होकर खाना पीना, बेहूदा नाच गाना व बेपरदगी और घरों में डी.जे. पर बेहूदा गाने बजाना और उस की धुन पर नाचना कूदना वग़ैराह ये सब काम खिलाफ़े शरअ़ व ग़ैर मुस्लिमों के रस्मों रिवाज़ और शैतानी व जहालत के काम है और अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का बाइस हैं और अल्लाह व रसूल को नाराज़ करके कोई भी काम हमारे लिये भला और ख़ैर नहीं हो सकता।

इसलिये हमें चाहिये कि इन तमाम जाहिलाना कामों से इजतिनाब करें और इनसे बचने की हर मुम्किन कोशिश व तदाबीर करें और शौहरत व दिखावे के लिये कभी कोई काम न करें क्योंकि शौहरत व दिखावे के लिये किया गया हर काम इन्सान को ख़सारे (नुकसान) के सिवा कुछ भी नहीं दे सकता सिर्फ़ कुछ वक़्त की तारीफ़ व वाहवाही के लिये खुद को मुसीबत व ख़सारे में न डालें और हमेशा फ़िज़ूल ख़र्ची से बचें अगर हम चाहते हैं कि हमें रब तआ़ला की रहमत व खुशनूदी और उसकी रज़ा हासिल हो तो हमें अल्लाह व रसूल के हुक्म व सुन्नतों और इस्लामी तौर तरीक़े और शरीयते मुतह्रा के मुताबिक़ अपने तमाम कामों को अ़जाम दें और हमेशा अपने तमाम कामों में अपने रब का फ़ज़्ल और उसकी रहमत व बरकत के मुतलाशी और तालिब रहें ताकि दुनियाँ और आख़िरत में हम क़ामयाब हों और बेहतर अज्र के मुस्तहिक़ हो जायें।

—: मुसलमानों के हुक़ूक़ :—

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— जब तुम किसी मुसलमान से मुलाक़ात करो तो उसे सलाम करो उसकी दावत को क़ुबूल करो उसके छींकने पर यरहमूकल्लाह कहो और वो बीमार हो तो उसकी बीमार पुर्सी करो और अगर मर जाये तो उसके जनाज़े में शरीक हो। (सही बुख़ारी—1/166)

अपने मुसलमान भाइयों के लिये मुहब्बत और रहम दिली रखना ये मोमिन की अ़लामत है जिस तरह हम चाहते हैं कि लोग हमसे हमेशा मुहब्बत और रहम दिली से पेश आयें और हम पर मेहरबान रहें तो जो हम लोगों से चाहते हैं वही गुमान हमें लोगों के लिये भी रखना चाहिये और उनके हुक़ूक़ों को जानें और उन्हें अदा करने की हर मुमकिन कोशिश करते रहें और जो शख़्स लोगों के लिये अपने दिल में मुहब्बत रखता है और उनके लिये रहम दिल व मेहरबान होता है और उनके हुक़ूक़ों को अदा करने की कोशिश करता है तो रब तआ़ला उस शख़्स से मुहब्बत करता है और उसे अपना महबूब बना लेता है और उसे अपनी कुर्बत में जगह अ़ता फरमाता है

सबसे पहले हमें ये बात ज़हन नशीन कर लेनी ज़रूरी है कि तमाम मुसलमान बाहम (आपस में) भाई—भाई हैं और इस रिश्ते को हम जुबान के साथ—साथ दिल से भी जानें और मानें जिस तरह हम अपने तमाम क़राबत दारों को मानते हैं और जब हम इस रिश्ते को ज़ाहिर व बातिन से तसलीम करेंगे तो हमें उनके हुक़ूक़ों को अदा करने में किसी भी तरह की दुश्वारी दरपेश नहीं आयेगी और न हमारे दरमियान कोई बुराई बाक़ी रहेगी।

क़ुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
बेशक मोमिन एक दूसरे के भाई हैं। (सू0—हुजरात—10)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तुम में से सबसे ज़्यादा महबूब वो लोग हैं जो दूसरों से मुहब्बत करते हैं और वो उनसे मुहब्बत करते हैं और सबसे ज़्यादा बुरे लोग वो हैं जो चुग़ल ख़ोर हैं जो मुसलमान भाईयों में तफ़रीक़ डालते हैं। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब—3/410)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया– बाहमी मुहब्बत और रहम दिली में मोमिनों की मिसाल एक जिस्म की तरह है जब जिस्म के किसी उजू (हिस्से) को तकलीफ़ होती है तो बाक़ी जिस्म के आज़ा (हिस्से) भी तकलीफ़ महसूस करते हैं। (सही मुस्लिम–2/321)

मुसलमानों के हुकूक़ में पहला हक़ ये है कि जब हम किसी मुसलमान भाई से मुलाक़ात करें तो सबसे पहले सलाम करने में पहल करें क्योंकि जो सलाम करने में पहल करता है उसे ज़्यादा सवाब मिलता है और वो तकब्बुर जैसी बुराई व गुनाह से बचने में भी कामयाब होता है सलाम के बाद मुसाफ़ाह करने में भी पहल करें क्योंकि मुसाफ़ाह की पहल करने में भी ज़्यादा सवाब है फिर बाहम नरम दिली से गुफ्तगू करें और अपने तअ़ाल्लुक़ात को बेहतर बनायें और आपस में एक दूसरे से मुहब्बत का रिश्ता क़ायम करें।

हदीस पाक में जो आदमी सलाम करने से पहले गुफ्तगू शुरु कर दे तो उसकी बात का जवाब न दो इसलिये हमें चाहिये कि जब हम किसी मुसलमान भाई से मुलाक़ात करें तो सबसे पहले सलाम करें फिर मुसाफ़ाह करें फिर अच्छे कलाम और हुस्ने खुल्क़ के साथ बाहम गुफ्तगू करें और जब किसी को सलाम का जवाब दें तो उम्दाह और बेहतर तरीक़े से जवाब दें ताकि उसका दिल खुश हो और हमारे नामे आमाल में नेकियों का इज़ाफ़ा हो और हमारे गुनाहों की बख़्शिश हो।

कुरान मजीद में अल्लाह तअ़ाला इरशाद फ़रमाता है–
जब तुम्हें सलाम किया जाये तो बेहतर लफ़्ज़ से जवाब दो या वही लौटा दो बेशक अल्लाह तअ़ाला हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है। (सू0–निसा–86)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
तुम्हारे दरमियान सलाम की तकमील मुसाफ़ाह से होती है।
(जामअ़ तिर्मिज़ी–390)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते हुये मुसाफ़ाह करते है तो उनके गुनाह झड़ते है। (सुनन अबी दाऊद–2/352)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
जब दो मुसलमान मुलाक़ात के वक़्त हाथ मिलाते हैं तो उनके अलग होने से पहले उन्हें बख़्श दिया जाता है।
(सुनन अबी दाऊद—2/352)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
बेशक मग़फ़िरत को वाजिब करने वाली बातों में सलाम का फैलाना और हुस्ने कलाम भी है। (कंज़ुल उ़म्माल—9/116)

हम पर लाज़िम है कि मुसलमानों के तमाम मामलात में अ़द्ल व इंसाफ करें और किसी पर किसी भी तरह की ज़ुल्म व ज़्यादती न करें ज़रा सोचो अगर हमारे साथ कोई ज़ुल्म या ज़्यादती करे या हमारे साथ कोई धोका, फ़रेब या बदकलामी करे या हमारी अमानत में ख़्यानत करे तो क्या ये तमाम बातें हमें पसन्द या गवारा होंगी हरगिज़ पसन्द व गवारा न होंगी तो जो बातें हमें पसन्द नहीं हैं तो क्या वो दूसरे मुसलमान भाइयों को पसन्द होंगी क़तअ़न पसन्द न होंगी इसलिये हमें चाहिये कि दुन्यावी तमाम मामलात में जब हम किसी मुसलमान भाई के साथ बुराई का इरादा करें तो पहले ग़ौर करें कि अगर हमारे साथ कोई ऐसी बुराई करता तो हमें कैसा महसूस होता क्योंकि जो चीज़ हमारे लिये बुरी और तकलीफ़ ज़दा है तो दूसरे मुसलमान भाइयों के लिये भी बुरी और तकलीफ़ ज़दा होगी और इस तरह हम हर बुराई और गुनाह से खुद को बाज़ रखने में कामयाब होंगे। और हमेशा अपने मुसलमान भाई के लिये वही पसन्द करें जो हम अपने लिये पसन्द करते हैं।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
अपने मुसलमान भाई की बुराई न चाहो वरना अल्लाह तआ़ला उसे बचा लेगा और तुम्हें उसमें मुब्तिला कर देगा।
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब—3/310)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिये वो चीज़ पसन्द न करे जो वो अपने लिये पसन्द करता है। (सही बुख़ारी—1/6)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जिस आदमी को पसन्द हो कि उसे जहन्नुम से दूर रखा जाये और जन्नत में दाख़िल किया जाये और उसकी मौत इस हालत में हो कि वो अल्लाह तआ़ला की तौहीद और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की रिसालत की गवाही देता हो तो उसे चाहिये कि लोगों को वही चीज़ दे जो उसे खुद पसन्द हो। (सही मुस्लिम—2/126)

जो लोग अपने मुसलमान भाइयों को अज़्ज़ियत (तकलीफ़) पहुँचाते हैं गोया वो अल्लाह व रसूल को अज़्ज़ियत पहुँचाते हैं और अल्लाह व रसूल को अज़्ज़ियत पहुँचाने वाला खुद को मुसीबतों व हलाकत में डालता है इसलिये हमें चाहिये कि अपने मुसलमान भाई को किसी भी तरह की अज़्ज़ियत न पहुँचाये जिससे उनके दिल रंजीदा और ग़मगीन हो और हम गुनाहगार हो जायें और अपने रब को नाराज़ करें और अपनी नेकियों को ज़ाया करें और बल्कि हमें चाहिये कि अपने मुसलमान भाई की हर मुसीबतो परेशानी में उनकी मदद करें और उनके साथ रहमदिली व हमदर्दी रखें और अपने मुसलमान भाइयों को उनकी तमाम परेशानियों से निजात दिलाने की हर मुमकिन कोशिश करें जिस तरह हम अपने दोस्त अहबाब व घर वाले और अपने क़राबत दारों की परेशानियों को दूर करने की हम कोशिश करते और उनकी हर तरह से मदद करते हैं और जो लोग मुसलमान भाइयों को ईज़ा (तकलीफ़) देते हैं वो ये गुमान न करें कि वो अपने लिये अच्छा कर रहे हैं बल्कि वो अपने लिये बहुत बुरा और खुद को हलाकत में डालते हैं और उनके लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है जिसमें वो मुब्तिला किये जायेंगे।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह व रसूल को उन पर अल्लाह तआ़ला की लानत है और उनके लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (सू0—अहज़ाब—57)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिसने किसी मुसलमान को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह तआ़ला को ईज़ा दी। (कंजुल उ़म्माल—10/164)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— कामिल मुसलमान वो हैं जिनकी जुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें। (सही बुख़ारी—1/6) (कंजुल उ़म्माल—1/151)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी— जो शख़्स मुसलमानों के रास्ते से तकलीफ़ ज़दा चीज़ हटा देता है तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये एक नेकी लिख देता है और उस नेकी के बाइस उसके लिये जन्नत वाजिब कर देता है। (मुस्नद अहमद—6/440)

मुसलमानों के हुकूक़ में से ये भी है कि हर मुसलमान के साथ हुस्ने खुल्क़ और अच्छे बरताव के साथ पेश आयें और किसी से सख़्त या तकब्बुराना कलाम न करें और अपने से बड़ों की इज्ज़त करें और छोटों पर शफ़क़त करें और अगर लोगों से हमें किसी तरह की अज़िय़त मिले तो उस पर सब्र करें और उन्हें माफ़ कर दें ताकि अल्लाह तआ़ला से हम उसका बेहतर अज्र पायें अल्लाह तआ़ला दरगुज़र करने वालों को अपना महबूब रखता है और उनकी इज्ज़त को बढ़ाता है और हमें चाहिये किसी मुसलमान के लिये बुरा न सोचें क्योंकि किसी का बुरा सोचने से उसका बुरा नहीं होता बल्कि हम गुनाहगार ज़रुर हो जाते हैं क्योंकि किसी का अच्छा या बुरा होना सिर्फ़ रब तआ़ला के इख़्तियार में है क्योंकि हर चीज़ अल्लाह तआ़ला के हुक्म के ताबेअ़ है और हमें किसी भी हाल में किसी का बुरा सोचने या बुरा करने का हक़ नहीं बनता बल्कि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के लिये भलाई करना यही हमारे लिये बेहतर है।

क़ुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
और बुराई का बदला उसी बुराई के मिस्ल होता है फिर जिसने माफ़ कर दिया और (माफ़ी के ज़रिये) इस्लाह की तो उसका अज्र अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है बेशक वो ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता (सू0—शूरा—40)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— वो शख़्स हम में से नहीं जो बड़ों की इ़ज्ज़त नहीं करता और छोटो पर रहम नहीं करता। (मुस्नद अहमद—2/207)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स किसी मुसलमान की ख़ता को माफ़ कर दे तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसकी ख़ताओं को माफ़ फ़रमायेगा। (मुस्तदरक हाकिम 2/45)

अगर कोई शख़्स हमारे साथ किसी भी तरह की बुराई या ज़्यादती करे तो हमें चाहिये कि हम उसे माफ़ कर दें ताकि अल्लाह तआ़ला से हम बेहतर अज्र पायें और अगर हमने बुराई का बदला बुराई से दिया तो बदले में हमें कुछ भी हासिल न होगा सिवाय गुनाह के मिसाल के तौर पर अगर किसी शख़्स ने हमें गाली दी और जवाब में हमने भी उसे गाली दी तो गाली देने का गुनाह दोनो के सर होगा और दोनो लोग गुनाहगार होंगे इसलिये बुराई का बदला अच्छाई से देना यही हमारे लिये बेहतर है।

हमें चाहिये कि मुसलमान के जानो माल की हिफ़ाज़त करें और अगर कोई शख़्स किसी मुसलमान पर जुल्म या ज़्यादती कर रहा हो तो हमें उसके जुल्म व ज़्यादती को रोकने के लिये हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिये और जुल्म करने वाले को पहले समझायें कि वो जुल्म व ज़्यादती न करे और अगर वो न माने तो सख़्ती के साथ ज़ालिम के जुल्म को रोकें और ज़रुरत के मुताबिक़ ज़ोर व ताक़त से ज़ालिम के जुल्म को रोकना चाहिये।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जिस शख़्स के सामने किसी मोमिन को ज़लील किया जा रहा हो और वो ताक़त के बावजूद उसकी मदद न करे तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसे रुसवा करेगा। (मुस्नद अहमद–3/487)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जो आदमी दुनियाँ में अपने मुसलमान भाई की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करता है अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन एक फ़रिश्ता भेजेगा जो उसे जहन्नुम की आग से बचायेगा। (सुनन अबी दाऊद–2/313)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
अपने भाई की मदद करो चाहे ज़ालिम हो या मज़लूम अ़र्ज़ किया

गया ज़ालिम की मदद किस तरह करें हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया ज़ालिम को उसके जुल्म से रोककर उसकी मदद करो। (सही बुख़ारी–2/1028)

जब कोई मुसलमान किसी हाजत का हमसे मुतालबा करे तो हमें चाहिये कि हम उसकी हाजत (ज़रूरत) को पूरा करने की कोशिश करें क्योंकि इसका बहुत ज़्यादा सवाब है हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–जो शख़्स किसी मुसलमान की हाजत रवाई के लिये उसके साथ गया तो अल्लाह तआ़ला उसके हर क़दम पर सत्तर नेकियाँ उसके नामे आमाल में लिखता है और सत्तर (70) गुनाह मिटाता है और अगर वो हाजत उसके हाथों पूरी हो जायें तो वो गुनाहों से इस तरह पाक हो जाता है जैसे वो अपनी माँ के पेट से अभी पैदा हुआ हो और अगर इस दरमियान उसे मौत आ जाये तो वो बिला हिसाब जन्नत में जायेगा

हाजत रवाई करने की बहुत फ़ज़ीलतें हदीस पाक में वारिद हैं एक और मक़ाम पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–जो मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान की हाजत रवाई करे तो क़यामत के दिन मीज़ान पर मैं उसके साथ खड़ा होऊँगा और अगर उसकी नेकियाँ कम हुई तो मैं उसकी शफ़ाअ़त करूँगा तो इन अहादीस मुबारका से ये मालूम हुआ कि किसी मुसलमान भाई की हाजत रवाई करना कितनी बड़ी फ़ज़ीलत रखता है और हाजत रवाई करने वाला बहुत बड़े अज्र का मुस्तहिक़ हो जाता है।

इसलिये हमें चाहिये कि कसरत से अपने मुसलमान भाइयों की हाजतों को पूरा करें ताकि हम भी बेशुमार इनामात के मुस्तहिक़ हो जायें चाहे ग़रीब हो या अमीर हो सबके साथ अच्छे अख़लाक़ और हुस्ने कलाम से पेश आयें क्योंकि ग़रीब मिस्कीन भी अल्लाह की मख़लूक़ हैं और हो सकता है कि वो हमसे बेहतर हों क्योंकि अल्लाह तआ़ला की रज़ा पर राज़ी रहने वाला ग़रीब मिस्कीन व मुहताज और फक़ीर अल्लाह तआ़ला का दोस्त होता है और उनकी मुसीबतो परेशानी में अल्लाह तआ़ला की रहमत और उनकी भलाई पोशीदा होती है जिसे हम न तो देख सकते हैं और न महसूस कर सकते हैं मुसलमान भाई की हाजत रवाई करना

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बहुत ज़्यादा पसन्दीदा अ़मल व कुर्बते इलाही और बेहतर अज्रो सवाब का बाइस है।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह के नज़दीक पसन्द तरीन अ़मल ये है कि मोमिन के दिल को खुशी पहुँचायें या उसके ग़म दूर करें या उसका क़र्ज़ अदा करें या भूक की हालत में उसे खाना खिलायें। (कंज़ुल उ़म्माल—6/432)

सरवरे कौनेन सल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स किसी मुसलमान भाई के काम के लिये दिन या रात की किसी साअ़त (वक़्त) में जाता है वो उसके काम को कर सके या न कर सके ये अ़मल उसके लिये दो महीने के एतकाफ़ से बेहतर है। (मजमउज़्ज़वाइद—8/192)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
अल्लाह तआ़ला जब किसी की भलाई चाहता है तो उसे तकलीफ़ में मुब्तिला कर देता है। (सही बुख़ारी—2/873)

और हमें चाहिये कि किसी भी मुसलमान भाई के ऐबो नक़ाइस को न ढूढें बल्कि उनके अन्दर अगर कोई ऐब हो तो उसकी ऐब पोशी करें और न उनकी ग़ीबत करें और न चुग़ली करें और न किसी पर तुहमत लगायें और उनके मुताअ़ल्लिक़ बद गुमानी से बचें क्योंकि ये तमाम बातें गुनाह हैं और हमें हर हाल में इनसे बचना चाहिये और जो इन गुनाहों से नहीं बचता वो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बदतरीन शख़्स है और ऐसा शख़्स क़यामत के दिन रूसवा होगा और अ़ज़ाब में गिरफ्तार किया जायेगा।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की ऐब पोशी करेगा अल्लाह तआ़ला दुनियाँ व आख़िरत में उसकी ऐब पोशी करेगा। (सही मुस्लिम—2/320,345)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
न मुसलमानों को शर्मिन्दा करो और न उनके छिपे ऐब ढूँढों

जो शख़्स किसी मुसलमान के छिपे ऐब ढूँढेगा तो अल्लाह तआ़ला उसके ऐब ज़ाहिर कर देगा। (मिश्कात–429)

मुसलमानों के हुकूक़ में से ये बात भी है कि मुसलमान जब आपस में लड़ें या उनमें बाहम नाराज़गी या निफ़ाक़ हो तो हमें चाहिये कि उनमें बाहम सुलह कराने की हर मुमकिन कोशिश करें और हर तरह की जाइज़ तदबीरें करें ताकि उनके बीच झगड़ा और बाहमी नाराज़गी ख़त्म हो और किसी मुसलमान से बुग्ज़ या कीना ना रखें और न आपस में मुसलमानों को लड़ाये और जो शख़्स मुसलमान भाइयों के दरमियान सुलह कराता है उसके लिये बड़ा सवाब है।

और न किसी की हंसी उड़ायें और न किसी से ऐसा मज़ाक़ करें जो उसके दिल को बुरा लगे और जब किसी से वायदा करें तो उसे पूरा करें वायदा ख़िलाफ़ी न करें और न किसी मुसलमान भाई को उसके गुज़िश्ता गुनाहों का ताना दें जिससे वो शर्मिन्दा हो और अगर किसी मुसलमान से किसी बात को लेकर लड़ाई झगड़ा या नाराज़गी या ना इत्तिफ़ाक़ी हो जाये तो हमें चाहिये कि हम आपस में सुलह करलें क्योंकि हम आपस में भाई–भाई हैं और सुलह करने के लिये सलाम से पहल करें।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमााया–
किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वो अपने मुसलमान भाई को तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रखे कि एक दूसरे से रुख़ फेर लें और बेहतर है कि सलाम के ज़रिये इब्तिदा करें।
(सही बुख़ारी–2/897)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमााया–
और अपने मुसलमान भाई से झगड़ा न करो और न मज़ाक़ करो और वायदा करो तो पूरा करो। (जामअ़ तिर्मिज़ी–293)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई को उसके किसी ऐसे गुनाह का ताना दे जिससे वो तौबा कर चुका हो तो उस शख़्स को उस वक़्त तक मौत न आयेगी जब तक कि वो खुद उस गुनाह में मुब्तिला न हो जाये। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब–3/310)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला के नज़दीक अपनी मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा ना पसन्द वो लोग होंगे जो मुसलमान भाइयों से बुग्ज़ रखते हैं। (कंजुल उ़म्माल—16/70)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वो अपने मुसलमान भाई को तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रखे उनमें से जो (सुलह के लिये) पहल करे वो जन्नत में दाख़िल होगा (मुअ़जम कबीर तिबरानी—4/144)

हर मुसलमान की तंगी और ज़रुरत के वक़्त उसकी माली मदद करो जब वो क़र्ज़ माँगे तो उसे क़र्ज़ दो क्योंकि इन्सान की ज़िन्दगी में उसके हालात बदलते रहते हैं कई उतार चढ़ाव के दौर से इन्सान गुज़रता है तो जो तंगी या ज़रुरत आज उस मुसलमान पर है कल हम पर भी आ सकती है और जब हम आज किसी मुसलमान भाई की मदद करेंगे तो कल हमारे बुरे वक़्त में अल्लाह तआ़ला किसी न किसी को हमारी मदद के लिये भेज देगा।

और क़र्ज़दार पर अपना एहसान न जतायें क्योंकि एहसान जताने या उस क़र्ज़ या मदद के बदले कोई भी दुन्यावी फ़ायदा उठाने की नीयत या उसके हासिल करने से उसका अ़मल ज़ाया हो जाता है और उसे उसका सवाब नहीं मिलता अगर क़र्ज़दार को क़र्ज़ अदा करने में किसी वजह से देरी हो जाये तो उस पर ज़्यादती न करें बल्कि उसे मुहलत दें ताकि ज़्यादा सवाब पायें और क़र्ज़दार को भी चाहिये कि क़र्ज़ अदा करने में देरी न करे बल्कि क़र्ज़ को जल्द अदा करने की नीयत व कोशिश करे ताकि वक़्त पर क़र्ज़ अदा हो जाये और अल्लाह तआ़ला नेक नीयत पर ग़ैब से मदद फ़रमाता है और बेशुमार अज्र अ़ता फ़रमाता है हदीस पाक में है क़र्ज़दार अगर क़र्ज़ देने की कुदरत रखता हो और फिर भी क़र्ज़ अदा करने में देरी करे तो उसके नामे आमाल में गुनाह लिखा जाता है चाहे वो रोज़े की हालत में हो या नींद की हालत में हो।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स किसी को एक ख़ास वक़्त के लिये क़र्ज़ दे तो उसे उस

वक़्त तक सद्क़े का सवाब मिलता है और मुद्दत पूरी होने के बाद मुहलत दे तो उसी के मिस्ल सवाब मिलता है (सुनन इब्ने माजा—176)

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
और अगर क़र्ज़दार तंगी वाला है तो उसे मुहलत दो आसानी तक और उस पर क़र्ज़ बिल्कुल छोड़ देना (ये) तुम्हारे लिये और (ज़्यादा) बेहतर है अगर तुम जानो।(सू0—बक़राह—280) (यानी अपने क़र्ज़ का बिल्कुल छोड़ देना अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बहुत बड़ा मक़ाम रखता है क्योंकि तंगदस्त पर अपना क़र्ज़ बिल्कुल छोड़ देना ये ईमान और रहम दिली की अ़लामत है और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ये अ़मल बहुत ज़्यादा पसन्द तरीन और महबूब है)।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— सद्क़े का सवाब दस गुना मिलता है और क़र्ज़ में मुहलत का सवाब अठारह गुना मिलता है। (सुनन इब्ने माजा—177)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— अगर कोई शख़्स चाहता है कि अल्लाह तआ़ला क़यामत की सख़्तियों से बचाये तो उसे चाहिये कि क़र्ज़दार को मुहलत दे या माफ़ कर दे।

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
जो शख़्स क़र्ज़ ले और उसे अदा करने की नीयत करे तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये फ़रिश्ते मुक़र्रर कर देता है जो उसकी हिफ़ाज़त करते हैं और उसके लिये दुआ़ करते हैं यहाँ तक कि वो क़र्ज़ अदा कर देता है। (मुस्नद अहमद—6/72)

जब कोई मुसलमान बीमार हो तो उसकी अ़यादत (बीमार पुर्सी) को जाये और क़रीब जाकर उसका हाल पूँछे और हमदर्दी के साथ उसको तसल्ली दे और सब्र व तहम्मुल पर इस्तिक़ामत और शुक्र पर क़ायम रहने की तल्क़ीन करे और अगर मुमकिन हो तो उस बीमार शख़्स से अपने लिये दुआ़ये ख़ैर कराये क्योंकि बीमार की दुआ़ फ़रिश्तों के मिस्ल होती है और उस बीमार शख़्स के लिये उसकी सेहतमन्दी व शिफ़ा की अल्लाह तआ़ला से खुद भी दुआ़ करे

और बीमार शख़्स को भी चाहिये कि अपनी बीमारी पर सब्र व ज़ब्त से काम ले और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे और अपनी शिफ़ायाबी व सेहतमन्दी के लिये सिर्फ़ रब तआ़ला पर भरोसा करे क्योंकि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई किसी को शिफ़ा व सेहतमन्दी नहीं दे सकता सिर्फ़ वही पाक ज़ात है जो तमाम लोगों को उनके बीमार होने पर उन्हें शिफ़ा अ़ता फ़रमाता है हर शख़्स को चाहिये कि अपनी बीमारी या तकलीफ़ो परेशानी में किसी से शिकवा शिकायत न करें बल्कि अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहे क्योंकि बीमारी इन्सान के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है हदीस पाक में है कि एक रात के बुखार के सबब एक साल के गुनाह मिटा दिये जाते हैं।

जब कोई बन्दा किसी बीमारी में मुब्तिला होता है तो अल्लाह तआ़ला उस पर दो फ़रिश्ते मुक़र्रर कर देता है कि देखें बन्दा सब्र और शुक्र पर क़ायम रहता है या लोगों से शिकायत करता है और अगर वो सब्र और शुक्र पर क़ायम रहते हुये अपने रब की रज़ा पर राज़ी रहता और किसी से शिकवा शिकायत नहीं करता तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने सब्र और ज़ब्त से काम लिया और मेरा शुक्र अदा किया और मेरी रज़ा पर राज़ी रहा अब ये बन्दा मेरे ज़िम्मे करम पर है अगर मैं इसे शिफ़ा दूँगा तो पहले से ज़्यादा सेहतमन्द करुँगा और इस बीमारी के सबब मैं इसे बख़्श दूँगा और अगर मैंने इसे मौत दी तो मैं इसे अपनी रहमत के साये में जगह अ़ता करुँगा और इसे जन्नत में दाख़िल करुँगा।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स किसी बीमार की अ़यादत को जाता है तो गोया (वो जितनी देर वहाँ बैठता है) तो वो जन्नत के बाग़ात में बैठता है हत्ता कि जब वो उठता है तो उसके लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर किये जाते हैं जो रात तक उसके लिये दुआ़ये रहमत करते हैं। (सुनन इब्ने माजा–105)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान की अ़यादत (बीमार पुर्सी) करता है या उससे मुलाक़ात करता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है तू अच्छा हुआ तेरा चलना अच्छा हुआ और तूने जन्नत में ठिकाना बना लिया। (सुनन इब्ने माजा–105)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— जब तू मरीज़ की अ़यादत को जाये तो अगर मुमकिन हो तो उससे अपने लिये दुआ़ कराये क्योंकि मरीज़ की दुआ़ फ़रिश्तों की मिस्ल है। (इब्ने माजा)

जब कोई मुसलमान फ़ौत हो जाये तो उसके घर ताअ़ज़ियत के लिये जाओ और उसके जनाज़े में शरीक हो और दफ़ीना करके वापस आओ और इस दरमियान फ़िज़ूल काम या फुहश कलामी न करो बल्कि अपनी मौत को कसरत से याद करो और दुनियाँदारी की बातों में खुद को मशगूल न रखो बल्कि अपनी मौत व क़ब्र से मुताअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र करो कि एक दिन इसी तरह मेरा भी जनाज़ा उठेगा मेरा भी आख़िरी गुस्ल होगा और लोग मुझे अंधेरी क़ब्र तक छोड़कर अपने—अपने घरों को वापस आ जायेंगे और मुझे उसी अंधेरी कोठरी में क़यामत तक तन्हा रहना होगा और हमें चाहिये कि मइयत के लिये रब तआ़ला से दुआ़ये मग़फिरत करें ताकि उसकी क़ब्र उसके लिये बा ख़ैर व जन्नत का बाग़ बन जाये और मइयत के घर वालों को सब्र की तल्क़ीन करें और तसल्ली दें और उनके ग़म में शरीक हों और हर तरह से उनकी मदद करें।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो आदमी किसी मुसलमान के जनाज़े में साथ जाता है तो उसके लिये एक क़ीरात के बराबर सवाब है और दफ़ीना तक ठहरे तो उसके लिये दो क़ीरात के बराबर सवाब है। (और एक क़ीरात उहद पहाड़ के मिस्ल है) (सही बुख़ारी—1/177)

मुसलमानों के हुकूक़ से भी ज़्यादा हम पर मुसलमान पड़ोसी के हुकूक़ हैं और हम पर लाज़िम है कि अपने पड़ोसियों की इज़्ज़त करें और उन्हें किसी भी तरह की अज़्ज़ियत न दें और अगर उनसे हमें कोई अज़्जिय़त (तकलीफ़) मिले तो उस पर सब्र करें और उन्हें माफ़ कर दें यही हमारे लिये बेहतर और सवाब का बाइस है और हमेशा उनके साथ अच्छा सुलूक करें और नरमी से बात करें और खुशी में उन्हें मुबारक बाद दें और उनके घर तहाइफ़ भेजें ताकि उनके दिल खुश हों।

और अपने पड़ोसियों की हर ख़ुशी व ग़म में बराबर शरीक हो और उनकी और उनके घरों की हिफ़ाज़त करो और उनके बच्चों से रहम और शफ़क़त से पेश आओ और उनके साथ बेहतर और हुस्ने कलाम के साथ गुफ्तगू करो और सलाम व मुसाफ़ाह करने में पहल करो और अगर हमारे पड़ोसी ग़रीब हों तो उन्हें हक़ीर न जानो बल्कि खुद से बेहतर जानो और हर तरह से उनकी बदनी व माली मदद करो अगर वो क़र्ज़ माँगें तो उन्हें क़र्ज़ दो और उनके साथ हुस्ने खुल्क और अच्छे बरताव से पेश आओ और जब घर में कोई अच्छा खाना वग़ैराह या कोई और चीज़ बने तो उनके घरों में भी भेजो और अगर पड़ोसी बीमार हों तो उनकी बीमार पुर्सी के लिये जाओ और अगर कोई फ़ौत हो जाये तो उनके घर ताअ़ज़ियत के लिये जाओ और उनके जनाज़े में शिर्कत करो और हमेशा उनका ख़्याल रखो कभी सख़्त कलामी से पेश न आओ जिससे उनके दिल रंजीदा हों बल्कि उनसे मुहब्बत और अच्छे तअ़ाल्लुक़ात के साथ बेहतर रिश्ता क़ायम करो।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स तुम्हारा हम साया (पड़ोसी) बने उसके साथ अच्छी हमसायगी रखो (कामिल) मुसलमान हो जाओगे।
(सुनन इब्ने माजा–331)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और आख़िरत पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी की इज़्ज़त करे। (सही बुख़ारी–2/889)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक उसका पड़ोसी उसके शर से महफ़ूज़ न रहे। (सही बुख़ारी–2/889)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–खुदा की क़सम मोमिन नही, खुदा की क़सम मोमिन नही, खुदा की क़सम मोमिन नही दरयाफ़्त किया गया या रसूलल्लाह वह कौन शख़्स है आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जिसका पड़ोसी उससे तकलीफ़ पाता हो (बुख़ारी शरीफ़)

—: वालिदैन के हुक़ूक़ :—

वालिदैन के हर हुक्म की इताअ़त करना हर मुसलमान पर वाजिब है लेकिन वो अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ना फ़रमानी का हुक्म दें तो हम पर वाजिब है कि उनका हुक्म न मानें इसके अलावा हमें अपने माँ बाप के तमाम हुक्मों की फ़रमाबरदारी करनी होगी और जिसने अपने माँ बाप की नाफ़रमानी की वो सख़्त गुनाहगार होगा और दुनियाँ व आख़िरत में अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और अ़ज़ाब का शिकार होगा कुरान मजीद और अहादीस मुबारका में कई मक़ामात पर वालिदैन की इताअ़त और उनसे हुस्ने सुलूक की हमें ताकीद की गई है।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है—
और अपने माँ बाप के साथ भलाई करो। (सू0—बक़राह—83)

इरशादे बारी तआ़ला है—
और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो और अपने माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तुम्हारे सामने उन में से एक या दोनो बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उनसे हूँ न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन दोनों से बड़े अदब से बात किया करो और उनके लिये आ़जीज़ी व इन्किसारी के बाज़ू बिछाये रखो और उन दोनों से नरम दिली से पेश आना और अ़र्ज़ करना ऐ मेरे रब तू मेरे माँ बाप पर रहम फ़रमां जैसा कि उन दोनो ने छुटपन (बचपन) में हमें (रहमत व शफ़क़त) से पाला और तुम्हारा रब खूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है (सू0—बनी इसराईल—23,—26)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
माँ बाप के साथ नेकी करना नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, हज व उमराह और अल्लाह की राह में जिहाद करने से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है (मजमउज्ज़वाइद—8 / 138)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक ठहराना और माँ बाप की ना फ़रमानी करना। (सही बुख़ारी—1 / 362)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है– सब गुनाहों की सज़ा अल्लाह तआ़ला चाहे तो क़यामत के लिये उठा रखे लेकिन माँ बाप की ना फ़रमानी की सज़ा अल्लाह तआ़ला जीते जी (दुनियाँ में) देता है। (मुस्तदरक हाकिम–4/156)

वालिदैन का मक़ाम और मर्तबा औलाद के लिये तमाम मुसलमानों व क़राबतदारों में सबसे ऊँचा है उनकी इताअ़त व उनसे हुस्ने सुलूक अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बहुत ज़्यादा पसंदीदा अ़मल है माँ बाप की इताअ़त का शरीअ़ते मुताह्रा में यहाँ तक हुक्म है कि अगर कोई शख़्स निफ़िल नमाज़ पढ़ रहा है और उसके माँ बाप को ये इल्म नहीं कि वो नमाज़ पढ़ रहा है और हालते नमाज़ में अगर माँ बाप या उनमें से कोई एक बुलाये तो उसे नमाज़ तोड़कर जवाब देना होगा।

इसी तरह अगर कोई शख़्स अल्लाह की राह में जिहाद के लिये जाना चाहे और उसके माँ बाप अपनी ख़िदमत के सबब उसे जाने से मना करें तो उस शख़्स पर वाजिब है कि अपने माँ बाप का हुक्म माने और जिहाद के लिये न जाये और अपने माँ बाप की ख़िदमत करे और उनके लिये हमेशा भलाई के काम करे और उन्हें हमेशा खुश रखे और उनके हुक्म का ताबेअ़ रहे और अपने माँ बाप से जो हुक्म मिले उसे खुशी–खुशी बजा लाये क्योंकि वालिद की इताअ़त गोया अल्लाह तआ़ला की इताअ़त है और उनकी नाराज़गी अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी का बाइस है।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
और हमने आदमी को उसके माँ बाप के बारे में ताकीद फरमाई कि उसकी माँ ने उसे पेट में रखा कमजोरी पर कमजोरी झेलते हुये और उसका दूध छुड़ाना भी दो साल में है कि तू मेरा (भी) शुक्र अदा कर और अपने वालिदैन का भी (शुक्र अदा कर) आख़िर तुझे मेरे ही पास आना है। (सू0–लुक़मान–14)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और माँ बाप से भलाई करो और रिश्तेदारों से और यतीमों और मुहताजों और पास के हम साये (पड़ोसी) और दूर के हम साये और

करवट के साथी और मुसाफ़िर (से) और अपनी बाँदी गुलाम से। (सू0—निसा—36)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— औरत पर सबसे बड़ा हक़ उसके शौहर का है और मर्द पर सबसे बड़ा हक़ उसके माँ बाप का है। (हाकिम—4/175)

अगर वालिदैन अपनी ख़िदमत के सबब निफ़िली इबादत को तर्क करने का हुक्म दें तो हम पर लाज़िम है कि निफ़िली इबादत को छोड़ दें और उनकी ख़िदमत करें और उनसे हमेशा नरम दिली और अच्छे बरताव से पेश आयें और उनके दिलों को खुशी पहुँचायें और उनसे इस तरह बात करें जैसे गुलाम अपने आक़ा से आ़जिज़ी से बात करता है और कोई काम ऐसा न करें जिससे उनके दिलों को अज़्ज़ियत पहुँचे और उनके दिल रंजीदा हों।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स इस हालत में सुबह करे कि उसके माँ बाप उससे राज़ी हों तो वो यूँ सुबह करता है कि उसके लिये जन्नत के दो दरवाज़े खुलते हैं और जो आदमी इसी हालत में शाम करे उसके लिये इसी के मिस्ल है और जो शख़्स इस हालत में सुबह करे कि उसके माँ बाप उससे नाराज़ हों तो वो यूँ सुबह करता है कि उसके लिये जहन्नुम के दो दरवाज़े खुलते हैं और जो इस हाल में शाम करे तो उसके लिये इसी के मिस्ल है। (शुअ़बुल ईमान—2/206)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
चाहे किसी के माँ बाप अपनी औलाद पर जुल्म करें फिर भी औलाद को चाहिये कि माँ बाप की ना फ़रमानी न करे (शुअ़बुल ईमान—2/206)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— जो अपने वालिदैन को एक बार निगाहे मेहर व रहम से देखे तो अल्लाह तआ़ला उसके नामे आमाल में एक हज का सवाब लिखता है। (मिश्कात—421)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
माँ बाप तेरी जन्नत और तेरी दोज़ख़ हैं। (सुनन इब्ने माजा—269)

जब हज़रत याकूब अ़लैहस्सलाम अपने बेटे हज़रत यूसुफ (अ़लैह0) के पास तशरीफ़ ले गये तो वो उनकी ताज़ीम के लिये खड़े न हुये तो उनके इस फ़ेअ़ल पर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत यूसुफ (अ़लैह0) पर वही भेजी कि ऐ यूसुफ तुम अपने वालिद की ताज़ीम के लिये खड़े होने को बड़ी बात समझते हो मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैं तुम्हारी पीठ से कोई नबी पैदा नहीं करुँगा इससे मालूम हुआ कि वालिद की ताज़ीम के लिये खड़ा न होना अल्लाह के नज़दीक कितना ज़्यादा ना पसंदीदा फ़ेअ़ल और नाराज़गी का बाइस है इससे वाज़ेह हुआ कि वालिदैन की नाफ़रमानी करना कितना बड़ा गुनाह है।

इसलिये हमें चाहिये कि अपने माँ बाप की किसी हाल में भी नाफ़रमानी न करें और अपने माँ बाप के फ़रमाबरदार व ख़िदमत गुज़ार बनें ताकि अल्लाह तआ़ला हमें अपने महबूब तरीन बन्दों में शुमार करे और हम ग़ज़बे इलाही से महफ़ूज़ रहें और अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी से बचें और अपने माँ बाप से कभी ऊँची आवाज़ में बात न करें न कभी सख़्त कलामी से पेश आयें बल्कि नरमी और रहम दिली से पेश आयें ज़रा सोचें कि कभी हम भी बूढ़े होंगे जब हमारी औलाद हमारी नाफ़रमानी करेगी तो हम कैसा महसूस करेंगे और जब वो बदसुलूकी और सख़्त कलामी से पेश आयेगी और हमारा ख़्याल नहीं रखेगी और हमारी ख़िदमत नहीं करेगी तो उस वक़्त हमारे दिल पर क्या गुज़रेगी।

इसलिये हमें चाहिये कि हम अपने आने वाले वक़्त को याद रखें और उस पर ग़ौरो फ़िक्र करें तो हमारी समझ में आ जायेगा कि जिस बात को हम पसन्द नहीं करते तो उस बात को क्या मेरे माँ बाप पसन्द करेंगे हालाँकि जिस तरह की ख़्वाहिश हम अपने दिलों में रखते हैं वही ख़्वाहिश हमारे माँ बाप भी रखते हैं कि मेरी औलाद मेरा कहना माने मेरी ख़िदमत करे मेरे बुढ़ापे का सहारा बने मेरी इज़्ज़त करे और हमसे हुस्ने खुल्क़ और अच्छे बरताव से पेश आये और जब वो हमसे बात करे तो उसकी बात में आ़जिज़ी और हुस्ने कलाम हो।

अगर हम चाहते हैं कि मेरी ख़्वाहिश के मुताबिक़ मेरी औलाद के अ़मल हों तो हमें भी उसी ख़्वाहिश के मुताबिक़ चलना होगा।

हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ और जिहाद में जाने की इजाज़त तलब की आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया तुम्हारी वालिदा (माँ) है उसने अ़र्ज़ किया जी हाँ आप ने फ़रमाया—अपनी माँ के साथ रहो क्योंकि जन्नत माँ के क़दमों के नीचे है (सुनन इब्ने माजा—205)

हज़रत इबने उमर (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि मेरी एक बीबी थी जिसे मैं पसन्द करता था लेकिन मेरे वालिद उसे ना पसन्द करते थे और कहते थे कि मैं उसे तलाक़ दे दूँ मैंने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि मैं क्या करुँ तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ इब्ने उमर तुम्हारे वालिद जो कहते हैं वही करो और अपनी बीबी को तलाक़ दे दो। (मुस्नद अहमद—2/20)

माँ बाप की ना फ़रमानी करने वाले का कोई फ़र्ज़ व निफ़िल कुबूल नहीं होता यानी नमाज़ रोज़ा हज ज़कात सद्क़ात वग़ैराह वालिदैन की ना फ़रमानी के सबब तमाम नेक आमाल व इबादात ज़ाया हो जाती है और इन्सान अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है हदीस पाक में है अपने माँ बाप को सताने वाला मलऊ़न है और जो अपने माँ बाप को सताता है या उन्हें अज़ि‍ज़यत पहुँचाता है तो वो अपना ठिकाना जहन्नुम में बनाता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
ख़ाक आलूदा हो उसकी नाक जिसने बूढे माँ बाप या उन दोनों में किसी एक को पाया फिर जन्नती न हुआ। (मिश्कात—418)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
तीन शख़्स जन्नत में न जायेंगे। 1—माँ बाप की नाफ़रमानी करने वाला 2—दइयूस (बेग़ैरत भड़वा) 3—वो औ़रत जो मर्दानी शक्ल बनाये (सुनन निसाई)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—

वालिदैन की नाफ़रमानी से बचो इसलिये कि जन्नत की खुश्बू हज़ार बरस की राह तक आती है लेकिन माँ बाप का नाफ़रमान इसकी खुश्बू भी न सूँघ सकेगा।

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
तीन दुआ़यें ऐसी हैं जिनके कुबूल होने में कोई शक नहीं है— 1—मज़लूम की दुआ़ 2—मुसाफ़िर की दुआ़ 3—बाप की अपने बेटे पर बद्दुआ़। (तिर्मिज़ी—2/13)

जब हम किसी काम का इरादा करते हैं तो बाज़ औक़ात हम ये फ़ैसला नहीं कर पाते कि फ़लाँ काम को करूँ या न करूँ और बाज़ काम ऐसे भी होते है कि हम उन कामों में इम्तियाज़ (फ़र्क़) नहीं कर पाते कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ये काम सही हैं या ग़लत और अल्लाह तआ़ला मेरे इस काम से राज़ी होगा या नाराज़ और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ये काम पसंदीदा है या ना पसंदीदा है और इस तरह हम बड़ी कशमकश में फंस जाते हैं और हमें उन कामों को करने में बड़ी दुश्वारी दरपेश आती है और न तो हम उन कामों के मुताअ़ल्लिक़ अपने रब से पूछ सकते है और न ही उनके मुताअ़ल्लिक़ सही और ग़लत का फ़ैसला कर सकते हैं।

इसलिये अल्लाह तआ़ला ने हमें इस कशमकश और दुश्वारी से निजात देने के लिये एक बहुत बेहतर रास्ता और आसानी हमारे लिये मुहैया की है कि मेरे बन्दे जब तू किसी काम की कशमकश में हो तो अपने माँ बाप से पूछ ले जो वो कहें वो सही है और जिस काम के लिये मना करें वो ग़लत है और जिस काम से तेरे माँ बाप राज़ी हों तो उस काम से तेरा रब भी राज़ी होता है और जिस काम से तेरे माँ बाप नाराज़ हों तो तू समझ ले कि तेरा रब भी तुझसे नाराज़ है और तेरे जिस काम से तेरे माँ बाप खुश हों तो उस काम से तेरा रब भी खुश होता है और जिस काम को तेरे माँ बाप पसन्द करें वही काम तेरा रब भी पसन्द फ़रमाता है और जिस काम को तेरे माँ बाप ना पसन्द करें वो काम तेरे रब के नज़दीक भी ना पसन्दीदा है।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला की इताअ़त वालिद की इताअ़त है और वालिद की नाफ़रमानी अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी है (अलमुअ़जम औसत)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला की रज़ा वालिद की रज़ा में है और अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी वालिद की नाराज़गी में है। (तिर्मिज़ी)

मज़कूरा बाला हदीस मुबारका से एक मसला हमें मालूम हुआ है कि हमें इस बात का क़तअन इल्म नहीं होता कि मुझसे मेरा रब राज़ी है या नाराज़ लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के क़ौल मुबारक के ज़रिये हमें ये बात मालूम हो गई है कि जब हम जानना चाहें कि मेरा रब हमसे खुश व राज़ी है या नहीं तो अपने वालिदैन को देखें अगर वो हमसे खुश व राज़ी हैं तो हमसे हमारा रब भी खुश व राज़ी है और अगर हमारे माँ बाप हमसे नाराज़ हैं तो हमें पता चल जायेगा कि हमसे हमारा रब नाराज़ है और फिर हम अपने रब को राज़ी करने के लिये नेक आमाल करेंगे और अपने माँ बाप को खुश व राज़ी करने के लिये उनके हुक्म के मुताबिक़ काम करेंगे ताकि हमसे हमारे माँ बाप खुश व राज़ी हो जायें और मेरा रब भी हमसे राज़ी व खुश हो जाये और इस तरह हम अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी और ग़ज़ब से बचने में कामयाब हो जायेंगे और अपने रब को राज़ी कर लेंगे।

वालिदैन की वफ़ात के बाद हम पर उनके हुकूक़ ये हैं कि उनके लिये दुआ़ये मग़फ़िरत करें और निफ़िली इबादत करें और उनके लिये रोज़े रखें और सद्क़ात ख़ैरात करें और अगर उन पर किसी का क़र्ज़ हो तो उनका क़र्ज़ अदा करें और उनके दोस्तों व रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक से पेश आयें और अल्लाह तआ़ला अगर हमें तौफ़ीक़ दे तो अपने वालिदैन की तरफ़ से हज या उमराह करें

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स वालिदैन की तरफ़ से सद्क़ा करे तो उसे भी उन दोनो के बराबर सवाब मिलता है और उसके सवाब में कुछ भी कमी नहीं होती। (कंजुल उ़म्माल—6/428)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स अपने वालिदैन के लिये दुआ़ये मग़फ़िरत करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे वालिदैन से अच्छा सुलूक करने वाला लिखता है। (दुर्रे मन्सूर—4/174)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जब तुम में से कोई ख़ैरात करे तो उसे चाहिये कि अपने माँ बाप

की तरफ़ से भी करे कि उसका सवाब उन (माँ बाप) को मिलेगा और उस (सद्क़ा ख़ैरात करने वाले) के सवाब में कोई कमी नहीं आयेगी (यानी कुछ न घटेगा) (तिबरानी)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
जो अपने वालिदैन की तरफ़ से बाद वफ़ात हज करे तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये दोज़ख़ से आज़ादी लिख देता है(शुअ़बुल ईमान)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स अपने माँ बाप की तरफ़ से हज करे या उनका क़र्ज़ अदा करें तो वो क़यामत के दिन नेकों के साथ उठेगा। (तिबरानी)

बाज़ अहमक़ (बेवकूफ़) लोग अपने बेटों से वो ख़्वाहिशें और उम्मीदें रखते हैं जो महज़ बातिल होती हैं जैसे कि मेरा बेटा मेरा सहारा बनेगा मेरी फ़रमांबरदारी करेगा और मेरी ख़िदमत करेगा हालाँकि उनकी ख़्वाहिशें और उम्मीदें झूठे ख़्वाबों और ख़्यालों पर मबनी होती हैं क्योंकि उन्होंने न तो अपने वालिदैन की ख़िदमत गुज़ारी व फ़रमांबरदारी की और न कभी उनका सहारा बना इसके अलावा उसने अपने बेटों को बेहतर दुन्यावी तालीम दिलायी और दीनी इल्म से दूर रखा और वालिदैन के हुक़ूक़ और उनका अदबो अहतराम और उनसे हुस्ने सुलूक व अच्छा बरताव करना नहीं सिखाया और न खुद सीखा बल्कि सिर्फ़ दुनियाँ में मुब्तिला रहा और आख़िरत से बेख़बर रहा और वही सब अपने बेटों को सिखाया हालाँकि जो सुलूक हम अपने माँ बाप के साथ करेंगे वही हम बदले में अपने बेटों से पायेंगे फिर भी उनका अपने बच्चों से ये उम्मीद रखना कि मेरा बेटा मेरी उम्मीदों और ख़्वाहिशों पर ख़रा उतरेगा और मेरे साथ अच्छा सुलूक करेगा और मेरी फ़रमाबरदारी करेगा और हर हाल में मेरा ख़्याल रखेगा और मेरा सहारा बनेगा तो उनकी अपने बेटों से ऐसी उम्मीदें रखना क्या हक़ व जाइज़ है।

वालिदैन की वफ़ात के बाद उनके लिये सद्क़ा ख़ैरात व निफ़िली इबादत करना हमारे लिये बहुत ज़्यादा अच्छा अ़मल है क्योंकि तमाम नेक आमल का सवाब उन तक पहुँचता है और हमारे सवाब में कोई कमी नहीं होती और उनके लिये दुआ़ये मग़फ़िरत करना हमारे लिये ख़ैरो बरकत का सबब बनती है और ऐसा करने वाला शख़्स अल्लाह तआ़ला के नज़दीक नेकोकार और पसंदीदा होता है और अल्लाह तआ़ला उसके गुनाहों को बख़्श देता है वालिदैन से

नेकी करने वाले शख़्स को अल्लाह तआला अपना महबूब रखता है और उसे अल्लाह तआला की कुरबत हासिल होती है इसलिये हमें चाहिये कि कसरत से सद्का ख़ैरात व निफ़िली इबादात वग़ैराह अपने वालिदैन को ईसाले सवाब करें ताकि दुनियाँ व आख़िरत में मिलने वाले बेहतर व बेशुमार अज्र के हम भी मुस्तहिक़ हो जायें और हमें चाहिये कि वालिदैन की वफ़ात के बाद कोई बुरा काम न करें क्योंकि हमारे बुरे अमल से उन्हें तकलीफ़ पहुँचती है बल्कि ज़्यादा से ज़्यादा नेक अमल करें ताकि उन्हें खुशी हासिल हो क्योंकि हमारे आमालों की ख़बर हमारे फ़ौत शुदा माँ बाप तक पहुँचती है और अगर औलाद के नेक अमल हों तो वो खुश होते हैं और अगर बुरे आमाल हों तो उन्हें तकलीफ़ होती है और उनके दिल रंजीदा होते हैं और हमें चाहिये उनकी क़ब्रों की कसरत से ज़ियारत किया करें और सद्का, ख़ैरात व निफ़िली इबादात और कुरान मजीद की तिलावत वग़ैराह के ज़रिये ईसाले सवाब किया करें ताकि उनके गुनाहों की बख़्शिश हो और हम भी मज़कूरा नेक आमाल की बेहतर जज़ा पायें।

और औलाद पर हक़ है कि वो उन बातों पर भी अमल करे जिन बातों के लिये उन्होंने अपनी हयात (ज़िन्दगी) में हमें करने की ताकीद की हो और जो बात उन्हें पसंदीदा थी और जिन कामों को न करने की हमें ताकीद की हो तो हमें चाहिये कि हम उन कामों को न करें यानी उनके तमाम हुक्म जो उन्होंने अपनी हयात में हमें दिये थे उन तमाम हुक्मों की बाद वफ़ात भी इताअत करना हम पर वाजिब है।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स हर जुमा के दिन अपने माँ बाप या उनमें से कोई एक की ज़ियारते क़ब्र करे उसे बख़्श दिया जाता है और उसे नेकोकार लिखा जाता है। (मजमउज्ज़वाइद—3/59)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— माँ बाप के हुस्ने सुलूक से ये बात भी है कि औलाद उनके बाद वफ़ात दुआये मग़फ़िरत करे। (कंज़ुल उम्माल—16/482)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है— आदमी जब अपने माँ बाप के लिये दुआ करना छोड़ देता है तो उसका रिज़्क क़ता कर दिया जाता है (कंज़ुल उम्माल—16/482)

—: मियाँ बीवी के हुकूक़ :—

औरतों के मर्दों पर उसी तरह हुकूक़ है जिस तरह मर्दों के औरतों पर हुकूक़ हैं लेकिन मर्द औरत पर फ़ज़ीलत रखता है और औरत पर मर्द के ज़्यादा हुकूक़ हैं लेकिन मर्दों पर भी लाज़िम है कि वो अपनी औरतों के हुकूक़ों का ख़्याल रखें और उसमें कोताही न करें और उनकी जाइज़ बातों को मानें और अपनी हैसियत से मुताबिक़ उनकी जाइज़ ख़्वाहिशात को पूरा करें और उनके साथ हुस्ने सुलूक से पेश आयें और जब वो कोई बात कहें तो उनकी बात को नज़र अंदाज़ न करें बल्कि उस पर ग़ौर करें और अगर उनकी बात सही और हक़ हो तो उस बात को मानें और उस पर अ़मल करें अगर उनकी बात ग़लत व ना हक़ हो तो उस बात को हरगिज़ न मानें।

हमें चाहिये कि हुस्ने खुल्क़ व अच्छे बरताव से अपनी बीवियों के दिलों को खुश रखें और उन्हें किसी तरह की अज़िय़त (तकलीफ़) न दें और मर्दों पर हक़ हैं कि वो अपनी बीवियों के लिये रहम दिल व मेहरबान हों लेकिन अपने नफ़्स की तरह उन्हें ढील न दें क्योंकि ज़्यादा ढील देने से बीवी अपने शौहर के क़ाबू से निकल जाती है और बाहम लड़ाई झगड़ा और बद कलामी के बाइस घर का अमन चैन व खुशहाली चली जाती है या फिर शौहर मजबूर होकर अपनी बीवी का गुलाम बन जाता है और घर का माहौल बिगड़ जाता है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआला है—
औरतों के मर्दों पर ऐसे हुकूक़ हैं जैसे मर्दों के औरतों पर लेकिन मर्दों को उन पर फ़ज़ीलत है। (सू0—बक़राह—228)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
ईमान में सबसे मुकम्मल आदमी वो है जो सबसे ज़्यादा अच्छे अख़लाक़ वाला है और जो अपनी औरतों के लिये बेहतर हो। (तिर्मिज़ी)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
औ़रत पर सबसे बड़ा हक़ उसके शौहर का है और मर्द पर सबसे बड़ा हक़ उसके माँ बाप का है। (हाकिम—4 / 175)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो शख़्स अपनी औ़रत की बद अख़लाक़ी पर सब्र करे तो उसे अइयूब अ़लैहस्सलाम के बराबर सवाब मिलेगा और जो औ़रत अपने शौहर की बद अख़लाक़ी पर सब्र करे तो उसे हज़रत आसिया (रज़ि0) के बराबर सवाब मिलेगा। (सही मुस्लिम)

बीवी पर हक़ है कि वो अपने शौहर के हर हुक्म की इताअ़त करे बशर्ते कि वो अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी का हुक्म न दे और अपने शौहर की हर तकलीफ़ को दूर करने की हर मुमकिन कोशिश करे व उसके हर हुक्म को खुशी–खुशी बजा लाये और नाफ़रमानी न करे और हर हाल में अपने खाविन्द को खुश व राज़ी रखे और अपने खाविन्द से बेजा फ़रमाइशो का मुतालबा न करे और कोई ऐसी बात न करे जिससे उसका दिल रंजीदा हो।

और बीवी पर हक़ है कि वो अपने शौहर से हमेशा खुश मिज़ाजी और अच्छे बरताव से पेश आये और वही काम करे जिस काम से उसका शौहर खुश व राज़ी हो और अपने बच्चों पर मेहरबान रहे और उसे चाहिये कि कभी अपने खाविन्द की अमानत से में ख़्यानत न करे और बिला इजाज़त कोई चीज़ किसी को न दे और न बिला इजाज़त घर से बाहर निकले और न अपने खाविन्द के माल को ज़ाया (बर्बाद) करे।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जो औ़रत इस हाल में मरे कि उसका खाविन्द उससे राज़ी हो तो वो जन्नत में दाख़िल होगी। (सुनन इब्ने माजा–134)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
अगर शौहर के सर से पाँव तक पीप हो और अगर औ़रत (उस पीप को) चाट ले तब भी शौहर का हक़ अदा नहीं कर सकती। (मुस्तदरक हाकिम–2/188)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
औ़रत पर्दे की चीज़ है जब वो बाहर निकलती है तो शैतान उसे झाँकता है। (जामअ़ तिर्मिज़ी–189)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
अगर शौहर निफ़िली इबादत के लिये बीवी को मना करे तो बीवी को चाहिये कि निफ़िली इबादत न करे नहीं तो वो गुनाहगार होगी और बिला इजाज़त कोई भी निफ़िली अ़मल कुबूल न होगा और जब तक तौबा न करे फ़रिश्ते उस पर लानत भेजते रहते हैं। (अबू दाऊद)

अगर मियाँ बीवी दोनो लोग आपस में अपने—अपने हुकूक़ों को सही तरह से अंजाम दें तो उनकी ज़िन्दगी खुशगवार बन जाती है और दुनियाँ के साथ उनकी आख़िरत भी बेहतर हो जाती है नहीं तो दुनियाँ व आख़िरत में नुकसान के सिवा कुछ हासिल नहीं होता और हर इन्सान के लिये बेहतर है कि मियाँ बीवी के हुकूक़ों के साथ—साथ हुकूकुल इबाद के तमाम मामलात में खुद को दूसरों की जगह खड़ा करके देखें तो मालूम हो जायेगा कि सही क्या है और ग़लत क्या है और अच्छा क्या है और बुरा क्या है।

मिसाल के तौर पर अगर हम किसी को कोई नुकसान या तकलीफ़ दे रहे हों या उसके साथ जुल्म या ज़्यादती कर रहे हों तो खुद को उसकी जगह खड़ा करके देखें और फिर ग़ौर करें कि अगर हमारे साथ कोई जुल्म या ज़्यादती करता या हमें कोई नुकसान या तकलीफ़ देता तो हमें कैसा महसूस होता तो इस तरह लोगों के मामलात में खुद को उस जगह तसव्वुर करने से हमें इस बात का इल्म हो जायेगा कि हम कितने ग़लती पर हैं और हमसे बुराई या गुनाह वाकेअ़ हो रहा है या नहीं और इस तरह हम गुनाहों और बुरी बातों से बचने में कामयाब होंगे और हम हक़ और नाहक़ में इम्तियाज़ (फ़र्क़) कर सकेंगे और मियाँ बीवी के हुकूक़ों के साथ—साथ तमाम लोगों के हुकूक़ों को बेहतर तरीक़े से अंजाम दे सकेंगे और हमें किसी तरह की दुश्वारी दरपेश नहीं आयेगी बल्कि हुकूक़ों की अदायगी के तमाम रास्ते हमारे लिये आसान हो जायेंगे और इस तरह हम बुराई व गुनाहों से महफ़ूज़ रहेंगे और दुनियाँ व आख़िरत में इसका बेहतर अज्र पायेंगे।

इसलिये हमें चाहिये कि हम इस बेहतर तरीक़े और रास्ते को चुनें और उस पर अ़मल करते हुये अपने—अपने हुकूक़ों

को अदा करें और उसमें किसी तरह की कोई कोताही न करें और अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी करें ताकि दुनियाँ व आख़िरत में मिलने वाले बेशुमार अज्र व इनामात से सरफ़राज़ हों।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
मैने जहन्नुम में देखा तो वहाँ औ़रतों को ज़्यादा पाया तो आप से अ़र्ज़ किया गया ऐसा क्यों है तो आपने इरशाद फ़रमाया–कि वो अपने खाविन्दों की ना शुक्री व बदगोई करती और ज़्यादा लानतान करती हैं। (सही बुख़ारी–1/44)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
अगर मैं किसी को सज्दे का हुक्म देता तो औ़रत को हुक्म देता कि वो शौहर को सज्दा करे क्योंकि शौहर का बीवी पर बड़ा हक़ है। (सुनन इब्ने माजा–134)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
जिस औ़रत से उसका शौहर नाराज़ हो उसकी नमाज़ कुबूल नहीं होती और न कोई नेकी बुलन्द होती है। (बैहकी–3/128)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है–
जब तक शौहर अपनी बीवी से राज़ी नहीं तब तक अल्लाह तआ़ला उस बीवी से नाराज़ रहता है। (बुख़ारी,मुस्लिम)

जिनके दिलों में ख़ौफ़े खुदा और अपनी मौत का मुकम्मल यक़ीन नहीं होता वो अपने हुकूक़ो अच्छी तरह अंजाम नही दे पाते और वो लोग इस बात से भी ग़ाफिल रहते हैं कि जो सुलूक और बरताव वो दूसरों के साथ करते हैं उन्हें उनके हर बुरे फ़ेअ़ल का बदला दिया जायेगा और किसी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ख़ौफ़े खुदा और आख़िरत पर मुकम्मल एतक़ाद नहीं हो सकता जब तक कि वो दुनियाँ से बे रग़बती और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजूअ़ न करे इसलिये हमें चाहिये कि अपनी ज़िन्दगी के अच्छे बुरे तमाम हालातों पर सब्र व तहम्मुल और शुक्र व क़नाअ़त इख़्तियार करें और उस पर क़ायम मक़ाम व साबित क़दमी रहें और अल्लाह व रसूल के अहकाम के मुताबिक़ अपने अपने हुकूक़ों को अदा करें।

—: मुहब्बते अहले बैत और ताज़ियादारी :—

अहले बैत की मुहब्बत हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है क्योंकि अहले बैत की मुहब्बत ईमान की जान और ईमान के लिये शर्त है इनकी मुहब्बत के वग़ैर किसी के दिल में ईमान दाख़िल नहीं हो सकता हदीस पाक में है नबी अकरम नूरे मुजस्सम रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—इस्लाम की बुनियाद मेरी और मेरे अहले बैत की मुहब्बत है और अल्लाह तआ़ला ने हम तमाम मुसलमानों को हुक्म दिया कि अहले बैत से मुहब्बत करो।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
ऐ महबूब (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) आप मुसलमानों से फ़रमां दीजिये कि मैं तबलीग़ पर तुम से कोई बदला या सिला नहीं माँगता अलबत्ता मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे क़राबतदारों से मुहब्बत करो। (सू0—शूरा—23)

मिश्कात शरीफ़ में तिर्मिज़ी के हवाले से रिवायत की गई है कि जब ये कुरान की आयत नाज़िल हुई तो सहाबाकिराम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम ने दरयाफ़्त किया या रसूलुल्लाह आपके क़राबतदार कौन हैं तो आपने इरशाद फ़रमाया—हजरत अ़ली फ़ातिमा हसन व हुसैन (रज़ि0) ये मेरे क़राबतदार (अहले बैत) हैं और इनसे मुहब्बत करो।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
अल्लाह तआ़ला तो यही चाहता है कि ऐ अहले बैत तुम से हर नापाकी को दूर कर दें और तुम्हें खूब पाक व साफ़ कर दें। (सू0—अहज़ाब—33)

तिर्मिज़ी शरीफ़ मे हज़रत ज़ैद बिन अकरम (रज़ि0) से रिवायत है कि सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—कि मैं तुममें दो चीज़ें ऐसी छोड़े जा रहा हूँ अगर तुम लोग इसको मज़बूती से थामे रहोगे तो कभी गुमराह न होगे और अगर एक को भी छोड़ दिया तो गुमराह हो जाओगे नीज़ फ़रमाया दोनो एक दूसरे से बड़ी हैं यानी कुरान मजीद और अहले बैत और ये दोनों आपस में जुदा न होंगे यहाँ तक कि दोनों हौज़े कौसर पर मेरे पास आयेंगे

—: अहले बैत से मुताअ़ल्लिक़ चन्द अहादीस :—

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्ललम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआ़ला की क़सम किसी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल नहीं हो सकता जब तक मेरे अहले बैत से अल्लाह तआ़ला के लिये और मेरी क़राबत की वजह से मुहब्बत न रखे। (इब्ने माजा—13)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
हसन और हुसैन (रज़ि0) जन्नत में जवानों के सरदार हैं। (तिर्मिज़ी—2/728)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है—
जिसने हसन व हुसैन से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्त की और जिसने इनसे दुश्मनी रखी उसने मुझसे दुश्मनी रखी।
(इब्ने माजा—1/72) (मिश्कात—3/272)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
ऐ अ़ली फ़ातिमा हसन व हुसैन (रज़ि0) तुम जिससे लड़ोगे मैं भी उससे लडूँगा और जिससे तुम सुलह करोगे मैं भी उससे सुलह करुँगा। (इब्ने माजा—1/73)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है—
हुसैन मुझसे है मैं हुसैन से हूँ और जो हुसैन से मुहब्बत रखता है अल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत रखता है। (तिर्मिज़ी—2/732) (इब्ने माजा—1/82)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
इलाही मैं हुसैन से मुहब्बत रखता हूँ तू भी उससे मुहब्बत रख और उस शख़्स से भी मुहब्बत रख जो हुसैन से मुहब्बत रखता हो (सही मुस्लिम—2/33)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जो शख़्स मेरे अहले बैत की मुहब्बत में मरा वो शहीद मरा।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
मेरे अहले बैत तुम्हारे लिये नूह अ़लैहस्सलाम की कश्ती के मानिन्द हैं जो इसमें सवार हो गया उसने निजात पाई और जो चढ़ न पाया और रह गया वो हलाक हुआ। (मिश्कात–573)

ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
अगर कोई शख़्स मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे और मेरे अहले बैत की दुश्मनी में मर जाये वो जहन्नुमी है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करो क्योंकि वो तुम्हें नेअ़मतें देता है और अल्लाह तआ़ला के लिये मुझसे मुहब्बत करो और मेरे लिये मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो। (तिर्मिज़ी–2/737)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है–
मेरे अहले बैत की मुहब्बत एक साल की इबादत से अफ़ज़ल है।

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
हसन व हुसैन (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हुम) मेरी दुनियाँ के दो फूल हैं। (तिर्मिज़ी–2/731) (मिश्कात–3/272)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है–
जिसने मेरे अहले बैत से दुश्मनी रखी उस पर मेरी शफ़ाअ़त हराम हो गई।

हजरत अ़ली रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हज़रत इमाम हसन (रज़ि0) सीने से सर मुबारक तक और हजरत इमाम हुसैन (रज़ि0) सीने से नीचे पाँव मुबारक तक हुजुर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के मुशाबा थे। (तिर्मिज़ी–2/733)

—: ताज़ियादारी :—

अ़शरा मुहर्रम में ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है इन अइयाम में शर्बत, खिचड़ा, बिरयानी, खीर वग़ैराह पर फ़ातिहा दिलाना और लोगों में तक़सीम करना और चाय, शर्बत, खीर वग़ैराह की सबील करना बाइसे ख़ैरो बरकत व सवाब है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
जो लोग अल्लाह तआ़ला की निशानियों और यादगारों का एहतमाम करते है ये फ़ेअ़ल उनके दिलों कर तक़वा है। (सू0—हज—32)

तफ़सीर व अहादीस में लिखा है कि हर वो चीज़ (शआइरुल्लाह) यानी अल्लाह तआ़ला की निशानी और उसकी यादगार में दाख़िल है जिसको देखकर अल्लाह व रसूल और अल्लाह वाले याद आ जायें और मैं ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करने वालों से पूँछता हूँ कि क्या उन्हें ताज़िया देखकर इमाम हुसैन (रज़ि0) और उनकी कुरबानी याद नहीं आती।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जिस चीज़ को अल्लाह तआ़ला ने हराम क़रार दिया वो हराम है और जिसको हलाल क़रार दिया वो हलाल है और जिस चीज़ के बारे में ख़ामोश रहा वो माफ़ है। (जामअ़ तिर्मिज़ी, इब्ने माजा,— मिश्कात—367)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया— अल्लाह तआ़ला ने बाज़ चीज़ें फ़र्ज़ फरमाई हैं उन्हें ज़ाया मत करो और जो हराम कर दिया उनकी हुरमत मत तोड़ो और जो हुदूद मुक़र्रर किये हैं उन हुदूद के आगे मत बढ़ो और बाज़ चीज़ों में उसने सुकूत (ख़ामोशी) इख़्तियार की है (और ये सुकूत) किसी भूल की वजह से नहीं बल्कि रहमत व करम की वजह से है तो उनमें बहस न करो। (मिश्कात—325)

मज़कूरा अहादीस की रोशनी में ये बात साबित हुई कि ताज़ियादारी करना जाइज़ है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने ताज़ियादारी

के मुताअ़ल्लिक़ ख़ामोशी इख़्तियार की है और कुरान व हदीस में ताज़ियादारी की कहीं मुमानियत नहीं आयी है और जिन चीज़ों के बारे में अल्लाह तआ़ला ने ख़ामोशी इख़्तियार की है वो चीज़ें हमारे लिये माफ़ हैं और जिन चीज़ों को अल्लाह तआ़ला ने माफ़ फ़रमाया हो तो वो चीज़ें किसी भी तरह से नाजाइज़ व हराम नहीं हो सकतीं और अल्लाह व रसूल ने जिन चीज़ों को हराम क़रार न दिया हो उन चीज़ों को हराम व नाजाइज़ कहना बिल्कुल ग़लत व बे बुनियाद है और जिस तरह हम रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत और अक़ीदत में ईद मीलादुन्नबी का जश्न बड़े शौक़ व जोश और एहतमाम के साथ मनाते हैं इसी तरह हम इमाम हुसैन (रज़ि0) की मुहब्बत में ताज़ियादारी करते हैं और उनकी यादगार मनाते हैं।

हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ि0) से मरवी है कि आपने फ़रमाया अगर किसी चीज़ की तस्वीर बनाना ज़रुरी समझो तो दरख़्तों की या ऐसी चीज़ की तस्वीर बनाओ जिसमें रुह न हो। (यानी जानदार न हो) (मिश्कात–386)

मज़कूरा हदीस भी इस बात पर दलालत करती है कि ताज़िया बनाना जाइज़ है क्योंकि ग़ैर जानदार की तस्वीर बनाना जाइज़ है और ताज़िया ग़ैर जानदार है और उसमें जान नहीं होती जिस तरह पहाड़ मकान जंगल नदी झरना बाग़ात मस्जिद मक्का मुअज्ज़मा व मदीना मुनव्वरा वग़ैराह की तस्वीर बनाना जाइज़ है इसी तरह रोज़ये इमाम हुसैन यानी ताज़िया बनाना जाइज़ है।

सैइयद अ़ल्लामा मौलाना महबूब उर रहमान नियाज़ी जयपुरी अपनी किताब "मुहब्बते अहले बैत कुरान व अहादीस की रौशनी में" फ़रमाते हैं कि कुरान व हदीस की रू से जिन्हें अहले बैत से मुहब्बत नहीं वो मुनाफ़िक़ हैं मुहब्बत का तक़ाज़ा ये है कि जो चीज़ महबूब से निसबत रखती है तो मुहब्बत करने वाला उस चीज़ से भी निसबत रखता है और उसकी ताज़ीमो तकरीम करता है और ताज़िया अहले बैत से निसबत रखता है तो जिसे अहले बैत से मुहब्बत होगी वो ताज़िये से भी मुहब्बत करेगा और ताज़िया रोज़ये इमाम हुसैन की नक़ल है।
मिसाल के तौर पर हाजी लोग मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा

से बहुत सी चीज़ें खरीद कर अपने–अपने मुल्कों में लाते हैं फिर उन चीज़ों को अपने रिश्तेदार दोस्त अहबाब वग़ैराह को बतौर तोहफ़ा देते हैं और उन्हें लेने वाले लोग उन चीज़ों को इज़्ज़त की नज़र से देखते हैं और उन चीज़ों को तबर्रुक समझते हैं हालाँकि हक़ीक़त ये है कि वो चीज़ें मक्का या मदीना से आती ज़रूर हैं लेकिन वो चीज़ें मक्का या मदीना की बनी हुयी नहीं होती हैं बल्कि वो दूसरे मुल्कों से लाकर मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा में बेची जाती हैं लेकिन फिर भी हम लोग उन चीज़ों की ताज़ीम व तकरीम करते हैं क्योंकि वो तमाम चीज़ें मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा से निसबत रखती हैं इसलिये क़ाबिले ताज़ीम होती हैं।

इसी तरह जो लोग इमाम हुसैन (रज़ि0) से मुहब्बत करते हैं और जब वो ताज़िये को देखते हैं तो उसकी ताज़ीम करते हैं और उसको रोज़ये इमाम हुसैन तसव्वुर करते हैं और ताज़िये की निसबत इमाम हुसैन (रज़ि0) से वाबस्ता होती है इसलिये ताज़िया भी क़ाबिले ताज़ीम होता है।

इसी तरह जब किसी औलियाएकिराम या बुज़ुर्गानेदीन की दरगाह पर हम हाज़िरी के लिये जाते हैं और जो तबर्रुकात हम दुकानों से ख़रीदते हैं लेकिन वो तबर्रुक जब तक दुकानों पर था तो उसकी ताज़ीम नहीं होती थी लेकिन जब वो तबर्रुक आस्ताना–ए–औलिया की हाज़िरी दे आता है तो वही तबर्रुक क़ाबिले ताज़ीम हो जाता है क्योंकि उसे दरगाहे औलिया या बुज़ुर्गानेदीन की ज़ियारत का शरफ़ हासिल हो जाता है और उसकी निसबत उस दरगाह में मौजूद वलीअल्लाह से वाबस्ता हो जाती है इसलिये हम उस तबर्रुक को भी इज़्ज़त और एहतराम की नज़र से देखते हैं।

जब कोई शख़्स उस तबर्रुक को लेकर वापस अपने घर आता और उस तबर्रुक को लोगों में तक़सीम करता और कहता कि मैं ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ की दरगाह पर हाज़िरी के लिये अजमेर शरीफ़ गया था या हज़रत वारिस पाक की दरगाह देवा शरीफ़ गया था या हज़रत अलाउद्दीन साबिर कलयरी की दरगाह पर हाज़िरी के लिये गया था वग़ैराह और ये तबर्रुक वहीं का है तो हम लोग उस तबर्रुक को कितनी इज़्ज़त की नज़र से देखते क्योंकि वो तबर्रुक

औलियाएकिराम और बुजुर्गानेदीन से निसबत रखता है।

एक बात क़ाबिले तवज्जो है और हमें उस पर ग़ौर करना चाहिये कि कुछ शहर व कस्बे ऐसे हैं कि जिनके नाम के आख़िर में हम शरीफ़ लफ़्ज़ का इस्तेमाल करते हैं जैसे बग़दाद शरीफ़, अजमेर शरीफ़, देवा शरीफ़, किछौछा शरीफ़, काल्पी शरीफ़, बिल्ग्राम शरीफ़, मारैहरा शरीफ़, बरेली शरीफ़ वग़ैराह आख़िर ऐसा क्यों है क्योंकि इन तमाम शहर व कस्बों में औलियाएकिराम व बुजुर्गानेदीन मदफून हैं और इन शहरों व कस्बों से अल्लाह के नेक सालिहीन बुजुर्गों और वलियों की निसबत जुड़ी है इसलिये इन शहरों व कस्बों के नाम भी हम ताज़ीम के साथ लेते हैं तो नेक सालेह बुजुर्गों व औलियाएकिराम की निसबत से उस शहर का नाम भी ताज़ीम के क़ाबिल हो जाता है तो सइयदुना हज़रत इमाम हुसैन की निसबत से ताज़िया कितनी बड़ी ताज़ीमो अदब और एहतराम के क़ाबिल होगा इसका हम और आप खुद अन्दाज़ा लगायें और ताज़िये को ताज़ीमो तकरीम की नज़र से देखें।

जिस तरह काग़ज़ सिर्फ़ काग़ज़ होता है लेकिन जब उस काग़ज़ पर अल्लाह व रसूल का नाम लिख दिया जाये तो वो चूम कर सर आँखों पर लगाने के क़ाबिल हो जाता है इसी तरह जब किसी काग़ज़ पर कुरान लिख दिया जाता है तो वो अल्लाह का कलाम हो जाता है और वो ताजीमो अदब व एहतराम के क़ाबिल हो जाता है इसी तरह हम मस्जिदे नबवी और गुम्बदे खज़रा या ख़ाना –ए–काबा की तस्वीर जो सिर्फ़ काग़ज़ पर बनी हुई होती है लेकिन हम उसे चूमते और उसकी ताज़ीम करते हैं और उनका एहतराम करते हैं और उन तस्वीरों को ऐसी जगह रखते और सजाते हैं कि जहाँ उनकी बे अदबी न हो।

हालाँकि वो काग़ज़ पर बनी होती हैं और वो असल भी नहीं होती बल्कि उसकी नक़ल होती हैं लेकिन फिर भी हम उन तस्वीरों की ताज़ीम करते हैं क्योंकि वो अल्लाह व रसूल से निसबत रखती हैं इसलिये हम उस काग़ज़ को नहीं देखते बल्कि हम ये देखते हैं कि उस काग़ज़ पर बना क्या है और इसी तरह हम ताज़िये की काग़ज़ और पन्नी को नहीं देखते हैं बल्कि ये देखते हैं कि ये

रोज़ए–इमाम हुसैन (रज़ि0) है जिसकी निसबत सइयदुना इमाम आली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन से है जो अपने नाना जान हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के लख़्ते जिगर हैं इसलिये हम ताज़िये को ताज़ीम की नज़र से देखते हैं और यही इमाम हुसैन (रज़ि0) से सच्ची मुहब्बत की अ़लामत है।

अहले इल्म इस बात को जानते हैं कि किसी चीज़ का जाइज़ या नाजाइज़ होना चार चीज़ों पर मुन्हसिर है। 1–कुरान 2–हदीस 3–इज्माअ़ 4–क़यास और इन चारों चीज़ों से ताज़ियादारी का नाजाइज़ होना साबित नहीं लेकिन उ़ल्माएकिराम में इख़्तिलाफ़ है कुछ उ़ल्मा ताज़ियादारी को जाइज़ क़रार देते और कुछ उ़ल्मा इसे नाजाइज़ क़रार देते हैं और जो उ़ल्मा इसे नाजाइज़ कहते हैं वो इस वजह से कहते हैं कि ताज़िया दारी में कुछ काम ग़ैर शरई हैं जैसे बैन्ड बाजा बेहूदा खेल तमाशे, छतों पर बैठ कर खाने की चीज़ें व दीगर चीज़ों को लोगों के बीच ज़मीन पर फेंकना ये सब काम वाक़ई नाजाइज़ हैं लेकिन इस वजह से ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहना बिल्कुल ग़लत है और ये उनकी ज़्यादती व जुल्म है जो हमें इमाम हुसैन (रज़ि0) की यादगार मनाने से रोकते हैं जो एक अच्छा और नेक फ़ेअ़ल है और बाइसे अज्र है और रहा सवाल इस फ़ेअल़ से जुड़ी हुई बुराइयों का तो हर अच्छाई के साथ बुराई भी जुड़ी होती है तो उन्हें चाहिये कि सिर्फ़ बुराई को रोकने की लोगों को ताकीद करें न कि अच्छाई को जिस तरह हर इन्सान के साथ अल्लाह तआ़ला ने एक शैतान मुक़र्रर कर रखा है जो हमें बुराई का हुक्म देता है और हमारे नफ़्स से बुरे काम कराता है।

तो क्या हम इन्सान से सरज़द होने वाले गुनाहों और बुराइयों को रोकेंगे या उससे वाक़ैअ़ होने वाले नेक काम और अच्छाइयों को रोकेंगे क्योंकि इन्सान के साथ भी अच्छाई और बुराई दोनो जुड़ी होती है पस हमें चाहिये कि हम सिर्फ़ बुराई को रोकें न कि अच्छाई को।

मिसाल के तौर पर शादी ब्याह में बहुत सी बातें ख़िलाफ़े शरअ़ हैं जैसे मर्द औ़रत का एक साथ जमा होना, बेपर्दा औ़रतों का मर्दों से गुफ्तगू करना, मर्दों का ना मेहरम को देखना जो सख़्त हराम है

इसके अलावा दूल्हा भाती की बुरी रस्में, बैन्ड बाजा, आतिश बाज़ी, खड़े होकर खाना पीना, जूता चुराई की रस्में वग़ैराह ये सब बुराई और ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर हैं तो क्या इस वजह से किसी को शादी ब्याह के लिये मना किया जायेगा या शादी को नाजाइज़ क़रार दिया जायेगा। नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि शादी ब्याह में शामिल होने वाली बुराइयों और ख़िलाफ़े शरअ़ काम को रोका जायेगा।

इसी तरह रोज़ा नमाज़ फ़र्ज़ है मगर बाज़ लोग रोज़ा नमाज़ में दिखावा (रियाकारी) करते हैं और रियाकारी हराम है तो क्या इस वजह से रोज़ा नमाज़ से रोका जायेगा या रियाकारी से रोका जायेगा इसी तरह नौकरी करना शरअ़न जाइज़ है मगर इसके साथ रिश्वत भी ली जाती है जो फ़ेअ़ले हराम है तो क्या इस वजह से नौकरी करने को मना किया जायेगा या रिश्वत लेने से मना किया जायेगा इसी तरह तिजारत में भी झूठ, फ़रेब, धोका, बेईमानी वग़ैराह दीगर कई बुराइयाँ जुड़ी हुई होती हैं और बाज़ लोग तो अपनी तिजारत में हराम हलाल का भी तमीज़ नहीं रखते तो क्या इन बुराईयों और गुनाहों की वजह से तिजारत को नाजाइज़ या हराम कहा जायेगा या तिजारत से जुड़ी बुराईयों को रोका जायेगा।

बिल्कुल इसी तरह ताज़ियादारी में जो काम ग़ैर शरई हैं हमें उन कामों को रोकना चाहिये न कि ताज़ियादारी को रोकना चाहिये जिस तरह मस्जिद ख़ाना–ए–काबा की नक़ल है जो एक इमारत है उसी तरह ताज़िया हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) रोज़े की नक़ल है इस दलील से भी ताज़िया बनाना जाइज़ है और इमाम हुसैन और शहीदाने करबला की यादगार मनाने के लिये ताज़ियादारी करना व ज़िक्रे शहादतैन जाइज़ व सवाबे दारैन है

कोई अ़मल ऐसा किया जाये जिसकी वजह से असल वाक़िया करबला नज़रों के सामने आ जाये तो वही अ़मल ज़्यादा कारगर होता जैसे ताज़िये को देखकर वाक़िया करबला हमारी नज़रों के सामने आ जाता है और इस दलील से भी ताज़ियादारी करना बेहतर अ़मल है हदीस पाक में है जो जिससे मुहब्बत करेगा उसका हश्र उसके महबूब के साथ होगा यानी अल्लाह तआ़ला के यहाँ दोनो एक मुक़ाम पर होंगे और अगर हम अहले बैत से मुहब्बत

करेंगे और उनकी मुहब्बत में यादगारी मनाने के लिये ताज़ियादारी करेंगे तो क़यामत के दिन हमें उनका साथ मिलेगा जो हमारे लिये बड़े फख़्र की बात होगी और उनका साथ हमारे लिये निजात है और उनका साथ हमें जन्नत में ले जायेगा।

बाज़ लोग कहते हैं कि किसी की मौत पर तीन दिन से ज़्यादा सोग मनाना शरअ़न जाइज़ नहीं व बीवी के लिये शौहर की मौत पर चार महीना दस दिन तक सोग मनाना जाइज़ है इससे ज़्यादा सोग मनाना हराम व नाजाइज़ है ये बात बिल्कुल हक़ है लेकिन हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) तो शहीद हुये हैं और शहीद ज़िन्दा होता है और हमेशा ज़िन्दा ही रहेगा मुसलमान उनके मरने का सोग नहीं मनाता बल्कि वो तो इस बात का ग़म मनाता है कि इमाम हुसैन (रज़ि0) और आपके घर वालों और दीगर शुहदाए करबला ने जो मुसीबतें और तकलीफ़ें उठाईं और आपके जिस्म मुबारक पर बहात्तर (72) से ज़्यादा तलवारों के ज़ख़्म थे और आपके सामने आपके बेटे और भतीजे और भाई शहीद हो गये और आपके भाई हज़रत अब्बास का सीना छलनी कर दिया गया और आपके बाजू काट दिये गये और आपका खानदान करबला में लुट गया और आपके घर वालों को कितनी अज़ियतें दी गई और आपकी अज़वाजे मुतह्रात और आपकी बेटी सकीना की कितनी बेहुरमती की गई और आप और आपके घर वाले दीन इस्लाम के लिये कुरबान हो गये और तमाम शुहदाए करबला भूके प्यासे शहीद हो गये और उन्हें पानी की एक बूँद भी न मिली तो हम इन तमाम बातों का ग़म मनाते हैं और जब ज़िक्रे इमाम हुसैन या ज़िक्रे करबला होता है तो हज़रत इमाम हुसैन से मुहब्बत करने वाले मुसलमानों की आँखों से आँसू खुद व खुद जारी हो जाते हैं।

और बाज़ लोग तो हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) का ग़म मनाने और उनके ग़म में आँसू बहाने को भी नाजाइज़ व बिदअत क़रार देते हैं जबकि हकीक़त ये है कि जब ज़िक्रे इमाम हुसैन या ज़िक्रे करबला हो और दिल ग़मगीन न हो तो वो दिल इमाम हुसैन (रज़ि0) की मुहब्बत से खाली है क्योंकि मुहब्बत का तकाज़ा ये होता है कि महबूब के पाँव में काँटा भी चुभे और तकलीफ़ हमें हो और इमाम हुसैन (रज़ि0) ने करबला में कितनी बड़ी–बड़ी बेशुमार तकलीफ़ें उठाईं तो हमें उनका कितना ज़्यादा ग़म होना चाहिये और मुहब्बत के कई दरजात होते हैं और उनमें सबसे ऊँचा दर्जा

ये है कि कोई शख़्स मुहब्बत की तमाम हदों को पार करते हुये खुद को अपने महबूब की मुहब्बत में ग़र्क़ कर दे और यही सच्ची और हक़ीक़ी मुहब्बत होती है।

हज़रत इमाम मालिक (रज़ि0) को हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से बेहद मुहब्बत थी जब आप मदीने की गलियों से गुज़रते तो वहाँ की दीवारों को चूमते हुये जाते थे जिसके बाइस अपका चेहरा गर्द आलूद हो जाता था तो लोगों ने आपसे कहा कि हज़रत आप ऐसा क्यों करते हैं जिससे आपका चेहरा गर्द आलूद हो जाता है इमाम मालिक (रह0) ने फ़रमाया कि मैं अपने महबूब की मुहब्बत के सबब ऐसा करता हूँ क्योंकि जब मेरे आक़ा रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम जब इन गलियों से गुज़रते होंगे तो आपका हाथ मुबारक इन दीवारों से लगा होगा इसलिये मैं इन दीवारों को चूम लेता हूँ क्योंकि इन दीवारों की निसबत मेरे आक़ा अ़लैहस्सलाम से है तो लोगों ने कहा कि हज़रत ऐसा मुमकिन नहीं है क्योंकि जब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम मदीने की गलियों से गुज़रते हों और अपने दस्ते मुबारक दीवारों को लगाते हुये चलते हों फिर इमाम मालिक (रह0) ने फरमाया ठीक है कि ऐसा नहीं हो सकता लेकिन ऐसा तो हो सकता है आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के जिस्म अक़दस के कपड़े का कोई हिस्सा इन दीवारों से लग गया हो फिर लोगों ने कहा कि ऐसा भी नहीं हो सकता क्योंकि आप दीवारों से कुछ दूरी बनाकर चला करते थे तो फिर इमाम मालिक (रह0) ने फ़रमाया ठीक है हमने माना कि ये नहीं हो सकता लेकिन ऐसा तो ज़रुर हुआ होगा कि मेरे आक़ा जब इन मदीने की गलियों से गुज़रते होंगे तो इन दीवारों पर आपकी निगाहे रहमत ज़रुर पड़ी होगी फिर लोगों ने कहा कि हज़रत ऐसा भी मुमकिन नहीं क्योंकि जब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम चलते थे तो आप अपनी नज़रें हमेशा नीची रखते थे फिर इमाम मालिक (रह0) ने फ़रमाया चलो हमने माना ये भी ठीक है लेकिन ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे आक़ा हजूर सल्लल्लहु अ़लैह वसल्लम का जिस गली से गुज़र हो और उस गली की दीवारों ने आपके रुख़े अनवर का दीदार न किया हो और जिन दीवारों ने मेरे महबूब का दीदार किया हो वो ताज़ीमो तकरीम और चूमने के क़ाबिल हैं इसलिये इनको चूमना मेरे लिये बेहतर और ख़ैरो बरकत का सबब है।

और ये हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से सच्ची मुहब्बत की अ़लामत है जब हम अपने आक़ा का नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम सुनते हैं तो हम अपने अगूँठों को चूमकर आँखों से लगाते हैं क्योंकि ये हुजूर से मुहब्बत की अ़लामत है इसी तरह जब आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के बेटे और लख़्ते जिगर हज़रत इमाम हुसैन या करबला का ज़िक्र हो और दिल ग़मगीन और आँखें नम न हों तो ये अक़ीदत मन्दों और उनसे मुहब्बत रखने वालों के लिये कैसे मुमकिन हो सकता है बल्कि हक़ीक़त ये है कि जब हज़रत इमाम हुसैन या करबला का ज़िक्र होता है या जब ताज़िया नज़रों के सामने होता है तो उनसे मुहब्बत रखने वाले लोगों के आँसू जारी हो जाते हैं क्योंकि जिस वक़्त ताज़िया उनकी नज़रों के सामने होता है उस वक़्त उनका ज़ाहिरी जिस्म ताज़िये के नज़दीक होता है लेकिन वो खुद हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) और करबला की यादों के तसव्वुर में खो जाते है और उनकी आँखें आबदीदाह हो जाती हैं

लेकिन बाज़ लोग इमाम हुसैन (रज़ि0) के ग़म और उनकी याद में रोने पर एतराज़ करते हैं और कहते हैं कि किसी के ग़म या किसी की याद में रोना नाजाइज़ व बेसब्री की अ़लामत है जबकि अल्लाह तआ़ला ने कुरान मजीद में यूसुफ अ़लैहस्सलाम के ग़म और उनकी याद में हज़रत याकूब अ़लैहस्सलाम के रोने को फसबरुन जमील फ़रमाया (यानी बेहतर सब्र) और हज़रत याकूब अ़लैहस्सलाम कई सालों तक अपने बेटे हज़रत यूसुफ अ़लैहस्सलाम की जुदाई के ग़म और उनकी याद में इतना रोये कि रो–रो कर आपकी आँखें सफेद हो गई और अगर रोना नाजाइज़ या बेसब्री की अ़लामत होती तो अल्लाह तआ़ला कुरान मजीद में हज़रत याकूब अ़लैहस्सलाम के रोने को बेहतर सब्र क़रार न देता।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है–
और वो (यूसुफ अ़लैहस्सलाम को कुँऐ में फेंककर) अपने बाप के पास रात के वक़्त रोते हुये पहुँचे (और) कहने लगे ऐ हमारे बाप कि हम लोग दौड़ में मुक़ाबला करने चले गये थे और हमने यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ दिया था तो उसे भेड़िये ने खा लिया और वो कमीज़ पर झूठा खून लगाकर ले आये (याकूब) ने

कहा (हक़ीक़त ये नहीं है) बल्कि तुम्हारे (हासिद) नफ़्सों ने एक (बहुत बड़ा) काम तुम्हारे लिये आसान और खुश गवार बना दिया (जो तुमने कर डाला) पस (इस हादसे पर) सब्र ही बेहतर है और अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ उस पर जो कुछ तुम बयान कर रहे हो। (सू0—यूसुफ—16,—18)

और याकूब ने उनसे मुँह फेर लिया और कहा हाय अफ़सोस यूसुफ (की जुदाई) पर और उनकी आँखें ग़म से (रो—रो कर) सफेद हो गई सो वो ग़म को ज़ब्त किये हुये थे (यानी वो सब्र करते रहे)। (सू0—यूसुफ—84)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला ने रोना हक़ और ईमान की अ़लामत क़रार दिया है कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—

और (यही वजह है कि उनमें बाज़ सच्चे ईसाई) जब सुनते हैं वो जो रसूल की तरफ़ उतरा तो उनकी आँखें देखो आँसुओं से उबल रहीं हैं इसलिये कि वो हक़ को पहचान गये हैं (और वो) कहते हैं ऐ हमारे रब हम ईमान लाये तू हमें हक़ के गवाहों में लिख ले। (सू0—मायदा—83)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इमाम हुसैन (रज़ि0) की शहादत का जब जब ज़िक्र किया तब—तब आप ग़मगीन हुये और आपकी चश्मे मुबारक से आँसू जारी हुये जिस वक़्त जिबरईल (अ़लैहस्सलाम) ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) की शहादत की ख़बर दी तो आप ये ख़बर सुनकर आबदीदाह हो गये तो इन तमाम दलीलों से साबित हुआ कि हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) के ग़म और उनकी याद में आँसू बहाना जाइज़ व सुन्नते रसूल और बेहतर अज्र का बाइस है।

बाज़ लोग ये कहते है कि ताज़ियादारी यज़ीदी काम है कि जिस तरह यज़ीद के लोगों ने हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) को शहीद करके उनके सरे मुबारक को नेज़े पर रखकर घुमाया था तो मैं उन बदअक़ीदा और बदनीयत रखने वाले लोगों ये कहना चाहता हूँ कि जाहिल से जाहिल मुसलमान का भी अक़ीदा और नीयत ये नहीं होती कि वो सरे मुबारक को अपने काँधों पर रखे हुये है।

बल्कि उनका अक़ीदा और नीयत ये होती है कि जिस तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपने प्यारे बेटों और नवासों यानी हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम को अपने काँधे मुबारक पर सवार किया था उसी तरह हम हुसैनी रोज़ये इमाम हुसैन यानी ताज़िये को अपने काँधों पर रख कर नीयते ज़ियारत घुमाते हैं।

हदीस पाक में है कि हर इन्सान के आमाल का दारोमदार उसकी नीयतों पर है और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे का सिर्फ़ बातिन यानी उसकी नीयतों को देखता है कि मेरे बन्दे की नीयत और इरादा क्या है और अल्लाह तआ़ला हर इन्सान को उसके नेक आमालों का बदला उसके ज़ाहिर को देखकर नहीं देता बल्कि उसकी नेक नीयतों को देखकर अ़ता करता है जैसे अगर कोई शख़्स अपनी इ़बादत या नेक अ़मल लोगों को दिखाने के लिये करता है तो उसे अपनी इ़बादत व नेक अ़मल का कोई भी अज्र (बदला या सवाब) नहीं मिलेगा क्योंकि हर नेक अ़मल के लिये नेक नीयत का होना ज़रुरी है।

जिस तरह हम अपनी आँखों से माँ बहन बेटी बीवी वग़ैराह को देखते हैं लेकिन उन तमाम लोगों को देखने की नज़र व नीयत और अक़ीदा अलग–अलग होता है अगर कोई शख़्स ये कहे कि कोई शख़्स अपनी आँखों से तमाम लोगों को अलग–अलग नज़र से कैसे देख सकता है क्योंकि आँखें तो दो ही होती हैं तो ये उसकी बदअक़ीदगी और कम इल्मी की दलील है क्योंकि आँखें दो हैं निगाह एक है लेकिन उस निगाह में नीयतें हज़ारों हैं और जो लोग ताज़िये के बारे में इस तरह का ख़्याल करते हैं कि इमाम हुसैन का सरे मुबारक को लोग लिये हुये घूमते हैं तो ये उनकी बद नीयती और बद गुमानी है और बद गुमानी सख़्त गुनाह है और उन्हें चाहिये कि इस तरह के बुरे ख़्यालात व बद नीयतों और बद गुमानियों से बचें और इस तरह के गुनाहों से इजतिनाब करें ताकि अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी और गुनाहों से बचने में कामयाब हों।

इसी तरह का एक सवाल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ(रह0) से किया गया कि ताज़िया परस्त का ज़िब्हा हलाल है या हराम तो

आप ने जवाब में फ़रमाया— कि कोई जाहिल से जाहिल मुसलमान भी ताज़िये को माअ़बूद नहीं जानता और ताज़िया परस्त का लफ़्ज़ बहाबियों की ज़्यादती है जिस तरह ताज़ीम व तकरीम मज़ारात तइयबा पर मुसलमानों को क़ब्र परस्त का लक़ब देते हैं ये सब उनकी जहालत व बे इल्मी व ज़ुल्म है। (फ़तावा रज़विया—24/500)

मुहर्रमुल हराम ग़म व खुशी दोनों का महीना है ग़म इस बात का है कि हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) और आपके खानदान और आपके साथियों पर तकलीफ़ों और मुसीबतों के पहाड़ टूटे और उस पर भूक और प्यास की शिद्दत हत्ता कि मासूम बच्चों को भी पानी मयस्सर न हुआ हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) की गोद मुबारक में आपके लख़्ते जिगर अ़ली असगर को शहीद किया गया एक ऐसा तीर अ़ली असगर की गर्दन में लगा कि खून के फववारे निकल पड़े और मैदाने करबला की ज़मीन शहीदों के खून से लाल हो गई और हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) ने अपने जिस्मे अक़दस में बे शुमार ज़ख्मों के अलावा बे शुमार तकलीफें और मुसीबतें उठाई और आख़िर में आप भी हालते सजदे में शहीद कर दिये गये।

और खुशी इस बात की है कि हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) तमाम तकलीफ़ों को बर्दास्त करते हुये सब्र और अल्लाह तआ़ला की रज़ा पर राज़ी रहे और ऐसे नाजुक और सख़्त परेशानियों भरे हालातों पर साबित क़दमी रहते हुये शहादत का जाम नोश फ़रमाया इसलिये तमाम मुसलमानों के लिये ये बड़े फख़्र और खुशी की बात है और अल्लाह तआ़ला कुरान मजीद में इरशाद फरमाता है—कि जो लोग मेरी राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वो ज़िन्दा हैं और ज़िन्दा का ग़म नहीं बल्कि खुशी मनाई जाती है इस तरह माहे मुहर्रम ग़म और खुशी दोनों का महीना है।

बाज़ लोग कहते हैं कि शरअ़ में ताज़ियादारी की कुछ असल नहीं और ये फ़ेअ़ल बिदअ़त व नाजाइज़ है तो मैं उनसे ये पूँछना चाहता हूँ कि कुरान व हदीस में इसकी मुमानियत कहाँ पर आई है हालाँकि गुज़िश्ता सफ़ा पर कुरान व अहादीस की रोशनी में ये बात साबित हो चुकी है कि ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है कुरान मजीद की सूरह हज की आयात से भी वाज़ेह हो चुका है।

कि हर वो चीज़ अल्लाह तआ़ला की निशानी है जिसे देखकर अल्लाह व रसूल और अल्लाह वाले याद आ जायें ताज़िये को देखकर इमाम हुसैन (रज़ि0) की याद आना इस बात पर दलालत करता है कि ताज़िया भी अल्लाह तआ़ला की निशानी है और जो लोग अल्लाह तआ़ला की निशानियों और यादगारों का एहतमाम करते हैं ये फ़ेअ़ल उनके दिलों का तक़वा है यानी ताज़िया बनाना और लोगों को उसकी ज़ियारत कराना एक अच्छा और बेहतरीन अ़मल है।

और अहादीस मुबारका से भी ये बात साबित हो चुकी है कि जिस काम के लिये अल्लाह व रसूल ने ख़ामोशी इख़्तियार की है वो काम हमारे लिये माफ़ हैं और ताज़ियादारी के मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह व रसूल की ख़ामोशी इस बात पर दलालत करती है कि ताज़ियादारी नाजाइज़ नहीं बल्कि जाइज़ व सवाबे दारैन है और ताज़ियादारी करना ये हमारी इमाम हुसैन से सच्ची मुहब्बत और अक़ीदत है और जिसे इमाम हुसैन (रज़ि0) से मुहब्बत हो वो ताज़ियादारी करे और उनकी यादगार मनाये और जिसे उनसे मुहब्बत न हो तो वो उनकी यादगार न मनाये।

दुनियाँ में बहुत से काम दीन में नये हुये हैं जो कुरान व हदीस से साबित नहीं लेकिन वो तमाम काम दीन और मुसलमानों के लिये फ़ायदे मन्द साबित हुये हैं और वो तमाम काम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के बाद विसाल अ़मल में आये जैसे कुरान का एक साथ जमा होना, कुरान मजीद के हरुफ़ पर ज़ेर, ज़बर, पेश, वग़ैराह का लगाना, जुमा के दिन वक़्ते जुमा एक और अज़ान का इज़ाफा करना, मस्ज़िदों में औ़रतों का न आना और जमाअ़त में औ़रतों की शिर्कत से मुमानियत, रमज़ानुल मुबारक में तरावीह की नमाज़ बा जमाअ़त अदा करना वग़ैराह और जिस नये काम को करने से दीन या मुसलमानों को फ़ायदा पहुँचे वो काम अल्लाह व रसूल के नज़दीक बेहतर और पसंदीदा होता है और इसे बिदअ़ते हसना कहते है यानी अच्छी बिदअत और दीन में नया वो काम जिससे दीन या मुसलमानों को नुकसान पहुँचे उसे बिदअ़ते सइया कहते हैं यानी बुरी बिदअ़त इसलिये सबसे पहले हमें बिदअ़त का माना और मफ़हूम को अच्छी तरह समझ लेना

चाहिये ताकि किसी अच्छे या बुरे काम में फ़र्क़ करने में हमसे ग़लती न हो और किसी काम को बुरा कहने से पहले अच्छी तरह समझ लें कि ये काम अच्छा है या बुरा सही है या ग़लत और ये बिदअ़ते हसना है या बिदअ़ते सइया तब उसके बाद किसी काम के मुताअ़ल्लिक़ अच्छा या बुरा ख़्याल करें यही सही और अच्छा तरीक़ा है और यही दीन व मुसलमानों के हक़ में बेहतर है।

बाज़ लोग ईद मीलादुन्नबी का जश्न मनाने पर भी एतराज़ करते हैं और इसे बिदअ़त क़रार देते हैं हालाँकि ये बहुत बेहतरीन अ़मल है और बेशुमार अज्र का बाइस है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत और अक़ीदत के सबब किया जाता है और इस अ़मल से बेशुमार दीनी व दुन्यावी व उख़रवी फ़वाइद हैं और ईद मीलादुन्नबी का जश्न हम मुसलमानों के दिलों में हुज़ूर की मुहब्बत की नई रोशनी और हमारे ईमान में निखार लाता है और जो शख़्स इस जश्न को मनाने पर एतराज़ करे या बिदअ़त कहे वो खुद को हुज़ूर का उम्मती होने का गुमान भी न करे क्योंकि जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और उनके अहले बैत से मुहब्बत नही गोया वो मुसलमान ही नहीं कायनात में हम तमाम मसलमानों के लिये ईद मीलादुन्नबी से बढ़कर कोई दूसरी खुशी नहीं।

सरकारे दो आ़लम की आमद पर दो आ़लम में खुशियाँ मनाई गई और हम भी इस मुबारक दिन पर खुशियों का इज़हार करते हैं और उनका उम्मती होने का सबूत पेश करते हैं आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तशरीफ़ आवरी की वो सुहानी बा बरकत घड़ी को याद करना और खुशियाँ मनाना ये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से सच्ची मुहब्बत की अ़लामत है और इससे दीन या मुसलमानों को किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होता फिर भी इस बेहतर अ़मल को बिदअ़त क़रार देना ये उनकी बदअक़ीदगी और कम अक्ली की दलील है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से उनकी मुहब्बत महज़ दिखावा है।

तो जिस तरह हम सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की आमद की यादगार मनाते है उसी तरह हम उनके

लख़्ते जिगर उनके बेटे और नवासे हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) की यादगार मनाते हैं तो हम इसमें क्या ग़लत करते हैं जो बाज़ लोगों को बहुत ज़्यादा तकलीफ़ होती है नाना की यादगार मनाना और नवासे की यादगार न मनाना क्या ये सही व दुरस्त है यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की यादगार मनाने को जाइज़ कहना और उनके नवासे हज़रत इमाम हुसैन की यादगार मनाने को नाजाइज़ कहना क्या ये ना इंसाफी नहीं बल्कि ऐसा कहना इमाम हुसैन से मुहब्बत करने और अक़ीदत रखने वालों पर ज़ुल्म व ज़्यादती है हज़रत इमाम हुसैन की यादगार हम जुलूसे ताज़िया की शक्ल में मनाते हैं जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की आमद की यादगार हम जुलूस की शक्ल में मनाते हैं तो इसमें हम क्या बुरा करते हैं जो लोग हमें इससे रोकते और बिदअ़त व नाजाइज़ का फ़तवा देते हैं।

हालाँकि हक़ीक़त ये है कि जब हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत की मुहब्बत में यादगारे हुसैन मनाते हैं जुलूसे ताज़िया निकालते हैं तो हमारा ये फ़ेअ़ल अल्लाह व रसूल के नज़दीक बेहतरीन व पसंदीदा अ़मल है और इस अ़मल से हमारे आक़ा सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम बहुत ज़्यादा खुश होते हैं और हुज़ूर को खुश करना गोया अल्लाह तआ़ला को खुश व राज़ी करना है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को खुशी पहुँचाने से हमें उनकी कुर्बत नसीब होती है जो हमें कुर्बे इलाही की मन्ज़िल तक पहुँचाती है और इमाम हुसैन (रज़ि0) की यादगार मनाने से हमारे दिलों में मौजूद उनकी मुहब्बत और ईमान में नया निखार आता है और हमारे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के दरमियान तआ़ल्लुक़ातों में मज़बूती आती है और ये मज़बूती हमें हुज़ूर और उनके अहले बैत के क़रीब कर देती है और हमारे दिल हुज़ूर और अहले बैत की मुहब्बत से मुनव्वर होते हैं और ये मुहब्बत रोज़े क़यामत हमारे लिये शफ़ाअ़त का बेहतरीन ज़रिया होगी।

जुलूसे हुसैनी यानी ताज़ियादारी करने से दीन या क़ौम को किसी क़िस्म का कोई नुकसान नहीं होता और ना ही किसी मुसलमान को किसी तरह की कोई तकलीफ़ व परेशानी होती है।

हाँ अगर इसमें कुछ काम ख़िलाफे शरअ़ हैं तो हमें चाहिये उन कामों से परहेज़ करें और ताज़ियादारी में शामिल बुराइयों को दूर करने की कोशिश करें लेकिन इस वजह से ताज़िया को नाजाइज़ या बिदअ़त कहना गोया इमाम हुसैन (रज़ि0) और शुहदाये करबला से निफ़ाक़ रखने की दलील है।

जिन बुराईयों की वजह से बाज़ लोग जुलूसे हुसैनी या रोज़ये इमाम हुसैन (ताज़िये) को नाजाइज़ या हराम कहते हैं और फ़तवा देते हैं तो मैं उनसे एक सवाल करता हूँ ठीक इसी तरह की बुराईयाँ दीगर कामों में भी पायी जाती हैं तो वो लोग उन कामों को नाजाइज़ व हराम क्यों नहीं कहते और उन कामों पर नाजाइज़ व हराम का फ़तवा जारी क्यों नहीं करते क्या ये हक़ और इंसाफ की बात है।

मिसाल के तौर पर बाज़ार में दुकानदार से ज़रूरत के सामान खरीदने के लिये बहुत सी ना मेहरम औ़रतें भी आती हैं और दुकानदार अपनी सौदा बेचने के लिये उन औ़रतों से बातचीत भी करता है और उनमें अक्सर औ़रतें बे पर्दा होती हैं और सौदा को परखने समझने फिर सौदा को अपनी पसन्द के मुताबिक़ इन्तेख़ाब करने और सौदा की क़ीमत तय करने यानी इस दरमियान दुकानदार और औ़रत कुछ वक़्त बाहम गुफ्तगू करते हैं और दोनो लोगों की निगाहें एक दूसरे पर कई बार पड़ती हैं और कभी–कभी दिल में बद ख़्याली भी पैदा होती है और कभी–कभी बद निगाह और बद ख़्याली उसे ज़िना जैसी बड़ी बुराई और गुनाह की तरफ़ ले जाती है और बाज़ लोग तो ज़िना की तरफ़ माइल हो जाते हैं और इस गुनाह के मुरतकिब हो जाते हैं और बाज़ लोग तो झूठ, फ़रेब, धोका, बेईमानी पर मुश्तमिल अपनी सौदा को बेचते हैं और हराम माल कमाते हैं और ये तमाम बातें बुराई और गुनाह हैं तो क्या इन बुराईयों की वजह से तिजारत करना नाजाइज़ व हराम होगा हरगिज़ न होगा।

इसी तरह जब हम बाज़ार जाते तो रास्तों और बाज़ारों में बहुत सी औ़रतें बे पर्दा घूमती हैं या जब हम सफ़र पर जाते हैं तो रास्तो में बसों में, रेलवे प्लेटफार्म पर, ट्रेनों में हवाई जहाज़ पर

अक्सर औ़रतें बे पर्दा होती हैं और अक्सर लोगों की बद निगाह उन औ़रतों पर पड़ती है और दिल में बुरे ख़्यालात पैदा होते हैं और इसके अलावा दीगर बहुत सी बुराईयाँ बाज़ारों और सफ़र के रास्तों के दरमियान हाइल होती हैं तो क्या इन बुराईयों की वजह से बाज़ार जाना या सफर करना हराम व नाजाइज़ होगा हरगिज़ न होगा।

बुराई तो शैतान की तरह हर जगह मौजूद है तो क्या हर जगह जाना बुरा और गुनाह है बल्कि हमें चाहिये कि जिन अच्छे और सवाब के कामों के साथ बुराई भी जुड़ी हुई हो तो हम सिर्फ़ बुराई से बचें और अच्छे कामों के साथ बुराई जुड़ी होने की वजह से अच्छे कामों को तर्क न करें यही अक़्लमन्दी की अ़लामत है और दुनियाँ व आख़िरत में हमारे लिये बेहतर और ख़ैरो बरकत और अज्र का बाइस है।

हदीस पाक में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने बाज़ार को ज़मीन पर सबसे बुरी जगह बताया लेकिन कभी बाज़ार जाने या बाज़ार में तिजारत करने को मना नहीं फ़रमाया बल्कि बाज़ार और तिजारत में वाक़ैअ़ होने वाली बुराइयों और गुनाहों से बचने की हमें ताकीद फ़रमाई और यही तरीक़ा हमारा भी होना चाहिये कि हम खुद को बुराइयों और गुनाहों से पाक रखने की हर मुमकिन कोशिश करें और उन अच्छे कामों को करना न छोड़े जिनसे कुछ बुराइयाँ भी वाबस्ता हैं।

इसी तरह शादी ब्याह व दीगर तक़ारीब भी कई तरह की बुराइयों और गुनाहों पर मुश्तमिल होती हैं लेकिन ताज़िया और जुलूसे हुसैनी की मुख़ालिफ़त करने वाले लोगों का वहाँ कोई बुराई नज़र नहीं आती है बल्कि वो लोग उम्दाह लिबास ज़ैबे तन करके उन तक़रीबों में शिर्कत करते हैं और खाते पीते बैठते उठते और लोगों से गुफ्तगू करते, निकाह पढाते, नज़राने बटोरते और उन लोगों को मुबारक बाद देते और वो कभी भी ऐसी जगहों से ऐराज़ नहीं करते चाहे वहाँ खड़े होकर खाना पीना हो, औ़रतों की बेपर्दगी हो मर्दो व औ़रतों का बाहम हंसी मज़ाक, आतिशबाजी, बैन्ड, बाजा व दीगर ग़ैर मुस्लिमों की बुरी रस्में हों लेकिन वो लोग इन तमाम

बुराइयों व गुनाहों से बे परवाह रहते हैं हम रोज़ बाज़ार जाते हैं और साल भर में सैंकड़ों शादी ब्याह व दीगर तक़ारीब में शिर्कत करते हैं लेकिन बाज़ार व शादी ब्याह वगैराह में उन्हें कोई भी काम ख़िलाफ़े शरअ़ दिखाई नहीं देता और न कोई बुराई नज़र आती है और जुलूसे हुसैनी (ताज़िया) साल में एक बार निकलता है तो उन्हें उसमें बहुत सी बुराइयाँ दिखाई देती हैं हालाँकि हम पर वाजिब है कि हम जहाँ कहीं भी किसी बुराई या ख़िलाफे शरअ़ काम को देखें तो उसे अपनी ताक़त के मुताबिक़ रोकने की हर मुमकिन कोशिश करें चाहे बाज़ार हो या शादी ब्याह हो या जुलूसे हुसैनी हो या दीगर कोई भी मजालिस हो या तक़रीब लेकिन बुराई के साथ अच्छाई को भी ख़त्म करना ये हिमाक़त और कम इल्मी की दलील है और हमें इससे इजतिनाब (परहेज़) करना चाहिये।

हालाँकि शरीअ़त हमें इस बात की क़तअ़न इजाज़त नहीं देती कि किसी अच्छे या नेक काम के साथ बुराई जुड़ी हो तो उस अच्छे काम को नाजाइज़ या हराम क़रार दिया जाये बल्कि जो काम शरअ़न जाइज़ है या जिस काम को अल्लाह व रसूल ने जाइज़ व हलाल क़रार दिया या जिस काम की अल्लाह व रसूल न हमें मुमानिअ़त नहीं फ़रमाई तो उस काम को नाजाइज़ या हराम गुमान करना भी सख़्त गुनाह है और हर अच्छे काम का सवाब मिलता है और हर बुरा काम गुनाह है इसलिये हमें चाहिये कि बुरे कामों से परहेज़ करें और अच्छे कामों की तरफ़ राग़िब हों और ताज़िया जो असल में हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि0) के रोज़ये पाक की नक़ल है उसकी ताज़ीम व तकरीम करना और इमाम हुसैन की यादगार मनाना और जुलूसे हुसैनी में ताज़िये की ज़ियारत करना और लोगों को ज़ियारत कराना यह एक अच्छा अ़मल है जो बेहतर अज्र का बाइस है इसलिये हमें चाहिये कि इस अमल को बड़े जोश व मुहब्बत और खुलूस और एहतमाम के साथ करें इंशा अल्लाह हम और आप इस अच्छे अ़मल का बेहतरीन अज्र पायेंगे।

बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो बे नमाज़ी हैं जब जी चाहा नमाज़ पढ़ली और जब जी नहीं चाहा तो नहीं पढ़ी इसके अलावा टी0 वी0 और मोबाइल पर फिल्में देखते टी0 वी0 सीरियल बड़े शौक़ और एहतमाम से देखते हैं और टी0 वी0 और मोबाइल पर गाने सुनते हैं

और दीगर बहुत से बुरे काम करते हैं और बड़े खूबसूरत अंदाज़ से ताज़ियादारी और जुलूसे हुसैनी को नाजाइज़ व हराम कहते हैं लेकिन खुद का मुहासिबा नहीं करते और ना ही अपनी बुराइयों पर ग़ौर करते हैं जबकि नमाज़ फ़र्ज़ है हमें हर हाल में पढ़नी होगी और रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हैं हमें हर हाल में रखने चाहिये और दीगर फ़राइज़ व वाजिबात और वो आमाल जिनका हमें अल्लाह व रसूल ने करने का हुक्म दिया है वो हमें ज़रुर करना चाहिये लेकिन बाज़ लोग इन तमाम आमालों से वे फ़िक्र और वे परवाह होते हैं लेकिन जुलूसे हुसैनी और ताज़िये की मुख़ालिफ़त करते हैं खुद को दीनदार मुत्तक़ी परहेज़गार गुमान करते हैं क्या ये उनकी कम अक्ली व वे इल्मी और इमाम हुसैन (रज़ि0) से निफ़ाक़ रखने की दलील नहीं है।

हालाँकि हकीक़त ये है कि ताज़ियादारी करने से इमाम हुसैन (रज़ि0) और दीगर शुहदाये करबला की यादें ताज़ा होती हैं और ये ख़्याल आता है कि हमारे इमाम हुसैन (रज़ि0) ने दीन इस्लाम के लिये खुद को कुरबान कर दिया और अपने खानदान को दीन पर निछावर कर दिया और ये इब्रत हमारे लिये बाइसे ख़ैर है जो हमें सबक़ देती है कि हम भी उनकी राह पर चलें और खुद को दीन इस्लाम के लिये वक़्फ़ कर दें और उनका रास्ता इख़्तियार करें और उनकी मुहब्बत में खुद को ग़र्क़ कर दें जिसने हमारे दीने इस्लाम की हिफ़ाज़त की तो उनकी यादगार मनाना हमारे लिये बेहतर अ़मल है जिसने हमारे दीन को बचाने के लिये सब कुछ किया तो उनकी याद को ताज़ा करना और अपने दिलों को उनकी याद और उनकी मुहब्बत से मुनव्वर करना और अपने ईमान को नया निखार देना ये दुनियाँ और जो कुछ उसमें है उससे बेहतर व अफ़ज़ल है।

जब कोई शख़्स ताज़िये को देखता है तो उस वक़्त वो ताज़िये के क़रीब होता है लेकिन उसका ख़्याल और तसव्वुर इमाम हुसैन (रज़ि0) और करबला की तरफ मुतवज्जै होता है जो उसके दिल को ग़मगीन और आँख को रोने पर मजबूर कर देता है और उनकी याद में आँख से निकला हर आँसू अहले बैत से मुहब्बत की गवाही देता है और जिस तरह हम इमाम हुसैन (रज़ि0) के नाना जान हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की आमद की यादगार मनाते हैं।

उसी तरह हम हुजूर के नवासे और बेटे हज़रत इमाम हुसैन की यादगार मनाते हैं और ये फ़ेअ़ल मुहब्बत व अक़ीदत से वाबस्ता है और दुनियाँ की कोई चीज़ किसी के दिल से मुहब्बत और अक़ीदत को नहीं निकाल सकती क्योंकि अल्लाह व रसूल और अहले बैत की मुहब्बत ईमान की बुनियाद है और जिस चीज़ की बुनियाद मज़बूत होती है तो वो उस चीज़ की पुख़्तगी और मज़बूती के लिये कारसाज़ होती है इन तमाम दलाइल से ये बात साबित होती है कि हज़रत इमाम हुसैन की यादगार मनाना और ताज़ियादारी करना और जुलूसे हुसैनी में ताज़ियों की ज़ियारत करना और लोगों को ताज़ियों की ज़ियारत कराना सब जाइज़ व सवाबे दारैन है।

अ़शरा मुहर्रम में ताज़ियादारी औलियाएकिराम व सूफ़ियाएकिराम ने जोश व मुहब्बत एहतराम व एहतमाम के साथ की है और जिस काम को औलियाएकिराम व सूफ़ियाएकिराम ने किया हो वो काम नाजाइज़ या ग़लत हो ही नहीं सकता क्योंकि ये लोग अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रबीन नेक सालिहीन महबूब बन्दे होते हैं जो कभी नाजाइज़ व हराम काम की तरफ़ निगाह भी नहीं करते और छोटी से छोटी कम दरजे वाली सुन्नतों को भी तर्क नहीं करते और वो आला मक़ाम पर फ़ाइज़ होते हैं और अल्लाह तआ़ला उन्हें विलायत से सरफ़राज़ फ़रमाता है और उनके दरजात को बुलन्द करता है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
सुनलो बेशक अल्लाह तआ़ला के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म वो जो ईमान लाये और परहेज़गारी करते हैं उन्हें खुशख़बरी है दुनियाँ में और आख़िरत में (और) अल्लाह तआ़ला की बातें बदल नहीं सकती (और) यही बड़ी कामयाबी है।
(यू0—यूनुस—63,—64)

हमारे पीरो मुर्शिद आले रसूल सइयद अ़ल्लामा मौलाना उवैस मुस्तफ़ा साहब बिल्ग्रामी अ़शरा मुहर्रम की सात तारीख़ को एक अ़लम उठाते हैं और गालियों में घुमाते हैं और हज़रत अब्बास (रज़ि0) के पास करबला में जो अ़लम था उस अ़लम का एक मुतबर्रक टुकड़ा सैइयद उवैस मुस्तफा साहब क़िब्ला के पास मौजूद है और उस मुबारक टुकड़े को पहले गुस्ल दिया जाता है फिर उसे अ़लम में नसब करके हज़रत उवैस मुस्तफा साहब क़िब्ला उस

अ़लम को लोगों की ज़ियारत के लिये बिलग्राम शरीफ़ की गलियों में घुमाते हैं और ये इमाम हुसैन (रज़ि0) की यादगार मनाने और ये ताज़ियादारी के जाइज़ होने की ज़िन्दा नज़ीर है

मो0 कासिम नियाज़ी बरेलवी ने अपनी किताब फज़ाइले अहले बैत में हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ का वाक़्या यूँ लिखते हैं कि आफ़ताबे तरीक़त माहताबे शरीअ़त हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ साहब चिश्ती क़ादरी बरेलवी (रह0) जिनके दर पे अहले तरीक़त व अहले शरीअ़त सब अक़ीदत के साथ अपना सर झुकाने में फख़्र महसूस करते हैं आपका वाक़्या करामाते निजामियाँ में लिखा है कि एक बार हज़रत नियाज़ बे नियाज़ के साथ सूरत के रहने वाले एक आ़लिम ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गये हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ (रह0) का हमेशा ये तरीक़ा था कि आप ताज़िये के तख़्त को हाथ लगाकर अपने मुँह व क़ल्ब पर फेरते थे मगर इस बार हज़रत ने ताज़िये के तख़्त को बोसा दे दिया यह देखकर आपके साथ जो आ़लिम साहब थे उनके दिल में ख़्याल आया कि हज़रत साहब ने ये क्या ग़ज़ब कर दिया कि ताज़ियें के तख़्त को मुँह से बोसा दे दिया।

आ़लिम साहब के दिल में जैसे ही ये ख़्याल आया तो हज़रत नियाज़ बे नियाज़ साहब क़िब्ला (रह0) को इसकी ख़बर हो गई क्योंकि आप बहुत बड़े बुज़ुर्ग और अल्लाह तआ़ला के वली थे फिर हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ ने आ़लिम साहब से फ़रमाया कि ताज़िये की तरफ़ देखिये फिर जब आ़लिम साहब ने ताज़िये की तरफ़ देखा तो क्या देखते हैं कि ताज़िये के दोनो तरफ़ इमाम हसन और इमाम हुसैन (रज़ि0) खड़े हैं और आ़लिम साहब ने जब ये देखा तो उन पर रिक़्क़त तारी हो गई और वो ज़मीन पर लोटने लगे इसके बाद हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ साहब क़िब्ला ने और ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गये।

जिन उ़ल्माए किराम ने ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहा है वो इस वजह से कहा है कि उनके वक़्ते हयात में जो ताज़िये बनाये जाते थे वो जानदार तस्वीरों पर मुश्तमिल थे जैसे मोर, घोड़ा, पुतली बुर्राक़,परी वग़ैराह लेकिन बदलते ज़माने और हालात ने धीरे—धीरे

इन जानदार तस्वीरों के ताज़िये में चलन को ख़त्म कर दिया है और आज हालात ये हैं कि ताज़ियों में जानदार की तस्वीर नहीं होती और ग़ैर जानदार की तस्वीर बनाना शरअ़न जाइज़ है जो कि हदीस से साबित है।

आला हज़रत इमाम रहमत रज़ा ख़ाँ (रह0) फ़रमाते हैं–
ताज़िये की असल इस क़दर थी कि रोज़ये इमाम हुसैन की सही नक़ल बनाकर बा नीयत तबर्रुक मकान में रखना इसमें शरअ़न हर्ज न था तस्वीर मकानात वग़ैराह ग़ैर जानदार की बनाना व रखना सब जाइज़ है। (फ़तावा रज़विया–24/513)

आला हज़रत की इस तहरीर से वाज़ेह हुआ कि ताज़िया (रोज़े इमाम हुसैन) बनाना जाइज़ है और सही नक़ल से मुराद ताज़िये में जानदार तस्वीर न हो लेकिन बाज़ लोग कहते हैं कि सही नक़ल से मुराद ये है कि जैसा करबला में हज़रत इमाम हुसैन का रोज़ा है वैसा ही बनाओ लेकिन ये सिर्फ़ इल्मी अ़क्ल की समझ का फ़र्क़ है क्योंकि कई लफ़्ज़ ऐसे होते हैं जिनके कई मायने होते हैं और ज़रुरत के मुताबिक़ हम उन्हें अपने इस्तेमाल में लेते हैं जैसे–वारिद का माना आने वाला और मौजूद है, क़िब्ला का माना काबा और कलमा ताज़ीम है असबाब का माना–सामान और सबब की जमा है और औक़ात का माना हैसियत और वक़्त की जमा है अम्र का माना फ़ेअ़ल, हुक्म और काम है क़ज़ा का माना हुक्मे खुदा व मौत और वो इबादत जो मुक़र्रर वक़्त के बाद अदा की जाये वग़ैराह हैं।

इसी तरह हमारे चारो इमामों में कुछ बातों के मुताअ़ल्लिक़ इख़्तिलाफ़ है हालाँकि चारो हक़ पर हैं फ़र्क़ ये कि जिसकी समझ में जो बात आयी वही उन्होंने लिख दी या बयान कर दी किसी ने कहा कि फ़लाँ बात सुन्नत है तो किसी ने उसको वाजिब कहा और किसी ने फ़र्ज़े किफ़ाया कहा ये सब इल्मी अक़्ल की समझ का फ़र्क़ है और रोज़ये इमाम हुसैन जो कि एक इमारत की नक़ल है और इमारतों की तामीरात अक्सर होती रहती है और उनके नक्शे बदलते रहते हैं एक ज़माने में ख़ाना–ए–काबा व मस्जिदे नबवी की तस्वीर कुछ और थी लेकिन आज कुछ और है और जिस चीज़ को हम दिल से मुकम्मल तौर पर मानें वो चीज़ वही हो जाती है जैसे हमने ईंट, सीमेन्ट बालू वग़ैराह से एक चार दीवारी बनाई और दिल से मान लिया कि ये मस्जिद है तो वो मस्जिद हो जाती है।

इसके लिये ज़रुरी नहीं कि मस्जिदे हराम या मस्जिदे नबवी की सही नक़ल हो तभी मस्जिद होगी ऐसा ख़्याल रखना हिमाक़त और ग़लत व बे बुनियाद है इसी तरह हमने ताज़िया बनाया और दिल से मान लिया कि ये रोज़ये इमाम हुसैन है तो यक़ीनन वो रोज़ये इमाम हुसैन है और यही हमारा अक़ीदा होना चाहिये क्योंकि ईमान की बुनियाद अक़ीदे पर होती है और अच्छा गुमान व सही अक़ीदा हमें निजात की तरफ़ ले जाता है और बद गुमानी और बद अक़ीदा हमें गुमराही की तरफ़ ले जाता है।

कुरान व हदीस हम सुन्नी भी पढ़ते हैं और देवबन्दी वहाबी भी पढ़ते हैं लेकिन फ़र्क़ सिर्फ़ समझ और अक़ीदे का है हमारी अच्छी सोच और अच्छी समझ और सही अक़ीदा हमें अल्लाह व रसूल के रास्ते की तरफ़ ले गया और देवबन्दी वहाबी की बुरी सोच और बद अक़ीदा उन्हें गुमराही और दोज़ख़ की तरफ ले गया और बाज़ मज़मून या तहरीर या मसाइल को पढ़ना आसान है लेकिन उनका समझना बहुत मुश्किल है और यही मुश्किलात इख़्तिलाफ़ की वजह होती है इसलिये हमें चाहिये इस मामले में वहस न करें बल्कि अच्छी सोच और समझ पैदा करें और सही अक़ीदा रखें ताकि हर बात को समझने में हमें आसानी हो।

आला हज़रत (रह0) के ज़माने में जो ताज़िये बनाये जाते थे वो जानदार सूरतों पर मुश्तमिल थे और उनके साथ कुछ ग़ैर शरई उमूर भी ताज़ियादारी में शामिल थे इसलिये आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ ने ताज़ियादारी को नाजाइज़ क़रार दिया और मज़कूरा तहरीर में नीज़ फ़रमाया ताज़ियों में जानदार की तस्वीरें परियाँ, बुर्राक़ वग़ैराह और अ़शरा मुहर्रम में सीना जनी मातम बाजे ताशे मर्द औ़रत का मेल जोल बेहूदा खेल तमाशे छतों पर बैठकर खाने की चीज़ें या और कोई चीज़ का फेंकना या लुटाना ये सब बातें खिलाफ़े शरअ़ हैं। इस वजह से आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ (रह0) ने ताज़ियादारी को नाजाइज़ क़रार दिया।

ताज़िया व जुलूसे हुसैनी नाजाइज़ या हराम नहीं है बल्कि इसके साथ जो ख़िलाफ़े शरअ़ काम हैं वो ग़लत व नाजाइज़ हैं आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ (रह0) के फ़तबों से ये बात साबित

हो चुकी है कि आपने ताज़ियादारी को नाजाइज़ सिर्फ़ इस वजह से कहा कि ताज़ियादारी में कुछ ग़ैर शरई उमूर भी शामिल थे और आप ताज़िये के ख़िलाफ़ नहीं थे बल्कि ताज़िये में जानदार की तस्वीरों की वजह से आपने ताज़िये को नाजाइज़ कहा लेकिन अब ताज़िये से जानदार तस्वीरों को हटा दिया गया है इसलिये ताज़िये को नाजाइज़ कहना बिल्कुल ग़लत व बे बुनियाद है आला हज़रत अहमद रज़ा खाँ ने अपने कई फ़तवों में राइजा या मुरव्वजा लफ़्ज़ का इस्तेमाल किया है और राइजा के माना ये है कि जो चीज़ उस वक़्त राइज (चलन) में हो आपके तहरीर किये हुये फतवे हस्बे ज़ैल हैं जिनमें राइजा लफ़्ज़ का इस्तेमाल हुआ है।

ताज़िया राइजा का बनाना व देखना जाइज़ नहीं।
(फ़तावा रज़विया—24/490)

अ़लम वा ताज़िया व मेंहदी जिस तरह राइज है बिदअ़त है।
(फ़तावा रज़विया—24/500)

ताज़िया राइजा नाजाइज़ व बिदअ़त है (फ़तावा रज़विया—24/501)

बकालत का पेशा जैसा आजकल राइज है शरअ़न हराम है।
(फ़तावा रज़विया—11/257)

आला हज़रत अहमद रज़ा खाँ (रह0) फ़रमाते है—
अ़शरा मुहर्रम में इमाम हुसैन (रज़ि0) व दीगर शुहदाएकिराम के नाम से सद्क़ा ख़ैरात व ईसाले सवाब करो और इन अइयाम (दिनों) में रोज़े रखो और उनका सवाब इमाम हुसैन व दीगर शुहदाएकिराम की नज़र करो और अ़शरा मुहर्रम में गर्मियों के दिनों में शर्बत पिलायें और जाड़ों के दिनों में चाय वग़ैराह पिलायें खाने को चाहे कितना लज़ीज़ व वेश क़ीमती बनायें सब ख़ैर है खिचड़ा, पुलाव वग़ैराह जो चाहें बनायें मुहताजों को खिलायें अपने घर वालों को खिलायें नेक नीयत से सब सवाब है।
(फ़तावा रज़विया—24/494)

इसलिये हम मुसलमानों को चाहिये कि शरई तरीक़े के मुताबिक़ ताज़ियादारी करें और इमाम हुसैन (रज़ि0) से सच्ची मुहब्बत और अक़ीदत का सबूत दें और अ़शरा मुहर्रम में रोज़ये इमाम हुसैन

(ताज़िया) बनायें और मुहब्बत व अक़ीदत के साथ उनकी ज़ियारत करें और जुलूसे हुसैनी की शक्ल में लोगों को रोज़ये इमाम हुसैन (ताज़िये) की ज़ियारत करायें ताकि हमारे लिये ये अ़मल ख़ैरो बरकत व सवाब का बाइस बने।

उ़ल्माये अहले सुन्नत व बुजुर्गाने दीन का ताज़ियादारी के मुताअ़ल्लिक़ क़ॉल व फ़ेअ़ल—

1—हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ बरेलवी (रह0) का मामूल था कि शबे आ़शूरा की रात में ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और जब हज़रत को ज़ॉफ हुआ (यानी कमजोरी की हालत में) दूसरे लोगों के सहारे से तशरीफ़ ले जाते थे और हज़रत ने ताज़िये के तख़्त को बोसा भी दिया। (करामाते निज़ामियाँ—37)

2—हज़रत मुफ़्ती याकूब लाहौरी फ़रमाते हैं कि मुहर्रम अपने तमाम लमाजात के साथ करना जाइज़ है और ये अच्छा अ़मल है जो औलिया अल्लाह से साबित है। (तोहफ़तुन नाज़रीन—52)

3—आले रसूल सइयद अब्दुल रज़्ज़ाक बाँसवी (रह0) जिस वक़्त ताज़िया उठता तो आप खड़े रहते और जब ताज़िया रुख़सत होता तो आप नंगे पाँव ताज़िये के साथ जाते थे और दफ़न करके घर वापस आते थे और ये वो आले रसूल वली ए कामिल थे जिनकी नस्ल में से सैइयद हज़रत वारिस पाक (रह0) तशरीफ़ लाये जिनकी दरगाह देवा शरीफ़ में है। (करामाते रज़्ज़ाक़िया—15)

4—शाह कुतबुद्दीन मुहद्दिस संभली का मामूल था कि आपके सामने ताज़िया आता तो आप बा अदब खड़े हो जाते थे और आप रोते रहते थे। (फ़तावा ताज़ियादारी—3)

5—शाह अब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं कि ताज़िये के सामने रखकर जो फ़ातिहा दी जाती है वो मुतबर्रक है (फ़तावा अ़ज़ीज़ी)

6—सइयद अ़ल्लामा मौलाना महबूब उर रहमान नियाज़ी जयपुरी ने ताज़ियादारी की हिमायत में एक किताब तसनीफ़ फ़रमाई है और आपने ताज़ियादारी को जाइज़ व सवाबे दारैन और अच्छा फ़ेअ़ल बताया। (मुहब्बते अहले बैत कुरान व अहादीस की रोशनी में)

7—हज़रत अ़ल्लामा सलामत अली देहलवी शागिर्दे हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं कि खुदा का शुक्र है कि ताज़ियेदारी इस्लाम में है और इससे दीनी फ़ायदे होते हैं। (तफ्सरातुल ईमान दीने मुहम्मदी और ताज़ियादारी)

8—हजरत सइयद शाह अब्दुल रज़्ज़ाक बाँसवी (रह0) फ़रमाते हैं कि ताज़िये को कोई ये न जाने कि ये खाली कागज़ या पन्नी है बल्कि शहीदाने करबला की मुक़द्दस रूहें इस तरफ़ मुतवज्जै होती हैं। (करामाते रज़्ज़ाकिया—15)

9—हज़रत नईमुद्दीन मुरादाबादी साहब (मुफ़स्सिरे कुरान) ताज़िया बनाने में पाबन्दी से चन्दा दिया करते थे और आपके साहबज़ादे और जांनशीन और जामये नईमियाँ मुरादाबाद के मुतवल्ली सैइयद इज़हारूद्दीन मियाँ साहब क़िब्ला का बयान है कि मेरे वालिद ने पूरी ज़िन्दगी में कभी ताज़िये की मुख़ालिफ़त नहीं की।
(फज़ाइले अहले बैत—35)

10—हजरत अ़ल्लामा मौलाना भोले मियाँ साहब क़िब्ला सज्जादा नशीन आस्ताना आलिया गंज मुरादाबाद जिला उन्नाव फ़रमाते हैं कि ताज़ियादारी करना, सवील लगाना, फ़ातिहा दिलाना जाइज़ व सवाबे दारैन है। (फ़तवा अ़ल्लामा भोले मियाँ साहब क़िब्ला)

11—मौलाना तजम्मुल हुसैन रहमानी फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने इमाम हसन व इमाम हुसैन (रज़ि0) को उम्मत की सिफ़ारिश के लिये पैदा फ़रमाया है इस हक़ की अदायगी और इमाम आली मक़ाम की ज़्यादा से ज़्यादा खुशी हासिल करने के लिये गुलामाने हुसैनी सवाब पाने की नीयत से सालाना यादगार को अपना सारमाये हयात बनाये हुये हैं हर साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम यादगारी उहद के लिये शुहदाए उहद की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते थे और उनके लिये दुआ़ये रहमत करते थे। (कमालाते रहमानी—121)

13—हज़रत सइयद हाजी वारिस पाक (रह0) ताज़िया वाले घरों पर तशरीफ़ ले जाते थे और कभी बैठते थे और कभी खड़े रहकर लौट आते थे और बस्ती के तमाम ताज़िये आपके दरबार तक आते थे और उस वक़्त आप बाहर खड़े होकर ताज़ियों की ज़ियारत किया करते थे। (मिशकात—ए—हक्कानियाँ—84)

14—आले रसूल सैइयद अ़ल्लामा मौलाना उवैस मुस्तफा साहब सज्जादा नशीन बिलग्राम शरीफ मुहर्रम की सात तारीख़ को मुहब्बत और खुलूस और एहतराम व एहतमाम के साथ अ़लम उठाते और ज़ियारत के लिये गलियों में ले जाते हैं और हज़रत अब्बास (रज़ि0) के पास जो अ़लम करबला में था उसका एक मुतबर्रक टुकड़ा जो हज़रत उवैस मुस्तफा साहब क़िब्ला के पास मौजूद है और वो उस टुकड़े को इस अ़लम में नसब करते हैं।

15—उ़ल्माये मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा का फ़तवा— मुहर्रम में मुरव्वजा ताज़िया वाजिबुल एहतराम है और दस मुहर्रम को फ़ातिहा दिलाना लाज़िम है और शरबत की सबील और मलीदा खिचड़ा वग़ैराह ताज़िये पर रखकर फ़ातिहा दिलाना तबर्रुक है। (फ़तावा मकइया—37,—38—सालेह इब्ने अहमद मक्का मुकर्रमा व अबू तुराब उमरी मदीना मुनव्वरा)

—: जन्नत का बयान :—

जन्नत में बेशुमार दायमी नेअ़मतें और लज़्ज़तें हैं जिनका शुमार करना ना मुमकिन है जन्नत के आठ दरवाज़े हैं वहाँ की ईटें सोने और चाँदी की हैं जन्नत की ज़मीन नरम मुलायम और ख़ालिस कस्तूरी है उसकी कंकरियाँ मोती व याकूत की हैं उसमें दूध, शहद और शराब की नहरें हैं और हर जन्नती का महल कम से कम उसकी हद्दे निगाह तक होगा और बाज़ का महल इससे भी ज़्यादा होगा वहाँ खूबसूरत वादियाँ और बड़े—बड़े बाग़ और मेवे और बेशुमार फल होंगे और तमाम जन्नतियों के लिये बड़ी—बड़ी आँखों वाली हूरें व ख़िदमत गुज़ार लड़के होंगे जन्नत में मुख़्तलिफ दर्जे होंगे और हर दर्जे के दरमियान इतना फ़ासला होगा जितना ज़मीन व आसमान के दरमियान फ़ासला है और सबसे ऊपर जन्नतुल फ़िरदौस है जिसमें अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे रहेंगे।

तमाम जन्नतियों के चेहरे खुशी व फ़राख़ी और राहतों की ताज़गी की वजह से चमकते होंगे और जन्नत में कोई बूढ़ा न होगा बल्कि तमाम जन्नती जवान और खूबसूरत होंगे चाहे दुनियाँ में वो किसी हाल या किसी सूरत में रहे हों जैसे काले, लूले लंगड़े, बदसूरत वग़ैराह लेकिन जन्नत में अल्लाह तआ़ला अपनी कुदरत से उन तमाम बदसूरत लोगों को वो हुस्ने जमाल अ़ता करेगा जिसका कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता जन्नत में सबसे ऊपर वाला दर्जा अल्लाह के मुक़र्रबीन बन्दों के लिये होगा और उसके नीचे वाले दर्जे उनके लिये होंगे जिनका नामे आमाल उनको दाहिने हाथ में दिया जायेगा और हर इन्सान को उसके आमाल के मुताबिक़ जन्नत में दर्जे अ़ता होंगे।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है—
और जो सबक़त ले गये वो तो सबक़त ही ले गये यही लोग (अल्लाह तआ़ला के) मुक़र्रब होंगे चैन के बाग़ों में अगले लोगों में से एक गिरोह और पिछलों में से थोड़े जड़ाओ (जिस पर सुनहरा काम किया गया) तख़्तों पर तकिया लगाये आमने सामने बैठे होंगे और हमेशा रहने वाले ख़िदमत गुज़ार लड़के उनके गिर्द घूमते होंगे कूज़े और जाम लिये और आँखों के सामने बहती हुई शराब कि न उससे दर्दे सर हो और न होश में फ़र्क़ आये और मेवे जो वो पसन्द

करें और परिन्दों का गोस्त और बड़ी आँखों वाली हूरें जैसे छुपे हुये मोती ये सिला उनके आमाल का वो उसमें न कोई बेहूदगी सुनेगें और न कोई गुनाह की बात मगर सलाम ही सलाम सुनेंगे। (सू0—वाक़िया—10,—26)

नीज़ फ़रमाया—
और दाहिनी तरफ़ वाले बे काँटों (जिनमें काँटे न हों) की बेरियों में और केले के गुच्छों में और हमेशा रहने वाले सायों में और हमेशा जारी रहने वाले पानी में और बहुत मेवों में जो न ख़त्म हों और न रोके जाये और बुलन्द बिछौनों में बेशक हमने उन (हूरों) को (हुस्न व लताफ़त की आइनादार) ख़ास ख़िल्क़त से पैदा से फ़रमाया फिर हमने उनको कुवांरियाँ बनाया जो (अपने शौहरों से) खूब मुहब्बत करने वाली हम उम्र हैं ये (हूरें और दीगर नेअ़मतें) दाँयी जानिब वालों के लिये हैं। (सू0—वाक़िया—27,—38)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा उसे बेशुमार नेअ़मतें मिलेंगी वो कभी मुहताज न होगा उसके कपड़े पुराने न होंगे और न उसकी जवानी कभी ख़त्म होगी जन्नत में वो कुछ है जिसे कभी किसी आँख ने न देखा और न किसी कान से सुना और न किसी दिल में उसका ख़्याल गुज़रा। (मुस्नद अहमद—2/370)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से मरवी है सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत की ईटें सोने व चाँदी की हैं उसका मसाला खुश्बूदार मुश्क का है उसकी कंकरियाँ मोती और याकूत की हैं उसकी मिट्टी जाफ़रान है जो शख़्स जन्नत में दाख़िल होगा वो हमेशा नेअ़मतों में रहेगा और कभी किसी चीज़ का मुहताज न होगा और हमेशा ज़िन्दा रहेगा और उसे कभी मौत न आयेगी और न कभी उसकी जवानी ख़त्म होगी (तिर्मिज़ी,मुस्नद अहमद)

जब जन्नती लोग जन्नत के दरवाज़ों पर पहुँचेगें तो वहाँ एक दरख़्त होगा जिससे दो चश्में जारी होंगे तो वो उसमें से एक चश्में का पानी पियेंगे जिससे उनकी तमाम जिस्मानी तकलीफ़ें दूर हो जायेंगी फिर वो दूसरे चश्मे का इरादा करेंगे तो उससे वो पाकीज़गी

हासिल करेंगे और वो राहत व खुशी की कैफ़ियत में होंगे फिर वो जन्नत में दाख़िल होंगे और जन्नत के मुहाफिज़ उनसे कहेंगे तुम पर सलामती हो और जन्नत में हमेशा रहने के लिये दाख़िल हो जाओ।

फिर जन्नत में रहने वाले ख़िदमत गुज़ार लड़कों से उनकी मुलाक़ात होगी और वो लड़के उनके इर्द गिर्द इस तरह जमा हो जायेंगे जैसे कोई अ़ज़ीज़ सफ़र से आया हो फिर उन लड़कों में से एक लड़का जन्नत की हूर के पास जायेगा और कहेगा फ़लाँ शख़्स आया है तो वो हूर पूछेगी क्या तुमने उसे देखा है तो वो कहेगा हाँ मैंने उसे देखा है और वो मेरे पीछे आ रहा है तो वो हूर बहुत खुश होगी हत्ता कि वो उसके इंतज़ार में दरवाज़े पर खड़ी हो जायेगी।

जब जन्नती अपनी मंजिल पर पहुँचेगा तो वो चारो तरफ़ निगाह करेगा और जन्नती महल देखेगा और उसकी छत को देखेगा जो बहुत ज़्यादा चमकदार होगी और ज़मीन पर उम्दाह कालीन होगी और सोने और चाँदी के बरतन होंगे फिर वो बैठ जायेगा और कहेगा अल्लाह तआ़ला के लिये हम्द है जिसने हमारी रहनुमाई फ़रमाई और हमें जन्नत अ़ता की अगर अल्लाह तआ़ला हमें हिदायत न देता तो हम हिदायत न पाते फिर एक मुनादी आवाज़ देगा तुम इन नेअ़मतों में हमेशा ज़िन्दा रहोगे और तुम्हें कभी मौत न आयेगी और जन्नत से कभी तुम्हें निकाला न जायेगा और हमेशा सेहतमन्द रहोगे और कभी तुम बीमार न होगे।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
और हम उनके सीनों से कीने (यानी वो दुश्मनी जो दुनियाँ में वो एक दूसरे से करते थे) निकाल देंगे और उनके (महलों के) नीचे से नहरें जारी होंगी और वो कहेंगे सब तारीफ़ अल्लाह तआ़ला के लिये है जिसने हमें यहाँ (यानी जन्नत) तक पहुँचाया और हम राह न पाते अगर अल्लाह तआ़ला हमें हिदायत न फ़रमाता बेशक हमारे रब के रसूल हक़ का पैग़ाम लाये थे और (उस दिन) निदा दी जायेगी कि तुम लोग जन्नत के वारिस बना दिये गये हो उन (नेक) आमाल के बाइस जो तुम अंजाम देते थे। (सू—आअ़राफ़—43)
हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से मरवी है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—

सबसे पहला गिरोह जो जन्नत में जायेगा उनकी शक्लें चौदहवीं रात के चाँद की तरह होंगी और वो वहाँ न थूकेंगे न नाक साफ़ करेंगे और न क़ज़ाये हाजत (पाख़ाना) के लिये बैठेंगे और उनके बरतन सोने और चाँदी के होंगे और उनका पसीना कस्तूरी होगा। (सही मुस्लिम—2/379)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दे पर शफ़ीक़ माँ से भी ज़्यादा रहम फ़रमाने वाला है। (सही बुख़ारी—2/887)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया—
जिस शख़्स ने गवाही दी कि अल्लाह के सिवा कोई माअ़बूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं उस पर अल्लाह तआ़ला ने दोज़ख़ को हराम कर दिया है।
(सही मुस्लिम—1/43)

जन्नत तमाम ख़्वाहिशों को पूरा करने की जगह है बल्कि इन्सान की ख़्वाहिश और उसके तसव्वुर से भी ज़्यादा हर शख़्स को जन्नत में नेअ़मतें और लज़्ज़तें हासिल होंगी वहाँ उनको जन्नती शराब पिलाई जायेगी जो मीठी और खुशबूदार और बहुत लज़ीज़ होगी जन्नती लोग सुर्ख याकूत के मुनब्बरों पर सफेद मोतियों के खेमों में होंगे जो बहुत बड़े—बड़े और मोतियों के होंगे जो अन्दर से खाली होंगे जिसमें सब्ज़ रंग के बिछौने होंगे और तख़्तों पर तकिया लगाये होंगे।

और वो खेमें ऐसी नहरों के किनारों पर होंगे जहाँ शराब और शहद की नहरें होंगी और उनकी ख़िदमत के लिये लड़के मौजूद होंगे और वो लड़के इतने हसीन व खूबसूरत होंगे जैसे बिखरे हुये मोती और वो बड़ी—बड़ी आँखों वाली हसीन खूबसूरत चेहरों वाली हूरों में होंगे जिन हूरों को न किसी इन्सान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने और वो हूरें हैज़ व निफ़ास और पाख़ाना व पेशाब थूक वग़ैराह से पाक होंगी और दुनियाँ वाली बीवियाँ भी होंगी जो दुनियाँ में कैसी भी शक्लो सूरत में रही हों लेकिन जन्नत में वो बहुत खूबसूरत हुस्नो जमाल का पैकर होंगी और उनकी बीवियाँ बुढ़ापे से महफ़ूज़ रहेंगी।

और वहाँ मर्द व औ़रत कोई भी बूढ़ा न होगा बल्कि सब जन्नती जवान रहेंगे और तीस साल की उम्र के होंगे और हमेशा इसी उम्र में रहेंगे और उनकी लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई सात हाथ होगी और जन्नतियों को जन्नत में ताज पहनाये जायेंगे जिन पर मोती और मरजान जड़े होंगे और जन्नतियों को सोने और चाँदी के कंघन पहनाये जायेंगे और जन्नती हमेशा उन नेअ़मतों में रहेंगे ये उनके आमाल का बदला होगा जो वो अमन वाले मक़ाम में होंगे।

क़ुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है—
बेशक नेक लोग मुख़लिस इताअ़त गुज़ार (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पियेंगे जिसमें (खुश्बू रंगत और लज़्ज़त बढ़ाने के लिये) काफ़ूर की मिलावट होगी (काफ़ूर जन्नत) का एक चश्मा है जिससे (ख़ास) बन्दे पिया करेंगे और जहाँ चाहेंगे उसे छोटी—छोटी नहरों की शक्ल में (दूसरों को पिलाने के लिये) बहाकर ले जाया करेंगे ये अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दे हैं जो उस दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती खूब फैल जाने वाली है और (अपना) खाना अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में मुहताज को और यतीम को और क़ैदी को खिला देते हैं और कहते हैं हम तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये खिला रहे हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं माँगते हमें तो अपने रब से उस दिन का ख़ौफ़ रहता है जो (चेहरों को) निहायत सियाह (और) बदनुमा कर देने वाला है पस अल्लाह तआ़ला उन्हें (ख़ौफ़े इलाही के सबब) उस दिन की सख़्ती बचा लेगा और उन्हें रौनक़ व ताज़गी और (दिलों में) मशर्रत (खुशी) बख़्शेगा इस बात के बदले कि उन्होंने सब्र किया (रहने को) जन्नत और (पहनने को) रेशमी पोशाक अ़ता करेगा ये लोग उसमें तख़्तों पर तकिया लगाये बैठे होंगे न वहाँ धूप की तपिश पायेंगे और न सर्दी की शिद्दत और (जन्नत के दरख़्तों के) साये उन पर झुक रहे होंगे और उनके गुच्छे झुककर लटक रहें होंगे और (खुद्दाम) उनके गिर्द चाँदी के बरतन और (साफ़ सुथरे शीशे के गिलास) लिये फिरते होंगे और उन्हें वहाँ (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पिलाये जायेंगे उसमें एक चश्मा है जिसका नाम सलसबील है और उनके इर्द गिर्द ख़िदमत गुज़ार लड़के हमेशा घूमते रहेंगे और जब वो उन्हें देखेंगे तो बिखरे हुये मोती गुमान करेंगे और जब (बहिश्त पर) नज़र डालेगे तो वहाँ (कसरत से) नेअ़मतें और (हर तरफ़) बड़ी सल्तनत देखेंगे उन

(के जिस्मों) पर बारीक रेशम के सब्ज़ कपड़े होंगे और उन्हें चाँदी के कंघन पहनाये जायेंगे और उनका रब उन्हें पाकीज़ा शराब पिलायेगा बेशक ये तुम्हारा सिला होगा और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी। (सू0—दहर—5,—22)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
सब जन्नती तीस साल की उम्र के होंगे और वो आदम अ़लैहस्सलाम की तरह होंगे यानी लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई सात हाथ होगी। (अत्तग़ीब वत्तरहीब—4/500)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया—
अगर तुम जन्नत में चले गये तो तुम्हें वहाँ वो कुछ मिलेगा जो कुछ तुम चाहोगे और जिससे तुम्हारी आँखों को लज़्ज़त हासिल होगी। (दुर्रे मन्सूर—6/23)

बेशक जन्नत में दूध की नहरें हैं जो साफ़ हैं जिनका ज़ायक़ा कभी न बदलेगा और शहद व शराब की नहरें हैं जो जन्नतियों के लिये हैं जो पीने में बहुत लज़ीज़ हैं और जन्नती शराब पीने के बाद किसी की अक़्ल ज़ाइल न होगी और न किसी के सर में दर्द होगा बल्कि उसे पीने के बाद वो ऐसी लज़्ज़त पायेंगे जो उन्हें कभी मयस्सर न हुई होगी और वो जन्नत में मुतमईन होंगे और जन्नत की नहरें याक़ूत की कंकरियों पर जारी होगी और बड़े—बड़े बाग़ और खुशबूदार फल होंगे और बड़े—बड़े अनार व खजूर व अंगूर व केले होंगे और जन्नतियों के लिये तेज़ चलने वाले घोड़े और ऊँट होंगे और वो वहाँ एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे और उनकी बीवियाँ हूरें होंगी गोया शतुर्मुग के अन्ड़ो की तरह गर्द गुबार से महफ़ूज़ होंगी उनकी पिन्डली का मग़ज (गूदा) उनके लिबासों के ऊपर से नज़र आयेगा और अल्लाह तआ़ला जन्नतियों के अख़लाक़ को हर बुराई से और जिस्मों को मौत से पाक रखेगा।

और जन्नती वहाँ न नाक साफ़ करेंगे और न पेशाब करेंगे और न थूकेंगे न क़ज़ाये हाजत के लिये बैठेंगे बल्कि खुशबूदार डकार आयेगी व पसीना आयेगा जो कस्तूरी सा महकता होगा जो उनके खानों को हज़्म करेगा जो शख़्स सबसे आख़िर में जन्नत में

जायेगा जिसका मर्तबा सबसे कम होगा उसका महल उसकी हद्दे निगाह तक होगा जो सोने और चाँदी से बना होगा और मोतियों के खेमें होंगे और उसकी निगाह को खोल दिया जायेगा हत्ता कि वो महल के आख़िरी हिस्से को उसी तरह देखेगा जिस तरह वो महल के क़रीब वाले हिस्से को देखेगा।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ाला इरशाद फ़रमाता है–
जिस जन्नत का परहेज़गारों से वायदा किया गया है (उसका अहवाल) ये है उसमें ऐसी पानी की नहरें हैं जो कभी न बिगड़ें और ऐसी दूध की नहरें हैं जिसका मज़ा कभी न बदले और ऐसी शराब की नहरें हैं जिसके पीने में लज़्ज़त है और खूब साफ़ किये हुये शहद की नहरें होंगी और उसमें उनके लिये हर क़िस्म के फल होंगे (सू0–मुहम्मद–15)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जन्नत की नहरें कस्तूरी के टीलों या पहाड़ों के नीचे से निकलती हैं। (दुर्रे मन्सूर–1/37)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जन्नत में सुर्ख याकूत के घोड़े दिये जायेंगे जो तुम्हें जन्नत में उड़ाकर वहाँ ले जायेंगे जहाँ तुम चाहो। (दुर्रे मन्सूर–6/23)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का इरशादे गिरामी है सबसे कमतर जन्नती के लिये एक हज़ार ख़ादिम होंगे और बहात्तर (72) बीवियाँ होंगी और उनके सरों पर ताज होंगे जिसका अद्‌ना मोती मशरिक़ से मग़रिब के दरमियान को रोशन कर देगा। (मिश्कात–499)

जन्नत में लोग जन्नती फलों को बैठे व लेटकर जिस तरह चाहेंगे उस तरह खायेंगे और फलों के दरख़्त जन्नतियों के इख़्तियार में होंगे जब वो बैठे होंगे और कोई फल खाना चाहेंगे तो फलों की टहनी उन पर झुक जायेगी और इसी तरह जब वो लेटे होंगे और फल खाने का इरादा करेंगे तो उनके मुताबिक़ वो जितना चाहेंगे उतनी ही टहनी उन पर झुक जायेगी और उनकी ख़्वाहिश के

मुताबिक़ बेशुमार फल और मेवे उनके खाने के लिये होंगे और दुनियाँ वाली औ़रतें जन्नत में कुँवारी और बहुत खूबसूरत होंगी और अपने शौहरों से बहुत प्यार करने वाली होंगी और बहुत अच्छे अख़लाक़ वाली होंगी और कभी भी अपने शौहरों से लड़ाई झगड़ा नहीं करेंगी और अपने शौहरों के अलावा किसी की तरफ़ निगाह उठाकर भी नहीं देखेंगीं।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है–
बेशक डर वाले (परहेज़गार) अमन वाले मक़ाम में होंगे बाग़ों में और चश्मों में बारीक और रेशमी लिबास पहने होंगे आमने सामने बैठे होंगे इसी तरह (ही) होगा और हम उन्हें गोरी रंगत वाली बड़ी आँखों वाली हूरों से ब्याह देगे वहाँ इत्मीनान से (बैठे) हर क़िस्म के मेवे और फल तलब करते होंगे उस (जन्नत) में मौत का मज़ा नहीं चखेंगे सिवाय (उस) पहली मौत के (जो गुज़र चुकी होगी) और अल्लाह तआ़ला उन्हें दोज़ख़ से बचा लेगा ये आपके रब का फ़ज़्ल है (यानी आपका रब आपके वसीले से ही अ़ता करेगा) यही बहुत बड़ी कामयाबी है। (सू0–दुख़ान–51–57)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
अगर कोई जन्नती औ़रत ज़मीन की तरफ़ झाँके तो इस (ज़मीन) को रोशन करदे और इसके दरमियान खुश्बू ही खुश्बू फैल जाये और उसके सर का दुपट्टा दुनियाँ और जो कुछ इसमें है से बेहतर है। (सही बुख़ारी–2/972)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जो शख़्स जन्नत में जायेगा उसके सिरहाने और पाँव की तरफ़ दो हूरें बैठेंगी और वो ऐसी आवाज़ के साथ गायेंगी जो न किसी इन्सान ने सुनी होगी और न किसी जिन्न ने।
(मुअ़जम कबीर तिबरानी–8/113)

जन्नती आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करेंगे और बाहम हंसी मज़ाक करेंगे और जन्नत में अमन व चैन से रहेंगे और उनमें कभी आपस में लड़ाई झगड़ा न होगा और न बेहूदा बकवास करेंगे और न गुस्सा और न ताना ज़नी और न आपस में कीना रखेंगे और जन्नती तमाम बुराइयों से पाक होंगे और उन्हें जन्नत में न किसी तरह का रंजो ग़म होगा और न किसी तरह की कोई परेशानी होगी और जन्नती आपस में दोस्तों की तरह रहेंगे।

और जब कोई जन्नती किसी से मुलाक़ात करना चाहेगा तो वो उससे मुलाक़ात करेगा और दुनियाँ में उनके दरमियान जिस तरह आपस में गुफ्तगू (बातचीत) होती थी उसी तरह जन्नत में भी आपस में बातें करेंगे और कुछ दुनियाँ की भी बातें करेंगे और कहेंगे ऐ दोस्त तुम्हें याद है हम लोग फ़लाँ–फ़लाँ मजलिस में थे और हमारे दरमियान फ़लाँ–फ़लाँ बातें हुई थी और जन्नतियों को खाने में फलों और मेवों के अलावा गोस्त भी होगा और वो जिस परिन्दे का गोस्त खाने की ख़्वाहिश करेंगे तो वो परिन्दा उनके सामने आ गिरेगा जो पका भुना हुआ होगा और बेशुमार चीज़ें जन्नतियों के खाने के लिये जन्नत में मौजूद होंगी।

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है–
और जो ईमान लाये अच्छे काम किये हम उनको बाग़ों में ले जायेंगे जिनके नीचे नहरें बहें (और वो) हमेशा–हमेशा उनमें रहेंगे अल्लाह तआ़ला का सच्चा वायदा और अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा किसकी बात सच्ची। (सू0–निसा–122)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
बेशक तुम जन्नत में एक परिन्दे को देखकर उसे खाने की ख़्वाहिश करोगे तो वो भुना हुआ तुम्हारे सामने गिरेगा।
(मजमउज्ज़वाइद–10/414)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि0) से मरवी है हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जन्नती आदमी के लिये उसी तरह बच्चा होगा जैसा वो चाहेगा और उसके हमल व बच्चे की पैदाइश और उसकी जवानी सब एक ही साअ़त (घड़ी) में हो जायेगी। (दुर्रे मन्सूर–6/23)

जन्नत में हर शख़्स को खाने पीने और जिमाअ़ (हम बिस्तरी) के लिये सौ आदमियों के बराबर ताक़त दी जायेगी और वहाँ न सर्दी होगी और न गर्मी होगी और चाँद और सूरज भी न होंगे क्योंकि जन्नत रब तआ़ला के नूर से रोशन होगी और वहाँ न किसी को थकान होगी और वहाँ न कोई बीमारी होगी और जन्नत में एक बाज़ार होगा लेकिन वहाँ ख़रीद फरोख़्त न होगी बल्कि जब कोई

शख़्स ये ख़्वाहिश करेगा कि फ़लाँ शक्ल जैसी मेरी शक्लो सूरत हो जाये तो वो फ़ौरन उसी शक्लो सूरत का हो जायेगा।

जन्नत में इन्तिहाई दर्जे की नेअ़मतें जन्नतियों को अ़ता होंगी और उन्हें रब तआ़ला का दीदार होगा और जुमे के दिन जन्नती अपने रब की ज़ियारत करेंगे और जब वो अल्लाह तआ़ला का दीदार करेंगे तो उसके नूर को देखते ही रह जायेंगे और उनकी निगाहें रब तआ़ला से न हटेंगी हत्ता कि तमाम लोग जन्नती नेअ़मतों और लज़्ज़तों को भूल जायेंगे फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ जन्नतियों तुम पर सलाम हो फिर अल्लाह तआ़ला पर्दे में हो जायेगा लेकिन उसका नूर बाक़ी रह जायेगा।

अल्लाह तआ़ला के दीदार के बाद जब लोग अपने महलों में वापस होंगे तो उनकी बीवियाँ कहेंगी कि तुम पहले से ज़्यादा हुस्नो जमाल लेकर लौटे हो और अल्लाह तआ़ला के दीदार से जन्नतियों को वो लज़्ज़त हासिल होगी जो जन्नत की तमाम नेअ़मतों में भी वो लज़्ज़त हासिल न होगी और जन्नत में सबसे कम दर्जे वाला शख़्स जो सबसे आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा अल्लाह तआ़ला उसे दुनियाँ जैसी दस दुनियाँ के बराबर जन्नत में जगह अ़ता करेगा।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
जन्नतियों में हर एक को सौ आदमियों के बराबर खाने पीने और जिमाअ़ की ताक़त दी जायेगी और क़ज़ाये हाजत नहीं होगी उनका खाना पसीने की शक्ल में हज़्म होगा (अत्तरग़ीब वत्तरहीब–4/525)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–
जन्नत में एक बाज़ार होगा जिसमें ख़रीद फरोख़्त न होगी अलबत्ता मर्दों और औरतों की तस्वीरें होगी जब कोई किसी सूरत की ख़्वाहिश करेगा तो उस बाज़ार में दाख़िल होगा वहाँ हूरों का इज़्तेमाअ़ होगा वो आवाज़ को बुलन्द करेंगी और ऐसी आवाज़ जो मख़लूक़ ने कभी नहीं सुनी होगी वो कहेंगीं हम हमेशा रहने वाली हैं पस उस शख़्स के लिये खुशख़बरी है जो हमारे लिये है हम उसके लिये हैं। (मुस्नद अहमद–1/56)

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जन्नती अपनी नेअ़मतों में होंगे कि एक नूर रोशन होगा तो जन्नती अपने सरों को उठायेंगे और देखेगें कि उनके ऊपर परवरदिगारे आ़लम है इन लोगों के देखने पर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा अस्सलामु अ़लैकुम या अह्लल जन्नती (ऐ जन्नितयों तुम पर सलाम हो) नीज़ फ़रमाया अल्लाह तआ़ला जन्नतियों को और जन्नती अल्लाह तआ़ला को देखते रहेंगे यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला पर्दे में हो जायेगा और उसका नूर बाक़ी रह जायेगा और जब तक जन्नती अपने रब को देखेंगे उनका ध्यान किसी दूसरी नेअ़मत की तरफ़ नहीं जायेगा (सुनन इब्ने माजा)

जन्नती जन्नत में अमन चैन व ऐशो आराम में बहुत खुश होंगे और उन्हें वहाँ किसी भी चीज़ की कोई फ़िक्र न होगी बल्कि उनकी ख़्वाहिश से भी ज़्यादा बेशुमार नेअ़मतें उन्हें अ़ता होंगी इसलिये हमें चाहिये बेशुमार नेअ़मतों और लज़्ज़तों वाली जन्नत को हासिल करने के लिये कसरत से नेक अ़मल करें और खुद को गुनाहों से पाक रखें और अल्लाह तआ़ला के फ़रमाबरदार बन्दे बनें और सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की इताअ़त और सुन्नतों पर अ़मल करें और फ़ानी दुनियाँ से बे रग़बती इख़्तियार करें अगर जन्नत में सिर्फ़ जिस्मों की सलामती होती और भूक प्यास और हर क़िस्म की मुसीबतो परेशानी से बे ख़ौफी होती तब भी दुनियाँ बे रग़बती और नफ़रत के लायक़ होती।

जन्नत में भी कई दरजात हैं जो इन्सान को उसके आमाल के मुताबिक़ उसे अ़ता किये जायेंगे जिस तरह हम दुनियाँ में एक दूसरे से माल और जायदाद वग़ैराह में सबक़त लेना चाहते हैं और उनसे दुन्यावी मामलात में आगे रहना चाहते हैं और इसलिये हम हिर्स करते हैं और उनसे तमाम मामलात में आगे निकलने के लिये कोशिश और कई तरह की तदाबीर करते हैं हालाँकि दुनियाँ की नेअ़मतें व लज़्ज़तें सिर्फ़ थोड़े दिनों के लिये हैं

इसलिये हमें चाहिये कि दुनियाँ के बजाय जन्नत के लिये हिर्स करें ताकि जन्नत में आला मक़ाम और ऊँचा दर्जा पायें और इसके लिये हमें चाहिये कि लोगों की इबादत को देखें और

उनसे ज़्यादा इबादत करने की कोशिश करें और लोगों के नेक अमाल को देखें और उनसे ज़्यादा नेक अ़मल करने की कोशिश करें ताकि उनसे ज़्यादा हम बेहतर अज्र पायें और दुनियाँ की मुहब्बत से किनारा कशी इख़्तियार करें ताकि आख़िरत में हम इसका बेहतरीन नफ़ा उठायें और हमें चाहिये नेक अ़मल के ज़रिये जन्नत और उसमें आला मक़ाम की ख़्वाहिश और तलब में अपनी तमाम उम्र सर्फ़ कर दें और हमेशगी वाले घर यानी जन्नत को पाने की तैयारी में खुद को हमेशा मसरुफ़ रखें।

हर मुसलमान को चाहिये कि हमेशा अपने ज़हन में इस बात को रखे और कभी न भूले कि हम अल्लाह के बन्दे हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के उम्मती हैं और बन्दे का माना गुलाम के भी हैं और गुलाम का हर काम उसके आक़ा के हुक्म और मर्ज़ी के मुताबिक़ होता है और जो गुलाम अपने आक़ा के हुक्म और मर्ज़ी के मुताबिक़ काम न करे तो गोया वो गुलाम नहीं बल्कि आज़ाद होता है तो अगर हम खुद को अल्लाह का बन्दा कहते हैं तो हमें चाहिये कि बन्दे ही बनकर रहें आज़ाद बनने की कोशिश न करें क्योंकि हमारी आज़ादी हमें गुनाहों की तरफ़ राग़िब करती है और हमारे गुनाह हमें जहन्नुम की तरफ़ ले जाते हैं और अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी और ग़ज़ब का सबब बनते हैं और हमारी बन्दगी इताअ़त और फ़रमाबरदारी हमें अल्लाह तआ़ला की रज़ा व खुशनूदी और जन्नत की तरफ़ ले जाती है और इसी तरह हम खुद को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का उम्मती कहते हैं तो हम पर लाज़िम है कि हम उनकी बात भी माने और उनकी फ़रमाबरदारी करें और खुद को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का उम्मती होने का सबूत दें और कामिल ईमान का तक़ाज़ा और अ़लामत ये है कि जो चीज़ अल्लाह व रसूल को पसन्द हो वही हमें भी पसन्द हो और जो चीज़ अल्लाह व रसूल को ना पसन्द हो वो हमें भी ना पसन्द होनी चाहिये यही असल और मुकम्मल ईमान की अ़लामत है।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–
आला दरजात वाले जन्नतियों को निचले दर्जे वाले जन्नती लोग इस तरह देखेंगे जिस तरह तुम आसमान के किसी किनारे पर तुलूअ़ होने वाले सितारे को देखते हो। (मुस्नद अहमद–3/27)

जन्नत में एक नहर है जिसका नाम कौसर है जो दूध से ज़्यादा सफेद और शहद से ज़्यादा मीठी है जो अल्लाह तआला ने अपने महबूब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को अता फ़रमाई है जिस पर एक हौज़ है और इस हौज़ पर क़यामत के दिन मेरे आक़ा रहमते दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की उम्मत आयेगी जो इससे एक घूँट भी पियेगा वो कभी प्यासा न रहेगा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया क़यामत के दिन मेरे हौज़ पर सबसे पहले मेरी उम्मत के फुक़रा मुहाजिरीन आयेंगे और हौज़े कौसर के कूज़े (बरतन) आसमान में सितारों की गिनती से भी ज़्यादा है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया—
कौसर जन्नत में एक नहर है जिसका अल्लाह तआला ने मुझसे वायदा फ़रमाया है और इस पर एक हौज़ है जिस पर मेरी उम्मत आयेगी। (सही मुस्लिम—1/72)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि जब सूरह कौसर (इन्ना आअतैना कल कौसर) नाज़िल हुई तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि (कौसर) जन्नत में एक नहर है जिसके किनारे सोने के हैं इसका पानी दूध से ज़्यादा सफेद और शहद से ज़्यादा मीठा है और कस्तूरी से ज़्यादा खुशबूदार है और वो मोतियों और मरजान के पत्थरों पर चलता है। (मुस्नद अहमद—2/112)

हज़रत सुफियान सूरी (रह0) ख़ौफ़े इलाही व इबादत में इन्तिहा दर्जे की कोशिश व मेहनत और आख़िरत के डर की वजह से आपकी परेशाँ हाली को देखकर आपके साथियों ने आपसे अर्ज़ किया कि आप इससे कम दर्जे की कोशिश के ज़रिये भी इन्शा अल्लाह अपनी मुराद पा लेंगे तो आपने जवाब दिया मैं क्यों न कोशिश करूँ हालाँकि मुझे ये बात पहुँची है कि अहले जन्नत अपने मनाज़िल व मकानात में तशरीफ़ फ़रमा होंगे कि अचानक उन पर नूर की एक तजल्ली पड़ेगी जिससे आठों जन्नत जगमगा उठेंगी जन्नती गुमान करेंगे कि ये अल्लाह तआला की ज़ात का नूर है तो सज्दे में गिर पड़ेगे फिर उन्हें निदा होगी कि अपने सर सज्दे से

उठा लो ये वो नहीं हैं जिसका तुम्हें गुमान हुआ है बल्कि ये तो जन्नती औ़रत के तबस्सुम का नूर है जो उसने अपने खाविन्द के सामने ज़ाहिर किया है।

दुन्यावी किसी चीज़ को हासिल करने के लिये हम मेहनत व मशक़्क़त और उसे हासिल करने के तरीक़े को इख़्तियार करते हैं या क़ीमत अदा करके उस चीज़ को हासिल करते हैं तो क्या जन्नत जैसी अज़ीम दायमी नेअ़मत को हम बग़ैर कुछ किये हासिल कर सकते हैं हमें इस बात पर ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये और मुग़ालते पर मबनी तमाम बे असल और बे बुनियाद गुमानों को अपने दिलो दिमाग़ से बाहर निकाल देना चाहिये और अच्छी सोच व समझ को हमेशा ज़हन नशीन रखना चाहिये।

इरशादे बारी तआ़ला है—
क्या तुम ये गुमान किये हुये हो कि तुम (यूँ ही) जन्नत में चले जाओगे हालाँकि अभी अल्लाह ने तुम में से जिहाद करने वालों को परखा ही नहीं और ना ही सब्र करने वालों को जाँचा है। (सू0—आले इमरान—142)

हम अल्लाह तआ़ला की जन्नत के तालिब और ख़्वाहिशमन्द हैं और उसे हर सूरत पाना चाहते हैं लेकिन अल्लाह तआ़ला की जन्नत बग़ैर उसकी बात माने हमें कैसे हासिल हो सकती है क्या ये हमारी कम अक्ली और हिमाक़त नही है कि जन्नत को बुरे आमाल और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी के ज़रिये हम हासिल करना चाहते है और फिर भी हम कहते हैं कि हम बहुत ज़्यादा अक़्लमन्द और होशियार हैं हालाँकि हम बहुत बड़े अहमक़ (बेवक़ूफ़) हैं ज़रा सोचो और ग़ौर करो कि हम कहाँ जा रहे हैं और क्या कर रहे हैं हमने अल्लाह व रसूल की गुलामी के बजाय अपने नफ़्स की गुलामी का पट्टा अपने गले में डाल रखा है और अपने दुश्मन नफ़्स के हुक्मों की इताअ़त कर रहे हैं और उसी की बात मान कर अपने कामों को अंजाम दे रहे हैं अल्लाह व रसूल के अहकाम से बे ख़ौफ़ और बे परवाह हो गये हैं और ग़फलत की ज़िन्दगी जी रहे हैं।

आज ज़माने और मुआशरे की हालत इतनी ज़्यादा बदतर हो चुकी है कि जिसकी मज़म्मत के लिये कसीर अल्फ़ाज़ भी बहुत कम हैं बाज़ इन्सान अपनी इन्सानियत तक खो चुके हैं और बुराई और बे हयायी को फैशन का लक़ब देते हैं और दुनियाँ से इंतिहाई

मुहब्बत करते हैं जिस दुनियाँ को अल्लाह व रसूल ने ना पसन्द फ़रमाया और क़ाबिले नफ़रत और मज़म्मत बताया दीनी इल्म व तालीम का सीखना लोगो को पसन्द नहीं दिलों में दुनियाँ और दुनियाँ वालों का ख़ौफ़ है लेकिन ख़ौफ़े इलाही के लिये दिलों में जगह नहीं बेहूदा व फ़िज़ूल गुफ्तगू करते हैं लेकिन ज़िक्रे इलाही के लिये वक़्त नहीं ज़ुबानें तल्ख़ हो गई हैं जो ग़ीबत और बुरे कलिमात और चुग़ल ख़ोरी के लिये कैंची की तरह चलती हैं लेकिन कुरान की तिलावत के लिये उनकी ज़ुबानें ख़ामोश हो गई हैं।

मस्जिदें वीरान है लेकिन उनके घर आबाद और आरास्ता हैं नमाज़ रोज़े का एहतमाम नहीं करते और दुनियाँ से रग़बत और आख़िरत से बे फ़िक्री है आँखों में शर्मो हया मुर्दा हो चुकी है और दिल अल्लाह की याद से खाली हैं और ग़फ़लत की कैफ़ियत में मुब्तिला हैं हत्ता कि अपनी मौत से भी ग़ाफ़िल हैं क़ब्र क़यामत व दोज़ख़ के इन्तिहाई सख़्त व निहायत दर्दनाक अ़ज़ाब से बे ख़बर हैं मालो दौलत की तलब और ज़ख़ीरा जमा करने में वो मशगूल हैं जैसे वो अपनी दौलत को अपने कफ़न के साथ ले जायेंगे और नेकियों से खाली रहना उन्होने अपनी आदत बना ली है नफ़सानी ख़्वाहिशात व शहवात को हर हाल में पूरा करना अपना अहम मक़सद समझते हैं हराम व हलाल में फ़र्क़ नहीं रखते और अपने शिकमों में हराम ग़िज़ा के ज़रिये निरी आग भरते हैं अगर थोड़ा ज़्यादा माल मयस्सर आ जाये तो उनका तकब्बुर आसमान की बुलंदियों को छूता है और अपने माल से ज़कात अदा नहीं करते ना ही सद्क़ा ख़ैरात करते हैं।

और लोग माल व दौलत में एक दूसरे पर सबक़त पाना चाहते हैं और बाहम मुक़ाबला करते हैं और माल में कमतर लोगों को हक़ारत की नज़र से देखते हैं और खुद को मुअज़्ज़ज़ (इज़्ज़तदार) ख़्याल करते हैं और उनके साथ बद सुलूकी और बुरे बरताव और बद कलामी से पेश आते हैं मुसलमानों के हुक़ूक़ अदा करने में कोताही करते हैं और हराम माल और बेईमानी पर बहुत ज़्यादा खुशी का इज़हार करते हैं और अल्लाह तआ़ला की दी हुई नेअ़मतों पर फ़ख़्र करते हैं लेकिन अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा नहीं करते बल्कि वो ये गुमान करते हैं कि ये सब कुछ मेरी अक़्ल और मेहनत का नतीजा है और ग़रीब मिस्कीन फ़ुक़रा की मदद नहीं करते बल्कि उन्हे झिड़ककर बद कलामी से दूर भगा देते हैं।

लोगों के दरमियान रहम व शफ़क़त और मुहब्बत सिर्फ़ माल और मतलब के लिये रह गई है रिया (दिखावा) उ़रूज पर है जब तक कि लोग अपने कामों में दिखावा न कर लें उनके दिल चैन नहीं पाते हत्ता कि कोई छोटी सी नेकी भी रिया से खाली नहीं होती और दुन्यावी व मुआशरती काम फ़िज़ूल ख़र्ची पर मुश्तमिल होते है और अपनी तारीफ़ व तौसीफ़ और इज़्ज़त के हमेशा ख़्वाहिश मन्द रहते है हालाँकि इज़्ज़त व ज़िल्लत सिर्फ़ रब तआ़ला के इख़्तियार में है लेकिन वो मख़लूक़ में तलाश करते है और थोड़े से नेक अमल पर खुद पसन्दी में मुब्तिला हो जाते हैं और अल्लाह तआ़ला के बजाय लोगों पर एतमाद करते हैं और अपने कामों में मख़लूक़ की रज़ा और खुशनूदी हासिल करना चाहते हैं चाहे अल्लाह व रसूल बेशक नाराज़ हो जायें उन्हें इस बात से कोई फ़र्क़ नही पड़ता बल्कि उनके कामों में उनका अहम मक़सद लोगों को खुश करना और अपनी तारीफ़ और वाहवाही कराना होता है।

बाज़ लोग ऐसे भी हैं जिनका आख़िरत पर ईमान मुकम्मल नहीं और वो कहते हैं कि मौत व क़ब्र और क़यामत जब आयेगी तब देखा जायेगा और जो सबके साथ होगा वो मेरे साथ होगा और वो इस बात से ग़ाफ़िल हैं कि हर शख़्स को उसके आमाल के मुताबिक़ सवाब या अ़ज़ाब दिया जायेगा लेकिन उन्हें तो बस दुनियाँ को बेहतर बनाने की फ़िक्र है और वो उसी में मुब्तिला और मसरुफ़ रहते और उसी पर मुतमईन हैं और हिर्सो हसद के बाइस अपने दिलों को सियाह और मुर्दा कर लिया है।

वालिदैन की फ़रमाबरदारी सिर्फ़ किताबों तक महदूद रह गई और अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के अहकाम को लोग किताबों में पड़ते और मजालिस में उ़ल्मा हज़रात की तक़ारीर और बयानात में सुनते हैं और वाअज़ व नसीहत के ज़रिये उनकी इस्लाह भी की जाती है लेकिन वो सब कुछ जानने के बावजूद अ़मल नहीं करते बल्कि वो दुनियाँदारी व फ़िज़ूल कामों और फ़िज़ूल गुफ्तगू व बेहूदा बकवास में अपने वक़्त को ज़ाया करते हैं हालाँकि इन्सान के पास मौत तक थोड़ा सा वक़्त है चाहे तो नेकियाँ कमाले या गुनाह और इसी वक़्त में चाहे तो अपने रब को राज़ी करले या मख़लूक़ को।

बाज़ लोग अपनी आख़िरत के मुताअ़ल्लिक़ ये कह दिया करते हैं कि हमें अपनी आख़िरत की फ़िक्र नहीं क्योंकि हमारे आक़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हमारी शफ़ाअ़त फ़रमायेंगे और हमारी बख़्शिश हो जायेगी तो मैं उनसे ये कहना चाहता हूँ कि हमारी शफ़ाअ़त की ज़िम्मेदारी उनकी है और उनकी फ़रमाबरदारी की ज़िम्मेदारी किस पर है उनके फ़रमान को बजा लाना और उनके हुक्मों की तामील की ज़िम्मेदारी क्या हम पर नहीं है यानी जिससे शफ़ाअ़त की उम्मीद रखना और उन्हीं की बात न मानना क्या ये सही और दुरस्त है हम इस बात पर ग़ौरो फ़िक्र क्यों नहीं करते कि हमें क़ब्र के सख़्त और दर्दनाक अ़ज़ाब से हमें कौन बचायेगा और क़यामत के दिन हिसाबो किताब और फ़ैसला होने से क़ब्ल हमें क़यामत की हौलनाकियों और निहायत सख़्तियों से हमें कौन निजात देगा पुल सिरात से जहन्नुम की आग में गिरने से हमें कौन बचायेगा सख़्त गर्मी और भूक और प्यास की शिद्दत में मुब्तिला होने पर कौन हमारी मदद करेगा तो जरा सोचें और गौर करें तो हमें जवाब मिलता है कि अल्लाह की रहमत और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की सिफ़ारिश और हमारे नेक आमाल हमें इन मुसीबतो परेशानी से निजात देंगे।

आख़िर हमें क्या हो गया है हम क्यों अपने नफ़्स के गुलाम बन गये हैं और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी और अपने नफ़्स की फ़रमाबरदारी कर रहे हैं और अल्लाह व रसूल के बजाय अपने नफ़्स की बात मानकर खुद को हलाक़त में डाल रहे हैं आख़िर हम क्यों अपने दुश्मन हो गये हैं जो ग़ैरों की बात मानते हैं अगर तबीब (डाक्टर) हमें किसी चीज़ की मुमानियत करे तो हम उस चीज़ से बाज़ रहते और परहेज़ करते हैं नौकर अपने मालिक के हुक्म के मुताबिक काम करता है शागिर्द अपने उस्ताद का हुक्म बजा लाता है छोटा अफ्सर अपने बडे अफ्सर के हुक्म की तामील करता है हत्ता कि हालात ये हैं कि बाज़ लोग अपनी बीवियों के हुक्म के गुलाम हैं लेकिन अफसोस कि लोग अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को नज़र अंदाज़ करते और नाफ़रमानी करते जो तमाम मख़लूक़ का हाकिम व ख़ालिक और मालिक है बाज़ लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की गुलामी का दावा करते हैं व उनकी शफ़ाअ़त का दम भरते हैं और उनसे अपनी शफ़ाअ़त की पूरी उम्मीद रखते हैं।

लेकिन उनके अहकाम व तरीक़ों और उनके अफ़आल व सुन्नतों को अ़मल में नहीं लाते तो ऐसे लोगों की हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से उम्मीदें और उनकी गुलामी का दावा महज़ बातिल और बे बुनियाद है ऐसे लोग झूठे और धोके बाज़ हैं जो अल्लाह व उसके रसूल को धोका देने की कोशिश करते है हालाँकि वो खुद धोका और ग़लत फ़हमी का शिकार हो रहे हैं और खुद बहुत बड़े फ़रेब में मुब्तिला हैं और दुनियाँ और उसकी आराइश और उसकी शादाबी को हक़ीक़ी ज़िन्दगी जानकर अपनी आख़िरत को ख़सारे और दोज़ख़ की आग की तरफ़ ले जा रहे हैं और अपनी क़ब्र को कीड़े मकोड़े साँप और बिच्छुओं का घर बना रहे हैं और खुद अपने लिये आग का बिस्तर तैयार कर रहे हैं उनके काम नारे दोज़ख़ के हैं और दिलों में ख़्वाहिश व तलब जन्नत की है और वो खुद अपने ही हाथों खुद को हलाक कर रहे हैं।

यह एक फ़ितरी बात है कि इन्सान अपनी दुन्यावी तमाम ज़रूरतें और ख़्वाहिशात अल्लाह तआ़ला से अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चाहता है और लोगों के मुताअ़ल्लिक़ भी उसकी यही ख़्वाहिश रहती है कि लोग मेरे मुताबिक़ चलें और उनके तमाम काम मेरे मुताबिक़ हों और लोग मेरी बात मानें लेकिन वो ये भूल जाता है कि जो चीज़ हम लोगों से चाहते हैं और पसन्द करते हैं और जो चीज़ हम लोगों से हासिल करना चाहते और उसके तालिब रहते हैं वही चीज़ लोग भी हमसे चाहते और उसे पसन्द करते हैं और उसे हमसे हासिल करना चाहते और उसके तालिब रहते हैं।

मिसाल के तौर पर अगर हम चाहते हैं कि लोग हमें सलाम करने में पहल करें और हमारी इ़ज़्ज़त करें और हम पर रहम व मेहरबानी करें और हुस्ने खुल्क़ और अच्छे बरताव से पेश आयें और बुरे वक़्त और मुसीबतो परेशानी में हमारी मदद करें और हम पर जुल्म व ज़्यादती न करें और किसी भी तरह की अज़िय़त न पहुँचायें और न हमसे हसद करें और न बुराई का क़सद और न तकब्बुराना कलाम करें बल्कि हुस्ने सुलूक से पेश आयें और मेरे मुताअ़ल्लिक़ जो हुकूक़ उनके ज़िम्मे हों वो उन्हें अदा करें तो मज़कूरा बातें जो हम लोगों से चाहते हैं तो लोग भी हमसे वो ही चाहते हैं इसलिये हमें चाहिये कि पहले इन तमाम बातों को हम खुद अपने अ़मल में लायें फिर लोगों से उम्मीद व ख़्वाहिश रखे।

क्योंकि जो चीज़ हम किसी को दे नहीं सकते उस चीज़ को लोगों से पाने की उम्मीद व ख़्वाहिश रखना हिमाक़त है यानी जो सुलूक और बरताव हम लोगों के साथ करते हैं वही हमें बदले में मिलता है अगर हम लोगों के साथ नेक और अच्छा सुलूक करेंगे तो लोग भी हमारे साथ नेक सुलूक से पेश आयेंगे याद रखो अच्छाई का बदला अच्छाई और बुराई का बदला बुराई और गुनाह होता है और बाज़ लोग तो ऐसे भी हैं जो अल्लाह तआ़ला की तख़लीक़ कर्दा मख़लूक़ में भी ऐब व नुक़्स निकालते हैं और उनका मज़ाक़ बनाते हैं और हंसते हैं।

मिसाल के तौर पर अगर कोई शख़्स लूला, लंगड़ा, हक्ला, काना, बहरा, भेंड़ा, काला, भूरा, पस्त क़द (नाटा) गूँगा, लम्बा, पतला, ज़्यादा मोटा या कम दिमाग़ या गन्जा या अच्छी शक्लो सूरत का न होना बग़ैराह तो बाज़ लोग उनका हंसी मज़ाक़ बनाते हैं क्या वो इस बात से अन्जान हैं कि उनको पैदा करने वाला परवरदिगार है अगर कोई शख़्स हमारी या हमारी किसी चीज़ की बुराई करे तो हमें बुरा लगता है ठीक इसी तरह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बनाई हुई किसी चीज़ की जब कोई शख़्स बुराई करता या ऐबो नुक़्स निकालता या हंसी मज़ाक़ बनाता तो अल्लाह तआ़ला को बुरा लगता है और वो सख़्त नाराज़ हो जाता है और उसकी नाराज़गी इन्सान की हलाकत का सबब बन सकती है।

हर इन्सान पर लाज़िम है कि अल्लाह तआ़ला के हुक्म और मर्ज़ी के मुताबिक़ अपने तमाम कामों को अन्जाम दे लेकिन इसके बरअक्स बाज़ लोग चाहते हैं कि अल्लाह तआ़ला हमारी दुन्यावी तमाम ज़रूरतें और ख़्वाहिशात मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ फराहम करें हालाँकि ज़मीनों आसमान का मालिक रब्बुल आ़लमीन है और कुल कायनात उसी की मिल्कियत है और उसकी कुदरत के निज़ाम में हक़ व अ़द्लो इन्साफ़ है जिसमें किसी का दख़ल मुम्किन नहीं है और वही पाक ज़ात मालिक व मुख़्तार है और हम उसके बन्दे और गुलाम हैं जो अपने मौला की बारगाह में आ़जिज़ी व इन्कसारी के साथ अपनी दुआ़ और माअ़ज़रत के पेश करने का हक़ रखते हैं लेकिन हमारी दुआ़ओं मक़बूलियत रब तआ़ला की मर्ज़ी और उसके इख़्तियार में है चाहे तो कुबूल करे या रद् कर दे और दोनो हालतों

में इन्सान की भलाई और बेहतरी मख़्फ़ी है जिसे हम छोटी अक़्ल वाले नहीं समझ सकते और इन्सान के तल्ख़ व शीरीं तमाम हालातों में अल्लाह तआला की रहमत होती है और इसकी मज़बूत दलील ये है कि जिस तरह हम अपनी औलाद से मुहब्बत करते हैं इसी तरह तमाम मख़लूक़ को पैदा करने वाला ख़ालिक़ भी अपने बन्दों से इतनी बेइन्तिहा मुहब्बत करता है जितनी इन्सान अपनी औलाद से भी नहीं करता और मुहब्बत और रहम करने वाला कभी किसी के साथ ना इन्साफ़ी या ज़्यादती नहीं करता।

इन्सान की ख़्वाहिशात जो अल्लाह तआला से उम्मीद की तालिब रहती हैं इन्सान उन ख़्वाहिशात को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चाहता है मिसाल के तौर पर हर किसान चाहता है कि जब हमारे खेतों को पानी की ज़रूरत हो तब अल्लाह तआला पानी बरसाये और जब जितनी गर्मी सर्दी की ज़रूरत हो तब उतनी ही गर्मी सर्दी हो और हमारे खेतों में बहुत ज़्यादा पैदावार हो ताकि हमें ज़्यादा माल हासिल हो इसी तरह ताजिर (व्यापारी, दुकानदार) की ख़्वाहिश होती है कि अल्लाह तआला हमारे रिज़्क़ में बरकत दे और हमारी तिजारत में कसीर फ़ायदा हो और किसी तरह का माली नुक़सान न हो और इन्सान चाहता है कि अल्लाह तआला मेरी मर्ज़ी और ख़्वाहिशात के मुताबिक़ हमें अ़ता करे हमारा रिज़्क कुशादा हो घर में खुशहाली हो व मालो दौलत का ज़ख़ीरा हो और ऐशो आराम के सभी सामान मुहैया हों और हमारी औलाद बा ख़ैर रहे और अल्लाह तआला हमें मुसीबतो परेशानी से महफ़ूज़ रखे वग़ैराह यानी इन्सान दुन्यावी तमाम मामलात अल्लाह तआला से अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चाहता है और उसका ख़्वाहिश मन्द और तालिब रहता है।

लेकिन क्या हमने कभी इस बात पर भी ग़ौर किया है कि क्या हम अल्लाह के हुक्म और उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ चलते हैं क्या हम अल्लाह और रसूल के फ़रमानों के मुताबिक़ अ़मल करते हैं क्या हम अल्लाह व रसूल की बात मानते हैं क्या हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के तरीक़ों और सुन्नतों के मुताबिक़ अपने कामों को अन्जाम देते हैं यानी अल्लाह तआला की बात न मानना और अल्लाह ही से अपनी ख़्वाहिशात व ज़रूरियात और तकलीफ़ो परेशानी से निजात की उम्मीद रखना और दुआ़ की मक़बूलित के तालिब रहना क्या ये हक और दुरूस्त है।

हमारा कुरआन व अहादीस पर एतक़ाद (अक़ीदा) है लेकिन क्या हम कुरान व अहादीस की बात भी मानते हैं और बाज़ लोग तो कुरान की तालीम न खुद हासिल करते हैं न औलाद को दिलाते हैं बल्कि अंग्रेजी पढ़ाकर डॉक्टर इंजीनियर बनाना चाहते है और फिर ये ख़्वाहिश रखते हैं कि हमारी औलाद हमारी फ़रमांबरदार हो और हमारी हर बात माने और हमारे हर हुक्म की तामील करे क्या हमने कभी इस बात पर भी ग़ौर किया है कि हमने अपने माँ बाप की कितनी फ़रमांबरदारी की है कितनी उनकी बात मानी है और कितनी उनकी ख़िदमत गुज़ारी की है जो हम अपनी औलाद से उम्मीद और ख़्वाहिश रखते हैं।

बसा औक़ात देखा गया है कि हमारी औलाद हमारा कहना नहीं मानती और नाफ़रमानी करती है और उन की शादी (निकाह) के बाद तो हालात इतने बदतर हो जाते हैं कि हमारा लड़का हमारा कहना बिल्कुल नहीं मानता लेकिन वो अपनी बीवी की फ़रमाबरदारी करता है माँ बाप और औलाद के दरमियान ज़ाहिरी रिश्ता क़ायम रहता है लेकिन बातिनी रिश्ता मुनक़ताअ़ हो जाता है आख़िर ऐसा क्यों होता है अगर हम इस बात पर गौर करें तो हमें पता चलता है कि इसकी दो वजह हो सकती हैं एक तो ये कि हमने अपने माँ बाप के साथ जो सुलूक और बरताव किया है वही हमें बदले में मिलता है और दूसरी वजह ये हो सकती है कि हमने अपनी औलाद को दुन्यावी तालीम दिलायी और दुनियाँ की मुहब्बत और रग़बत से वाबस्ता रखा और दीनी तालीम व कुरान व अहादीस और अहकामे शरीअ़त के उ़लूम से दूर रखा तो हमारी औलाद ने जो तालीम हासिल की उसी दुनियाँ के मुताबिक़ वो अ़मल करता है काश अगर हमने अपनी औलाद को दुन्यावी तालीम के साथ–साथ दीनी तालीम भी दिलायी होती तो शायद हालात ऐसे न होते।

जिस तरह हम अपनी औलाद से चाहते हैं कि मेरी औलाद मेरी फ़रमांबरदार हो मेरे हर हुक्म की इताअ़त करे तो इसी तरह हमारा परवरदिगार जो हमारा ख़ालिक़ व मालिक है वो अपने बन्दों से चाहता है कि मेरे बन्दे मेरे फ़रमांबरदारी करें और मेरे और मेरे महबूब सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के अहकामात पर अ़मल पैरा हों और अपनी तमाम उम्र हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह

वसल्लम के तरीक़ों और सुन्नतों के मुताबिक़ गुज़ारें ताकि मैं उन्हें अपनी कुरबत में ले लूँ और उन्हें उनके नेक आमाल का बेहतर सिला दूँ और उनकी दुआओं को कुबूल करूँ और उनकी ख़्वाहिशात व ज़रूरियात को को पूरा करूँ और उन्हें मुसीबतो परेशानी व अपने गज़ब और अ़ज़ाब से महफूज़ रखूँ और उन्हें अपनी अमान में जगह अ़ता करूँ और उन पर रहमतें व बरकतें नाज़िल करूँ और जन्नत में आला दरजात से सरफ़राज़ फ़रमाऊँ तो ज़रा सोचो और ग़ौर करो कि अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी के बाइस अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स को मज़कूरा अज़्रो इनामात से नवाज़े तो फिर उस बन्दे के मक़ाम और मर्तबे का आ़लम क्या होगा जिसे अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब और मख़सूस बन्दों की फ़ेहरिस्त में शामिल होने और अल्लाह की रज़ा और खुशनूदी हासिल करने का शरफ़ हासिल हो जाये।

इसलिये हमें चाहिये कि इन मज़कूरा बातों पर ग़ौरो फ़िक्र करें और खुद की इस्लाह करें और अपने गुनाहों पर पशेमान (शर्मिन्दा) हो और खुलूस दिल से तौबा करें और आइन्दा गुनाहों व बुराइयों से इजतिनाब करें और ज़्यादा से ज़्यादा नेकियाँ कमाने का क़सद और कोशिश करें और तमाम बुरी बातों से ऐराज़ करें और अपने रब से ना उम्मीद न हों हमारा रब बड़ा रहीम व करीम है वो हमारे तमाम गुनाहों को बख़्श देगा अगर हम चाहते है कि हम जन्नत और उसकी दायमी नेअ़मतों के मुस्तहिक़ हो जायें तो हमें हर हाल में अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी करनी होगी चाहे असबाब हमारे मुवाफ़िक़ हों या हमारे ख़िलाफ़ हों और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी का नतीजा बहुत बुरा व सख़्त और बहुत भयानक होगा जिसे कोई भी शख़्स बर्दास्त न कर सकेगा।

इब्लीस (शैतान) ने अल्लाह तआ़ला की अस्सी हज़ार साल इबादत की लेकिन उसने सिर्फ़ एक हुक्म की नाफ़रमानी की तो अल्लाह तआ़ला ने उसको अपनी बारगाह से मरदूद कर दिया और उसकी अस्सी (80) हज़ार साल की इबादत उसके मुँह पर मार दी गई और क़यामत तक उसके गले में लानत का तौक़ ड़ाल दिया और उसके लिये हमेशा अज़ाबे अलीम में जलना मुक़र्रर कर दिया।

हज़रत आदम अ़लैहस्सलाम अल्लाह तआ़ला के बरगज़ीदा नबी हैं जिनको अल्लाह तआ़ला ने बराहे रास्त अपने दस्ते कुदरत से बनाया फिर तमाम मलाइका को उन्हें सज्दा करने का हुक्म दिया फिर उनको वसीअ़ और आरामदाह जन्नत में जगह अ़ता फ़रमाई फिर सिर्फ़ एक हुक्म की नाफ़रमानी के बाइस जन्नत से निकाल दिये गये और ज़मीन पर भेज दिये गये यहाँ तक कि आप मुसलसल दो सौ (200) साल तक रोते रहे और इस सिलसिले में आपको इंतिहाई मशक़्क़त और तकलीफ़ें बर्दास्त करनी पड़ी।

हज़रत यूनुस अ़लैहस्सलाम से सिर्फ़ इतनी बात सादिर हुई कि एक दफ़ा आप बेजा बे मौक़ा गुस्से में आ गये तो समुन्दर की गहराइयों में चालीस रोज़ तक मछली के पेट में क़ैद कर दिये गये वहाँ आप तस्वीह पढ़ते थे और रब तआ़ला से निदा करते थे (ला इलाहा इल्ला अन्ता सुबहानका इन्नी कुन्तुम मिनज़्ज़ॉलिमीन) तेरे सिवा कोई माअ़बूद नहीं तेरी ज़ात पाक है बेशक मैं ही (अपनी जान पर) ज़्यादती करने वालों में से था। (सू0—अम्बिया—87)

तो इन रिवायात पर हम ग़ौर करें और इब्रत हासिल करें कि उनकी एक ग़लती पर अल्लाह तआ़ला ने कैसी सख़्त सज़ायें दीं तो अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी के बाइस हमारा क्या हाल होगा जो हम ग़लतियों पर ग़लतियाँ और गुनाह पर गुनाह किये जा रहे हैं इसलिये हमें चाहिये कि बुराई और गुनाहों का रास्ता छोड़कर सिराते मुस्तक़ीम का रास्ता इख़्तियार करें और अल्लाह व उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के फ़रमाबरदार बन जायें क्योंकि सिराते मुस्तक़ीम की मंज़िल जन्नत है और बुराई का रास्ता हमें सीधे दोज़ख़ में ले जाता है अब खुद फैसला करें और अपनी भलाई और ख़ैर वाले रास्ते को मुन्तख़ब करें और अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल की इताअ़त व फ़रमाबरदारी में सर्फ़ कर दें ताकि दुनियाँ व आख़िरत में अज्रे अ़ज़ीम व इनामात के मुस्तहिक़ हो जायें बन्दा जब अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व फ़रमाबरदारी करता है तो वो उन बेशुमार दुन्यावी व उख़रवी नेअ़मतों व राहतों का मुस्तहिक़ हो जाता है जिसका वो तसव्वुर भी नहीं कर सकता अल्लाह तआ़ला अपने फ़रमाबरदार बन्दों का तज़किरा फ़रिश्तों में करता है तो वो शख़्स कितना खुश नसीब और मुअ़ज़्ज़ज़ हैं कि जिसका तज़किरा रब्बुल आ़लमीन फ़रिश्तों में करके उस पर एहसान करे और

रब तआ़ला अपने इताअ़त गुज़ार बन्दों से बेहद मुहब्बत करता है और ये उनके लिये बड़े फख़्र का मक़ाम होता है और रब तआ़ला उनका कारसाज होता है जब वो किसी काम का इरादा व तदाबीर करे और अल्लाह तआ़ला उनके रिज़्क का कफ़ील (ज़िम्मेदार) होता है और उन्हें वहाँ से रिज़्क अ़ता करता है जहाँ उनका वहमो गुमान भी नहीं होता और उनका मददगार होता है और वक़्ते मुसीबत उनकी मदद फ़रमाता है और हर दुश्मन और हर बुराई का इरादा करने वालों से उन्हें महफ़ूज़ रखता है और पाकीज़ा नफ़्स व फ़राख़ सीना और उनके दिल नूर से मुनव्वर होते हैं और उनके दिल उ़लूम और हिकमतों (पोशीदा बातों) पर मुत्तलाअ़ होते हैं और दुनियाँ के मसाइब और तकलीफ़ और लोगों की अइयारियों और मक्कारियों से उनके दिल तंग नहीं होते और सब नेक व बद उनकी इज़्ज़त और एहतराम करते हैं और अल्लाह तआ़ला उनकी तमाम हाजतों और दुआओं को कुबूल फ़रमाता है।

जो बन्दे अपनी तमाम उम्र अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी में गुज़ारते हैं और सिराते मुस्तक़ीम पर साबित क़दमी रहते हैं तो उन पर मौत की सख़्ती को आसान कर दिया जाता है और जाँकनी के वक़्त नज़अ़ की हालत में उन्हें हर तकलीफ़ से महफ़ूज़ रखा जाता है और उनके लिये मौत राहत व खुशगवार और तोहफ़ा होती है और वो अल्लाह तआ़ला की रहमत व अमान में रहते हैं और उनकी क़ब्र सर सब्ज़ व शादाब हो जाती है और क़ब्र के अ़ज़ाब और क़यामत के इंतिहाई सख़्तियों और हौलनाकियों से वो बेख़ौफ़ और महफ़ूज़ और अमन व राहत में रहेंगे और जन्नत और उसकी नेअ़मतों और लज़्ज़तों के वारिस होंगे और उसमें वो हमेशा—हमेशा रहेंगे और उन्हें अपने रब से मुलाक़ात का शरफ़ हासिल होगा हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने चौदहवीं रात के चाँद को देखा और फ़रमाया—बेशक तुम अपने रब को इस तरह देखोगे जिस तरह तुम इस चाँद को देख रहे हो

इरशादे बारी तआला है—
और उनको पुकारा जायेगा कि ये जन्नत है जिसका तुम्हें वारिस बनाया गया ये तुम्हारे आमाल की जज़ा है। (सू0—आअ़राफ़—43)

—: जन्नत में ले जाने वाले आमाल :—

01—अल्लाह तआ़ला के हर हुक्म पर राज़ी रहना और हर मुश्किलात में सब्र करना।

02—अल्लाह तआ़ला की हर अ़ता पर उसके शुक्रगुज़ार रहना।

03—तमाम गुनाहों से किनाराकशी इख़्तियार करना और हर वक़्त ये ख़्याल रखना कि मेरा रब हमें देख रहा है।

04—हर वक़्त अपनी मौत को याद रखना और दुनियाँ से बे रग़बती इख़्तियार करना।

05—कायनात में सबसे ज़्यादा मुहब्बत अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत से रखना।

06—अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करना और सुन्नतों पर कसरत से अ़मल करना।

07—सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर कसरत से दुरुदो सलाम भेजना।

08—सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला से डरना और उसी का ख़ौफ़ अपने दिलों में रखना और उसी पाक ज़ात पर मुकम्मल भरोसा रखना

09—रोज़ा, नमाज़ का पाबन्द रहना और पूरी ज़कात अदा करना।

10—कसरत से सद्क़ा ख़ैरात करना और हर मुसलमान से हुस्ने खुल्क़ से पेश आना और उनकी ज़रुरतों को पूरा करना और उनके साथ हुस्ने सुलूक और अच्छे बरताव से पेश आना और उनकी हर तरह से मदद करना।

11—हर नेक अ़मल ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिये करना।

12—अपने नफ़्स से जिहाद करना और खुद को रिया और तकब्बुर से पाक रखना और अपने तमाम मामलात में मारफ़ते खुदावन्दी इख़्तियार करना।

13—माँ बाप से हुस्ने सुलूक से पेश आना और उनकी फ़रमाबरदारी करना और उनका अदबो एहतराम करना।

14—हमेशा सच और हक़ बात कहना और अपनी आख़िरत के लिये हर वक़्त तैयारी में लगे रहना।

15—अपने नफ़्स को हमेशा क़ाबू में रखना और उस पर ग़ालिब रहने के लिये कोशिश और तदाबीर करना और हमेशा ख़िलाफ़े नफ़्स काम करना।

अल्लाह तअ़ाला अपने महबूब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सदक़े और तुफ़ैल हम तमाम मुसलमानों को हिदायत अ़ता फ़रमाये और शैतान के शर से महफ़ूज़ रखे और तमाम गुनाहों और बुराइयों से पाक रखे और सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये और हमारे दिलों में सबसे ज़्यादा अपनी और अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत की मुहब्बत को क़ायम व दायम रखे और हमारे तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमादे और हमें क़ब्र व क़यामत के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखे और हमें कसरत से नेक अ़मल करने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये और क़यामत के दिन हमें सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की शफ़ाअ़त नसीब हो और अल्लाह तअ़ाला अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सदक़े और तुफ़ैल हम मुसलमानों को जन्नत में आला मक़ाम से सरफराज़ फ़रमाये—आमीन।

व आखिरुदअ़वाना अ़निल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल अ़ालमीन।

विहिम्दिही तआ़ला व फ़ैज़े रसूलुल आला व करमे गौसुल आज़म व इनायते ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ व अ़ताये वारिस पाक व फ़ैज़े रुहानी हज़रत सइयद उवैस मुस्तफ़ा साहब क़िब्ला बिलग्रामी व बरकात तमाम बुर्जुगाने दीन बड़ी मुद्दत तबीला के बाद आरजू के गुलिस्तां में बहार आयी है हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के तुफ़ैल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं उसके क़ाबिल न था लेकिन बुर्जुगों की निगाहे करम ने मुझे इस क़ाबिल बनाया अल्लाह तआ़ला का लाख–लाख शुक्र है कि उसने अपने महबूबे पाक रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े में मुझ से ये खिदमत ली हालाँकि मैं इसके बिल्कुल क़ाबिल न था बहर कैफ़ आप हज़रात के हाथ में जो किताब मौजूद है इस किताब का मुताअ़ला करें और उस पर अ़मल पैरा हों ताकि अल्लाह तआ़ला जज़ा ऐ ख़ैर से नवाज़े और दुनियाँ व आख़िरत में कामयाबी हासिल करें और अल्लाह तआ़ला के मुक़र्बीन बन्दों में अपना मक़ाम बनायें व मन्ज़िले मक़सूद पर फ़ाइज़ हों। अगर किताब के लिखने में कोई ग़लती हो या किताबत की ग़लती हो तो पढ़ने के बाद बराये करम मुत्तलाअ़ फ़रमायें ऐन नवाज़िस होगी।

जो हज़रात अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हों वो बराहे रास्त हम से राब्ता क़ायम करें।

नोट–इस किताब को बराहे ईसाले सवाब मरहूम जनाब ईद मुहम्मद साहब की रुह को अल्लाह तआ़ला अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये और अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े और तुफ़ैल उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये।

डा0 आज़म बेग क़ादरी
PH-09897626182